## প্রা র্মার ইব্যা বিষধা শীর্ম বিষধা শীর্ম বিষ্ণার বিষধা শীর্ম বিষধা শীর্ম বিষধা শীর্ম বিষধা শীর্ম বিষধা শীর্ম বিষধা শীর্ম বিষ্ণার বিষধা শীর্ম বিষ্ণার শিক্ষা বিষধা শীর্ম বিষধা শিক্ষ বিষধা শিক্ষ বিষধা শিক্ষ বিষধা শিক্ষ বিষধা শিক্ষ বিষধা শিক্ষ বিষধা শীর্ম বিষধা শীর্ম বিষধা শিক্ষ বিষধা শীর্ম বিষধা শিক্ষ বিষধ

क्र्याच्चित्रस्तर्यः क्र्यायितः स्योसः क्रिय्याच्चित्रस्तरः ची ।

वीत्रायस्य स्वायः क्र्यायः क्रियः वित्राच्चित्रस्तरः क्ष्यायः स्वायः स्वयः स

यथा द्राम्युण्णाद्याय्याया विष्णान्युर्या निष्णान्युर्या निष्णान्युर्या स्थित्राम्युर्या स्थित्या स्थित्राम्यूर्या स्थित्या स्थित्या स्थित्या स्या स्थित्या स्थित्या स्थित्या स्या स्थित्या स्थित्या स्थित्या स्य

र्झ्यायमा वृण्णः ह्यायाक्रवाया क्रवाया क्रवाया वित्यातीया वित्रास्त्रीत क्षीय स्वाया क्षाया क्षाय क्षाया क्षाय क्षाय क्षाय क्षाय क्षाय क्षाय क्षाय क्षाय क् पर्वे स्त्रिः हुर् अकूरे वे या चेर्या स्रोरे रेटा स्था के या ज्या या सह रे वे या र्वरार्ग्यक्षेतासळ्यामुवायविषयराष्ठ्रीयर्थामुक्षायत्यामुक्षायत्याम्बर्धाः भ्रेन्यहिषायान्द्रम् अद्याक्त्रयास्यात्रेयास्त्रम् अस्याक्त्रम् अद्याक्त्रया क्रिमान्त्र वि: मत्त्र हेन् सके निमान सम्मिन सम त्तुः श्चिम भट्ट्राजमात्री समाध्यामा समाम्राम्या मुन्ता । समाम्याम्या । चर्याया विष्यास्य स्थानित स्था मुपन्हे। हे हे मन्तर् र्सेन यापन्न प्रमुखा मुह यास्र स्था विष्ट र स त्तुःलाः वेषायक्रेषायतुः द्विरः है। सहूर् ताषा क्रूब र्टर्यका रे. येट क्यायरा विषया गहन्यवियानहेन गरिगायागुन। १२ भी हैन ५ वर्ष समुन। १ वियागसुर या चगाव द्वियानवे द्वित्व वा दे नह्य व ना सुर र ना प्रवासक व ना के नि वर्ष्यात्र हेर्मेन्यात्र्यात्र्यात्या वर्षायते हेर्मेन्त्रित्यावत्यात्र्या ग्री मिलियस स्परम्म सुरुष प्रयोधित हो है हि । यह रायम हार्ये । हे या यम् महिषार्थे न इस्ति अर्ने न्या वन्यत् अर्ने महिषार्थे प्रति स्ति हिमा न्रांधिन्त्री न्रोःश्चित्यवेः अप्तःश्चित्रं स्वरः यान्त्रा न्रोःश्चितः स्वरः अप्तः ब्रिक्षेरावरायाम्बर्धाः प्रित्राधिरायते ख्रिरा

क्षे.त.ज्यस्ट्रेश्यत्तव्यक्षेत्राचेश्वराविक्षात्ती जीटाश्राक्ष्यद्वराह्मे ।

क्षे.त.ज्यस्ट्रेश्यत्तव्यक्षेत्राची संस्थात्त्रे से स्थात्त्राच्चे स्थात्तव्यस्य स्थात्त्र स्थात्त् स्थात्त्र स्थात्त्र स्थात्त्र स्थात्त्र स्थात्त्र स्थात्त्र स्थात्र स्थात्त्र स्थात्य स्थात्त्र स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्था

द्रम्यस्य भिर्मित्रम्य प्रम्य प्रम्य

मुकासद्दार्वे ल्ये प्रवेषया इसमार्थे दार्वे द्वेर इदम्म मिन्या मुक्राया मुक्रा व्रे विषायम् अर्देन के वर्षेति वर क्वे पर्याय व्रे विषाम् प्राप्त विष्या विषय स्वाप्त विषय यावर्षुविरेशें से राष्ट्र राये र्षेस्यायाम् निष्यायाम् से वादिन र्येन र्येन रिन ૽ૢ૿ૹૹ*Ĕ*ઽૠ૽૽ૼૹૢૹઌ૱૱૽ૼૺૼૼૼૹઌ૱ૹ૽૽ૼઽઌૢ૽ૢ૽ૼઌ૽૽ઌ૱ઌ૽૽ૹ૾ૢઽૹ૱૽ૢૺૹૹ*Ĕ*ઽૡ૽૽૾ૺૺઌૢ૱ निम्मा रामाञ्चरासहर्पियो सेना सेना सुना न्यू परिन् मीरासहर्पियो सुसा वकु'य'रर'दबे्व'र्दि, र्वेष'र्टर, यञ्चा विक्वेत्र्यं स्वाप्त वर्षे स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप क्ष्याची क्ष्या येतुर प्रायास पर्या क्षिय प्राया क्षिय प्राया क्षिय प्राया स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था स ર્વે દેઃવઃ૮૮ા ૮ને ર્જુવાની વેંદિ વાનફિષા ક્રમમાં ખેંદ્રા દેષ્ક્રમાં વેષ્ક્રમાં વામાં વામાં दम्यापार्च्यात्रं म्याम्यात्रे। द्वेदायी सम्मायन्। क्रमायी प्रमायन्यात्रेमायी सम्मायन् त्तु के कुर त्वेजा व्येजकिर लूप भेष १५४ में भेष १५० में १५० में सहर्तित्वाताता है सर्वित्विक्षामिष्ठे में श्रीका सहर्तित्वे विक्षा स्थिति । *ऀॻॖॺॱॺॾ॔*ॸॱय़ढ़ॱक़ॖॱॸ॔य़॓ॱॾॺॺॱॡ॔ॸॱय़ढ़ॱख़ॖऀॸऻड़ॱड़ॖॺॱॺऻॹढ़ॸॎॺॱक़ॗॕॺॱॻॺ॓ॺॱॻॖऀॺॱ सह्राप्ते त्रिमाकेर स्प्राप्त सम्प्राप्त भावार देवाया देवाय स्प्राप्त स्प्राप्त स्प्राप्त स्प्राप्त स्प्राप्त स्प्रा के'यश'यबेद'र्दे। ।

वळत्रख्यार्थेन्दो अळव्यात्तेन्द्री व्यक्तर्याः विष्याय्ते स्विष्याय्ते स्विष्याय्याये स्विष्याय्याये स्विष्याय्याये स्विष्याये स्वये स्विष्याये स्विष्याये स्विष्याये स्विष्याये स्विष्याये स्वये स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं

चस्रमान्त्र प्राप्ति स्वित्सान्त्र में स्वित्सान्त्र में स्वित्सान्त्र में स्वित्सान्त्र में स्वित्सान्त्र स्व स्वार्मित्ते । वस्रमान्त्र स्वित्सान्त्र स्वित्सान्त्र स्वार्मित्त स्वित्सान्त्र स्वत्य स्वित्सान्त्र स्वत्य स्वित्सान्त्र स्वित्सान्त्र स्वत्य स्वत्

च्यात्राच्यात्राचित्र हुँ म्याविश निष्यात्राच्या स्थात्य स्थात्य हुँ म्याविश स्थात्य हुँ म्याविश स्थात्य स्थात्य हुँ म्याविश स्थात्य स्थात्य

प्राचित्रा हिट निर्मित्र निर्मित्र प्राचित्र निर्मित्र प्राचित्र प्राचित्र

क्ष्वाःश्चरःश्चरः तर्षाः त्र्वितः प्राःश्वरः त्र्विषः सुःश्वरः ह्री देः श्वरः श्चिरः व्यक्षः विष्णः व्यक्षः विष्णः व्यक्षः विष्णः विषणः विष्णः विष्णः विष्णः विष्णः विषणः विषणः

त्तुन्त्रम् विश्वन्यविश्वः स्वाद्देवः ने स्वाद्देवः ने स्वाद्देवः ने न्यून्यः स्वाद्देवः स्वादेवः स्वाद्देवः स्वाद्देवः स्वाद्देवः स्वाद्देवः स्वाद्देवः स्वाद्देवः स्वाद्देवः स्वाद्द

यदिवानी का त्र क्षेत्र क्षेत्

भ्रत्यायात्रम् त्र्वायात्रा अत्रक्ष्यात्रम् त्रियायात्रम् विष्यायात्रम् विषयात्रम् विषयात्रम्यात्रम् विषयात्रम् विषयात्रम्यात्रम् विषयात्रम् विषयात्रम् विषयात्रम्

यनुम्यार्सेन् र्श्वेत् यमन्यायायावे र्योत् ने वहेन् ग्रु यार्सेन् र्श्वेत् । नर्गेमः यायार्डेन हिंदा हिटान्नियायार्डेन हिंदा वहेवायायार्डेन हिंदा इसमासुर्येन यवः भ्रीत्र । इत्यं के क्विं का त्रे। के स्वतः र्श्वेत् वत्वेत्र वरुषा ग्री स्वयः विस्राय है। यस्त्र पर्टेश ग्री पर्हे ५ मु साधित पर मा यस्त्र पर्टेश पर्देश सुंव मिस्रा दे दे র্বিব:ক্সন্ধান্ত্রমান্সংস্ক্রমান্ত্রম सक्षर् हिर्दर्दे वार्स्यम् रहिरास्य मास्र मास्र मार्थे हिर् वे स्ट वर साम्रिया ৼৢ৾ৼ ঀ৾৽ৼৢয়৽ঀ৾ৼয়৽য়ৢয়৽ঀৼৢয়৽য়ৢঢ়৽য়৾৽য়য়য়ৼ৻ৼৄয়৽য়৾য়৽ড়ৢয়৽ঀৢয়য়য়য়৽য়৾ঀঢ়ঀয়য়৽য়৽ व्रेन्यते व्यवस्थिता स्वास्यान्यस्य निस्य स्वास्य स्वास्य स्वर्धन स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास ट्र.चूद्र.क.यंश.केश.तर.टेट्श.शे.श.चर्सय.त.लट.लय.धे। चीचश.चर्सय.चर्सय.चेतु. येश्च्रिर्चर विश्व बर्ग केश तर प्रहेष तर्र हिर है। रव विद्या येषिश ह्या या आह्य त.मृत्यत्र में प्रत्याचिषा रेट्र श्रायक्षेत्र येश मृत्य में मृत्य में स्थापत अक्षेत्र हो र स्थाप चीचरातायहेंच। क्रायवेटाचुरेराहुरायहेंचर्टायरुरायश्चरावाहें स्निर्द्रमासुन्न स्वमा सुरायसामित्रायदे र्ह्मायदे सळव हिन पुनासाया यहना चि.पस्यातानीयायात्रस्यात्राद्धिम। ट्रेयायावयास्ययाताच्यी। वि.क्र्यास्राट्टी इ'प्रते'म्ब्रि'मेशर्भे' ह्य र में म्ह्र्य द्विस्य द्विस्य दिस्य सुप्र स्वर्थ स्वर्थ देव र से

प्तः द्वान्तः स्वान्तः त्वान्तः त्वस्व प्रतः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः त्वान्तः त्वानः त्वान्तः त्वान्तः त्वान्तः त्वान्तः त्वान्तः त्वान्तः त्वान्त

 याः श्रीयायः द्वात्रायाः प्राचित्रायाः विष्णाः विषणः विषणः

द्रम् स्वाकामी त्वीर त्या हुं सारा सुं सारा सु सारा सुं सारा सु सारा सुं सारा सु सारा सुं सु सारा सुं सारा सुं सारा सुं सु सु सारा सु सारा सु सारा सुं सु स

यक्षेत्र-वायकात्रक्ष्ट्र-तायः क्रूंकावाक्षेत्र-प्रपट्टी त्यक्ष चि नवाः में त्युः पक्षेत्र-वायकाः प्राप्ताः वित्र वित्रः वित्रः

क्री. ह्र्याता चार्ट्ट त्यात्र त्यात्य त्यात्

देशक्ष निया स्थान स्थान

विश्व निक्षित्व प्रिव प्रवास्त्र प्रवास प्रवा

प्रेस्ट्रियः अतुः क्रिंट्रियः त्याने में क्रिंयः अतुः क्रिंयः त्याने क्रिंयः अतुः क्रिंट्रियः विक्रां क्रिंयः अतुः क्रिंयः विक्रां क्रिंयः अतुः क्रिंयः विक्रां क्रिंयः अतुः क्रिंयः विक्रां क्रिंयः अतुः क्रिंयः विक्रां क्रिंयः अत्याने क्रिंयः क्र

प्रति स्थापार्य प्रति प्राप्त प्रति प्राप्त प

विभागसुरसायवे भ्रिमा बेमान सामिय है। ह्येमान्स्यानिसमाया वासुसाये पायसा म्राचर र्ह्म् अपवे द्वर पु नुमाने अपवे परे देव भित्र प्रमा वित्र ग्री प्रकत सुवादे हिना वर्जे प्रवे खेर। दे क्षाक्षेत्र व खेर् स्वायवे कुदायार्थे वर क्षेत्र या प्रवे प्रवाय 5 संयुक्त देवे 'श्वेर वर्दे 5 से मुका है। सहें 5 'वर्षे वा वका श्वे देवा या इसका वा लट्रयायर विद्याप्त क्ष्याविष्ठ माने स्वाविष्ठ क्ष्रिं हैं हैं से स्वाविष्ठ र्देशयन्त्रे स्रेन ने । इतु स्रिमन ने ने स्रोन यायान हेन यतु स्रिमान न ने स्वायायमा मु.मू.घर.तर.घुर.त.म.लुब.धू। विषायमिरमा लटाव.क्य उर्र्र.तपु.मम. पर्रुषणीुः स्वादिस्रमण्यादिष्या देसाय वृत्ती प्रस्राध्याध्याधिस्य देशायवेः सक्षवं क्षेत् वित्र वित्र वित्र देत् देश वित्र व यहैंसाग्री, यत्रः भारता वैद्यां, विश्वसालू राष्ट्रात्रा ही रा रदा में से बें प्राप्त हो। हसा वर्त्युत्तं विषयायमा नेवायि वर्षेत्र प्रवेश्वयाय सुषा ग्री वानुवाय उव दिवे प्रवाय सुषा वित्राधिव प्रचाराया विष्ठेव दे की यद्य दिने हैं वित्य सम्बन्ध की सी की सी वर क्रिंयपायळवाळुवाची नहेन पेरियाधिन परि क्रिंप हो। दे प्रत्युत् क्षित्र ची नार बनानी कुर ग्री 'वळवा खुंवा की नाहे कर्या खाले का प्यापित हो र कुर व्हार की जार बना में कुर्यायकवाकुवासेर्यदेष्ट्विर बेर स्ना साम्वयःह्नी देन हेन्यासरमाकुमा गुःसिव्वयादे देव कुत् गुःक्षेत्यास्त्र सुसात् हिन्साय विष्यास्य विष्यास्य विष्यास्य विष्यास्य विष्यास्य विष्या रेवे कुर ग्री क्वेय या सेर यवे स्वेर । वियय विस्तावस्य विष्ठ मानवा विक्रमानवा विष् केर<sup>भ</sup>ी त्वन होर पाने रेनमायाया अाह्य प्राचे हन मार्थी ।

ব্রুন্মর্মান্সন্মূর্ণ ব্রুদ্ধর্মার কুর্মান্সন্মূর্ तः वरत्रव्यव्यातीः र्र्षेत्राता स्थाया स्थाना द्याप्या वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षे र्थिन ने। मिने से से रान्या स्त्री स्वरायायाय हुनायते नियानु सुराया वर् द्रम्म प्रमान्य वर्षे स्त्रा स्त्रा वर्षे स्त्रा वर्षे स्त्रा वर्षे स्त्रा वर्षे स्त्रा वर्षे स्त्रा स्त्रा वर्षे स्त्रा स्त यायह्वायवे द्वरादु गुर्मा दर्धे म्वरायवे र्क्सिया वेसायहेद। यादे विषय यायह्वायवे निवर नु ग्वराव वाराये विवर्षणी र्देशया वेषायहेन यवे स्वरा नेषा वर्श्वाचर र्ह्म् अप्याधिव वर्श्वाचर धिव प्रमाधिव हो। श्वाचर रह्म् अप्यास्त्र दिवा प्रा र्ये खेल स्पर्ना के सार के अपना की अपन के सार के सार के मानिक का मिला है अपना की अपने के सार के सार के सार के यार्भे वरामाध्येत्राति। हेवायायमाद्रायेरावरायमेत्रायमार्भे ।देख्रायायमाद्री वर्षेवायायमा हैंसायायर प्रवायर म्नूरमायि देवा मुद्दा साधित या प्रति से से से र चरताष्ट्रभाग्यताच्चा भू.सूराचरतायु.र्जूसाताष्ट्रभागाच्चा सू.सूराचरातास्त्रता `ठेवा'स'विदेश'य'य'सेवास'यादे से से स्ट्रांस : ह्य र यदे : ह्य या विद्य खेत : ह्या से से से स : ह्य र त्राच्री अत्तर्भा विश्वानस्य विश्वान्त्रे स्तर्मान्य स्त्राच्या स्त्री विश्वान स्त्री स्त्री विश्वान स्त्री स्त श्रे येग्र शर्शे।

द्वेन्य पुर्वे । कियानुनान्य प्राप्त व्याप्त क्षा क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्ष

र्त्तव क्री की जगारा भी है। देव अर्थित यात्र स्रमारा स्रमारा में प्रमारा के स्वास्त्र मुं मुं प्यमः क्रिं प्यमः विम दे ने स्याया साधिक प्यवे द्वीरा दर में प्येक के साहित द्वा मक्रियाः इत्राक्ति के त्रीयमा निवा । विषया क्षिया क्ष्या क्षिया क्ष्या क्षिया क्षिय क्ष्य क्षिय क्ष्य क्षिय क् चार्यरमा गीयावसूत्रकीतमान्त्राक्षी.क्षी.क्षी ध्रयःश्राटमान्वयः सीविद्यात्रमान्यां व वर्चुवःक्रुःचमाःक्षेत्रचानाः विवा दे द्वीयाधिकः पवः श्विमा दरार्धः धिकः निवास वेयानुःर्हेन् सेंट्यान्डवा । इसयान्नी: स्टायानुन एवें। खेयानुस्ता इसा ब्लेब साधिव परि ख्रिम हो। दे खुम साय ह्रव साधिव परि ख्रिम। छ्रिम ह्रास साञ्चिव जिट.री.मानक्षेत्रक्रमा विमानिस्मा क्षेत्रक्षातिरिदात्ते जमाक्षे हो। पटा वर्षाचिषासी, मक्क्ष्यात्र हो र ततु ही वोष्यातह वो वोषीमात्र ततु हो र । सैवा श्चे भी की त्राचि की त्राचा की की स्थान की स हिरा हिरकुः वया है। है। वहुर पावया है। इस्रायर देवा हिरावया है। गुन र्झेट यमगुट हो नवे ही १ ५८ में यम है। १ वर्गुट वर्गु र नी नुगमा यम यदे हिरा बहुरायाध्रयात्रे माय क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र विद्याप्त क्षेत्र विद्याप्त क्षेत्र विद्या विद्या याधिक है। कुरि गुकार्रेट या अही। दुका गुजा मुकार्रेट या प्राप्त ही प्राप्त प्राप्त ही प्राप्त है। दूर मृ.लुष.धे। क्रूंशतालुष.तर.तर्ट्रता वहूचतरर.जुषता हथावर्घेट.बी.पर्या. याम्रम्भवात्वमाम्भेष्टिम्। नरायात्वमभायति। मुन्यम् प्रान्तिमाने। भ्रामम् परि शेस्रमास भेताय दियाय पति तस स्वापार में नियाय दिया परि से मा हमायास्याप्तिन्ते। यमायमाहमाया मेममाउमहमाया युवाहमाया तुमा

त्रिमा

ब्राम्मामीकीट्टात्माभ्रमभाभ्राट्टात्माम्भा न्यून्यकात्म्यम्भाभ्राम्माम्भान्यः विषयात्माम्भान्यः विषयः विष

विव 'तृ 'से 'यद्य ८ 'दे। दे 'इसस 'र्ड्स य'येव 'तृस 'त्र वे स र्ट्स मास यस 'यद 'र्ट्स य यान्तरावेन व्रवार्धेषाणु प्रतास्त्र प्रतार्देव प्राची प्रतास्त्र प्रवासिक प्रतास्त्र प्रतास्त्र प्रतास्त्र प्र वनवायत्रे क्षेत्र १८ में नुष्कृ दे इसस्य से द्वारा माना होन दिन के में स्थान र्केन्यायसम्बद्धाः स्वतः स र्शियातर कु. वर्षिया की. यह यह हिया दे कुरा तर हिया है यह दे तर विष्य है या हिया है यह दूर है यह त्रचित्रम्त्रीः भवरा विश्वचित्रम् दे सम्बन्धेद्रप्य वास्य स्वर्ते दे सम्बन्ध *ॻॖऀॱळे*ॱॸ॓ॱॴॸॖॻ॒ॱॻऄ॔ॴऄ॔ॻय़ॸॱॶ॒ॸॱॴॴज़ॶढ़ॴय़॔ऄॱऄॗॸॱॸ॒ॸॱऻ*ॗ*ॿॖॸॱॸढ़ॱॴढ़ॱ वर्देर्यम्यद्वायवे क्षेत्रा यम्भेर्दे । विषम्पर विर्वेष्टे भेर् वेषाम्बर्धरमायवे द्वेर। स्व क्रम्बायायमा सहस्य न्वाव हिन्यवे दुर नु हे पवे क्रं नवी स्रोधान स्वाद्ध द्वाद्ध द्वाद के'च'य'देश'दवुद्वी'चश्रस्य से प्रथम से वर हे स्राय से ही 'चर वय वे वि वे भ्रुवि से दे। देश वर्षित वी तर्य सारा तर्ष के त्र कि व क्या सारी से दे ती स्था से र्श्चितःग्रीयायेग्ययप्रायम् सूत्राययम् देयाय्तुरामीयम्यायायम् वर्धे सुरा र्यरक्षेत्रभाषायरपर्युत्रप्रश्रियपर्युक्तियर्वे अस्तियप्रविक्षात्रियाकेक्ष्रिय દ્યાં ક્રેલે ક્ષેદ વર વન ફો બિટ્ડે માસફ્રિક ન માલદેવા માર્કેન્ટિયા છેવા માર્કેન છે. સ્થેતા मिर्मायात्रेयास्याद्विमात्र्यात्रम्यायात्रीयायात्री ह्यादविमात्रीयास्या सु'दशुर'वर'वर्रेर्'य'यर'से'येग्स'र्से ।

भ्रीत्यद्रास्तिम।
भ्रितामधभगक्रियामधभगक्रियामधभगक्रियामधभगक्रिक्षण स्थान्यस्थामधभगक्रियामधभगक्रियामधभगक्रियामधभगक्रियामधभगक्र स्थान्यस्थामधभगक्रियाभगक्रियामधभगक्रियाभगक्रियाभगक्रियाभगक्रियाभगक्रियाभगक्रियाभगक्रभगक्रियाभ

क्री.तच्या.चे.लुब.धे। श्रीता.श्रथा.क्री.क्री.तथा.श्री.चतु.हीर। क्री.ततु.तच्या.चे.लुब.धे। ह्रिब.हुब.तचि.क्री.त्या.श्री.चतु.हीर। क्री.श्रचेथ. चता.तच्या.श्रीया चट्चा.तच्या.लुब.धे। क्रीट.क्री.ता.ध्रेथ.यथा.श्री.चतु.हीर। श्रीश.ची. चता.तच्या.श्रीया.चवर.ता.खे। श्रू.चर.ह्या.त.देय.तच्या.श्री.चतु.हीर। श्रीश.ची. चक्चेट.ता.तच्या.चे.चवर.ता.खे। श्रू.चर.ह्या.ता.टे.तच्या.चे.ह्य.यथा.

न्गु'यार्टे'र्य'यम्द्र'यम् अर्दे श्चे'यमार्से' व्यत्र'र्हेस'यदे रेटें श्चेंद्र'सेसमा सर्देन'तु ग्रुट्र'। विस्त्रमार्थ्यस्य प्रेन्थ्यम् देवसादेवे स्मर्थेन ग्रुट्र'यावर्देन य'र्थेन'ग्रुट्र'। विस्त्रम् स्मर्थेन प्रेन्थ्यस्य देवसादेवे स्मर्थेन प्रेन्थ्यस्य स्मर्थेन प्रेन्यस्य स्मर्थेन प्रेन्यस्य स्मर्थेन प्रेन्यस्य स्मर्थेन प्रेन्यस्य स्मर्थेन स्मर्थेन प्रेन्यस्य स्मर्थेन सम्मर्थेन स्मर्थेन सम्मर्थेन सम

येबप्यविः श्चिम् । देप्यम् पुः तृत्वाप्तम् । वाउदः तृत्वाप्तिवायाः सुः इक्षायमः प्रवाप्ति द्वारा द्रवा छे ८ : साध्येष प्रते वा बुवाया ग्रीया य हुया या विष्णा प्रवास की विष्णा ग्रीॱइस्रायर देवा ग्रेन प्राप्त स्वाची इस्रायर देवा ग्रेन ग्रीस्य स्ट्रायि स्वर हेसा यसेन्यरे द्विराने युषाणी क्यायर रेना द्वेन्य्ये ना ना ना ना क्याय की स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्वाक्षां क्रिंग्या क्ष्रितः स्वाक्ष्या क्ष्रितः क्षेत्रः स्वाक्ष्यः प्रकारक्षितः स्वाक्ष्यः क्ष्रियः
 स्वाक्षां क्ष्रियः स्वाक्ष्यः स्वाक्षः स्वाक्षः स्वाक्ष्यः स्वाक्षः स्वाक्ष्यः स्वाक्ष्यः स्वाक्ष्यः स्वाक्ष्यः स्वाक्षः स्वाक्ष्यः स्वाक्षः स्वाक्ष्यः स्वाक्षः स्वावक्यः स्वावक्षः स्वाक्षः स्वाक्षः स्वाक्षः स्वाक्षः स्वाक्षः स्वाक्यः स्वाक्षः स्वावक्षः स्वावक्षः स्वाक्षः स्वावक्षः स्वावक्षः स्ववक्षः स्वावक्षः स्वावक्षः स्वावक्षः स्वावक्षः स्वावक्षः स्वावकः स्वावक्षः स्वावक्षः स्वावकः स्वावकः स्वावकः स्वावकः स्वावकः स्वावकः स्वावकः स्ववकः याध्येत्रात्त्र दे महिषासुरवन्यायवि द्विमा प्रमासून स्ट्री सर्हेत्रायमा सुमात्त्रमा देग'ग्रेन'न्ग्रेयस'सु'प्रेन्। ।रेस'न्म। मगःइस'देग'ग्रेन'से'मगञ्जा ।वेस' नस्टमा नालक प्यट से हिस प्यट्टा क्रायर देना हो द ग्री ना बुनाय ग्री नाले षविष.शु.तवर.तर.वजा शू.वर.र्जूष.त.चर.लुषा उक्रज.क्र्ज.वी.क्रीष.र्जूष. त्रुक्ति, स्वान्य मार्थित सार्थि हो विष्य हो। सहित स्वीया याया हिता हो। तक्षतात्त्र क्ष्यासिम्मात्री वोचामा से नात्र क्षात्र्य न्यास्य स्वास्य स्वासे नास्य स्वासे नास्य स्वासे नास्य स त्तु विश्वविषा भ्रत्या भ्रत्या क्षु विषय प्रमा स्थापन देश प्रमा प्रमा स्थापन देश प्रमा विषय प्रमा स्थापन देश प में देश के स्वाप्त के कि स्वाप्त के कि स्वाप्त के स्वाप देना सेन्। विश्वापये प्रमेणाय में साया यहार नाय महत्यापये देना मेरिता मेरिता सेना मेरिता मेरि देना द्वेद संध्येत याद्र राये द्वादे से से सम्भाव स्थान स तक्तात्तेत्रक्तात्रिस्रम्भाति वृद्धात्त्व । विश्वाति । गर्येटश्रात्रश्चरत्तराच्यात्त्र्याचेषा ध्रुविष्ठार्टा लटार्वात्तराच्या द्रवा द्वेद छेषाय क्वेंद्र प्रदेश स्रवषाया द्वेंद्र षायदे क्वेरा वि छेवा दे स्रवा सुरुषा त्रम्भत्रत्र द्र्याचिर ग्रीमतर्भमत्र क्ष्याचिमम् ८८। तक्षयाक्ष्यापूर त्रायाद्मिरमः

त्तुः चैटः खैचः में अभभावभ्रेट् । विभावभिष्यत्तुः हुर । वृद्याचेटः । चृवाकुषः त्तुः चैटः खैचः में अभभावभ्रेट् । विभावभ्रेट् भार्तुः हुर । वृद्याचिटः । चृवाकुषः च्रियः खेचः खेटः स्वितः स्वतः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वतः स्वितः स्वतः स्वितः स्वतः स्वितः स्वतः स्वितः स्वतः स्वितः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वितः स्वतः स्वत

द्विः च्वितः स्वाया स्वाया द्वितः च्वितः चतः च्वितः च्वित

वृषान्तर्भात्त्र्या ।

वृषान्तर्भात्र्याः ।

वृषान्तर्भात्र्याः ।

वृषान्तर्भात्र्यः ।

वृषान्तर्भात्र्यः ।

वृषान्तर्भात्र्यः ।

वृषान्तर्भात्र्यः ।

वृष्णान्तर्भात्रः ।

वृष्णान्तर्भाव्याः ।

विष्णान्तर्भाव्याः ।

विष्णान्तर्भाव्याः ।

विष्णान्तर्भाव्याः ।

विष्णान्तर्भाव्याः ।

विष्णान्तर्भाव्याः ।

विष्णान्वयाः ।

विष्णान्तर्भाव्याः ।

विष्णान्वयाः ।

विष्णाव्याः ।

विष्णाव्याः

द्व। वर्ह् न निः श्वर्षा व्याप्त व्या

त्र चे त्र क्षेत्र क्

केनायापठुः पेरापदे श्विरात्री अर्हेरायमेया सेनसायस्य सरसा कुरु पर रास्टा सरमाक्रियारर विराम्नेयाय हेर्यायाता सः इत्याचर तृत्वा भेषावर छिन. तरान्ध्रेयतर ह्याया ज्याय द्वेय ट्रेप्या अध्याप्त प्रवेष प्राप्त ह्याया अक्या <u> ब</u>िर मुठ्ठमा ख्रुं र र्विम मेशा पक्षेत्र पर रहेना शाया रेंद्र ख्रुं र शक्तेत्र रेंप क्षेत्र पर प्रश् क्रुमायक्रीर विषाः सरमायमायक्षेषायर ह्वामाय। ये.श्रु.क्रुमाः स्रियः स्रियः क्रुमायक्षेषः तर ह्यायात। लेज रेपेया येप केंद्र क्र्याया क्रीया मंद्रीय पर ह्याया । सहर र्पाया *े.* ५८ कुर्यमा ग्रीमा पश्चेमा सम्बन्धा समित्र समित् ध्रिम। युटान्चिनायसायर्धेमायायम। श्चितमासुपर्वो प्रमापश्चेनायमा<del>र्हे</del>नमायदे। ट्रेंट्राया वार्ष्यायविद्रायमाग्रीमायक्षेत्रायमार्ह्यमायायम्समानस्यानस्या त्तुः ही र खे. थे। कि. भार्य के. तूर कूच कूच त्लाब र त. भारत चर र ही ही र कू. चा. खेश र ता राजा ग्रीकें नान्ता स्वाकाकें नानी कें नाना र मुस्तिनानी से साव स्वाकिता हिन त्र क्रिंश ही व.श. यही व. की वाय ही व.तर हिंग वाय दे कि वा हिंव क्रिंग त्या वादा र ततु.ही र.हे। जीट.सेथ.क्र्यायाजया डे.प्रच.चीट.चड्डंथ.ह्यायाजी.ह्याताप्रयात्रय. र्भुव्यविक्तिम्यम्भूद्रभ्यविष्ट्विर्द्रम्य क्षुव्यविद्रम्यविष्ट्रिर ५८। वर्भुवाद्याष्ट्ररायराज्यायाराष्ट्रराष्ट्रीर् सास्वराद्यास्वरायराष्ट्रीरा महिसा यानुवाक्षी वन्नेवाकुटायमा अविकार्यायमायुटासर्वेमाने खेवायमान्निसमान्वया चैं इतेशनस्रम्यदेखिमा नस्स्यान्यान्त्री ने हेन यसा सर्हेख्यस

यद्गःजान्यम् द्वितान्त्री यद्वम्यावद्वन ह्वित्रः ह्वितान्यम् वित्रः स्वितान्यम् वित्रः स्वितः स्वितान्यम् वित्रः स्वितः स्वतः स्वितः स्वितः स्वतः स्वितः स्वतः स्वतः स्वितः स्वतः स्

यःयः द्वीरमानेमायम् यदेवमायाने द्वीरमायमामार्मेरारेग ।

यद्वाचित्रस्यद्वित्ते। द्वित्तर्वेद्वित्वे क्वित्त्वर्वेद्वे त्वित्तर्वेद्वे विद्वाचित्रस्य द्वित्वाचित्रस्य द्वित्वाचित्रस्य क्वित्त्व विद्वाचित्रस्य क्वित्त्व क्वित्त्व क्वित्त्व क्वित्त क्वित क्वित

चाहित्र पादे निवासी स्वास्त स्वत् क्षेत्र पाद स्वत् स्वास्त स्वत् स्वत्

च्यांत्रस्यांत्री ।

च्यांत्रस्यांत्री ।

च्यांत्रस्यांत्री ।

च्यांत्रस्यांत्री ।

च्यांत्रस्यांत्री ।

च्यांत्रस्यांत्री हिमायकाण्याः ।

क्रियांच्रस्यांत्रा हिमायकाण्याः ।

क्रियांच्रस्यां हिमायकाण्याः ।

क्रियांच्रस्यांच्यस्यांच्रस्यांच्रस्यांच्रस्यांच्रस्यांच्रस्यांच्रस्यांच्रस्यांच्रस्यांच्रस्यांच्रस्यांच्रस्यांच्रस्यांच्रस्यांच्रस्यांच्रस्यांच्रस्यांच्रस्यांच्रस्यांच्रस्यांच्यस्यांच्रस्यांच्रस्यांच्यस्यांच्यस्यांच्यस्यांच्यस्यांच्यस्यांच्यस्यांच्यस्यांच्यस्यांच्यस्यांच्यस्यांच्यस्यांच्यस्यांच्यस्यांच्यस्यांच्यस्यांच्यस्या

पार्श्वनात्रात्री प्राप्त प्राप्त स्वास्त्री स्वास्त्र

साचनान्तुं स्वास्त्र स्वा

यम। मरमाक्रमायानेमान्याने भ्रास्त्रियायाङ्गामरमाक्रमासु ने राया निर्माण श्रःश्चेत्रान्वेयायावरी क्रियायावेयाद्यायादी श्वाम्यायावरी । निवा वर्षाव्यावेषात्राचाकी क्षेत्रयार्ट्स क्षेत्रयाक्षेत्रवाक्षेत्रवेषात्र वर्षेत्रवा क्रियान्गित्र अर्क्केना न्मा क्षेत्र को क्षेत्र ग्री त्यमन्य परि कुन ग्री त्यक्ष प्रति न ने त्यन्त र्गूब अकूच सूचे शत्रेच भी हुंब ता वैची विपात हुन विषय सिर अर शक्य र्गूब सक्तारमा वसायने कर्षा प्राप्त सक्तारमा द्विय से द्विय से द्विय से प्राप्त प्राप्त से कार्य प्राप्त से कार्य से तर्वे रेगूर्य अक्रुवे अर्ज्य तर्व त्वेवे शर्मे वि द्वेव अर्थे वि वि वि वि क्रिंशणिक प्रिये क्षेत्र हो। क्षेत्र प्रिये क्रिंश विषया स्रम्भेत्र हिन स्रावित स्रिक या रट विट्यो पक्षेत्र पर हिन्याय प्राप्त है प्रावित मिन्याय प्राप्त है सिना *ईं*ट.त्यु.सक्त्रस्य.म्रेट.त्यं.तया.पीट.ट्र.चीत.त्य्री ।युर्य.पीट.सटस.म्रीस.ट्र्यूय.सक्त्यी. संभित्रक्षे ने भेजात्र ने नेविन्स्य वहित्र सेस्य स्थान निविन्सेन निविन्सेन निविन्सेन निविन्सेन निविन्सेन निविन्सेन निविद्या स्थान स्थान निविद्या स्थान निविद्या स्थान स्थान निविद्या स्थान स्था स्थान स्थ ध्रिमातमा ने स्वापस्यायने वायाधिवायये ध्रिमा नवी पक्षेवातमा नवी स्था मु र्र्म्सयामिष्ठेषायेत्रायदे र्र्म्चियाय स्त्रीत्र प्रमानियाय स्त्रीति । स्त्रीत्र प्रमानियाय स्त्रीति । स्त्रीय वर्मेश्वरायद्वाणीयम् वर्षेष्यः वर्षेष्यः वर्षेष्यः वर्षेष्यः वर्षेष्यः वर्षेष्यः वर्षेष्यः वर्षेष्यः वर्षेष्यः *૾ૄૄૼ*ઌૣઌઌ૽ૢૺ*૾*ૹ૽ૼૹૢૢ૽ઌઌૡ૽૽ૼૹ૽ૺ૽૽ૢઽૣઌઌૹૢઽૡઌઌ૽ૢૺઌઌઌઌઌઌ૽૽ઽ૽૽૽ૢઌૡૢૻઌ૽૱૱ઌ૽ૢ૱

यम्द्रेन्यायम् अह्त्युवार्येषा वेषायषायम् विष्यायाः हे। हेन्यायाः सुरायत् विष्यायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स

र्वो पक्षेत्रप्र प्राची खुंवार् विषा निर्मा स्थापि द्वारि हि क्षेत्र वि प्राचा विषय । ने देशयायविष्ये ने परिषाञ्चर ग्रुप्तर प्रमु श्रुर्मर दें। विषायञ्चय यायहें न या ष्याञ्चरम्यत्रः स्वाजीमाञ्च पायम् यद्यस्य मानम्य स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्त वश्चित्वः द्वानिक्षेत्रः दुःवश्चव्यात्रमा द्वाने श्चिद्विवायायान हतः यसः व्वादिक्षेत्रः हो वहतः यवै द्रमे द्वित देश द्रमे वद्रम व्यानुस मस्य माम त्रा वित द्रमे साथवि द्वित । के द्रम र बु'न'यर'अ'थेब'हे। नक्कुन'नु'यप्र'क्र'पेर्'सेर'देश'क्श'र्ग'क'लु'नर'नु'न' धेव यदि द्वे म बु द्ध्या धेन ने ने यन् व म्याय का मनमा के म नु यन् व यायायारा नुहा नुक्षापद के के निर्मान प्रमान के निर्मान के निर्म के निर्मान के निर्मान के निर्मान के निर्मान के निर्मान के निर्म के निर्मान के निर्मान के निर्मान के निर्मान के निर्मान के निर्म के निर्मान के निर्मान के निर्मान के निर्मान के निर्मान के निर्म के निर्म के निर्मान के निर्मान के निर्मान के निर्मान के निर्मान नेग्यन्त्राध्यस्य उन्ग्रीसम्बयः नेग्येन्सः सुन्नान्ते । विस्पन्तेन्निसः ने। सः र्येर देशप्रये द्वी क्चेंट या नश्चियाया यह नश्का न्या प्राप्त प्राप्त है। दे सायह्या विः शुः यत्रेनाः यरः तुः दर्नेषः है। देः कं वियः धेंदः ग्रीः प्रथमा यानिकाः श्रीदः दर्नेषः प्रवेः ફ્રીમા નાર્સુનાત્સુન તરોના સ્તુંવા ખેતી કે વિસારી માત્રમાં ફ્રી કેમ ત્રાવેના પ્રમાણ भ्रम्यश्री दे अभ्राम्य प्राप्त प्रम्य प्रम्य प्रम्य प्रम्य क्षेत्र विकास क्षेत्र प्रम्य क्ष ह्मैन'न्न'ह्मैक'यर'मु'न्निक'ने। अविक'र्यक्ष'सिक'मु'र्खुव्य'म्बिक'नु'र्ह्मेट'न्निक'येवे'

चक्रिम'मृत्यदेन्यं भ्रेम।

विकान्यते स्त्री मुन्न विकान्यते स्त्री स्वाप्त स्

महिषायान्द्रियाम्बितः न्यरः नुः मुष्यान्य। न्यो स्वायः हिनः नु। बेषः स्यायः

द्रमान्नमान्न प्रमुप्ता देन्नी स्वाधुरान्न प्रमुपान्न प्रमुपान्न

नशुस्रायात्र मुद्दान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र

मृत्यालप्त्राक्ष्ट्रमास्त्री ।

स्वालप्त्राक्ष्ट्रमास्त्री ।

स्वालप्त्राक्ष्ट्रमास्त्री स्वालप्त्रीय ।

स्वालप्त्राक्ष्ट्रमास्त्राक्ष्ट्रमास्त्राक्ष्ट्रमा स्वालक्ष्ट्रमा स्वालक्ष्यमा स्वालक्ष्

णुःश्चित्रपुंत्रपुंत्रपुंत्रणुंत्रपुंत्रणुंत्रपुंत्रणुंत्रपुंत्रणुंत्रप

तत्र्स्त्रिष्याचेष्यात्रस्त्रियास्त्रत्र्म् राज्याचेष्यास्त्रत्याचेष्यास्त्रम् स्त्रियाच्याचा स्त्रे तत्रक्त्रिर्के न्र्राम्य क्षेत्र। य्वापाय क्षेत्र न्याव न्या वसन्विन्त्रावम्यान्त्रे क्षेत्राचित्राच्या । देवे स्वन्येत्राम्या यम्बार्यस्य विक्रायम् विक्रायम् विक्रायम् विक्रायम् विक्रायम् म्डिम्'न्म् भिष्ठि। ने सेन् म्यान देन् प्रमान मेंन्य प्रम मेंन्य प्रमान यदे भ्रिमा नियम् वा विक्ति क्रिकायम् म्रिन यापित्र विवर्षे । यिव विक्रायम् स्थाप न्डिन्'गुट'द्र्नेरा'हे। र्रो'वर'ग्री'यह्नन्रा'यार'र्ग्नेन'यदे'ह्नेय'द्र्येत'द्र्येत'द्र्येत'द्र्येत'द्र्येत'द् यःचित्रक्ति। । विष्ठेग देत्रक्तिवायत्रम्डिमायत्त्रस्यस्यागुरःर्सेचाद्रित्रपुरः वेषः बेरः हे 'न्धुन्' यरः 'चुर्वे। । वर्ने वेष्वन 'ग्री 'युरं कीषान् रेषा यह्न बान निर्मान हुन 'वषः र्श्चित्रप्रमास्यायम् । स्वाप्तमान्यायम् । द्र्याप्तमानु । द्र्याप्तमानु । द्र्याप्तमानु । द्र्याप्तमानु । द्र्यापत्रमानु । द्रयापत्रमानु । द्र्यापत्रमानु । द् ने क्षित्र अवि क्षित्र प्रति क्षित्र प्रति क्षित्र वि अवि क्षित्र वि अवि क्षित्र वि चुवि क्रुन या क्रेंस या विवायवे देव गुवाय या या क्रेंस समा वे वा से क्रेंस है। सविव র্টিম'অর'লাধ্যুম'লার্মিঅ'অ'লাব্অ'মেল্লম'মালর'র্টিম'লেঝ'ল্লমে'ম'র'ব্রম'ম্ব্রি' म्रीमा दिन मुन्यायायात्री द्वेषायते म्रु अळन त्यारा पिन दी अवन र्या हिन महिमान के'नम'त्गुर'सेन'य'य'न्मेनमा नेन'मुन'य'य'ङ्गिर्यंतर्यंतरम्यते'यर् ध्रिमा अविवर्धिकित विक्रेम पुष्के प्याप्यम प्येव कि। अविवर्धिक आविव पुः सुंखायिव व र् क्वेर र्वेषप्रेर के अपक्षिर्यं के अपक्षिर राष्ट्र विश्व राष्ट्र राष

यान्नो र्क्ष्याची र्ह्म्साया क्षेक्षाया देवा होना यहान प्रत्या का स्वाप्त का स्वाप्त का स्वाप्त का स्वाप्त का स

क्ष्यामु क्षियान्यिक मु अळव हिन। यश्च्यानु खुयाया क्षिम मु यम ळन दिशा निकायते क्षः वर्षा देवे : र्ह्मेय द्वेव द्वायवाया देवे : न्याय हे : हेवे : यवे : ह्वेय देवे : ह्वेय : देवे : ह्वेय : व क्षेत्र'तु'वर्हेम'केट'। देवे'र्वम'स्रामसुस्राचार्रमसायवे।'यवे'स्रुरा सावस'र्यमहिस ग्रे'वर्हेन'ग्रेर'ग्र्रार'र्थेर'रे। वश्चुव'ग्रु'ख्य'ग्रेस'रव'ग्रुर'ने'स्नाम्स्य'व' जय.चोरींश.चोट्य.त्रपु.श्रघर.श्रोषय.तूर.विश.घटश.ती ट्रेपु.रय.वैंट.ची.श्रोषय. र्येदे अक्ष्ये हेर दे तहूं वे देश पश्चेय हूं वेश मी अविय में जिदर तमें पद ही में अविय र्श्चित्रत्व यारे रे व्यवस्तिया प्रत्याची व्यवस्ति वा महिका महिका मुर्खे प्रत्य हु। द्येर वः रमे.श्वॅट.क्ट्रब.र्चे.र्जे.श्वंट.रं.रमे.क्वंत.मे.र्ह्याता.उत्मा.क्वा.पंबाय.रमे. ळॅ८'यर'वश्चुत'तु'ये के अ' ब' देवे 'द वो 'ळुंवा' च्चे 'श्चें न देवे 'दु 'व चु र 'व 'ये देवे 'दु र व क्रिंग:र्युन:र्येन पक्षेत्र:ह्याया:ग्री:र्ब्स्यायाक्रयान्तर:स्वाया वास्त्रनाया्र्यः ८८.र्षेष्त्रा ४.४८.यधुष्र.रं.योष्याता जीयाचात्राता.रं.योष्यातास्याता धुरा वास्त्रन्यस्मार्थेन दे। स्यान्यसम्बद्धसम्बद्धस्या स्थानेम निरानेन पी चेषाया र प्राचेष र प्राचेषाया इसमा धिव परि द्विर । देश क्विय द्वित द्वित स्वा सम्मा ८८.भिषय, त्रु.जयर, रुवायायम्। भिषय, सूच, प्रथम, ग्री.भक्ष्य, प्रथम, सूच, स्वाप्त, ৾৾৾৾৾ ৴৴৾ঀ৾৾৾ৠঢ়য়৾৾৾ৠ৾৾য়৾ঀ৾ঀ৾৾ৡয়৻য়য়৾ঀয়য়য়ঀয়য়য়ঢ়ৼয়৾ विषायि केंगा वीषा सामित्र किया रहा वी सामित्र क्षेत्र वाषा मानव वा वी मित्र पारी मित्र प क्रिमामीसायह्रिन्यमासी द्वापान्या विरायमास्यावन्यत्रिसीयास्यापत्रीयात्री र्नेब कु स्नु र प्रस्व वया स्वयं है। विषयं दे हे स्वया हिन यर रुव स्वर ने विषयं दे हिर

चाबसार्यः चारा ज्ञानारा वे जा दे प्यारा द्यो प्रश्लेष द्यो स्त्रिय प्यास्त्रसा र्थेन्यायमा न्रायेग्वम्नुरुर्थेन्ते। देर्वेवेन्न्रान्तुम्मा श्रम्युःश्रेत चर अर्थेशत्तु रच में हैं चतु हूँ शता वा बोड़ चूर बोष शत्तु रच में शती हैं रचतु बोर वन नेने पक्षेत्र की दे प्राप्त निवास के प्राप्त के प्रा यदि द्वी पक्षेत्र इपिका स्थिति स्थित प्रति द्वी पक्षेत्र स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित ययक्तरार्धेर्ययंत्रन्वे पक्षेत्र वित्यार्हेव्ययार्थे प्रवीपक्षेत्र क्षर्यार्धेर्ये प्रवीपक्षेत्र पक्षेत्र। म्रीकृत्रित्ने पक्षेत्रके के प्रतिषायक्षित्रासा द्वे प्रत्या प्रतिषाय विषय यन्तर्भी द्वराष्ट्र मुकान द्वी या स्वरायद्वर या स्वराय द्वी या स्वराय स्वरा पश्चेम बिषायम् परि श्वेम दर्मेषायम् नषा श्वीप्ति प्राप्त स्वीपा विषय हिन्या ५८१ ळॅटशर्क्केन्'त्री'त्रेष्ठन'त्रेष'त्र्र्य न्त्री'त्रेष्ठन'त्रेष'त्र्र्य नाव्य स्थ्यायन्त्राय यायाध्येष्रायदिः द्वीरा र्वे स्वेदि द्वी यह्नेष्ठ विषया से हि ह्ये द्वि यर द् द्वि यर द् द्वा या सुस र्ने. पश्चेष्राचिष्यात्त्रवेषात्रक्षेत्राचिष्याच्यात्रक्षेत्राचेष्याच्यात्रक्षेत्राचेषात्रकः युन्य पर्दे व पानिन प्यापन्त । इने पक्षेव दिया अधिव है। पक्षेव न्वव या में स्था तार्केट्र.र्ज्ञेच्र.तायु.स्रेच्रा प्रथाता पश्चेच्याचेषाः विष्यात्रात्रुधेषाचयाः नेता नवीं पक्षेत्र न् पक्षेत्र प्रमेश्व वात्र स्थान स्थान नवीं पक्षेत्र की वादि सम्बन्ध स्थान स्य ने प्रम्माराय प्रदेश । विष्ठम के हे हो प्रदेश प्रमः पुर्व संग्रह्म विषय । पक्षेत्र मात्र भागी र्हेस पासे पारी पक्षेत्र मात्र भागी रहेस पारी से साम प्राप्त मात्र भागी रहेस याधिक द्वीषापित स्वाभा विषाचे रापाके प्रक्षेत्र मात्र षाये स्वाभा या सामित्र मात्र प्रकार स्वाभा

विपःग्रीटा। लूटलाङ्ट्याकारम्। तक्षेथःशालयःत्रकाविप। क्रकाविःक्षे। क्रैं,यक्षियाःक्षेः क्षेत्रयाक्ष्यः विपःग्रीटा। क्रकाविःक्षे क्षेत्रयाक्ष्यः क्षेत्रयाक्ष्यः क्षेत्रयाक्ष्यः विपःग्रीटा क्षेत्रयाक्ष्यः विपःग्रीटा विपःग्रीटा विपःग्रीटा विपःग्रीटा विपःग्रीट् विष्यः विपःग्रीटा विष्यः क्षेत्रयाक्ष्यः विपःग्रीटा विपःग्रीटा विष्यः विपःग्रीटा विष्यः विपःग्रीटा विष्यः विपःग्रीटा विष्यः विषयः वि

महिकासमित्रमान्त्र स्वर्थाम् वर्षः स्वर्थाम् स्वर्यम् स्वर्यम् स्वर्थाम् स्वर्यम् स्वर्यम् स्वर्थाम् स्वर्यम् स्वर्यम्यम् स्वर्यम् स्वर्यम्यम् स्वर्यम् स्वर्यम् स्वर्यम् स्वर्यम् स्वर्यम्यम् स्वर्यम् स्वर

पळ्चात्रभग्रस्त्रं हेत्यं स्वाराच्यं स्वाराच्यं । विक्रान्यम् स्वार्धः स्वाराच्यं स्वाराच स्वाराच्यं स्वाराच्यं स्वाराच्यं स्वाराच्यं स्वाराच्यं स्वाराच्यं स्वाराच्यं स्वाराच्यं स्वाराच्यं स्वराच स्वाराच्यं स्वाराच्यं स्वराच्यं स्वराच्यं स्वराच्यं स्वराच्यं स्वराच स्वराच्यं स्वरायं स्वर्यं स्वर्यं स्वर्यं स्वर्यं स्वर्यं स्वर्यं स्वर्यं स्वर्यं स्वर्यं स्वर

मश्रमपत्रे स्ट्रिंट्य प्रमण्डित प्रमण्डित प्रमण्डित स्त्रिंट्य स्त्र स्त्रिंट्य स्त्र स्त्रिंट्य स्त्र स्त्रिंट्य स्त्र स्

यश्चित्र।

यश्चित्रयश्चित्र।

यश्चित्रयश्चित्रयश्चित्रयश्चित्रयश्चित्रयश्चित्रयश्चित्रयश्चित्रयश्चित्रयः

यश्चित्रयः

यश्चित्यः

यश्चित्यः

यश्चित्रयः

यश्चित्रयः

यश्चित्रयः

यश्चित्रयः

यश्चित्यः

यश्चि

त्र्व। क्रिमश्चित्रायक्षेत्रः ह्निमश्चित्र्यम्। क्रिमश्चर्या क्रिमश्चर्या क्रिमश्चर्या व्यव्यायविष्ट्वर्यम्। क्रिमश्चर्या व्यव्यायविष्ट्वर्यम्। क्रिमश्चर्या व्यव्यायविष्ट्वर्यम्। ह्निमश्चर्या व्यव्याविष्ट्वर्यम्। ह्निमश्चर्या व्यव्याविष्ट्वर्यायविष्ट्वर्यायविष्ट्वर्यायविष्ट्वर्यायविष्ट्वर्यायविष्याः ह्निमश्चर्या विष्यं क्रियाविष्ट्वर्या हेन्द्वर्यायविष्ट्वर्यायविष्ट्वर्या विष्याः विष्यः विष्याः विष्याः

देश्या द्रिया प्राप्त में विषय क्षेत्र क्षेत्

क्षेत्राक्ष्यःक्षित्राक्ष्यः क्ष्यः व्याप्तरः ह्या । विषय्त्राक्ष्यः व्याप्तरः द्विम।

विषय्त्राक्ष्यः विषयः विषय

 ध्रिमा नासुस्रायान्दिसायानाद्वित्यार्थित्ति। पश्चित्रायाचित्रम् नास्यान्ति वित्यसायान्ति । पश्चित्रायाचित्रम् नास्यान्ति । पश्चित्रायाचित्रम् नास्यान्ति । पश्चित्रायाचित्रम् । पश्चित्रम् । पश्चित्रम्यम् । पश्चित्रम् । पश्चित्रम् । पश्चित्रम् । पश्चित्रम् । पश्चित्

मश्रुस्रायाः सहमार्थितः देश विश्वायाः विश्वस्याप्तः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वयाः स्वयः स्ययः स्वयः स्य

त्रिक्ष्याच्यान्त्रम्वयस्थान्यस्त्रिम् वस्त्रम्यत्रिम् वस्त्रम्यत्रम् विष्यस्तर्भिम् वस्त्रम् विष्यस्तर्भिम् व त्रिक्ष्यान्त्रम् वस्त्रम् विष्यस्तर्भिम् वस्त्रम् विष्यस्तर्भिम् विषयस्त्रम् विष्यस्तिः विषयस्त्रम् विषयस्त्रम् विषयस्त्रम् विषयस्त्रम् विषयस्त्रम् विषयस्त्रम् विषयस्त्रम् विषयस्त्रम् विषयस्त्रम् विषयस्त्रम्यस्तिः विषयस्तिः विषयस्तिः विषयस्तिः विषयस्तिः विषयस्तिः विषयस्

चलियायायपुरुष्णिरित्। स्वास्त्रस्य पुरुष्णिर्वास्त्रस्य स्वास्तर्थे स्वास्त्रस्य स

ह्मिंश्वभावक्षर्यायक्ष्यं विभाविष्यं विष्यं विभाविष्यं विष्यं विभाविष्यं विभाविष्यं विषयं विभाविष्यं विष्यं विषयं विष्यं विषय

चत्रियाञ्चयते देश्वित् निष्णा क्षेत्र विश्व विश

क्रम् विषान्ता इसावित्रित्वायायायमा हिस्सिन्त्रा विषान्यस्त्रायित्र इसामित्रिक्षिन्यायायम् प्रतित्वायायायमा हिस्सिन्त्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्र

चन्नेर्यसंन्यस्त्रं ।

चन्नेर्यसंन्यस्त्रं ।

चन्नेर्यसंन्यस्त्रं विद्वास्त्रं विद्वासंत्रं विद्वासंत्वासंत्यं विद्वासंत्रं विद्वासंत्रं विद्वासंत्रं विद्वासंत्रं विद्वासंत्

मुद्री विश्वास्त्रीयश्ची अर्देशयक्ष्वां विह्नियाय प्रतिश्वास्त्री वर्वेशय विद्वास्त्रीय विश्वास्त्रीय विश्वास्

चीत्र म्वस्य प्रति द्वीत्र । यद्वीत्र प्रति द्वीत्र प्रति द्वीत्र प्रति द्वीत्र प्रति द्वीत्र प्रति द्वीत्र । विश्व प्रति द्वीत्र प्रति द्वीत् प्रति प्रति द्वीत्र प्रति द्वीत् प्रति द्वीत् प्रति प्रति द्वीत् प्रति प्रति द्वीत् प्रति प्रति द्वीत् प्रति द्वीत् प्रति द्वीत् प्रति द्वीत् प्रति प्रति द्वीत् प्रति द्वीत् प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति द्वीत् प्रति प्र

स्यार्णित् दे। त्रो स्ट्रीत्य या महिम्याय प्रक्रिया प्रक्रिया या सक्रिया प्रक्रिया प्रक्रिय प्रक्रिया प्रक्रिया प्रक्रिया प्रक्रिया प्रक्रिय प्रक्रिया प्रक्रिय प्र

ण्ट-प्रशिक्तान्त्राच्न-द्रिक्ताः साम्युक्तान्त्राच्न-त्राक्ष्ट्रमा व्यक्तान्त्राच्न-त्राक्ष्ट्रमा व्यक्तान्त्राच्च-त्राक्ष्ट्रमा व्यक्तान्त्राच्च-त्राक्ष्ट्रमा व्यक्तान्त्राच्च-त्राक्ष्ट्रमा व्यक्तान्त्राच्च-त्राक्ष्ट्रमा व्यक्तान्त्राच्च-त्राक्ष्ट्रमा व्यक्तान्त्राच्च-त्राक्ष्ट्रमा व्यक्तान्त्रमा व्यक्तान्त्रम्यान्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान

क्ष्यः मुक्ष्यः प्रक्ष्यः प्रक्ष्यः प्रक्षः प

इंद्राम्डिमायाम्बुमा मुसुम्यायायान्यान्त्रमादिमायान्यान्यायान्त्रमा स्वा ५२.व्रिन्यत्वा द्रियाः ध्वाप्तराव्यित्याप्ता प्रश्चित्राच्याः स्वाप्तरायः व्याप्ताः व्यापत्ताः व्यापत्ता ब्रिट्रपानिक्षा द्वारीताताकु उत्ति किरानिष्ठे भाषा स्थानिक स्वार्थिता पर्वे. निहें अर्थे प्रदे द्वा निकास्त्र निकार मान्य निकार मिन्न के प्रदे प्रदे प्रदे दे दिन प्रदेश निकार मिन्न प्रदेश पवर र्याया खेर प्रवेगा के कार्या खेर । वाके का या र र मा खुका या का अपर र्याया खेर । वहसार्यायाश्चेन्यविष्कृत्रायात्वेन्। त्रुवायसार्वेसायबदार्यायाश्चेन्यविष्कृत्रया व्देन। यनुब्रायबायनु प्रदेश या ब्रेन प्रवेश महेब में प्रवेत। यकुन प्राप्त प्रवासिक न्यवस्य सेन् परि निष्ठे में मिन्। पर्यु प्रकार्मे स्या है स्वया या सेन् परि निष्ठे स र्थे हिन्। वरु मुडेमायमा द्वी स्पेरमा ह्वीन प्रतास्त्रीत प्रतास्त्रीत प्रतासी विकासी व्देन वद्ग्विषायषास्यायायाञ्चनायदेग्विष्ठायदेन्द्विम ने इसस्याययाकेमा देन्य अञ्चल्ता के अञ्चलाम्य अञ्चला के अञ्चल के अञ्चल के अञ्चल अञ्चल स्वतः अञ्चल अञ्चल स्वतः अञ्चल स्वतः अञ्चल अ म्बारकर्द्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त् वकर र्र्र्रिय विश्वेर है। ह्युर्याय विश्वेष्ठ क्षित्र प्रमुक्ष या यथा। महिराय रहा न्याय प्राप्त निवास प्रमा निवास के विकासी मिला प्रमान के विकास के विकास के विकास के विकास के विकास के विकास के ये. है। कूरा मूरा मेरीशता थे खरारा मं अरा की मी क्रा मेरी मारी है। से प्रत क्रिया म्बार्यस्थात्राच्याचे सार्यहेर् त्राच्या के सम्बद्धाः स्थान चेन्द्रे पार्के चे प्येत प्यते क त्र शायित प्यते क्षेत्र।

दें बा रव फु चुर परे से वर में स्याय स वें वाय में वाय र हो दाय से खुया

देन्द्रराधेकार्सेत्। विवायासीक्षस्ययायास्यसुदायवे स्त्यादे द्वराधेकाले का वस्त र् भेरि दी क्षित्र के बर्गे प्रति प्रमेश महिन या प्रहेन मा प्रमुदाया वर मि के व चल्रानास्त्राक्ष्मितायानहेत्रात्र्याच्यून्या क्षात्रात्र्यास्त्रात्राक्ष्मात्रात्राक्ष्मात्रात्राक्ष्मात्रा पर्यूट पा पश्चपय र्धेटका सुर्भेट परि र्भेड मानसूट पर्दा पर्दे पर मानस्य पर्दे । वया व्यवस्थान्यव्यात्रात्वस्थान्यः चित्रः भ्रान्त्रः विद्यात्रात्रः विद्यात्रात्रः विद्यात्रात्रः विद्यात्रात् र्देबाबी वाबसायार्स्सेटासमावाबसाग्री सामायासानुसायरा सुरायासा सुरासी सुरासी रुटायविःश्विम। बुःयवे ग्रुःयार्थे दिःदे। ग्रुःयारुटायमः वेषायाद्या। सुटाक्षे सुटा इ.क्ट्रुम.च.त.क्षमार्खे.पठु.ही र इ.म.खेंग.तमा.च.म.ज.वींग.तठु.तये.लूपे.उर्वेट. ब्रेटा शबियात्र्युयार्थ्यायायाया युष्यताबियात्रयाची प्रदेशताया रे. वेषायर विध्र रावदे. ही रा चि. य. था. रेट. त्र रावदे खेर था. रेट. ही सवा क्रेरम्बरप्रसेष्ठुरबिर्। हुरणर हुसेर्मणर क्रिम् रुषावसामी के बु'व'र्पेर'रे। क्वें'वुर'ववे'र्वर'र्रु'वुष'म्। नमःबुर'लु'व'र्रर। नर'स'य'ग्नमः मुंशक्रें ना गर्भे हुँ र में कें लु पर पु प्रायेश देश लु कुंवा वा पर्वे प्र स्व वया गुव दुः हुँ द पा रु द पा द व प व हुँ विषा व स्व स्व प्य प गुव दुः हुँ द प रुट य द्यापकी देवस्या विश्वाल यम पर्दे दिया की प्रमादी विदास में प्रमादी पर्दे प्रमादी परिवार 

सक्तः पुंत्रां स्टेश्वां विद्या स्वार्णः प्रियाः स्वार्णः प्रियाः स्वार्णः प्राप्तः प्राप्तः प्रियाः प्राप्तः प्रापतः प्राप्तः प्राप्तः प्राप्तः प्राप्तः प्राप्तः प्राप्तः प्रापतः प्रापतः

तर हिंदश क्रियत प्राप्त प्रवास क्रिया प्राप्त विवास क्रिया क्रिय क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया त्वाची कें लु के दिवेषया दर्ग क्रियु र दु रिंद साय सारी साद र रेविसाय सारी साद र रेविसाय सारी साद र रेविसाय सा त्तर्ता र्मायर्वेशम्बर्भार्चेत्रम्बर्भार्चेत्रम्बर्भात्रम् विष्यायस्य ब्राम्नुचार्टर.क्ट्याङ्ग्रीर.क्री.चर.क्टर.टी.उर्कीर.च.क्ष्यश्लाब्र.ततु.ह्येरा चारीशाताची. वविन्द्रीम्बारायस्यार्थेन्द्री वन्दायन्द्रान्तुः वावर्द्रायन्द्रा र्रीकिरावर्द्रायः हें से न्या नार्रा के विकादिर नियम स्थापिय महिना विकास के नियम मिर् वळ्याचार्टा मञ्जायमापटावसायर्म्साचन्ने चर्डासार्म्यस्य स्व स्व स्व राष्ट्र वक्षमभाराद्रायमभाराज्ञीयाद्रा कुप्ततुरावरा व्याप्तम्भाराज्ञुवातु मुक्षियते विराया मुत्राया मुक्षाय दे प्रायम मुक्षाय दे प्रायम प्रमाय प्र १८१ सम्बद्धम् गुम्द्रन्ययम् द्वेद्रायवे यम् यदेवस्य यद्वा में स्याधुनस्य यद्रा देदरमळ्ट्र अपवे दुरासह्य हुर पाइस्र अपिय परे हिरा के दर्द त्रतः ही मा सामान्या सामान होता निया स्त्रा माने माने सामान स्त्रा हो समान स्त्रा हो सामान स्त्रा हो सामान स् ययामान्रभायद्रीयास्त्रमासुसाद्धेत्याप्यस्तुत्रम्भाने। द्रम्मस्यस्ययास्त्री ।मान्रसा यसम्बद्धाः विष्याचित्रं विष्याचित्रं विष्याचित्रं विषयाचित्रं विषयाच्यं विषयाचित्रं विषयाचित्रं विषयाचित्रं विषयाचित्रं विषयाचित्रं विषयाचित्रं विषयाच म्बर्भित्रिः त्राचित्रं त्राचे स्वर्धात्रं त्राचित्रं विश्वास्त्रं त्राचित्रं विश्वास्त्रं त्राचित्रं विश्वास् वे के चे द दें। दे द प्रमान प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के

ग्रेशर् स्रिर्चेश्रप्रेर्च्याये स्रित्ते व्याप्त्राचित्र स्रित्ते स्रिते स्रित्ते स्रिते स्रित्ते स्रित्ते स्रित्ते स्रिते स्रित्ते स्रिते स्रिते

 यश्यायानेश्वर्तेष्व्यात्त्रिश्चर्ते निह्नव्यात्रेष्ठित।

यश्यायश्चित्रायत्रेष्ण्व निह्नव्यात्रेष्ण्व निह्नव्यात्रेष्ण्व निह्नव्यात्रेष्ण्व निह्नव्यात्रेष्ण्य निह्नविष्ण्य निह्नविष्ण्य निह्नविष्ण्य निह्नविष्ण्य निह्नविष्ण्य निह्नविष्ण्य निह्नविष्ण्य निह्नविष्ण्य निह्नविष्ण निष्ण्य निह्नविष्ण्य निष्ण्य निष्ण्य निष्णविष्ण्य निष्ण्य निष्ण्य

श्राट्यंत्राचिष्ठश्च इत्राचित्या हे.हूँ ट्राचिष्ठश्च छुचाट्ट्यं प्रस्ति चीषात्रह्यं चेशः श्राट्यंत्राचिष्ठश्च इत्राचित्या हे.हूँ ट्राचिष्ठश्च छुचाट्ट्यं प्रस्ति चीष्ठश्च छुचाट्ट्यं विश्वापत् क्षेट्रं प्रस्ति चीष्ठश्च चित्रं प्रस्ति चीष्ठश्च चीष्ठश्च प्रस्ति हे.हूँ ट्राचिष्ठश्च हे.हूँ ट्राच्या ह यम् स्था बन् प्या विकार होता नुष्या विकार होता नुष्या विकार होता नुष्या विकार होता विकार होता होता होता होता ह

क्रियायतः क्रियायत् व्यक्तियाय्यायत् । स्याद् क्रियायत् क्रियायत्

भक्षत्र क्रियान् स्वास्त्र स्वस्त्र स्वस्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र

द्वापादिराष्ट्रवापदाद्

प्रिन्त्। विश्वत्तर् अत्ति स्वा च्याप्त अत्याप्त अत्याप्त अत्याप्त अत्याप्त अत्याप्त अत्याप्त अत्याप्त अत्यापत प्राप्त प्राप्

ড়्वाम्निष्णान् स्वाम्यान्त्रात्त्रे स्वाम्यान्त्रात्त्रे स्वाम्यान्त्रात्त्रे स्वाम्यान्त्रे स्वाम्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्रे स्वाम्यान्त्रे स्वाम्यान्त्यान्त्यान्त्रे स्

विश्वा क्षित्रमान्त्र विश्वा विश्वा विश्वा विश्वा विश्व क्षिय विश्व क्षित विश्व क्षित विश्व क्षित विश्व क्षित विश्व क्षित विश्व क्ष्य क्ष

यदेतुः ख्वांत्रिष्ठसाने अच्चाः भ्रोन्ते क्षांत्रिष्ठसाने स्वर्णात्रिष्ठसाने स्वर्णात्रिष्ठसाने स्वर्णात्रिष्ठसान्ते स्वर्णात्रिष्ठसाने स्वर्णात्रस्

म्चित्रम् क्षेत्राचक्के स्वर्धः स्वानं स्वर्णः स्वरंणः स्वरंण

महिसायायार सेरि दी। सक्त मिलिये दिन दिन दुन से सिराय वर ৾য়ৢৢ৾৾৾য়<sup>৽</sup>য়ৢৢ৾য়৽য়৽ড়ৼয়৽৸৴ৼৢয়ৣ৾ঀ৽৸৽৸ড়৾য়ৢয়ড়ঢ়৸ৢঢ়য়ৢ৾৽ वविष्त्रम् पुष्यम् अर्देर्यस्य सुम्मु सुम्मु सुम्मु सुम्मु स्मिन्न स्मिन स्मिन्न स्मिन्न स्मिन्न स्मिन्न स्मिन्न स्मिन्न स्मिन्न स्मिन स्मिन्न स्मिन स्मिन्न स्मिन्न स्मिन्न स्मिन्न स्मिन्न स्मिन्न स्मिन स्मिन्न स्मिन स्मिन स्मिन स्मिन्न स्मिन यासुर्वणमि वृत्यासर्वियम् भेषायात्रामित्रेषाधित्यविष्ट्वेम। वरुषायासर्वि यर वेषायायाम्बुसार्धि दो दर्गेषायव दिन मेश सूच या वर्षायास देव यर विषयान्ता नवानामुद्धेन्यमानेषान्वनायायस्यायस्वायम्बर्धायमानेषायान्ता न्वावान्वीयावारायराक्षेन्यविन्वारावाक्षावाद्यायरुषायास्त्रायास्त्रायाः र्थेन्यविद्धिम् हेर्भासुः वरुषाया स्रोटेन्यमः नेषाया वान्नुः सेन्दि। ननानायविः इस्रसु: नवानायरस्य यास्त्रियर स्वस्य । नवानायते हस्रसु: श्रुपायरस्य या सर्वियर नेषाया नगगयरे हेषासु गविराय यह साथ सर्वियर नेषाया हुत त्तु. ह्या. सी. मी. त्या. त्या तासर्थतर जेशता श्रीयतपुरह्यास्यावर यायक्यतासर्थतर जेशता वावर यदुः हुस्र सं योषट्य प्यायक्षाया स्रोहेष्य या स्रोहिष्य सं प्यायक्षा वार्षित वार्य वार्षित वार्षित वार्षित वार्षित वार ताश्रम्यत्र त्र नेयत्। येषट त्रु ह्यासी श्रीतात्र यात्र यात्र स्थाता स्थाता शुः फेर्-प्रदे द्विम। रूट रेप नासुस की सक्त नाति रेपेर हो। रने द्विम प्रवास हिन्य यहेव,वराश्राक्ष्टमार्श्वेरि,त्याचात्तर् ह्यास्,ट्रेच्यताताह्नचाःसं, क्याताह्यां श्राताह्य क्रम् अर्थे द्वार्याम् । यद्यात्र वर्षायाः सर्वित्याः स्वार् प्रतात्र स्वार् प्रतात्र स्वार् वाक्रूट विः ह्येचेश्वरायाचारातः हैशासुः तुः वेत्र उत्र व्यवस्वाद वीशागुट तुः वेत्र वात्वयः मान्यान केंद्राव केंद्र प्राचिश्वाची श्रम्भाची श्रम्भाची स्थान स्

म् स्यावश्याची अक्ष्यं विद्या स्थाय स्याय स्थाय स्थाय

चटायाने स्थाप्त कार्या स्थाप्त स्थाप्

वित्तः त्रे। हे स्त्र-प्यवन्यास्स्रस्य स्वायः स्वायः वित्रः वित्

सूच्यास्थाक्ष्यास्याच्यास्य स्थान्त्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र् यक्षर्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र

प्रत्येक्षेत्र प्रत्येक्षेत्र प्रक्षेत्र प्

त्युः क्षेत्रा चर्यात्वेष्ठ स्वात्वेष्ठ स

द्धरःवेषाणुः स्थायि दे। पक्षषः ख्याची प्रमान द्वा स्वरं प्राप्त स्वरं प्राप्त स्वरं स्वरं प्राप्त स्वरं स्व

यदास्त्रस्य क्षियाद्दा क्षेत्रप्य क्षियाद्दा क्षेत्रस्य क्षियाद्दा क्षेत्रस्य क्षियाद्दा क्षेत्रस्य क्षियाद्दा

क्षुर प्राक्षे यह दु र प्रकृर परि क्षे दे था वर्ष प्रायमा दे पि के दि परि हि द तर्दा विष्टुर्दरवर्षम् । विष्युर्वे विष्युर्वे विष्युर्वे विन्'ग्रे'क्केंक्षान्ता वेन्यवे क्केंक्षान्ता मिलेवे क्केंक्षान्ता प्रकायवे क्कें वयान्ता क्रिन्यायवसाम्बर्धाः क्षेत्रवयाः क्षेत्रवयाः क्षेत्रवयाः क्षेत्रवयाः क्षेत्रवयाः विता र्येर्जिन्दी सम्मान्द्वी स्मामान्द्रीता सुत्रित्तेन प्यत्येषम्परिस्वीमा नेप्यतः कर्यमञ्जीष्मर्भीर्नर्र् नुमञ्जी क्राञ्चिक श्चीष्मराम्भवि हो। र्मे र्श्वेर स्रिये वक्षययवे सम्भायायमान्ने वितु मन्ते न द्वे मन्ते न स्था सम्भाने न सम्भायमा र्'त्रम्'यदिः स्वासायमार् र त्रम् वार्मानमित्रपदेः सुर हो र खेरायर हो र र मिमायदेः स्वर ने द्वर प्रमार के प्रम के प्रमार के प्रमार के प्रमार के प्रमार के प्रमार के प्रमार के यरक्षे क्षेत्रकार्की विष्ठेषायार्थेन ने। सामुषायषा ग्रुषायाञ्चे। केंत्र सेंट्र षायासा यम.चैम.त.दच्चेंद्रः। भ्र.चेम.त.देट.यच.भ्रदे.तम.चैम.त.त्व.त.त्व.त्व.त्व.त्व.त्व. यार्थेन ने। क्षेत्रायाञ्चा क्षेत्रायेक मर्केन यार्यवेता नुनारके मर्केन यायता य.लुब.त्रपु.सु.म। यध्न.त.लूर.री यश्रभ.त.खे.रूट.कु.दसुट.क्ट.योशेश.ग्रीश.येश. पर्वः सुदायाम्बुरुष्ये विष्यः प्रितः देव सुदायाम्बिर्वा स्वरं महिष्यः मुद्रायः महिष्यः महिष्यः मुद्रायः महिष्य लहा वर्षेत्रात्रेयाचेर्यात्रेयाच्यात्रेयाच्यात्रेयाच्यात्रेयाच्यात्रेयाच्या हीर। लट.म्रा.भविमातमान्ने हिवातान्नेटारी. येमायारामा विमानमाया क्रेबर्भ्यनुष्णगुरम्बर्दिन्यस्य पुर्वेद्यस्य विश्वव्य ग्रीमिटम् कुरायर कुर

लेगहेरपुष्टित्य्युरपा दिहेरपूर्या । वेगहेरपुष्टित्य्युरपा दिहेरपूर्या ।

ने स्तर क्षित्र क्षित

याश्रीं या श्रीं या क्षेत्र स्वास्त्र स्वास्त

यार्श्चिम् प्रदेश स्वाप्त स्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त

भूट.री.पचर.त.री.क्ष्मश्च.त.ह्चमश्चश्च क्ष्म.चंट.त्यर.क्ष्म.लूच. भूट.री.पचर.त.री.क्ष्मश्च.त.र.ह्चमश्चश.क्ष्म.चंट.त्यर.क्ष्म.लूच.

बिटा। स्थयःक्षेत्रःमञ्जिगःर्यामारः सुटान्दरास्वायविषामाः अगाने। मादा अगास्टान्यदाः रुषात्रा दे.तमायावयात्रप्रयाचिरास्थायारात्रयाः वयाः प्रदाराज्याः हिरा ८८ संस्थित है। मह वारे सम्मित्र में अपन से स्टिश मह सम्मित्र से स्टिश से स्टिश से स्टिश से स्टिश से स्टिश चि.रेट.खेटा रट.धेर.यायम.ग्री.सं.मायवय.ता.हूंस.मार्ट्यासाराय.हीर.सूरी विधिमा याधित हे पहत्र सामका ग्री धित हत दर्द से प्यत मार बना देश मात्र में सामक र्रा.स्योबराची.श्रा.में टाष्ट्रायटा, होटा योष्ट्रायी मिंत्रायी की सामान करा हो सामान करा हो सामान हो हो हो। क्रिया स्राप्तरायम् त्यमा मृष्ट्रास्यम् अत्र मार्किमा न हा स्वर पान्यम् अत्र स्वर प्राप्त स्वर प्राप्त स्वर प्र ने ने प्रतासीन प्रतासी मा सिन्य से सिन्य से सिन्य से सिन्य से सिन्य परि सिया से निया से सिन्य परि सिया से सिन्य परि सिया से सिन्य से सिन्य परि सिया से सिन्य परि सिया से सिन्य परि सिया से सिन्य सिन्य सिन्य से सि क्रि. र्जिय रे. तयाता रे मूर्यातातु क्रिया पर्वेता तह्य विश्व या याय में शाय मूर्याया मुन्यायायनुवायानेषायासेन्स्रीनुदाधिकायासामिनिषाञ्चासुनाषानेरान्निनामानः रुट र्ट व्हर के द्वीं बाहा वित्र प्रवाय हुय गुरा के वाय दे हिर है। सुमाय हु तात्रमा क्वाचिष्रमात्रम् श्वरायर्थक्या विष्या विष्या विष्या स्थित् । बेर्नायर्द्रा व्हिमर्द्राच्या वेद्वायर्द्रम्याय्ट्रेव्या विस्तर्भुत्देवस्य याने हिन स्वास्य प्रमुक्ता विकामसुर्याय हिना विकासे । विकासिका प्रमुक्ता विकासिका वि वहरित्रे वर्वायानेषात्र स्याक्षेत्राम्डेमाम्सर्द्राप्त्रास्त्राय्या हें क्षर वेषणी स्पार्ट स्वायमान्निययंदे द्वेरा बेर व हेवामाना सुव हे। वर्ष र्भेम्रम्पर्यस्तित्तर्भः विक्रित्

दिन्। रदक्षित्रम्बर्थायाहेब्देश्चित्रयरम्बर्द्धर्थायादेखायहेब्द्धर्यर

*ક્*ર્વાયાયયા.તા.વર્જે.તાય.તા.વર્ષા.ઘીયા.જી.જી.વી.તામ.ર્જે.ત્રીવાયા.વામ.પ્રેમ.પ્રેમ.તા.વેટવો. हेशयर द्वेशम् वे वित्रु वेद विदाय प्राप्त के स्वर्थ स्वर्य स्वय स्वर्य स्वर्य स्वयं स्वयं स्वयं स्वर्य स्वयं स्वर्य स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वर यम्बर्यसेन्द्रहेन्द्ररम् द्वाबेन्द्रा देख्कन्यया म्बर्यसेन्द्रम्वेद्द्रययम्बद्धाः परुवःपरः मुद्री विशःश्रेष्मशः ग्रीः सर्दे मासुर श महसः परुवः सुवः मीहितः या लट. चट. चे. श्र. क्यां के व है। कि. सैया का ने ट. क्या ना के चार के प्राप्त है रा के या म्बर्यन्त्रमाम्बर्यम्बिर्यन्ते त्यः स्चित्रस्य स्वरं चायास्य द्वा चा प्रवित्रम्यस्य स्वरं व ट्रे.सिवा.तक्ता.य.भार्यवीयाविष.चभग.२८.चेत्रु.च्रम.सिवा.भ्रा.चेट.तत्रु.की.भक्ष्य. लूर्रा सैवा.चे.पयु.लीकाकायर्, यम्बावेबाबातारा यस्यातास्य ताब्धिया सुरेसप्ये भ्रिम्मे। युरायमा भ्रमा मुग्ये प्यये प्याने महिसाही यहे यम मिनामा तर्टाचस्यात्राम्बरायावे विषामस्टरायवे सिमा चस्त्रेवायम हेन्याय वर्षा <u>कृ.जूब.बुट.कं.क्ब्र.च.श.रट.कंब.बी</u> चेब्रश्चात्रक्षत्तर.कूँट्रश.कैंर.उर्चे.चर. वि.चर.द्यात्तव.हिरा चस्यामायात्रेयात्ते.वार.पेर.वाश्वारर.हा.ह्यं.ह्यं.वा रेया বার্পপান্ত্রের বান্ত্রপাল্পথ লেল নাথপাপান্তপান সংখূলি পাঞ্চীন সংস্কৌ ন সংস্কৌ च हो हिन न सुर प्रति हो रावे हिर हो। परुषायन व हो सुर प्रति हिर विक्व दे स्वयंदे द्वायर्डे असे से दे दे स्वयं दे से वह दे दि न वायर्डे असे द व्रःसूरःवेषाग्रीःस्याद्राद्यस्य ययासान्त्रायदेःस्री मा

प्रमा मक्क्ष्यंत्र ह्म्मण्यमान्त्र विष्यंत्र प्रमान्त्र प्रमान्त्र प्रमान्त्र प्रमान्त्र प्रमान्त्र प्रमान्त्र भ्रम्भ प्रमान्त्र प्

चिष्यास्य प्रकास र व्हिट्या क्रिया वर्षेत्र । यहा स्वास्त प्रक्षेत्र । व्यास प्रक्षेत्र । व्यास प्रक्षेत्र । त्तर्याः श्रुट्यत्रक्षेत्रत्तरः ह्यात्रात्रवार्याः द्वार्यः व्यवात्रात्या देत्राः स्वार्यः स्वराप्ता क्रुत्राः त्रस्यवाबात्रान्द्रम् त्राम्यायवाबान् देशम्भावाब्यायम् हूट्याक्तृरावक्रेप्यायविष्या के. चराय वर्ष राष्ट्री ही बिषा दर्गा दिया जा का झे ज्या पका ज्या का जा स्था श्री देशकाती वर्षेष तर हिंगका वका जुर के जुर । के केंद्रेर वार्यका की क्षेत्र हैं। यार्चेब्रायात्मा देवानेब्रायान्वेब्राळेन्ब्राणीप्ते विश्वेदान्तेषाणीप्ताया श्रेन्यवे क्षेत्रका नेवे क्षून्यावन्यान्य क्षायवे त्याये क्षेत्र विष्ट्रित्र त्र युन्यक्षेत्रं अर्केष्व देव त्याव हो। स्याच सायदेश स्व स्व न्याव सर्केष यम हो र यदे धुरा मन्तरणमा सर्वेव रेव प्यव हो। यह प्यमाणम्य सुमावमाय प्रामान विग देशपत्र तुर्पुराष्ठ्र प्रवाणप्रमासु से रुप्ति देश हो स्ट है सामित्र ८८.र्सेथ.ताताशा स.क्ष्य.योखय.कु.री.योट.र्नेट.रेट.र्संथ.ता.स्रीय.स्रायपु.स्रेयश.लूर. यवि श्विमा नालक प्यान्य सर्वे के देव प्यान हो। यह्ने का यम हे ना का का वि स्थान स्वीत होता इं.हूंर् .चर्येश.प्रेश.प्रे.तं.तं.केंर् .तंय.लुय.य। चय्यात्रायक्यात्र .कूंट्याकीं र त्यूं. र्दरायमानियात्रु स्त्रिर हो। यक्षेषायर ह्यामानमानु स्थान्य स्विताय स्विताय स्विताय स्विताय स्विताय स्विताय स्व विषायदेः वारा त्रवारे वावषा साय स्थाय स्थित स्थित । क्षेत्र । क्षेत्र । क्षेत्र । क्षेत्र । क्षेत्र । क्षेत्र । निवासियात्रास्त्रीवारी स्थापति स्थापति स्थापति स्थापति सामित्रास्त्र सामित्र सामित्र सामित्र सामित्र सामित्र स

सृष्टा अन्यव्यक्ष स्वास्त्र स्वास्त

बर्न्यायाः स्वाकाः स्

यमः कर्ने ने इस्थायं प्रकृत महिश्य सुर्य त्य ने स्थायं सुन्य विद्य सुन्य ने सुन्य स्थायं सुन्य सुन्य

द्वेर। ने प्यत्यस्यस्य सम्बद्धत्ये द्वितु र या द्वित्य द्वित्य प्रस्ति विकास स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स

वरःकरःदेः इस्रशःहेवः वारः यः वहेवाः गुरः धेरःदे। वुरः सेरः वदः वदः ह्रीसः यन्ता तुन्सेन्रीकन्तयाक्षतुःक्षेत्रयाविकायावका ननेःक्षेत्रस्ये मुक्तस्य सामिन परि प्रसापायित स्वात् । तुन सेन विष्ति दे हे न वायत्व सामायसन पासिन्स क्षेत्रभाषान्द्रप्त्रभाष्ट्रभाषिकायादिःहेबायायवम् सिर्सेदिःस्विदास्विदास्विद्रभाष्ट्रमा त्तुः हुर। अवरायर दृष्टी क्रियवया अवरा अहेर अवरा वहिरावया इटायामहिटा स्मार्नेम्यामहिटा वस्यायामहिटास्मयामुर्येन्यवे स् ८८ में प्रिंट है। वर्षायक्षेत्राचेत्रा महाक्षेत्र क्रियाक्षेत्र क्रिया गायमास्त्रीरायदाः सेसाम्भाषा विषामासुरसायाः स्रमाधितायते स्विमा महिसाया थें ५ दे। त्रु से देवे पर्दे ५ प्यायहे वा त्रु ५ से देव पर्दे ५ प्यायहे व प्यायहे व प्यायहे व प्यायहे व प्यायहे व धिरा देश त्त्र मिर्जन अने दर्शन अस्त्र के दे हैं दे राज्य परीर के सेन अन्तर है। भर्ट्यत्रा । व्यास्त्रिमारास्त्रेराच्चायायास्त्रे । विसामस्त्रमा द्विःसामस्रसाच्चा ईं द्रभारात्ववी वावयाम्भारतिरात्रयात्विवात्तरार्ट्राक्रवाशास्ता वावयः ष्ठी के के खूट पार्टा के के अपने प्रीत्रेय के कि स्वाप्त के कि नावक में कें के रूर पर पर । बें प्रार्थित पर के नाय के नाय के के के के के नाय के नाय के नाय के नाय के नाय के न वसराउर्प्यक्षेयायरामुपासाधेकाते। द्वीसायर्भासामेरामेर्भयाम्बर ५८ वर्दे ५ या यहे ब या सामुदानी या यह स्वाप्त की सुदान वि स्वीप्त स्वाप्त स्वा

विष्याच्या क्षेत्र प्रस्ति प्रस्ति क्षेत्र क्षेत्र प्रस्ति क्

लब्ध् विश्वानिश्वान्त्र क्षेत्र । ट्रिल्स्य प्राप्त क्षेत्र निवानिश्वा निवानिश्व निवानिश्वा निवानिश्वा निवानिश्वा निवानिश्वा निवानिश्व निवानिश्व निवानिश्व निवानिश्व निवानिश्व निवानिश्व निवानिश्व निवानिश्व निव

 ल्य मी। विषालय पानी विषालय से विषालय

यरक्तर्द्वभयायाद्वीबायायेद्दी। यरक्तरसद्विषायदेखेबायाविवाबा यर्दा वरळद्रथेद्रसेद्रभेद्रभेष्यर्यर्य्युरविःकेद्रथिष्ययदेःश्वेर। वरळद्दे यदः इस्यान्त्रन्त्रा युवान्त्री युवान्त्री नियम् नुप्तान्त्रा स्वानुप्तान्त्रा स्वानुप्तान्त्रा स्वान्त्रा स्व र्वेत्यर परेत्रय अर्दे व सुअर् मुविषया पादी दे पर्येषे द्वर दु विषया रव व्रात्मे के न्दर्या अविवर्धे भादे विदा विश्व हिम्भागी के मुभद हिंव न्दर्य अहिंव ग्रीमाद्री द्रे ख्यामी द्रान्दर द्रुमाना वनायामी माम्मानाया ख्यामी माद्र बिटा। सन्त्रामुक्षक्षराञ्च्यायदे स्वायाची या चारा स्वाया स्वाया विषय ब्रिंट. प्रच. थे. वर्षे विषात्र क्षेत्र क्षेत् कर्रित्रख्ता दें त्र सेंद्र विवा छेषा यहें रायर ग्रुष्य प्ये ख्रिरा रे ख़र त्र यदेब परि सक्ब मीयायगाय कुया है। विषाया प्यान मीया युरा मिविय स्मायस स्मायूरा यः इर कुष्यर कर कुर्वे हुँ यायाय वर वया वर्गावाया कुर्वाययायाय पर्वा विषा यामन मुमार्थन केंग्राय्ययाय तृत्यते प्रमाकत मुमार्थन मंग्री मुमार्थन केंग्राय केंग्राय कर प्रायम केंग्राय कर कर प्रायम केंग्राय कर प्रायम केंग्राय क दे'यर'यवग्यर'से'मुर्दे। विषयप'यद'मुष'यर'कर'गुे'र्स्थ्यप'र्देष'यकर'ठेर'। र्भामिष्रिं प्रियाचिष्यायाम् सुसास्य कर्क्ष्याम् विष्यायान्य स्राह्रिया यद्रम्भिन्ते। विश्वयायम् मुश्यद्रिशम्बिसम् माद्रम्य प्रस्ति। यन्द्रम् दर्मन्ययास्य स्राम्य कर्गीशः र्से रायते के मार्य र्से शायाने तकर्यते री रा नेते ख्यापर पेरिने । इसा यम्बर्यास्त्रेन्द्रि विषयमण्यक्तः मुक्षासुष्यम्भित्वर्षेष्ववर्वे दिन्। सुन

यवेन स्त्रे ख्रीना चित्रा स्त्रे प्राप्त स्त्रे प्राप्त स्त्रे स्वर्थ स्त्रे स्वर्थ स्त्रे स

त्या क्षेत्राचे ने त्रिक्ष्य क्षेत्र कष्ण क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्ष

द्रायात्रीयित्रण्णीयत्त्रास्याध्रेत्तर्त्वात्राध्यात्त्रीयात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्र स्यात्रायात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राध्यात्राच्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राच्यात्राध्यात्राच्यात्राध्यात्राच्यात्राध्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राध्यात्राध्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्रात्राच्यात्रात्राच्यात्राच्यात्रात्यात्रात्राच्यात्रात्राच्यात्राच्यात्रात्रात्यात्य

त्रात्तम् अन्त्रात्रम् कृत्वनुत्रात्रम् न्यानायान्तम् ने स्वर्णस्य भ्रम् कृत्वनुत्रात्रम् न्यानायान्तम् ने स्वर्णस्य भ्रम् कृत्वनुत्रात्रम् ने स्वर्णस्य स्वर्य स्वर्णस्य स्वर्णस्य स्वर्णस्य स्वर्णस्य स्वर्णस्य स्वर्णस्य स्वर्य स्वर्णस्

वी:इट'यबेट'दे'यशरकुट'यशर्केवायदे'ध्रेरा

हिल्लर बेर्पिय सुवार्ये रहे। क्वेर प्रवेक्तियर कर दे प्रवास ने के क्वेर सम क्षेत्रयायादी द्रमेषा वर्षियाया वाद्यया वाद्यया वाद्यया विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विषया र्देशमिविदेक्षेमिर्सेयापविदेखाराण्येशसूचायास्वेरायार्त्रा सह्मानुःविदारुदा त.भार्यप्रेयायाक्ट्रास्त्रीं यो योष्यायायीया त्रभारायक्री क्षेत्रपुरक्र्यायक्री स्थारा यर्हेर्यम् मुप्याधेक्यविष्ट्वम् विषयाभीतः दुर्याक्षे यहेर्दि देवे सेहित्समादेः याहेबर्नुः श्रीर्द्रायदेः श्वीराहे। हेब्ब्राळं दशः श्वीन् ग्रीष्ट्राया याहेबर्नु राष्ट्रीया यस्यायाम् नुपर्यात्रे विकास्यायाया विष्यास्य विकास्य विकास्य विकास ह्रे.पर्केट.लूट.तपु.ह्री र.प्री पक्ष्य.तपु.स्रम.ती प्रवातपु.स्रम.ती जैम.तप्राय, वी र्श्चिरमी'नमे'यन् ब'याञ्च'याभ्चेन भ्वेन स्वेन स्वानसम्मानम् विन्यान्यम् नमे र्श्चिरमी र्गायर्वे अर्तात्रकार्त्वे वाकार्यार्वे याचार्यात्रकार्याच्यात्रकार्यात्रकार्यात्रकार्यात्रकार्यात्रकार्यात्रका गविद्वीयनुक्याचेन्यद्वा अवक्रियाविक्याविद्वीयन्त्रियाविद्वायाविक्याव सुःमत्नम् प्राप्तः प्रमार्श्वेदःमस्यः यायायाः सुमायळ्यायान्या निमार्श्वेदायाः र्कें के प्देन्पन्ता निमेर्क्षेत्या सुत्य क्षेत्र प्रकाशित प्यान्ता अम्यार्क्षेत्र प्रवेर क्रं महिषामितः नवे पत्त व पार्श्वे प्यासम्बद्धान प्रते प्रते । क्षे प्रते क्रिया मुप्ता प्रमा वन्सन् केर वशुर र्थेन न। नम्से मसुस्र यस वन्सन सुम हो न न्या ही য়৻ড়৻ঀয়৻ঀ৴য়৻ঀ৾৻ৡয়৻ঀৢয়৻য়ৢ৻ঀয়ৄ৴৻ঢ়৾৾৻ৼৢ৾ঢ়৴৻

र्देज। क्षेत्रभायायवित्रपुरिने क्ष्यास्रवे हेषायारे साधनारने क्षेत्रस्य स्युता

यः अन्तर्भिषः स्त्रेन्य भावतः अत् । अत्या अत र् 'र्नो'र्स्चेरासदे'र्स्कायः ह्वेकाक्षायीं निष्ठेषासुं ह्वेर् 'र्नोस्स्वास' देख्यम् प्यमाद्रियम् मिन्द्री अविक्रमे दिन्य यम् मेन्द्रियम् ५८। ५वे क्वेट अदे ५वे वर्ष सम्मायम के रायर द्वारा प्रवे क्वेरा ५वे वर्षः की मारमा ग्रीर प्रिर्दे। येवार्यं मार्थः से प्रिमा में स्थान की मार्थः महिमा स्वरादिया , पु. पु. ची. ची. स्था क्या प्रत्ये क्षेत्र । प्रत्ये क्षेत्र क्षेत सर्वःर्ट्स्सायः ह्वेत्रान् स्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्र देवाणुमानवी र्ह्मिमायदे प्रवी पर्तुव विष्य की प्रवीय की कि की प्रवीत की विषय की प्रवीत की विषय की प्रवीत की वि वर्षायाच्चरार् पुरावरायुरार् ध्रामिलाया मार्याया स्वाराधिक वित्रामा वित्राप्ति । यवि हे ब र्थित दे। ब र्केंत्र भी द्वारा द्वारा विष्ठा के के विष्ठा ५८। वर्त्राच्यां वर्षे व गर्नेन्यायदे केंया में या प्रति सुदाय में प्रति स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्व र्वटर्नुः चुर्याक्षा र्वो पक्षेकास्य प्राप्ता वरस्य स्वर्च्य स्वर् र्हूमाया इसमार्ह्म द्रास्ति द्रिमा देष्य प्रति हिमा देष्य प्रति हिमाया हैन र् अर्भेट पर द्वे क्वें या अदि क्वें या अदि क्वें या क्वें प्याप्त के किया यदः र्ह्यायः र्ह्यानु यार्थितः यमः दिवो र्ह्ययः यदे र्ह्यायः ह्वी प्याये दिवा स्वी रही । दिवो रह्या स्वी रह्या र्ड्सायादे द्वी क्वाराय र्ड्सायय हिंदा द्वाराय के साम क्रियाय है साम हिंदी के साम हिंदी है साम है साम हिंदी है साम है साम हिंदी है साम है सा र्वे अस्तर्य निमान्नित्र स्थानित्र स्यानित्र स्थानित्र स्यानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित् स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स् 

ट्रस्तज्रक्ष्यः तट्तुं। ।

द्रिक्ष्यः क्ष्यः तट्तुं। ।

द्रिक्ष्यः क्ष्यः तट्तुं। ।

द्रिक्ष्यः क्ष्यः तट्तुं। ।

द्रिक्ष्यः क्ष्यः त्रिक्षः व्यक्ष्यः क्ष्यः क्ष्यः क्ष्यं क्षयं क्ष्यं क्षय

द्याःश्चित्रायाः क्षेत्रायाः श्चेत्रायाः श्चेत्रायाः स्वायाः स्वायः स्वयः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वयः

ताश्चात्रभन्नात्ते चरमान्यात्रात्ते स्वात्त्रभ्यात्रभ्यात् विद्यात्रभ्यात्रभ्यात् विद्यात्रभ्यात्रभ्यात् विद्यात्रभ्यात्रभ्यात्रभ्यात् विद्यात्रभ्यात् विद्यात्रभ्यात् विद्यात् विद्या

क्ष्मंत्रायत् क्षेत्रायत् क्षेत्राय क्षेत्रायत् क्षेत्रा व्यवस्ति क्षेत्रायत् क्षेत्रा व्यवस्ति क्षायत् क्ष्मय व्यवस्ति क्षायत् क्ष्मय व्यवस्ति क्षायत् क्ष्मय क्ष्मयत् क्ष्मय क्ष्यय क्ष्मय क

व्रे सिचा चिक्र त्य की प्राचिक्ष स्वर्ष स्वर्ण सिक्ष सिक्ष

यत्र. खेर्ट. येथ्य प्रचित्र. खंडी स्वारा क्षा क्षेत्र. त्या कष्ते कष्

प्राच्चश्वरूट्टर् त्याद्वर् त्याञ्च त्याच्च क्षेत्र त्याच्च त्याच त्याच्च त्याच त्याच

स्वास्त्र विश्व स्तास्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्वास्त्र स्त्र स्वास्त्र स्वास

त्रीत्त्र्। ।

यश्चेत्रः नित्तः क्षेत्रः क्षेत्रः त्रीक्षः त्रीक्षः त्रीक्षः त्रीत्रः व्यक्षः त्रीत्रः व्यक्षः त्रीत्रः व्यक्षः व्यक्षः त्रीत्रः व्यक्षः त्रीत्रः व्यक्षः व्यवक्षः व्यक्षः विद्यवे व्यवक्षः विद्यवे व्यवक्षः विद्यवे व्यवक्षः विद्यवे व्यवक्षः विद्यवे विद्यव

त्तर्वत्वत्त्रम्भायरः स्वान्तर्वत्रम्भायरः स्वान्तर्वत्त्रम्भावत्त्रम्भावत्त्रम्भावत्त्रम्भावत्त्रम्भावत्त्रम् त्तर्भेष्ट्रम्य्तर्भुर। स्रमुद्रम्भक्षाविषाविषाक्रम्प्रम्भि हूमः यवि हे ब 'दे अर्था यवि 'द्वी र । क्षुर 'वरे वर्षा ग्री 'वेषा 'क्ष्म महिंद हो। दे ने क्षा कर यवि ' हीरा विरायर सळवासे तर्याययाय होता नव्या विराया निर्देश से हिता स्वाप चित्रचार्त्तुं सुरायरावराञ्चरर्याञ्ची देष्यत्रक्षरात्रुं सुरा देष्ट्ररायरा सर्हेर् रव्येयायमा देवे द्वेर कुरे र्ना मेमामेहर यर रव्युर वे मा यर र्ना यर व्वरूषायान्दायम्यायविष्ठस्यायर त्रेमा क्वेनायानुता हेर्नाचेरायान्दा हेब हु अश्याप्ता निविक्त पात्ता दे श्वेत तु त्यात्र प्राये श्वेत र्रे विष योशीरकाश्री निहूर त्य्रेजारी स्वत्त्रकातकाश्रावर हूंशातायोष्ट्रायत कैं. भक्षे र् देव में राया प्रति या यहे वे मावह सामी प्रया रवा हिया में स्थाय मा शुमाय छवा लुब्रन्तरु हिर्म विन्तरु छे बर्ड्स यमित्र विषय विषय विषय मुर् चित्रक्षा क्षेत्र प्राप्त विष्य क्षेत्र भी क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र प्र त्रमान्त्री महित्यत ही र र र र मुन हो। इस पर र माने र स र प्रमान मिन धिव परि द्वि र है। दे विदेश वा बुवाय दे दे दि दे पर धिव परि द्वि र दि स वा भार्याप्रेमार्थ्र मुभमाह्मातव्हमा विमास्ममार्ट्ट द्वेन द्वेन प्रवृत्य कुर्वा प्रवृत्य कुर्वा प्रवृत्य कुर्वा प सु'यन्द्र'य'द्रा यसस'महन्यहिन्स'यदे'द्रने'यही ।स'दर्सस'हसस'य'द्रन' मुन्नम्हिन्। विभामसुरमायदे स्थिन। विस्त्रम् चे प्रमाञ्चायम्बिन परमाया र्देशयान्यभाषान्त्रम्थान्यन्यभाष्ट्रम्थान्यभाष्ट्रम्थान्यभाष्ट्रम्थान्यभाष्ट्रभाषा नेषायिक निर्मानिष्या । विष्याम्य निर्मायिक । विषयम्य निर्माय

हेशयन्य प्रायाक्षेत्र युष्य स्वाया में हेश सुर्य निर्मा के क्षेत्र कर या उद्याय स्वाया के स्वाया के स्वाया के स

त्र्र-इं-रवर्गयावञ्चन क्राचर क्रेंग्यय के व्यवस्थायक क्रानिहर है। युटा मिषानुवा रेनाषायषागुरानुवायवे भ्रीता पराये मुवासी विजितानी नि चिवायर विश्वेदकार्य दे हीर विश्वेषाय चुवार है। विश्वेषाय का है सारा विहेट का सा विष्यर र्ह्म् अप्यायबुद प्यान् में अभिन्दु र प्रवृत्र प्रवे स्व । न में अप्तु अप्तु अप्त । प्रवे । म्चिम न्येमक्रिक्षिणयमण्ची म्चेयासम्पर्दित्यायायहेग्रमसम्मुक्ष्रमः ययविषा विषान्नेरायां भीरेनाषाति। स्ररायम्रायदे सहिरादमेयां मीषायानां नेष यवि क्षेत्र त्रा निश्चयायाता विष्यतान्त्री हित्से वर्षेत्र मा विश्ववायास्याया यार्स्रम्थाय। व्हिंसायदेगिर्हर कुंग्ववम्ग्रीयगार। व्हिंसायगिर्हर यास्त्रीत्र व्यूर। विभार्म्यम्भामसुम्भायायम् प्रमायम् विभार्यक्षेत्रा द्वायाविका सम्मायमः वश्रुरप्वतः सुरप्वति भेषार सुर्वा स्वार्षि स्वार्षे स्वार्षि स्वार्षे स्वार्षे स्वार्षे स्वार्षे स्वार्षे स्वार श्चेष्य द्वार दे। सम्माय दुर प्रवेर नो श्चेर ने श्चेर वार ने श्चेर ने श्चेम प्रवेर धुर स्रातातक्यायक्रमाचिरावतुः रेषो सुरावी किराता हुमार्गु स्राप्ता प्राप्ता स्रापा वळवासेन्युट प्वतेन्वो स्ट्रिट यायस्य यास्चित्रन्यस्थित्यस्थित्यः स्ट्रिस्य ब्रेंयावर्डेन नुस्यते केंबानुन्यायमान्ति न्यर वर्तेन। ने प्यर से प्यम् ने दशक्रुभःवेचत्त्राचे ही भः र्ह्नेभारा चित्रभारा भारत्या भी ही त्या हित्र हित्र ही स्वीति है । त्रु.हिर्। वि.कु.टी.चेब.हैं। त्रश्नां द्रश्नात्र्वेब.वर.त्रं त्राचेक्व. कुः क्षत्रभावे , चिर्याया । चिः क्यावे , यावे व , यावे व , यावे व , यावे व , यावे , य

म्रीकार्यर्ज्ञक्षा क्राचिक्वराम् क्रिक्वराम् क्राचिक्वराम् क्राचिक्वराम क्राचि

यश्चिर्यादेश क्षेत्राच्या अश्वास्त्र श्वेर्या विश्वास्त्र श्वेर्या विश्वास्त्र श्वेरा श्वे

यटार्च.या विश्वस्त्राच्याः स्वेश्वस्त्राच्याः स्वास्त्राच्याः स्वास्त्राचः स्

मित्र प्राप्त मित्र प्राप्त मित्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त

तम्। द्वतः क्षेत्रः अर्थ्वम्यः त्वतः स्मिन्यः अर्थः त्वतः स्मिन्यः सम्मिन्यः समिन्यः समिन

चित्रम्यत्वित्रीत्त्रम्यः स्वाद्यः स्वादः स्वद

 त्त्री विश्व चिश्व प्रत्रा चिश्व प्रत्रा विश्व चिश्व प्रत्रा चिश्व चिश्व प्रत्रा विश्व चिश्व प्रत्रा चिश्व चिश्व

 स्वान प्रकामित्र साम्नान स्ट्रायु सम्बन्ध साम्नान स्वान स्व

ह्ये क्षेट हैं स्वायालु म्यायि हिन्। इये राजा हैं का क्षेट्र साथ है है स्वायाल का स्वयाल का स्वायाल का स्वायाल का स्वायाल का स्वायाल का स्वायाल का स

दिन। ह्वा द्धरिन्दिनिज्ञिनानामा वाद्यादिन विज्ञा विज्ञा दिन्दिवादिन प्राप्त लिब्रयदे हुर। नदर्से लिब्र है। नदर्से हिंबायदे हेब लाद हुर। महिषाया रवा त्तृरंविष्ववेष्हेव यावतृरंप्येव यवेष्ट्वेर। विषयाधिव हो। तर्ये दिसायेवे क्रिंचर्याययाचुरा। महिषायाचरुयायदे क्रिंचयाययाचुरावदे ख्रीरा मसुयायाचित्र हें रिट. मुर्जेच अ. पष्टि . प्रचित्र प्रचार्य त्या स्थाप ग्रे क्लेंब्र राष्ट्र द्यान्त्री क्रियान्त्रीय प्रमुदि र्स्या मुक्ता प्रमुद्र प सुर रें रें व र र प्रें र प्रें र प्रें र के कुष है। वक्ष कुष प्रें व प्रें र प्रें र विव हैं उक्रवायदे क्वायिसराधार मेदि मात्रुमा विरामस्र स्यादे हिरा मान्य इस्याच र्राया महिसार तृत्य प्राया देश र्राया देश र्राया विष्या स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप ८५ त्रिक्ष्यत्रः द्विम् । द्वाकावका वर्दे दिक्षः कुषः के । द्वाकाविषः विवादाः किवाकाः यमाने विविद्या में नियम माने स्थाय किया माने प्रमास्य में नियम माने प्रमास्य प्रमास्य प्रमास्य प्रमास्य प्रमास मेशर्र्रायक्रियमर्यायम्बुदायदेःसूदायक्रीदार्रम्भाग्रीःक्षेत्रमञ्जीयायमः र्वायदे के हिवाय अर्वाय स्था हिस देवे हिया हेवायदे त्यस 

क्ट. ट्रेम्ब. तर्र. ही में विषये त्या हिट. में ब. त्या केष्य प्राप्त हो ने तर्रा ही ने तर

क्रियान् स्वास्त्र स्वास्

त्रिन् श्विर्कार्यत्विकात् विकास्त्रित्वकात् विवास्तर्भविकात्तर्भविकात्त्र विकास्त्र विकास्त्र विकास्त्र विकास्तर्भविकात्त्र विकास्तर्भविकात्र विकास्तर्भविकात्त्र विकास्तर्य विकास्तर्भविकात्त्र विकास्तर्भविकात्त्र विकास्तर्भव

## हुर हेग सूर भेर हियासहसर हु साम से में

त्रभारत्यम् कुर्त्वा कुषान्त्रभाग्नी अष्ट्रभाग्नी अष्ट्र

 प्रज्ञेर्ण्यात्रेष्ट्रा क्ष्रित्यादे सम्मान्यात्रेष्ट्रा स्त्रेष्ट्रा स्त्रेष्ट्र

द्राक्षेट्ट चेट चे हूं शता श्रेशशता प्रात्ते व्रात्ते श्रात्ते व्रात्ते श्रेश चित्रा प्रात्ते व्रात्ते व्रात्त

लुक्षाच्यात्रप्ति । क्रिकामसुस्कायविः स्त्रीता । प्रमाः स्त्रीता । विकायाः स्त्रीताः स्त्रीताः स्त्रीताः स्त्रीताः स्त्रीताः । विकायाः स्त्रीताः स्त्

क्रि. ट्व्रूम, में क्रि. मं मान क्रिम, मं मान क्रिम, मं मान क्रि. मं मान क्रिम, मं क्रि. मं मान क्रिम, मं क्रि. मं मान क्रिम, मान क्रिम, मं मान क्रिम, मान क्रिम, मं मान क्रिम, मान क्

हेबर्नुःश्चेर्द्रायिःश्चेर् युष्यद्याय्यानुःम्बर्ध्यायाद्यात्रेषानुःश्चेर्न्याः श्चेत्रः मर्छेन् प्रवेश स्राञ्चमान्दः र्यामिश्च अर्ध्ववः येष्वःश्चेः श्चेर्द्रायन्त्रेः श्चेर्द्रः प्रवेशः स्राप्याय्युष्यद्याय्यानुः म्बर्ध्यायः स्राप्याय्युष्यद्याय्यायः स्राप्याय्येषः स्राप्यायः स्

र्ट्रमा सिट.य.र्इ.क्र्य.र्स्ट्र.क्रमात्र.यथवीत्त्रह्र.सी.वी.वी.वी. क्रि.जमी टेट.

र्याप्ययपिरहेग्या हे्सर्त्। श्रेष्ठम्याहेंदिर्दरम्ग्यर्दरा ।श्रेष्यप्यर्यर्श्यः चु'य। हिन्द्र्ञ्चर्टायरुषायाणा विष्यायिषायदेरक्रेमस्यायाणेन। विषा गमुत्रम्याः स्र प्रति विष्पि प्रायम। दर्धि के स्व स्व क्षेत्रि के स्व प्रति के स्व यक्षेत्रःक्ष्यःक्षेत्रःक्षे प्रचा पर्वेताः स्वाप्तिस्य स्वाप्ति । व्याप्ति । व्यापति । व ग्रेन्द्री दिरस्री । अष्ठमभयरस्री । विषयायम् विषयम् विषयम् । ग्री'अर्रेश'पस्रव'ठेटा। पस्रव'र्रेव'यरा। पठश'स्व'र्वो'र्सेट'वीश'र्र्रा'वावव' नट-रूट ने जुर्भ क्षेत्र प्यत्र क्षत्र याना द्रष्ठ याना सुसाना हु है । नु'नरुन'हे'रेन'यंदे'चे 'च'युर्व' वेर्वा'ग्रीय'हराया सुर्हेट बिट्। धेर् वेर्वा'ग्रीय'चर्ना मिरानुषात्रायसायराव्यूराववेष्ट्वेर। वरुषात्व्वादमेष्ट्वेरायरार्मेरादुावन् यः स्र रायमा प्राप्तिया साथिव पायिव प्राप्तिया है। प्रविश्व स्व साथिव स्व साथिव स्व साथिव स्व साथिव स्व साथिव साथि भर्मे पर्दर्भाय मार्थि विष्य मार्थि मार्थ मार्थि मार्थ मार्थि मार्थ मार्थि मार्थ मार्थि मार्थि मार्थि मार्थि मार्थि मार्थि मार्थ मा विषायेष क्वेंद्राय विषा दर्षेष दे। दे स्थाद में षाया। विदाय स्वाय प्यत्र सुदासे दे रे चाबुनाबायक्रव पुरायाद्वर युवाया क्षेत्र ये उद्याविन प्रक्षेत्र युवाया सुन्य प्रायाद्वर प्रायाद्वर प्रायाद्वर प वनवायविष्ट्विम् वसम्बस्य प्रमान्त्रम् मेर्चियाविष्ट्रम् म्याप्तस्य स्वर्धिमा विष्ट्रम् ने<sub>रं</sub> १८०४ म. हें अर्थे प्रस्ता हेना हेना हेना स्वापित प्रमेश स्वापित हेना अपस क्चिंदायां विवादविषाते। के कुदाक्षदाक्षीय विवादि स्याक्षाय स्वादी त्रुक्ष्यं विष्युष्य विष्युष्य विष्य विष्य विष्युष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विषय चिषायायपर द्वीषाते। ब्रेटाय दराय ठवाया विवाद विवाय विवासी रामे

यर क्षेत्राचित्रास्त्राच्याः भूत्राच्याः भूत्यः भूत्याः भूत्यः भूत्य

त्राचा स्थान्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्यात्यात्र्यात्यात्र्यात्यात्यात्

लियान्त्रीत्त्रीयाः विद्यान्त्रीत्त्रीत्त्रीत्त्रीयाः विद्यान्त्रीत्त्रीयः विद्यान्त्रीत्त्रीयः विद्यान्त्रीत्त्रीयः विद्यान्त्रीत्त्रीयः विद्यान्त्रीत्त्रीयः विद्यान्त्रीयः विद्यान्तिः विद्यानिः विद्यान्तिः विद्यानिः विद्यान्तिः विद्यानिः विद्यानिः विद्यान्तिः विद्यान्तिः विद्यान्तिः विद्यान्तिः विद्यान्तिः विद्यान्तिः विद्यान्तिः विद्यान्तिः विद्यानिः विद्यान्य

मृत्तेश्वाक्ष्यां त्राचित्रः विश्वाक्षयां विष्याः स्वाचित्रः विष्याः स्वाचित्रः विष्याः स्वाचित्रः विष्याः स्वाचित्रः विष्याः स्वाचित्रः विष्याः स्वाच्याः विष्याः स्वाच्याः विष्याः स्वाच्याः विष्याः स्वाच्याः विष्याः स्वाच्याः स्वच्याः स्वाच्याः स्वाच्याः स्वाच्याः स्वाच्याः स्वाच्याः स्वाच्याः

मीत्रप्रस्थाने त्यान्त्र विष्यात् विष्

स्तुःश्चिम।

कुप्रत्योवाःकु्षात्तुः र्वेश्वात्तुः विश्वात्त्रात्त्र्यं विश्वात्त्रः विश्वात्तः विश्वात्तः

द्रवः त्रात्यका विकार्या विकार्य विकार्य त्रिया क्षेत्र विकार्य विकार्य विकार्य विकार्य विकार्य विकार्य विकार विकार्य विकार्य विकार विक

लट.लूट्रियंत्रअट्ट्रियं भ्रायचेट्रियं व्याप्त विष्यं में श्री विषयं में स्थाय के स्

रेव वर में कर हे सूर हेर छेव। वरे या वर्य वर्ष अर में विव युर र्ॱहेॱॡरॱॺॱॼॖऀॺॱय़रॱॿॖॸॺॱॺॱॹॗऀ॔ॸॱख़ॱॸॗॏॱॿ॓ॸॱॺॕ॒ज़ॱॸॸॱॿ॒ख़ॱय़रॱॼॖ॓ॸॱॸॖॆॺॱड़ॆॺॱ विन डेसर्टा नर्सेट्रमा वकेट्रमा धुनसण्यूट्रहो वेसर्सेन्स यविःकत्यावतुत्यविःर्वेषावतावीःकत्यात्वेत्। तेष्यताःक्तित्यारेष्ठ्यावनुषा यायामिन प्राप्त विक्रमान्यामिन स्थानिन गुर येन्य या साधिव है। है स्निन् इत्यायि खुर ने न्नित्य यर सार्येट प्रवे हिर ने । नर्सेन्यवे कन्यांवे न्नन्य क्षेत्र प्रावे निष्ठि व स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत मुरि.ज.रमु.खुरा वेश.उर्वेर.य.ररा उकुर.रश.क्रीमश.मेर.रेर.ही वेश. ग्नस्याद्यात्र म्याद्यात्र क्षित्र प्राप्त क्षित्र प्रमान्त्र क्षित्र म्यमान्त्र प्रमान्त्र प्रमान् यम्भाष्ट्रियायिः धुरा कुँ रायाद्रीय मुँगिषीः कुँ रायाद्रीय मान्यायि । 'युर'त्। हे'रुंबासान्त्रेव'यर'त्वरषाव। कुयार्येदे'क्रो'त्वेव'र्यक्षापत्र्वराव्या ने'य'यने' न्नन' रेक्ष'ग्रै' क्षेत्र' क्षेत्र' क्षेत्र' विष्यंयि । विष्यंयन चर्म् बार्य प्रह्मा हे ब्रायया के प्रवास्त्र अरापन्त प्रवास क्राय के प्रवास क्राय के प्रवास क्राय के प्रवास कर रेगमार्गेर्डिन्यायम् रेम् वित्र वित्र क्षेत्र प्रमास्त्र मार्थित् । विर्वेग सगुर र्सेविः म्रोर किं प्रविक्त स्थारिक विर्वा कर्षा म्रो कर्ष प्रविक्त कर्ष प्रविक्त कर्ष प्रविक्त कर्ष प्रविक्त कर्ष प्रविक्त कर्ष

पत्रक्षित्र। देवात्त्रच्चित्रक्षे । पर्वे त्तर्क्ष्वाच्यक्षे से दिस्त्रच्चित्रक्षे से विश्वास्त्रवित्रच्चित्यच्चित्रच्चि

श्रवर विवाह्य हिंदी रात्र वृष्य है। हिंदा हिंदी है श्रव विवास स्वाय ग्रम्यरायात्रेष्ट्रेत् वितार्त्वेत्रेर्यात्राम्यस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य त्रभ्रास्त्रीर्द्रम् स्राप्तर्राष्ट्रीर द्राप्ता के.क्रिर त्रचेतात्मा वर्षार्द्र र्ह्मा स्राप्त स्राप्त स्राप्त मिट्रपति दुर्द्द्र रेट्रिका गुर्द्द श्चेत् तु र्ष्ट्र यम अ गुरु य दे श्चेत् तु रेप्य यम् अपन्र श्रायम् रात्रा मुनायये क्वें स्राप्त क्वेरा विश्वाम्य स्थापार । वर्ष वार्क्व म्या र् अलिमाधिक का विवास प्रमुखायाधिक की विवासिय विवास प्रकार मुकारि क्रिं मूर्याक्षा भवीष त्रात्री स्वात्र में वार्षा स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्व र्वेग-५-४१-४८-४-४५ व्याचिषान्यमान्यसान्यसान्त्रीयान्त्रीयान्त्रीयान्त्रीयान्त्रीयान्त्रीयान्त्रीयान्त्रीयान्त्रीया विषाम्बर्धरकायास्त्रवर्द्धनामिषामुयायदे द्विरात्री देखा इसादि देखा मुक्सा वयानवयासुः श्वेतायराचेतावर्षायराचेत्रायराचेत्। हिः सूरावानवयावयः ग्रम्भार्थः स्रेन्द्रा ग्रान्त्र्यायम् ग्रम्भार्थः ग्रम्भार्थः ग्रम्भार्थः ग्रम्भार्थः ग्रम्भार्थः ग्रम्भार्थः गलक रु पर्हे न पर हो र पर हो विश्व मधुर का या रहा हि मा प्रका हो प्रका हि । यर.विश्व.क्षेत्र.विश्व.श्री ब्रिश.त.ब.क्षेत्र.त.झुश.तृत्री विषयायश.स्ववायातस्त्रा. यः विश्वयाद्या वर्षायाया अन्तिवायरायेवायदेगविद्वेगववर्षीशार्यरश री.चर्चर.चर्य । श्रवर.वीया.योषश.यश.स्याश.तर्या । ष्रिश.टर.। दूर.र्ज्य.ताशा चिष्यात्रकाञ्चनव्यात्रातित्वयात्रम्यायाय्येकात्रात्रवित्रोत्ता विषयायवराञ्चनव्याञ्चनव्यात्र्ये यम्द्रायाद्रायम्याची विषा हुनिस्तरित्र मुन्त्रेष्ठा मुन्त्रेष्ठा मुन्त्रेष्ठा मुन्त्रेष्ठा मुन्त्र मुन्त्र मुन्तर्भायते

पार्श्वेयः त्रम्भी विषया विषय

प्रत्याचेत्राचेत्राचेत्राचा क्षुत्राचात्राचित्राचा क्षुत्राचा क्षुत्राचा क्षुत्राचा क्षुत्राचा क्षुत्राचा क्षेत्राचा कष्

प्राप्ति स्त्री स्वराक्ष्मा वार्षा हिंद्यास्त्री स्वराक्ष्मा वार्षि स्वराक्ष्मा स्वराक्ष्मा

 यब्रायम् अळ्टाचानु नायम् न्यास्य प्रत्ये म्यान्य प्रत्ये स्थान्य प्रत्ये स्थान्य प्रत्ये स्थान्य प्रत्ये स्थान विषय स्थान स्थ

यवन्यायाः स्ट्रिट्यं मुस्कायाः स्वायः प्रवायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः प्रवायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः प्रवायः स्वयः स्

यान्त्रम्यान्त्रिक्षःशुः स्वायाः विवायः विव

य्यः कर दिः स्वाध्या सुन्य या सुन्य या विष्णे क्षेत्र मिल्रिक सुर्धि दि विष्णे क्षित्र सुन्य या सुन्य

च्रियायाः सुरायाः स्रेरायाः स्रम्याः स्यायः स्यायः स्थितः विष्टायाः स्थायः स्था

स्व.त्मश्रस्ताम् वर्षः स्व.त्मर्थः स्व.त्मर्थः स्व.त्मर्थः स्व.त्मश्रस्ताः स्व.त्म. स्व.त

यदिन् प्रस्तात्री वर्शन क्ष्रसात्री प्रस्तात्री क्ष्रात्र क्ष्रमात्र क्ष्रमा

द्रिन्न स्टायिक न्दायिक स्टायिक स्टाय

यक्षत्रप्रेत्वाक्षित्वाक्षित्वाक्षित्वाक्षित्वाक्षित्वाक्ष्यात्वाक्षयात्वाक्षयात्वाक्षयात्वाक्षयात्वाकष्यात्वाक्षयात्वाकष्यात्वाच्यात्वाकष्यात्वाच

 क्षे.ची.श्रम् क्षूच्यात्राच्चे व्यक्ष्य क्ष्यात्र क्षेत्र त्राच्यात्र क्षेत्र त्राच्यात्र क्ष्यात्र क्ष्य

पळ्च चरुकात्तर्, स्वाक्ष्ट्रीं ताज्यक्षात्तर, त्र्ट्ट्रीं ताक्ष्यात्तर, त्र्ट्ट्रीं ताज्यक्षात्तर, त्र्ट्ट्रीं ताज्यक्षात्तर, त्र्युं त्र्यं त्र्युं त्र्यं त्र्युं त्र्यं त्र्युं त्र्यं त

तायुः ही मा विश्व माश्री सात्युः ही मा श्रामिक्ष माश्री म

द्रेश्वर्णम्भीट्रम्पत्तृः द्वेर्याः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्

हुन श्च पित्र सम्प्राप्ति ने पित्र सम्प्राप्ति ने पित्र सम्प्राप्ति ने प्राप्ति ने प्राप्

स्हुट प्रमुंदे प्रियान स्त्रीत्र प्रिया स्त्र स्त्र प्रिया स्त्रीत्र स्त्र प्रिया स्त्रीत्र स्त्र प्रिय स्त्रीत्र स्त्र प्रिया स्त्रीत्र स्त्र प्रिया स्त्रीत्र स्त्र स्त्र प्रिया स्त्रीत्र स्त्र स्त्र प्रिय स्त्रीत्र स्त्र स्त्र प्रिय स्त्रीत्र स्त्र स्त्र प्रिय स्त्रीत्र स्त्र स्त्र

अक्त्राचात्रप्रताना विषयां प्राप्ता स्वाप्ता स्

यी. प्रध्न मा. स्वी. त्रा स्त्र मी. स्त्र मी.

ત્રિંગીં ના ક્ષેત્ર, ના ત્રા કું માત્ર કું માત્ર ત્રા કું માત્ર કું માત્ર

श्र-त्रात्तर्ष्व प्रक्रम् त्रिक्ष स्वाक्ष स्वाकष्ठ स्वाक्ष स्वाकष्ठ स्वाकष

ৰ, ষ্ট্ৰ্পান্ন নে এটি শন্ত ষ্ট্ৰিশ। অধিকান নে এটি শন্ত ক্ৰিশা বিশ্ব শন্ত ক্ৰিশা নি শন্ত অধিকান নে নি শন্ত ক্ৰিশা নি শন্ত কৰি

क्षत्राक्षित्रे स्वास्त्राक्षित्रा भ्रम् क्षित्र स्वास्त्र स्वास्

विषाक्रिमाञ्च प्रश्चित्रक्षात्र क्ष्मायायाय क्ष्मायायाय क्ष्माया क्ष्माया क्ष्माय क्ष्माय क्ष्माया क्ष्माय क्ष्माया क्ष्माया क्ष्माय क्ष्माया क्ष्माया क्ष्माय क्ष

तस्रात्त्रभ्राचतः त्री विश्वस्त्रम्था । विश्वस्त्रम्था । विद्यस्त्रम्था । विद्यस्ति । विद्यस्ति

वश्चन्तगुर्वश्च।

वश्चन्तगुर्वश्चन्यगुर्वश्चन्यग्यदे नेषाः अति । नेषाः श्चित्र व्यक्षन्यगुर्वा । नेषाः श्चित्र व्यक्षन्यगुर्वः वश्चन्यग्यः वश्चन्यः वश्यः वश्चन्यः वश्यः वश्य

बुवा विश्वस्वाश्वास्त्रा विश्वस्त्रा विश्वस्त्र विश्वस्त्यस्त विश्वस्त्र विश्वस्त्र विश्वस्त्र विश्वस्त्य विश्वस्त्र विश्वस्त्य विश्वस्त्य विश्व

यद्यते द्वो त्र्वु ब द्ववा अ र्थित् दे। द्वो र्श्वेद वीष श्वा वि र्थि द्वु त्यस्य वि र्थे प्वु त्यस्य वि र्थे प्वयः वि र्यः वि र्थे प्वयः वि र्यं यः वि र्यं वि र्यं वि र्थे प्वयः वि र्यं वि र्यं वि र्यं वि र्थे प्वयः वि र्यं वि र्य

्र् ने ने पर्व यान्वर या सार्वे या या दे र दे में ब सके ना यश मालव परि के द र् न्हेंबाग्री पन्नार्थे मार्केना मी र्नेबानु रेंब्री रापार हार हा मानव से नित्र प्राप्त पान रा रुट नेशावट याय हे नशाया अपना असे ना असे यह स्वाप्त असे रा क्षेत्रायर री विषास्त्रीय मास्तरमा मिले से रिटाय स्वायामस्य प्यति हो देस यायविषाम्बिरायार्श्ववाषायवे नार्षेत्रायात्रायार्षेत्रायात्रायात्राया यदे क्रिंपिन्यन्ता विक्यान्त्रकु युन्यकेषाकायाधिन्यदे विविद्धानु क्राम्यका तत्रित्री पश्चिमात्रत्रितरत्रान्तर्भाराक्ष्यत्रत्रित्रत्रित्रत् बिट मिर्जिन स्पर्ध देश के सम्बन्ध में हिंदिर मुद्राया वर्न मायमेट स्वायक माह्ने हिंदि यस्तरि वित्या क्रिं यम स्वाया धिकाया नावक मी मेर र वित्र में नाका नावित सेया यर महिन्याय सेव या इसमा दुर्गेषाय दे द्विरा स्ट्राय्य द्विनाय दे देव रेपेट दे। विदा यदे बर में ब्रेन नु ब्रु न कुन बिर नु ब्रु न नर न कु म के म खेन थे बर खेन यः ने यम द्वापाळन द्वापीय प्रति द्वी व व वि वि क ने में निमान प्रति हुन यदे अर्धे मार र् नुभावमा श्रेर र रेदे अर्धे महु महिमा बेर र पर्व प्येव पर्व । ষ্ট্র

त्त्वीयात्रक्ष्याः अस्ति। स्वास्त्रियाः क्ष्मियः भीत्रेष्ट्रियाः विद्याः स्वास्त्रियाः विद्याः स्वास्त्रियः स्वास्त्रियः स्विद्याः स्वास्त्रियः स्वास्त्रस्ति स्वास्त्रस्ति स्वास्त्रस्ति स्वास्त्रस्ति स्वास्त्रस्त

वर्वावह्रम्याच्छ्रम् वर्यावरक्रम्याद्वेषासुरश्चे वर्वावरावरायाच्यम् म्रह्मामी र्नेबर्राय्रिम्बर्यस्यानुमा विटाक्केबर्ध्यवाबा क्रिम्बर्गीर्नेबर्राय्रेम्बर्यस्यानुमः बेर। ने'य'मालक'नम'क'रे। वर्डेस'स्क'यन्स'म्डिम'युवै'र्नेक'नु'यङ्गिस'यवै' पर पार्के भारत । द्वे सारे राम्या देवे द्वेरा दे पहिष्य सुद्धे प्रवे द्वापर प्येत यति श्वेराने। वर्षेमास्य वर्षास्य परा वर्षास्य प्राप्ते स्थापित स्थिर। स्या वर्षे र श्चेत्रमान्त्री मुद्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त वनानिहेशसमान्सुमिनिहेर्देन दुर्रिन दुर्रिन स्वर्षायदे वित्य के स्वरं हिम्स देर विवा देवे भ्रिमा हमार्यासम्बद्धाना सर्दमा महिमामी देव दुवी विद्वाराणी देव र्दे । विषामस्त्रायान्याक्षेत्रायम्याने। ने के नमे प्रमुका साक्षेत्रायदे मिकर गुरपित्वरप्रधिवाव। रेग्सें क्वेनिंदि द्वरप्रधियादियाचे वां वी देव द्वारा तमासिय। देवा तर्वे संस्वा मास्निर तत्र विषय स्वित स गुःर्नेबर्रयक्षणयम्। वियानेकायक्षवायाये वियाने स्वाप्ता वियाने स्वाप्ता वियाने स्वाप्ता वियाने स्वाप्ता वियाने येग्रथाश्रमः क्षेत्रः स्वीत् प्रस्ति । क्रिंग्रथा गुःर्ने तुः विषय्यषा विस्यायवित्रः येत्र गुःर्नेबर्र्यक्षण्यायप्रायह्मबर्यायीबरि। कुळिरादम्रेवायायबर्मस्यादम्रेरायबर क्रिन्याग्री क्षेत्रावे रावे रावे रो प्रविष्याने निष्यापरि एक क्रियाग्री प्रवे पर्वे वे क्रिया ग्रुट्रयप्दे क्रेट्याविव द्वर्षे द्वर्षे द्वर्षे द्वर्षे स्वर्षे स्वर्षे स्वर्षे स्वर्षे स्वर्षे स्वर्षे स्वर् मस्द्रमाध्यार्थे। ।

यदायः हेन दर्गेत्र अर्केन दर्भेत्र अर्केन दर्भे विद्यापा केत्र प्याप्ति । दर्भे प्यत्याप्ति । दर्भे प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये । प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये । प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये । प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये । प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये । प्

स्क्रीन्तिं द्वार्त्वा स्वार्त्वे स्वार्त्वा स्वार्त्वे स्वार्थः स्वार्त्वे स्वार्थः स्वार्त्वे स्वार्थः स्वरं स्वार्थः स्वार्थः स्वरं स्

योष्रेश्चरश्चित्रयाण्याः स्वास्त्रयाः विश्वर्षाः विश्वर्षः विश्वर्यः विश्वर्षः विश्वर्यः विश्वर्षः विश्वर्षः विश्वर्षः विश्वर्यः विश्वर्यः विश्वर्यः विश्वर्यः विश्वर्य

यगान्द्रभाग्नी भ्रीप्रायात्रेयभापत्र प्रमायत्र प्रमायत्य प्रमायत्र प्रमायत्य प्रमायत्र प्रमायत्य प्रमायत्य प्रमायत्य प्रमायत्र प्रमायत्र प्रमायत्र प्रमायत्य

द्वा त्रिश्चात्रिश्चित्रिश्चित्रात्रिश्चित्रा त्रित्रात्रात्रिश्च वित्रात्रात्रात्र्यः स्वित्रा वित्रात्रात्रात्र्यः स्वित्रा वित्रात्रात्रात्र्यः स्वित्रा वित्रात्रात्रात्रः स्वित्रा वित्रात्रात्रः स्वित्रा वित्रात्रः स्वित्रात्रः स्वित्रा वित्रात्रः स्वित्रा वित्रात्रः स्वित्रा वित्रात्रः स्वित्रा वित्रात्रः स्वित्रा वित्रात्रः स्वित्रा वित्रात्रः स्वित्रात्रः स्वित्रा वित्रात्रः स्वित्रा वित्रात्रः स्वित्रा वित्रात्रः स्वित्रात्रः स्वित्रः स्वत्यात्रः स्वित्रः स्वत्यः स्वित्रः स्वत्रः स्वत्यः स्वित्र

हुँ र पर्से कुर कुँ सुट परे प्यापकु प्यापकु परि हिट । दे समस् कुँ में नास दुँ दि । वर्से स्वर्थ कुँ स्वर्थ पर्दे प्यापके स्वर्ध हैं । वर्से स्वर्थ कुँ स्वर्थ पर्दे पर्दे प्यापके स्वर्ध हैं । वर्से स्वर्थ कुँ स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ स्वर्थ के स्वर्य के स्वर्थ के स्वर्य के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्य के

र्ने भ्रम् नामस्यापाने साधिन में विकार्यनामानम् स्या सर्ने ने सामस्य स्था र्थि ५ दे। वर्स्न क्रू में ५ देश मिलिय में १ देश मिलिय में १ वर्ष ग्री. भ्रुवारा त. मृत्ये प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये प्रत्य स्थान स्था क्षुर न र्श्वेम में न क्रेन पर मध्य न पर्रा मह्न क्षुर हें र पा वसमा कर न पा क्षुर य.बीर.त.भु.भुर.त.क्षश्चतह्रवे.त.पु.हीरा यहेवा.त.थु.हीर.त.पुर.ही विश्वास्वीया ग्रिःसर्रेशःर्रुःसरेः द्रीयाशः प्रथाः पर्द्यस्ति प्रविस्थाः पर्देशः स्वित्रां स्वीत्रां स्वारायः सामान्तः वः र्ह्ये रः र्ह्ये अः क्षेत्रः याध्ये वः यादा विष्यः स्वर्ये वः र्ह्ये अः ये रः अः दे अः ये । विष्यः स्वर्यः वर्चेत्र'यदे'न्ने'र्स्त्रेट'याम्ब्रुन्यस्य मुक्षायर'न्ने'वर्त्त्र'यावर्त्त्र'यावर्षेपालेषा र्भेन्यागुर्यासुरायायदेवस्यायाद्वा वगायार्च्चे स्रीयदे प्वये द्वी र्चेट यासुट पाचीट इब्रस्म नुष्यर प्राप्य क्विं से प्रदे प्रते क्विं क्विं क्विं के प्रते क्विर प्रते क्विर प्रते क्विर प्रते क्विर क्विरायात्रेषानुषाक्षेत्रायरायक्षवायविद्या नगिःक्विराने गतिषायात्रेवायायिव यक्षेत्र यद्र द्वित्यक्षेत्र द्वे देवे विष्किति। देश द्वे श्व विष्य क्षेत्र क्षेत्र विष्य वळन्यया नेयन्नेयक्षेयरस्य द्वायान्त्रेन्त्री विषान्त्रस्य विना नेपन चिषायायायवस्यायञ्चीर्यम्याचार्यम्यावस्याया ८८.जमाभीमाम्नातम् वर्षातम् विष्याचिषान्त्रीतमा जीतावीतमानुष्या ते.पञ्चत्र भ्रापम्ची.पपाठ.ङैजाता.पञ्चत्र प्रापम्चीत्। विञ्चतातकपात्रात्रभाषा. पगायः <del>द</del>्वरायः से तक्षण सर्गा विषाणस्परमायः न । इसायद्वेन त्यसन् वो द्विनः न्यानिर्न्तीः प्रवस्थान्य प्रमुख्यानः निर्मानिष्णः प्रमुख्यानः स्वीकानिष्णः विष्णः
निर्मानिष्णः प्रमुख्यानः स्वीकानिष्णः विष्णः
निर्मानिष्णः स्वीकानिष्णः स्वीकानिष्णः स्वीकानिष्णः स्विकानिष्णः स्वीकानिष्णः स्विकानिष्णः स्वितिष्णः स्वितिष्णः स्विकानिष्णः स्वितिष्णः स्वितिष्णः स्वितिष्णे स्वितिष्णः स ग्रुट्ययाञ्चरणेवयवे द्वेरा देवे सवव व के विहत्त्वे विषयवे सदिया

न्रुम् ग्रुम् ग्री सुट प्राप्तिते अवर वुग प्रस्क है। देवे हिन्य ग्रुस प्रवे अवव या यायहरात्राची तर्वा स्वासा सेन्या या स्वास्त्रा प्राप्त स्वास्त्रा स्वास्त्र यहिन्यान मिनिन्न मिनिन्न ने स्थान येवाया मायाने से मिनिन्न ने मिनिन्न स्थान वश्यारे विषामस्त्रायाः स्रमाधेन प्रविष्ट्रिम् देव स्मास्त्रायि देव से ই্রিম'ন্দ'র্ম'লাদ'র ম'স্ট্রান্ড'র) বি বি আ'বি উবা দার্মিআ'ববি 'মারব'আমাবাদদ'র' ૹ૾ૢૢૺઽઌ૽ૢૺ<sup>੶</sup>૽ઌૢ૽ઌૡ૱ઌઌ૱ૣ૽ૢૼૡૺૹઌઌઌૹઌઌઌ૱૱ૢ૽ૼ૱ઌ૽ૼૹ૽ૺૢ૾ૢૢ૾ૢ૾ૢ૾ૢઽઌૺૢ૽૾*૾*ૡૢૻૢ૽ૢૢઌઌ૽ૹઌ यमःस्नायाम्भेत्रास्त्रेराये स्वराते । भ्रोतिनासेरास्त्र स्वरायमा प्रवसमाने पर्से माण्य श्रमिर्ट्रिम विष्यान्त्रमान्ने निर्देश विदेश विष्य विषय विषय विषय विदेश क्टें भे महिंद हैं अर्थे दें विहेद या या प्याप्त दें प्रविद है। अवव दें दें में प्रदूत हूं म सरावश्या विसामस्त्रायवे स्वेराप्ता मर्सवायवे सम्वयावा सम्प्राप्त महिसा मुंभेरात्राविषावर्षेत्रा चर्षिष्याच्युत्राच्यात्राच्याच्याच्यात्राच्या चॅरामुकान र्ट्टेसचें त्या क्षेप्यार र्येत्यर मयायि र्ट्टेन्सवे प्रवेष्ट्रीर वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र याञ्चिष्पराधेर्यम् वयायायरेर्रायाधेम् हो। यम्स्यावसमान्त्रेयमञ्जूष यान से मिर्मित परि क्षेत्र में प्यत प्राप्त त्या यम हैन यान हों न मिर्मित या से कि मिर्मित प्राप्त के मिर्मित के ब स्वास्त्रायिते से राष्ट्रिया से स्वास्त्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प् यन्दर्याम्बेश्राणुः अद्यवःया अप्वत्रः व द्वेयाया प्रवित्रः । हेद्याम्बु अप्यवे खुअः विष्ठभाग्नी सम्बदायासायहरा सुस्रायी विषया सम्बन्धा समित्र सम्बन्धा समित्र स 

देःह्नरः बर्नो प्द्वर् हो ब की हिना सार्थे दरी दने हिन की पर्वाप्त्र কুপ.রূএপ.রেপ.কুপ.পুপ.রূ.রূএপ.পৌ.ত রূ ২.ন.র.এওপপ.এঞ্জু.ধূএপ.ট্রপ.র্রুনা.মীৼ. स्रायन्द्रम् स्रायन्य विष्ट्रम् यदे खेरा यदे यक्षद्रम् याया स्रोदे राष्ट्रयाय स्रोदे राष्ट्रयाय स्रोदे राष्ट्र र्ने इन्डेक यर्ति । नगे यन् कर्ति । विषास्मास मस्म्या श्रम्मवि के स्रमा व्वैब क्रिया कुया रेंदि विया पुष्त्वो पर्व वर्षि रार्येदि प्रिवृब प्रुषायाया यहेव ब्रषाय उषा वर्षिर र्थेव दिवे ब दे प्यट विदायर स्टाइट स्वाही निट दु दिवे प्यव माना न्वें प्रवें न्नें प्र्वा न्यान्यां कें प्रवें वर्ते द्रायते हे ब इसस्य पेरियं पेरियं हिमा दर्श पेरियं पेरियं सहित वस्य प्राप्त ब्रिटमा वेषान्टा अळअषायाचरनान्मानुष्यटा विविरावेदीन्छे विवेश वर्त्युरारी विषापरा मानवापुर्वी विषार्श्वमाययुरायाक्षराक्षराक्षराया सक्तराम्येनम्मान्दर्भवाता हून्यास्त्रम् अस्त्रम् न्यास्त्रम् धिव या गठिन 'दर्ने षा यदे 'श्वे र हे न्री र गविव व त प्रम् व न्री दे हे व या से द या द र । सक्सराचार्रात्राचा सक्सराग्री क्षेत्र वर्षा है होत्र रायार् ग्रेग हुन्य रायार् ग्रेग हैं कर यासर्वि, संसारी प्रवास मात्री द्रम्यानिक्षयाध्याप्ति दे। स्रास्ति क्षेत्राचित्र प्रमायत्वे क्षेत्र प्रमायत्वे क्षेत्र प्रमायत्वे क्षेत्र श्रेव र्धु न्यायायि त्रे दे त्याया है द्रम्यायव में मार्थ स्टाया व्यव में प्राप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप देशयाम्मार्याक्रमाये द्विमाने। मह्दि यथा विषायाम्मारावेषाद्वा द्वार्मिन्या गुःविषर्रा भूचमाचमिरमातपुरिक्षेत्रारेरा। सुचमातपुरियरारी विभावातस्वामातमाकुमाश्रवः

यहान्यात्र वित्र प्रकार के स्वर्ण सक्ष्य स्वर्ण प्रकार के प्रकार के प्रकार के स्वर्ण प्रका

यद्र द्वा द्वित्वा द्वित्वा विश्वास्त्र विश्वास्त्र द्वित्वा विश्वास्त्र स्वत्वा विश्वास्त्र स्वत्वा विश्वास्त्र स्वत्वा विश्वास स्वत्व विश्वास

च्या निवास्त्रित्ते। वयान्तिः विवास्त्रित्ते द्वेत् चित्रायित्ते द्वेत् चित्रायित्ते द्वेत् चित्रायित्ते द्वेत् चित्रायित्ते विवास्त्रित्ते विवास्ति विवास्ति

यस्यस्य स्वित्तः स्वित्तः स्वित्तः स्वितः स्वतः स्व

ह्रमासुर्वे विसम्बर्धन्ता विस

विभग्नेन प्रकायायवमा वालक या सुराया प्रकाय के स्वा किमाया सुनाय के स्वा किमाया सुनाय के स्वा किमाया सुनाय के स

द्रिः त्यादे न्याया अर्दे र र स्था हुन प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्

प्रायः क्रिंश्वे प्रदे हिंदा विष्णा क्षेत्र प्रदे हिंदा विषण्य क्षेत्र प्रायः प्रक्षः प्रायः प्रक्षः प्रायः विषण्य प्रदे हिंदा विषण्य क्षेत्र प्रायः विषण्य क्षेत्र विषण्य

नमुस्रायाक्ष्म होत्री क्षेर्यानिक्षासुर्येत्री वनानी कत्यसन्दर्वया चयु.झट.सैट.२८.। चर्चवाराता.श्रम.८८.यच्या.चयु.सैट.ची.८यवर.खुवा.ता.चारुषा. सुः भेंद्र प्रते : सुरु । दहः ये वा कि सुरु भेंद्र दे। सुरु सेंद्र प्रदेश सुरु सेंद्र सेंद्र सेंद्र सेंद्र सेंद सुः भेंद्र प्रते : सुरु सेंद्र से मुद्रेमासीसूर्तरातुरहिरा रहाराजालहामिष्ठमासीसूर्यरात्राही रम्मार्स्ट्रमा र्नेन महिना भेर परि द्विमा नर में भेर ने। युर नु द्विम म से म मुस्य पाइस्य । वर्ट्र राव्युका हे प्वस्त्र प्रकार केंग्रा कुरावार हा। अक्षत्र हिरा अक्ष्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र स्थाया स्थायाया र्दासम्बन्धे मित्रम् विषयि प्रियाय स्त्रिम् स्त्रिम् स्त्रिम् स्त्रिम् स्त्रिम् स्त्रिम् स्त्रिम् स्त्रिम् स् ववेषायव मुक्त क्रिंट्या वर्षा प्रदाय प्रवेषायव मुक्त क्रिंट्या विकार प्रवेषा चतः मुक्तः स्वीतः विकादि । विक ५८.८चेवा.पयु.सेष्टा.संश्रमा.सं.लूर्.तयु.सी. १.५.८कर.ता.वा द्रभाता. प्रविष्ठ, भ्रेष्ठ, भक्ष्य, विष्ठ, त्राच्य, वर्ष, त्राच्य, व्यव्य, त्राच्य, वर्ष, त्राच्य, त्राच, त्राच, त्राच्य, त्राच्य, त्राच्य, त्राच, त्राच्य, त्राच, त्राच वयायहण्यावदिष्वयायदेग्यर प्रा वदि यावेषायावषा स्र पादि दिवेषायदे यर १८१ कुर य के १ के अया क्षा मार्के मेरियों के अया वे प्राप्त के वेशःस्वीशःवीश्वरम् अर्रे देशस्यसः युरःवारः यश्वरायस्य प्रदरः ये द्वरः यः याने पर्नु मेमायमा मार्से केर रहा में हिन हैं। निने पर्मेमाया हिन मायपा हिन हैं। विषयायुर गेरिस्मषायीयविषयमयसूषा यषायात्रेयर षात्रात्रेयाय स्वराये दिषा ५८१ रटायनिवायमानुस्रसावायमार्टेनिसा५८१ कुटायान्तर्भीरुसायुरेने श्चेष्य्यूरर्भे । नगेष्यनुक्रियामर्भे । विदेषाश्चेन्यनेष्ठिन गर्देर्वि । विषया क्रम्यत्तित्वित्वत्त्वम् द्वम् अन्यः क्षम् यात्ते न्वत्त्रः विष्ट्रात्त्रः विष्ट्रात्त्रः विष्ट्रात्त्रः विष्ट

यर्ड्स ह्या साम्या क्षा स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्

सक्षत्र कु दर्भिस प्राचित्र प्राचा सामा सम्मान प्राचीत्र प्राचीत्र प्राचीत्र प्राचीत्र प्राचीत्र प्राचीत्र प्र न्दायनेयानवेष्मुक्केंद्राचानस्काने। ह्युक्तायनेयाणेष्मुद्धानानेष्या वळदा मिर्देशतयतात्रेशः अत्रिमान्ता । रशक्रेद्रायहन युत्रामिर्या पर्देशान्ता । २सवा वायसा तक्क प्रता स्वा क्षेत्र प्रवा । स्विर प्रवा स्वा प्रवा । स्वेर प्रवा स्वा प्रवा । स्वेर प्रवा । स्व पर्के.कं.लूर.ता.जमा.ठकर.ठर्ह्मा.ररा रेसूय.तात्रु.ठचेवा.झरा रेर.भवेय. ब्रैर.पपु.पचेताझेट.क्रं.टैंग.पश्चेट.ताजा रट.रट.म्।खेग.मेट४.ग्री.शक्ष्य.शू.शघपु. अन् देना साया है सान में सारा राष्ट्र सारा है रा ने हैं सायवर धिन हो में सारा र क्षैर.पत्रुर.षची,पर्वे.तकर.झर.पश्चैर.तो चची,पर्वेतु.शक्ष्य.शूतु.शचतु.सेर.कुची. यातार्ह्स्य। अत्रह्मानी सिटासिटायश्चिरातालया सीया देवाया सम्बादा सिटा हिमा यायार्ह्मेश नर्सनायहेनानार्हेन् स्ट्रिंट्य हुट यहुट यहुट यात्वनाय तुन् मी अळन से अविय हुट <sup>ढ़ॖ</sup>ॴॱॴॱॡॕॴ ५र्में न, प्रत्ये प्यच्या झट प्रभ्ने न, प्राविषा दुषा की अळन र्से अविषे स्र देग साया है साय देश वर्ष प्राय ने पानिया ने प्राय ने पानिया ने प्राय के स्रीय के प्राय ने दर्न लगान्तर यो निष्याय निष्ठ या प्रमाणिक या महाले मा क्षेत्र स्वरामिक या लगा ८८.त्र.ज.र्र्च्याच्यादिवे स्त्राच्या वायव न्यर्थे क्षेत्र. व्याविषा वायव न्यर्थे क्षेत्र. व्याविषा 'धेरा विकारे क्वाबादमार्था आयुवाङ्गा विदासम्बन्धा विकास दिवाला क्वाबाद की कार्या की कार्या की कार्या की कार्या लब्रायदे ही र है। बनायरु प्रकर इंट स्याप्य में दाया अळव के अप्रवादे से र हेना सामाध्येत्रप्ते मुक्ति स्वास्यस्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास सामाध्येत्र स्वास्य स्

ले'न'हन्यान्दे प्रमाण्यात्रात्रात्रात्रात्रे देवात्रीत्रात्रात्रे वास्त्रात्रे वास्त्रात्रे वास्त्रात्रे वास्त्र यादेशात्र चुत्र दुर्गिश्च प्रते द्वित्र हो। दे याल्या प्रतु यद्य श्वाया प्रमाण्य यया हु देशाय र दर्गिश्च प्रते द्वित्रा

युष्ट्र विश्व त्राच्य त्रियाला त्राच्य क्षेत्र त्र त्राच्य क्

देशक हिक सळक के निर्मा स्थान स्थान

यात्तर् द्वीमा विश्व स्वावादि स्वावाद विमान स्वावाद स

चत्री हि.चेश.चर.ह्रीचश.क्षे.ख्रेट.ट्रश्रमा क्षिं.सेर.ह्ट.वु.क्ष्ट.घ.ट्टा विश चत्रिश्र.तश्रक्षश्रजा विश्वश्रवादः ह्री.क्षेर.कीर.कीर.कुट.चर्टा विश स्वात्र क्षेर्यात्र क्ष्रक्ष्या विश्वश्रवादः ह्री.कीर.कीर.कुट.की.सेर.श्रुर.वुटा विश्वर.वुट्या कीर.ह्रेट.सेर.श्रुर.चे.ह्रट.च्यर.कीर.ह्रट.की.सेर.श्रुर.चेश.ह्रट.श्र-तादः क्ष्र कीर.ह्रट.सेर.श्रुर.चे.ह्रट.च्यर.कीर.ह्रट.की.सेर.श्रुर.चेश.ह्रट.श्र-तादः क्ष्र कीर.ह्रेट.सेर.श्रुर.चे.ह्रट.च्यर.कीर.ह्रेट.कीर.सेर.श्रुर.चेश.ह्रेट.श्र-तादः क्ष्र कीर.ह्रेच्यात्र क्षेर्याच्यात्र क्षेर.कीर.ह्रेट.कीर.सेर.श्रुर.चेश.ह्रेट.श्र-तादः क्ष्र कीर.ह्रेच्यात्र क्षेर्यात्र क्ष्रियः कीर.विर.चे.विर.

 म्नान्न स्वर्धन स्वर्

चीरीयातात्त्री ता हुयासी विचायाता क्षेत्र क्षेत्र प्राचायातीय क्षेत्र क्षेत्र स्वीया क्षेत्र स्वीया क्षेत्र स नवर्तरविवायवेषम्बर्मारायम्बर्गाति देशम्बरम्भरायानवावम्य पर्स्न परि द्विरा न्रेस स् कें स मिना निका पार्य है स्याप निमा स स पर्म मिना है। बुबि'पञ्चपर्याचुर्यान् 'म्बि'प्युट्'पा'तुस्यापा'र्टा प्रयसाया'र्टापविन'र्रु'सी'म्बस्य यायाम्बर्कारत्वृत्यरायङ्गब्बा दे इसस्यायसार्यमावामवारत्वृत्यादेवामुस यह्नम्यदे द्वेरा नम्यद्वुर प्यापट पेरि दे। वक्षत्य महिमार्ता ञ्चर्यात्र विष्यात्र विषयात्र विषया भाल्य त्रत् झट सिट सीभा के त्राभावत देवा जा झट त्वय की माविय तर्त ही रो देवा. ब्रिटाविटातर रुष की किटा की सिटा सिटा से भारते जा थे। सिटा प्षेत्र भारते की सामा विचा है। देवे। र्क्ट, भ्री खबा प्रवें तकर झर जाई राजा वियानवृद्धि र है। दे झर प्रवेदे वा में राजा लिब्दायदे ख्रिर हो। दे ख्रिर पर्वेष छेद प्रदे के ख्रिष हेद ग्री जे ख्रिर हम ब्रह्म प्रदेश रुट दु मानमा याया धीन यदि द्वी र है। देवे के न श्वर व त्वय र्श्वेन दु यहर याया है न भ्रीप्तर्भेषायदे द्विमा वना वन की प्रदेश प्रदर्भेष्ट्री हिरायम क्रमप्ता हिर यर उत्र संधित या महिषा सुर्धित यदि द्विर। तृत र्धे या या प्रमिषातृत द्वित प्रवेत प्र ञ्चन विनापत्न परि विना विनाय राष्ट्र प्रमा राष्ट्र राष क्किन्नु रुप्तान्द्रा देखेन्यके निष्यु निष्यु स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स ८८। ८.ज.चक्षेत्र.चंद्र.चंद्र.चक्किट.ज्ञाच्यालेष की.चेत्र.क्षेत्रमात्री वर्षाः वयाविरातराक्यालयातात्वराचिषाल्यात्री मुकामी वयात्वराविरातराक्या

साधित्रपाद्या द्वितायवेदाणीः लगाः नवाष्ट्रपायः उत्राधितायः महिषाः सुर्वेदायवेदाः महिषाः सुर्वेदायवेदाः महिषाः सुर्वेदायवेदाः महिषाः सुर्वेदायवेदाः महिषाः सुर्वेदायवेदाः स्वर्वेदाः सुर्वेदाः सुर्व

मैंबर्दर्भुद्दाचेत्रिं प्रविद्देग् चेत्र्येवात्रा स्टामी म्वर्द्द्रमा चुर्थसा ঀৢ৶৽ৡ৾৾ঀ৽য়৾৾য়ৢঀ৽য়৸৻ঀৢয়৽ড়ৼ৴৽ৡ৾ঀ৲ড়য়৽য়৸য়৽য়৻ঀৢয়৽য়ৢয়৽ঢ়ৢ৾৽ৡ৾ঀ৽য়৾য় र्मेष'८८'सु८'पबे८'ग्री'न्वर'पदेग'ग्रु'देग'ग्रे८'गठिष'र्धेऽ'पदि'स्वेर'हे। ५मे'र्सेट' भायश्चरमात्रामधभारी विचारवर्षे तर्माच हि.भाजार ट. हूं वमार टा इ.भाजा विचा र्ह्रेयशःग्रीशावनायुःवकरःश्वरःपक्केर्ययेःश्वर। रेपविवर्ग्यनेषापरःश्वरःपवेरः भ्रीः प्रवादिया चार्या विषय । स्टावीः प्रवादित भ्रीतः भ्रीतः भ्रीतः स्वाद्या स्वाद्या स्वाद्या । स्वाद्या स्वाद्या क्रेन्धिक प्रमासाम्बर्धिय प्रते रहें या वेशाय राष्ट्राया क्षेत्र या वेशसे स्वरापित प्रमास विष् यर्वायते स्वायी विषा विषा स्वायी राष्ट्रीय स्वायी यर वी यर्वायी विषय स्वायी स्वायी विषय स्वायी स्वायी विषय स्व वियम्पर्मा देवः विषय्तरेषा वृष्णेष्णेषा सम्बोदेषा वेदायशास्त्रिषा वर्षुमायसः वियायवः इस्रामालमा वितापुर पुरुष्ट । यस मीसा विमायवः विमायवः इस्रामाने प्राप्त । विमायवः विमायवः विमायवः विमायवः विरायर रुव त्लव श्रव की र्ट्रेव लिंग हो। इस्यानव यहेगा हो र ही व की यासाय स्वयं पर्या चर्नाचि चित्र की साच स्वरायायाय देवा परि क्षेत्र स्वरायत्व से सारे वा चे र *৾ঀৢঌ*৾ঀৢ৶৶৴য়ৢঢ়য়৸৸৸ঢ়৾ৼঀ৾৾৾ঀৢ৸৸ঢ়৾ঀৢয়৾ঀ৸য়ঢ়য়ৢঢ়য়৸৸৸৸ঢ়ৼঀ৾৸ঢ়৾৻৾ৼৢ৾৽ৡ৸ पवनायि द्विमा श्रमावनायन्त्रयाः स्वाप्यावनायन्त्राद्विनायम् उत्राह्मा हैं दे'यदिन में दिन में का प्रायान कर स्थान के प्रायान के प्रायान के स्थान के प्रायान के स्थान के प्रायान के स्थान के प्रायान के स्थान के स्था के स्थान के स

यहेग्यान्त्रभण्येषायते द्वेराते। अष्ट्रियां श्वेषायान्त्रम्यायाः अष्ट्रियां द्वेराते। अष्ट्रियां श्वेषायान्त्र व्याप्यत्त्रम्यदेग्यायेष्ट्रपति द्वेराते। तुषायुत्तां श्वेषायुष्ट्रप्रायुष्ट्रप्रायेषाः अष्ट्रपति द्वेराते।

त्वीर्युः त्वर्त्वीर त्वत् क्षेत्र।

विद्युः वर्त्वा क्षेत्र त्वत् क्षेत्र त्वा कष्ट त्वा क्षेत्र त्वा कष्ट त्वा क्षेत्र त्वा कष्ट त्वा कष्ट त्वा कष्ट त्वा क्षेत्र त्वा कष्ट त्व कष्ट त्व कष्ट त्व कष्ट त्व कष्ट त्व कष्ट त्वा कष्ट त्व कष्ट त्व कष्ट त्व कष्ट त्व कष्

वरुषाया हेर्ने वेषावेट इत्रायर तुषाय दे दर्से दरा श्वर सुर य तुर वि *ब्रिमानमा केत्राचित्राचित्राचनामान्याचित्राचनमाया त्राक्षास्य प्रिमास्य स्थानाम्यायानीसा* यते देवें प्रेन्यते द्वेर। स्रवसायदेवे मार अमा मिर यर क्रम दर विरायर क्रम श्रेष्ट्रायदे देश वहेष क्रिंट है। इत सुद क्षेत्र पर्वेष हो द प्रदेश के दिशा सामा यर दमे हिंद महिन मी दूर द्यमन माया यदन न यदि दमे हिंद दे दि स्था हिंद सूर मुरायर्रे भार्ते ५ पार्थ के प्रदेश में मुर भार्ते भार्य प्रते प्रते प्रते प्रते भार्ते भार्य भारते प्रते भारते यवे द्विरा १८ में देर वया ईं अगु हु द के द में अपर द में पर्त द वा समा वनाम्क्रिनामा सन्तर्त्रान् प्रमानास्य प्रमानिक स्वाप्तर्त्रा में स्वाप्तर्भ स्वाप्तर्भ स्वाप्तर्भ स्वाप्तर्भ स ततु. श्रेपका सी.वीट. वर्ष प्रत्य सी.वीट काता देहा तदी. सी.वीट का त्रा है सी. हे सि र खे. ५मे द्विर में बार्मे बार्मे बार्मे वार्म प्राप्त के प्र र्येने क्षेत्र मान्त्र याप्यर प्रमुद्द परितर्भे । विश्व माश्रुद्दश्यये निर्मे स्थायश्चित्र मीश अ.पञ्चित्रतात्तुःक्र्याम् सामाञ्चनाः त्र्रा त्रित्रः क्षेत्रः क्षेत्रः त्रीः त्रव्यातः प्रचायाः सामाञ्चायाः व्यापाः सामाञ्चायाः सामाञ्चायः सामाञ्चायः सामाञ्चायः सामाञ्चाय লূ.এই.এ.এ.ব.ছেম.ল.জেম.বর্টিমেরের্ডিম। প্রষ্ঠেমা.ঐন.ঐ.এপ্র र्मन्यासम्बद्धार्यायान्वन्यम् विवय्यस्य विवय्यस्य विवयः स्वर्भात्रम् स्वर्भात्रम् स्वर्भात्रम् विचानन्त्रापदे ञ्चन्त्रेम् स्वायासु द्विन क्वीयानक्षत पु रहत पदे पठयाया देवायासहन वाता विग सम्वग्पन्तुव्यम् न्त्रेव न्त्रीय न्त्र्यय प्रस्थिय हेन् न्तु मस्त्रेव न्त्रीय प्रस्ति व यायाम्बर्भारवृत्यवे श्वेरा वर्दराबनायत् बर्पायां बेर्रमाबासम्बर्धायां विषा चर्षेत्रात्तु,रेबूत्यातालुष्तायाःश्री । श्वरःक्षेतःवैदःवतुःकुःह्वैरःवकुषावैरःतः यायर पर्टेन पर मु न्वेन है। ने सप्तन्वन रायर पेन न दिश हेन ही पे पि मु

सन्तर्भात्राम् स्वात्राम्यस्य प्रत्याच्यस्य स्वात्र्याच्याः स्वात्राम्य स्वात्राम्य स्वात्राम्य स्वात्राम्य स् स्वात्राम्य स्वात्रात्राम्य स्वात्राम्य स्वात्रम्य स्वात्य स्वात्रम्य स्वात्रम्य स्वात्रम्य

यविष्यः स्ट्रायः केरणी पुष्यः पुष्ये के के प्रमुक्तः में। । प्रमे प्रमुक्तः मी वर्र या सेर्या रे हिर मर्ड रेविं । विषयमा ध्री र पर्डेष र र वर्षे या परि मुकासेर पा वह्रम्याध्यम् निव्दाने मुम्माध्यम् । विद्वाने मुम्माध्यम् । विद्वाने निव्यम् । यमळ्ट प्रामें मण्णे पुरायु दे प्राप्त द्वी प्रत्य की के मणें माराया क्षर सुदर्भिनायवे र्पे नुद्रन्नाब्र यानाहर त्रमासे राया रिया त्रमा सुदर्दिन विकाय सामित यर पहल परि द्वेर देस्सर हिंदि के स्थान के पर पर के साम के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के मर्डिर्च प्रेम प्रेम ने स्मरम्म प्रमाय देने में भारत हिमार प्रमाय कर ही में भारत है में प्रमाय कर है के प्रमाय ५८। यन्नाक्षेन् त्यव्यक्षेनान्यम् स्वर्थन् सान्मा नाक्षेन्याञ्चमः र्निषायर मुवायषा श्वर खुंवाहे १ सराधिव विषय विषय विषय । ५८१ युक्दिर्स्सर्यमिक्सर्ये प्रतिस्थित प्रतिस्थित ५८ मिर्सिर्दि मा द्रायर ञ्चर प्रायः प्रायः प्रायः प्रीयः विष्या प्रायः प्रीयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः व निष्यः निर्मान्यामिष्रभासुः वित्यविष्युत्र। हन्यशः क्षेत्रान्यम् सुत्यवेत् स्रान् र्चे प्रकट प्रवेशक्षे मुर्चे अप्य द्वामार्चे मुर्चे स्यामर रुप्तायामन्द्र प्रदेश्चिष्म मानम्द्र द्वापा चीम प्रदेशियामा प्रदेश मान प्रमा वर्स्रिनायाने त्यामानम् नु स्था ने त्यमामानम् सम्भाने विमानमाने मान्नी

यायक्षटायन्ययायह्मामश्रेश्ची श्चराम्हरामित्रायाः श्चर्यायन्त्रायम्हराम् वायक्षरायद्वीयायद्वास्त्राम्हराम् वायम् प्राथमिश्वराप्तरामश्रेश्चरान्त्राम्बर्धाः स्वर्धाः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धाः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धाः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धाः स्वर्धाः स्वर्यः स्वर्यः

यवि,यक्ष्य,विश्वत्य, श्रीट, दे, त्रिय, श्री, य्वया, यवि,यक्ष्य, वि,यक्ष्य, वि,यक्ष्य, वि,यक्ष्य, वि,य्वक्ष्य, वि,य्वक्ष्य, वि,य्वक्ष्य, वि,य्वक्ष्य, वि,य्वक्ष्य, वि,य्वक्ष्य, वि,य्वक्ष्य, वि,य्वक्ष्य, वि,य्वया, वि,य

यश्रित्वां विश्वां वि

ततः तथः तर्ने त्रियः भ्रात्तः हिरा पश्चितः त्रात्तः स्त्रात्तः स्त्रात्तः हिरा स्रम्भान्तः स्त्रात्तः स्त्र

चीत्रभावत्त्रस्त्राच्यात्व्रस्त्रम् क्षेत्रस्त्रम् क्षेत्रस्य प्रक्षम् क्षेत्रस्य क

क्रमम्भार्मावेमान्त्रीयम्भान्त्रीयस्भान्त्रम्भान्य

रें। रमे.श्वरम्भाविष्य ।श्विष्यप्रशेर्यश्चर्यात्र श्वरम्पर्यः । विषयम्बर्याः श्वरम्पर्यः । विषयम्बर्याः श्वरम् विषयः पश्चिम्यायः श्वरम्पर्यात्र श्वरम्पर्यात्र श्वरम्पर्यात्र श्वरम् । विषयम्बर्यायः अर्देरः विषयः पश्चिम्याविष्यः ।श्विष्यप्रस्ति ।श्विष्यप्रस्ति ।श्वरम्पर्यात्र ।श्वरम्पर्यात्र ।श्वरम्पर्यात्र ।श्वरम्प

चक्च प्राञ्चन्य प्राञ्चे प्राचित्र ৻ৼয়৾য়য়৾ঀয়য়ৢ৾য়য়য়ৼ৽য়ঀয়য়য়য়য়য়ড়ঀ৽য়৾ঀয়৾য়য়য়য়য়ঢ়ঢ়য়য়য়য়ৼ৽৻ৼৢঢ়ঢ়ঢ়য় पर्वः द्विर । दे प्यटः द्वो र्झेट देश विभायमा हमादे र र दा स्वामायर विभाया विका र्वोबानि श्राप्तेबान् सेंटायदे स्टायदे पुराप्ते प्रवेष से स्वाबाया सास्यायर वेषायां के साञ्चनवाया प्राय प्रति । दे हि नावकाया धिक के विषानासुर यास्र रे । निग्यार्थे के निकास्त्र निकासित विकासित विक युवानी वित्यम् सुदाबत्यानित्वा स्वाप्तानित्वा स्वाप्तानित्वा स्वाप्तानित्वा स्वाप्तानित्वा स्वाप्तानित्वा स्वाप स्वाप्तानी वित्यम् सुदाबत्या स्वाप्तानित्वा स्वाप्तानित्वा स्वाप्तानित्वा स्वाप्तानित्वा स्वाप्तानित्वा स्वाप्त ૢ૾ૣૼૼૼૼૼઽઌ૽૽ૼઌ૿ઌૡ૿ૺૺૺૺૺ૾ઌૻ૱ૐઽ૱૱ઌૢઌ૱ૢૺ૾ૹઌૢ૿ૹઌૢઌૢઌૢઌ૽૱૱૱૱ૢૢૹ स्वायाना विष्या द्वीस में विसाय सिर्फी के स्वाया में से स्वायाना स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्व वर्रमः श्चित्रयम् वर्षाः वर्षा श्चर पर्धित दे। देवे श्चिर या के शर्वी शर्यों देव देव से के श्चिव पर्वा विसाय शर्थि है। य विभायायाय सुराय। सेन्द्रायमा द्वी सेन्द्रायमा स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन त्तृःक्र्या्म्याद्रात् क्रिंत् पश्चेताय स्त्राद्धे वा स्वाप्य स्त्राह्म वा स्वाप्य स्त्राह्म स्त्राहम स्त्राह्म स्त्राह्म स्त्राहम स्त्रा ब्वैन पर्ना या ब्वेन या श्वर ब्वेर पालया हारा राजीय ब्वेन पर्ना मी सेस्र रायहु पर विषासाञ्चरषायराञ्चरषायाद्राञ्चराष्ट्ररातु विष्यायेते स्वीता सर्देरावञ्जवातात्रा पर्इन्यास्त्रमाम्बर्गावरास्यास्त्रस्ति । सिन्या

শ্রুনাদার্থান্যক্ষান্থ শ্রীদান্ত্রিক্তিন্ত্রি নার্থিক নার্থান্তর্বান্তর

यर् क्षेत्र महिषाय है से स्वाप्त प्रयाय प्रवास के महिषा प्रया । द्वा न्दासर्वे मदायसन्दिन । विव्यानन्दिन में महिन स्वानि । सिर्देन स्वानि । ८८११ क्टूटार्टा विश्वासी ८८१ सूथिया ही स्टाया ही स्टाया ही स्टाया ही हो हो हो हो हैं वीषास्त्रेष्ठ,प्रवासी,क्षेष,प्रट,प्रकायक्षेषाता,वीट,प्रेट,वीषातीषाटवी,वीट,प्रेट,पेवीय,कुट,त चर्यात्रात्राहूच्यात्रात्र झिटासिटारी तर्की रावतु ख्रीरा श्रीर ख्रीयावता क्रीया यात्रा व्देन'न्'वर्ख्यायर्ते । क्षेत्र'यांत्रे व्यायायांत्रेन'व्देन'यासवर व्यायये नर्दे प्रायय र्वे । १ वेशम्मसुरमा महिषायाययानमार्यायययविमामीःश्वरायार्थेरादी स्थायेर देग्रायत्वे प्रति सुरा सर्देर खुग ने प्रयाद्य ने प्रयाद नि प्रति । सर प्रति र मुभार्स्रा विभागसुरमा गसुस्रायाक गहिमायस्रेमायते सुरायार्धि दे। गवस ह्र--द्र-त्र-त्र-व्यायायुनानी प्रवासना र्यो हिन्ना बन्न-द्राम् र्यो सेन्स या अपने हिन्न प्रवासना यम्देरव्यूरविष्ट्रिया अर्देरदेन्त्राख्ट्रिया अर्देरदेन्त्राख्ट्रित्यर्थः चित्र पार्थि द्वा त्र स्व विश्व पार्वे द पार्थ सिर पार्थि दे। दे वे सिर विश्व स्व स्व भान्यभावमार्थान्त्रमाभार्थवित्। मवरायाभार्चियायास्वामववार्थन्यवमा रदा न्वर प्रतर्पत्र केन्या के ब्रीट्याये हैन र्राट्या हैं या वार रुप्ते के बेन्यर विषाने। वर्षायायाङ्कीयायायाञ्चराञ्चराञ्चरात्वेराविष्ट्वेर। यर्देराम्बरावाया ইনি'ম'লানৰ'ঊন্'ম'নমা সদ'ন্নাম'নদদ'নম'ঊ'বুল'ম'ঊৰ'মম'ঙ্কাৰ'নুম'ম' क्षेत्र कर्रि । विषाणसुरमा साया सर्वा मारा की सुराय स्पित्र दे। त्रे में सूर की भावति रा

यन्त्रस्य प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र

दुनायायवार्ष्ट्रन्थायवेरस्य प्यापेत्रित्। द्रेने स्ट्रिंट ने सामायवार्षा क्र्यियारातुः वित्रः मुर्यायाः स्रोत् या स्रोत् वित्रा स्रोताः वर्षात्रे कुर व्यावारा से त्या श्वर द्विर से पे रे रे रे रे रे रे प्यावार के विस क्षेत्र के रे रे रे रे रे रे र च्रावायाः क्री त्राच्याः स्वार स्वार देवार स्वार त्र वित्र त्राच्याः स्वार स्व चम्रुसायमायन्यायमायायाय्यायम् विष्याचम्यायम् विष्याचम्या स्र्याप्ता क्रिंपप्ता क्षुण्यप्ता क्षेण्यप्ता क्षेप्ताप्ता क्षेप्ताप्ता क्षेप् बेरप्टम ब्रिंसप्टम विवादमा बरादमा ब्रिंस्स्सर्या है। याद्वीयाद्वगायक्याद्वायक्ष्याद्वायक्ष्याद्वायक्ष्याद्वायक्ष्याद्वायक्षयक्षायक्षय श्रेवे श्रेन प्राप्त वि प्रवि व प्राप्त वि प्रवि व प्राप्त वि प्राप्त वि प्रवि व प्रव व प्रव व प्रव व प्रवि व प्रवि व प्रव व प र्नोब्र'यरि:ळॅर'र्रा रे'यकुर'यर्यमाळॅर'र्'यर्देम्यर्यम्र'यम्राप्रा अर्देर यमन्त्री द्याप्तन्त्री द्यास्त्रप्तिनेप्तित्रेप्ते प्रवित्रप्ति । श्वित्रम्यक्षुः प्रेप्ति युनाप्तर म्मा विभिन्न मुयादर र्से सादरा दि यम मुरादर दे प्रविम्मा विभिन्न के मार्थ विषान्त्र मित्र प्रमुरा सेर से हैं भुपविष्यात्वा । विष्विष्य वेषात्वा मान्ये। चित्रदेशस्यक्षप्रचायात्री किर्वाचन्त्रदेशस्य पर्देश दिवक्षप्रप्रच क्र-डिम.श्री । इस्त्रम्था ।

यनुष्यायषुप्राक्षेप्ययाभ्चेत्यानुपर्वष्यायिःश्चरायाधिनाने। निषेश्चिरावीषा चकु ५ या न से ४ ५ ५ तथा ये से परि । से से प्राप्त में से प्राप्त स रेवर्रेक्टियारम्बीयुषाण्चियारेवावाया वालवारेवात्त्ववायायनवावीराद्यसा ब्राश्चराङ्गरात्वयुरावविष्ट्वेरा अर्देरात्रेवाये के यद्गानिराष्ट्रवाया यक्षेर् करे हें न्या की विषानिस्सा उराय होर ख्या सेरा ही मर्रा ही का यन्नायन्नार्थिकिन्द्रास्त्रीमानुनायान्ना नयान्त्रवेन्यायन्नार्थिकिन्द्रावसा येव'र्'म्बुम्य'र्ट्' व्रैव'म्बिस'यक्ष्यस'यंबेस'व्युप्यंबे'र्ट्रप्य'र्माधेव'र्वे ।बिस' चिम्राह्म स्थान स् येबर् मानुगप्यं वे रेस्स्यप्यतिव रे याधिर मान्दरे परस्य प्राप्ति वे देशेस्य वकर प्राणेष या द्विष क्वीय प्रक्षप्रयाची प्रवे दिने क्विप नी सर्ष प्रदेश देशके प्रविष ह्रे ह्या शक्र वा प्रहें न पर्या । न वा प्राप्त के का का का का की हिन प्राप्त की प्राप्त की प्राप्त की की कि का वीयारम्प्रतम् प्रवेश्चे के वियायायाय हे प्राप्तम्य प्रवासायाय हे प्राप्तम्य प्रवास । यवे प्रक्लेंद्र में प्राप्त मे मस्त्रा वरुपार्द्वे स्टिन् वेदायेर स्टाया धेदादी द्वी स्ट्रीया विसाया विसाय ब्रुचमार्थःकूटाचिमात्रमालीजार्यमार्थे प्राचिमात्रपुर्धियातायायाः झटाक्षेटार्यक्रीयायुर स्त्री अर्देर में त्रित्य स्त्रीत स्त

नम्भ्रायाञ्चनाः तृष्द्नायवेः श्वरायाधेराते। द्रने श्वरायाभ्रायाः ने प्रायाः लिब्दायात्वाचीबातविवा हिः युः वादा अव कित्य विवादा वनायर् यात्र श्वर सुर पुर प्रयुर यये श्वर । अर्दे र रेत्र अर यर यर् वे यर स्वरा मेंबर क्रीया में प्रतिमा में पर्यं में प्रतिमा में प्रतिमा में प्रतिमा में प्रतिमा में प्रतिमा में प्रतिमा में त्रवः सिर्या में देवे सिर्वा सार्वा सिर्वा स्था सिर्वा स्था सिर्वा स्था सिर्वा स्था सिर्वा स्था सिर्वा सिर्व सिर्वा सिर्व सिर्वा सिर्वा सिर्वा सिर्वा सिर्वा सिर्वा सिर्वा सिर्वा सिर्व सिर्वा सिर्व कुं वानायाविस्यायायवनानु पर्नायाचीस्यानीसार्वेसार्केनायानीसार्वेसार्केनायानीसार्वे यर्र्यश्चरम्भेत्रप्रकृत्रप्रकृत्रप्रवा वयस्यवार्ष्य्यम्प्रकृत्रप्रभूत्रप्रम्भः यात्र निर्देश मिले र त्यु र निर्देश अर्देर मुचायात्र निर्देश मिलेश मासुर श ल्यान्त्रिकार्यस्वानि स्वत्यार्थिन्ति। निवे स्वित्वे कार्यकार्याः व्वैब याधिन प्वरुषान्ता मु स्रोधाया सेन प्यम प्वर्धिषा है। विवार्क्ष है। से स्रोधाया ब सि स्राप्त स्रोधाया स्र वर्व्दायवे क्षेत्र है। अर्देर खुर्या वर्षा च दर्दा प्रवे दिर्या प्रेत्र क्षुत्र पा अवर खुर्या प व सहरे दी विषानिस्सा वर्ह्या पर्दे न पर्दे न परिस्त के स्वर्ध के स्वर्य के स्वर्ध के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्य के स ताद्रभाक्षी की.कुरावम्यातामात्त्रेराम्याचेमाञ्चेमात्राधासक्ष्याताक्षीराम्या ल्.वीर यावय लट उत्त्वाय रहूर यावुद्य विश्व मात्र प्रक्र रही विश्व या स्टिश यर जार स्वाप्तर प्राची स्वाप्त स्र तर्वरायाक्षरायाद्वराक्ष्यायाद्वराक्ष्याः स्राम्बर्धराची स्राम्य प्रकर स्वाकारण्या वर्षरा जिराबे, यारे रायक्षेत्र वेषारे मूचि, याराष्ट्र प्रचेषा झराय वेरा प्रचेरा से वी यायाने प्रमायम्या से निष्याय मुद्दारा सुरा द्वी र्सेंट द्वीन यायाने नायह नामा चित्र त्य्यु स्व चु भावत् वि न्य वि

पत्रित्रा अर्ट्रा त्यापक्षित्र प्राप्ति स्वर्णा विश्व मास्य प्राप्त स्वर्णा विश्व प्राप्त स्वर्णा स

पर्याम्यानिक्षा द्वान्तिक्षान्त्राह्ना निक्षायम्यस्यान्तियान्त्रायम्यस्यान्ति। प्रान्तिक्षायम्यान्ति। प्रान्तिक्षायम्यान्ति। प्रान्तिक्षायम्यान्ति। प्रान्तिक्षायम्यान्ति। प्रान्तिक्षायम् स्वर्णे स्

यायायक्षायविष्ट्वी यनुकायान्वी श्चिम् असार्या यकुष्यायाचे विष्टुत्यायाचे विष्टुत्याचे विष्टुत्यायाचे विष्टुत्याचे विष्टुत्यायाचे विष्टुत्यायाचे विष्टुत्यायाचे विष्टुत्यायाचे विष्टुत्यायाचे विष्टुत्यायाचे विष्टुत्यायाचे विष्टुत्यायाचे विष्युत्यायाचे विष्टुत्यायाचे विष्टुत्याय

मुद्रेशतायनेवीशताद्रभारेटायचेवायवुःसिटाच्चेरायवव्रुवीतातावायकेः क्र्ये हिर्द्गार्थेर्। विश्वानश्रम् र्राट्रं मुद्रान्त्रे प्रति हिर्मे हिर्मे विश्वान म्बरित्रित्यरंत्रुष्यम्। वृदायायायरुषायाद्रा वृदायायरुषायाम्हिषायीः दर मृःस्याच्य्यादह्यात्रा च्युकातात्वृण्याचाः कृतायाचा हर्म्वेदात्रात्रा च्यु वः नगे सूरि नो भारतायभागवन परि से मा सूर स्वाप्य स्वाप्य प्राप्त वि यतः हुन प्रमास्त्रक्षंति । स्वास्त्रम् की माञ्च मायायार्ये यार्यमार्टे न मियान ने रावकुरायिः म्चिम। अर्देम। देग्निवेशन्दास्यायमायम्यम् स्यान्दान्ते वर्त्ताः स्नायमायम् य.चेष्ठेश.तारा.चेषय.तापु. इं व. इं .चतु । विश्व.च श्री दश इं व. च वे .तापु. दश वश तर वर्षेर प्रपु हिया सैया अर वर्षेर प्रपु हिया सूर्य प्राप्त वर्षेर प्रपु हिया हेरा. चैमासीयर्चेरायपुर्देयः सममासीसूरातपुरिया रटात्रायोथमा समास्यायाः सैयमा सुप्तम् विकाया क्षिःसमित्रेमित्रे मुंद्रमुष्ट्रा प्रित्ते प्रिते प्रित्ते प्रिते प्रित्ते प्रिते प्र स्र पक्र परि कु अळव पेरि दे। हुव पति पशमानव र दिने के कि में हुव क्षेप वस्रश्चर द्वेत म्चिम र्श्वेसर्यम्यव्युम्यविः हुन् ह्वायान् विम्यत्वे विम्यत्वे स्वायान् स्वायान् स्वायान् स्वायान् स्वायान् स र्केंशभेन्यायार्केशसुर्दा केंश्रायार्केशसाधेन्यरार्द्धेन्याने हेश्रायार्द्धेमायेर्दि।

स्रियंत्रिक्चेर्रात्राम्याव्यक्ष्यात्राम्याव्यक्ष्यात्राम्याव्यक्ष्यात्राम्याव्यक्ष्यात्राम्याव्यक्ष्यात्राम्य विश्वाद्यक्षयात्राम्याव्यक्षयाय्याव्यक्षयाय्याव्यक्षयाय्यात्र्याच्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्यात्र्यात्र्यात्यात्यात्यात्यात्यात्यात्यात्यात्र्यात्यात्यात्यात्र्यात्य

महिषाया क्रिया महिषाया विष्ण प्रति । त्वी क्रिय्य प्रति । विष्ण प्रति । विष्ण प्रति । विषण प्रत

ह्म क्षेत्र प्रते हुन प्रते ने प्रते क्षेत्र प्रते हुन प्रते हिन प्रते हिन

हूँ ब.त.जुट्टी क्रिशक्षी क्र्यान्य वालका है च.त.चुटी विकासी वालका वालका है

इवायायदेवयत् द्वराखे द्वराखेरादे। वह्नेवयम अहिवकायाद्राक्रवस्य यर वृषाव देर प्रश्नुर प्रवे क्षेत्र। अर्देर प्रक्षेव प्यर अर्हे वृषाय प्रदि क्षेत्र प्रस्था श्रह्में मुर्चे संस्कृत में दिन क्षेत्र के स्वापन क्षेत्र के स्वापन क्षेत्र के स्वापन क्षेत्र के स्वापन क्षेत्र के स यसिरमा यर्षेत्राचिषार्षारम् जाया स्तिर्धात्रीय स्तिर्धात्रीय स्तिर्धात्रीय पक्षेत्र'यर'साह्निमायदेवार अवाराने वे ख्रिट वालक की प्रस्ता की ख्रीट पानार रेट यहें न्याने वार्षायाव ने रावशुरायवे द्वीरा अने राववायी के निषायां विनायां विनायां विवायां विनायां विनायां विनाय तर.श. ह्र्यमाराष्ट्रेट. ट्या. टट. क्ये. ता.जात् । जिमायमिटमा जेमाया हुत् ज्यायमिटमा याम्बर्भान्ते मुक्तायाद्यस्य उत् पुराय विकाय के पिते पुराय विवासी । यक्त ইবিমে'ব্'অ্অ'বৡর'মম'ম'ইল্ম'ম'র্মল্ম'অ'বইব্'ম'র্বর'র্দী'বার'ব্'ম'বর্ত্তুম'বরি' ध्रिमा अर्देमा यदेव या छेट वर्षे । यदेव या अधिर या यहेव यम अहें ग्राया यत्। विषानिश्रम्भ। र्ग्यायनेषाद्रात्र्याक्षात्र्यात्रेयमायतेषाः विषाः भुरायायन्याये देवा वीष्यादारे रावशुरायवे दिया अर्देश द्वी राविषाः नवे प्रवे अस्त्री अस्त्री के न्या साथिक प्रावेश सेवास वास्त्र वास यवे सुर हे न प्येन न न के कि त्या प्या प्या प्या के न स्था प्या प्या प्या प्या प्या प्या प्या प्रा प्या प्रा प ह्में ८ मानव १८ मा स्वाप्त स्व

यहानान्नकी सहिता त्रीत्त्र में विषयात्त्र स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्थान

दर्ष्ट्रमान्त्री विषयम्बस्य प्रियम्बस्य प्रियम्बस्य प्रियम्बस्य प्रियम्बस्य विषयम्बस्य विषयम्य विषयम्बस्य विषयम्य विषयम्बस्य विषयम्बस्य विषयम्बस्य विषयम्यस्य विषयम्यस्य विषयम्यस्य विषयम्यस्य विषयम्यस्य विषयम्यस्य विषयम्यस्य विषयम्यस्य विषयम्

मसुस्यापर्द्वे प्रमुख्यम् विष्ट्रप्रे सुद्र हो । प्रमे क्विं स्वर्भ रहाया ૽૾ૼૹૡ૱૱૽૽ૢ૽ૺૹૻ૽ૼૼૼૼૼૼઌ૽૽ૺૹઌ૽૽ૣ૽ૼૹ૽૽ઌ૽૽ૺૡ૽૽૱ઌ૽ૺ૱ઌ૽૽ઌ૽૽૱૱૱ઌ૽૽ૺઌઌ૱ઌ૽૽ૺઌઌ૱ૹ૽૽ૺઌઌ૽૽૱ઌ૽૽ૺઌ૱ૡ૽૽ૺઌ૱ૡ૽૽ૺઌઌ૽૽ૺઌ૽૽ૹ૽૽ઌઌ૽૽ઌૺઌ वर्णु र पर्वे स्व । अर्दे र प्रमे र्श्वे प्रमेश पर्श्वे पर्वे प्रमेश पर्शे प्रमेश वर्षे । प्रे र प्रमुक्त प्रम ধূ । র্মার্থ নের্চু নেকার্কা । বিকার্ক্যকানাধিদকা ন্র্রান্ট্র প্রকানাম্বকার্সকা स्यायस्यायर तर्वे प्रते त्यु प्रते प्रते प्रते विश्वास्य विश्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्व विषासेनिषानासुरसा स्यानिरानवे सुराने राजे राजे राजे राजे स्वान स्व सर्वानित्याने सामानित्रायास्य मित्रायास्य सामानित्रायास्य सामानित्राय सामानित्राय सामानित्राय सामानित्र सामानित्र सामानित्र सा शर्र्र याव्यावयाययाय त्युराव विषा चुरावाय कर स्र विषा विषा गस्त्या दुग'य'र्से्र-'यदे'सूर'द्वेन'र्थेन'ने। नमे'र्सेट'म्बन'नमे'वर्न में मन्य मुभागुरारेग विषार्भेग्यामसुरया पर्वायाम्चेयाम्बेद्वामुरायवे सुराम्चेराये ने ने त्री त्र्व मी मानमा सुराष्ट्र त्र ने प्राप्त हो माने कि ने मिल्य स्थान है ने प्राप्त है ने माने कि स्थान है ने प्राप्त है ने माने कि स्थान है ने प्राप्त है ने माने कि स्थान है ने प्राप्त है ने स्थान है ने व्यथायात्रादेरावर्ष्युरावरिः श्वेरा अर्देराश्चेशाम्बित्राचेदायायर्गे ।देवे द्रापालेशा स्वायायवीरार्ट्या । प्रकीरातास्मायायवीरायायायर्वातायायः सिरावीराल्याया

यक्षश्चायद्वीत्रा व्याप्त प्रत्वाचित्र क्षेत्र विष्ट्र विष्ट्र विष्ट्र विष्ट्र विष्ट्र विष्ट्र विष्ट्र विष्ट्र विष्ठ्र विषय्य विषयः विषयः

या चक्चर्रात्राके,रचावा रची,त्रामुचि,चभग्रुच्र-रचा,क्रुच्र-वर्चेथ्रत्राक्ष्रभावावक्ष्यः प्रकृत्रिम्।

या चक्चर्रात्राके,रचावा रची,त्रामुचि,चभग्रुच्र-रचा,क्रुच्र-वर्चेथ्रत्राक्ष्यभाव्यक्ष्यः प्रकृत्राच्यक्ष्यः प्रकृत्याच्यक्षः प्रकृत्यः प्रकृत्यः प्रकृत्यः प्रकृतः प

पर्उः कव मधुम्रायां वे र्ह्मिन्। मापर्क्षियां के सम्बद्धान्य पर्वे क्षा विकार क्षा विका

यदियातत्। विषायसिरमा ८८.त्.मा.यस्थात्र.क्ष्याःह्र्यत्तुःस्ट्रेट.कुट.कुट.लूट. ने ने के केंट अदे केंद्र य स्वापनिव न्य ने केंद्र य अपने केंद्र या स्वापनिव ने केंद्र या र्हेन यन ने र त्युर परि द्विर नि के हिर अदे हेन यर पर्हे देश यदे नि हिर से र ने<sup>भ</sup> कुलाळ्यास्यतेत्रन्ते। स्ट्रेंट ने पर्से प्रस्ति प्राप्ति स्वाप्ति पर्से प्रते पासे प्रस्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स ८८.रें सालूरारी वक्षमात्री वट.रें रेटा चेस् हिंट पट्ट कंपर हें में प्रमुं पर नु न प्येत 'येत 'हु र । कुवाळन 'क्ष' नुवि 'न में 'क्सें र से न कें के प्यर 'वें भाषा प्यार प्येत ' <u>े ५</u> भ्र.चर.म्री.भर्ट.म्ब.तत्र.८म्।सूट.४भ.८म.भ्रूपभ.पर्सू.पर.मशेटश.तत्र.सूर। द्धर हो ५ वदे वक्ष ५ या व्या अर्दे र वर्ज्ने या यो निष्ण विषण विषण विषण ८८। श्राचर्स्स्रियस्य प्रमुद्धित्यायाङ्ग्रेव वर्षे विषामसुरुषा महिषायाहित्या बुवाणु वरानु केंबा क्रेंबा प्रदेश क्रुटा केंद्र प्रदेश क्रुटा केंद्र प्रदेश क्रिया विश्व क्रिया क्रिया विश्व क्रिया क्रिय बुवाणी वरातु केंबावह्मबाया बाते रावणुरावदे द्विरा अर्देर है आ बुवाया हे दायदे। विषानीसीरमा नीसीमाराज्ञमान्तुराज्ञ उद्यानी द्वीर क्रियान हम हिवस सुराया दिनामा त्तुः किर्नेर क्रिर्ने र्वो क्रिंट वीसर्वो क्रिंट वीलव असाय स्वासाय केर्नेर क्रिया यङ्गम्यासायीम्यायादे द्वारायङ्गम् विषाञ्चरायान्याम्याद्वारायाचे स्वरा यान्त्रवार्ति । विवास्थ्रवार्ति । विवानासुरवा नवियानीवार्त्वे नाये सुराने न यिनित्री निवार्श्वित्विषान्वे श्वित्याक्षेत्र्याक्षेत्र्याक्षेत्र्याक्षेत्र्याचे विषयि विषयि । वर्श्वरायवास्त्रीय। अर्द्रराद्मी स्त्रीटा अर्केर् अर्थिक या किरा विद्या विद्या नस्त्रा स्यानिमाञ्चेनयदेःस्टाचेन्धेन्ते। केन्स्याधेनयदेन्ने र्सेन्याया

विषाचित्रत्वसाण्यादेषाचितः क्षित्रास्त्रिसायात्रादेन त्यम् राज्यस्थित। स्वित्राचित्रत्वित्रा विषामसुत्रमा

दुवायानवार्ख्यास्यान्यास्य केवानुष्येव त्यसानुष्य दुवायवे सुरासेन स्वीत ने । ने ने क्वित्यान्त क्षेत्र के ना यदि त्यसानु कुत न्यान्य महिना तन्य प्रस्थ स्थान बरेरविष्ट्रमा अर्रर्त्तवे श्वीता अर्र्त्रप्ते श्वीत् अपनिष्ट्रमा विष्ट्रमा विष्ट्रमा विष्ट्रमा विष्ट्रमा विष्ट वर्चे बर्दा किर मन्म अ. ५ ५ ५ विका मस्रमा पर्वे तार में हिरास रहा ञ्चब रहेना यु र प्यह्ना प्रवे रञ्च र र्थे र र्थे र रहे। हे र र ज्ञूब रहेना खुवे ब र र रु ग्यु महिन बर्दरावर्श्वरावरिः श्वरा अर्दरावद्यसम्बन्धनार्क्षनार्क्षराय्ये वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्ष वरवःबिरःवर्मे करी विश्वानश्रम् वर्मिरःयः रवेकःयः वर्मायवेः सुरः होरः र्थेन ने विस्र में निर्मास सेन पर पुन सेन निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म क वर्षायात्र देरावश्चरावरिष्ट्वेर। अर्देरावर्षायर्वे। विश्वास्त्रम् र्गायादित्र यात्र विष्ट्र प्रति द्वे द र्थे द दे। विस्रस में निस्र से द य र द ने के र्वे द स्र र देन र्वम्याञ्चवमार्थेर्'र्'वर्षेरावर विमायमार्भेर विष्टुर विदेश्वर मिर्नेर र्वो र्श्वर सार्टायमेटायायी विषामस्त्रा वरुपार्गे क्षेट्रासार्भे राष्ट्रमाया यदे'सुट'चे्र'र्थेर'रे। न्ने'र्सेट'सम्भानने'र्सेट'यन्न'रित'र्ग्रे'यर'न्न'य'स'येम चतुः स्त्रेरा भर्र्रात्ने ह्वित्समा ह्विरान् चतुः चतुः चतुः विषाना सुरमा ह्वितः व्रेन पर्रुः ये मान व्यायरुषायि क्षेत्र माने व्येन ने। नन ये नुवायायनुवायायरु या इस्रा

द्वाः हो द्वाः वाहेश्यः प्रतान्त्वातः हो ना वाहेश्यः प्रकृत्यः प्रतान्तः वाहेशः वाहेश

यङ्खं माने प्रे में मानु । यह यह दि ने पर्वा माने माने माने प्राप्त । यह प्रमाने माने प्राप्त । यह प्रमाने माने प्राप्त । यह प्रमाने माने प्रमाने प्रमाने प्रमाने प्रमाने प्रमाने प्रमाने माने प्रमाने प्र न्दःचर्सेन्यंकेन्। विश्वामस्त्रा न्दार्यायदायदान्न्यविःक्षुदान्नेन्यिन्ने। निगः ब्लॅंट मेशहे अम्बिकायां विकायमाय में बर्दे में प्रायम महिमा वृद्दा प्रायम महिमा वृद्दा प्रायम महिमा महिमा महिमा यार्मेषायममेंषान्ने देवन्ते केर्पायमें प्राप्त केर्पायमें केर्पायमें केर्पायमें केर्पायमें केर्पायमें केर्पायमें विषान निष्णानित्। विषानिष्टमा निष्णाय प्रियाय निष्णानिष्य सुवायते सुट हिन देरावनान्विनान्वमाने वसाने वसावे साथान देराय सुराय देश स्थित। सर्देरा से साथ देश प्रदेश माणेबाया पर्वार्या विमायार्गात्रमायायाम् विमायार्था विमायार्थे । वर्मामन्यासी विस्पान्य देवे चेत्राच्या विस्पान्य विद्या विस्पान्य विष्यान्य विस्पान्य विष्यान्य विस्पान्य विष्यान्य विष्यान्य विष्यान्य विष्यान्य विष्यान्य विष्यान्य विष्यान्य विष्यान्य विषयान्य विषयान मसुस्रायाञ्चर देनमसुस्राज्यायमाञ्चन यो सुद्रा हो र में हिन वीयानुयानुदावी वयानीययानुयायाञ्चर प्रवेत में नासुयाययाञ्चन याञ्चरयाने। ग्रम्भाग्वम्, निरम्भाज्ञम्, निरम्भाज्ञम्, निरम्भाज्ञम्, निरम्भाज्ञम्, निरम्भाज्ञम्, निरम्भाज्ञम्, निरम्भाज्ञम् गर्युत्राने प्यतः क्षुतः प्रजेन 'यदे 'क्षेन 'र्डम' प्रवेग रेश संन 'र्येत्रा सुग्रा सुग्रा यद्रा हिः स्र प्रति प्राप्ति विषाति विषाति विषाति । स्र प्राप्ति विषाय । स्र प्राप्ति विषाय । स्र प्राप्ति । प ब्रेन्यर्थे प्रेम्प्या मानम् निष्ट्रा मानम् । मानम् ।

चक्र द्वेच त्वच त्वच द्वेच क्ष्र माद्वेच क्ष्र माद्वेच क्ष्र त्वक त्वच क्ष्र क्षेच त्वक त्वच क्ष्र क्षेच त्वक त्वच क्ष्र क्ष्र त्वक त्वच क्ष्र क्ष्र त्वक त्वच क्ष्र क्ष्र क्ष क्ष्र क्ष्र

दर्ह्याचिश्वरात्त्रिया शहरात्रियात्वरात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रिया साचिश्वरायात्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्र्याच्यात्त्रियात्त्र्या हेमाचिश्वरात्त्रिया सहस्याच्यात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्र्याच्यात्त्र्याच्यात्त्र्याः हेमाचिश्वरात्त्रिया सहस्यात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्रियात्त्र्याच्यात्त्रियात्त्र्याच्यात्त्र्याच्यात्त्र्याः हेमाचिश्वरात्त्रियात्त्र

तर प्रमाणसूची तर्ह्ची में सामाणस्य त्राची में देसूस प्राप्त के प्रमाणसूची तर्ह्ची में सामाणस्य त्राची में देसूस प्राप्त के प्रमाणसूची तर्ह्ची में सामाणस्य त्राची में देसूस प्राप्त के प्रमाणस्य प्

चित्रहेश्रायते क्रुरायता रतात्वा रतात्वा त्रियायात्वा स्थायात्वे स्थायायात्वे स्थायात्वे स्थायात्व

येब यायमा द पर्मे मा ही द द द प्यवत के द भी ही ब येब महिषायमा द द र्थे है प्यवत चर्वः केन् स्थापेन प्यमः भ्रम प्यति र्थेष्म एत् प्यम् प्रमान्त्री स्थापेवः कें प्रीम खेन प्रीन प्यास्था नुर्दा महिषाया है र द्वेत स्रावेद या प्रकृत या यह र प्रकृत या महिष्या वा वा र के र विष केन साधिक यम दीक खेक से कणका यदि दी माने। खुट खका इसाया स्थान दीक खेक อูषागुरानुषायराभ्रीत्शुराने। सामन्दायरायेषायाद्वा प्रवादाराभ्रीसेसम यर खेब य दर्ग मलब दुः य दुना ह्रे खेब य दर्ग अदुन दुः अय दुना यर खेन तर्टा वेयत्रस्ट्रियंषुष्ठवस्यस्यवस्यस्त्री वियम्बर्धर्यास्त्रेष्ट्रियः ५८। देवाबायबागुटावार्वेदायदेख्या क्षेत्रादेशाच्या यवाक्ष्मुटायादर्वीवा चतु,विरु,तू,रेम्,बूर्,भैर,तम्,रम्,क्ष्य,मु,जी,जीम,रराउच्या,घ्य,क्षर,तराविर,क्र्य, न्वीयायायाने स्रीकेवायविष्ट्वीराने। नेविक्वात्यर्यायाववायायनवयायवे स्रीकेरनेवा क्ष्यामुरापत्रुद्धार्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्य भैग्नोर्बेर दे। प्रवयप्तर भैग्नेसस्य प्रस्पवय केर ग्री दीव येव सेर केस प्रिये देव धिव परि द्वि र वे र परि तम् र दे । क्वि र द्विव खेव क्व मार्थ दे प्यव खा पु प्रव तमर

ताक्षे.पील्यंत्रपृक्षिय।

श्रात्म्यंत्रपृक्षिय।

श्रात्म्यंत्रपृक्षियः

श्रात्म्यंत्रप्तिः

श्रात्म्यंत्रप्तिः

श्रात्म्यंत्रपृक्षियः

श्रात्म्यंत्रप्तिः

श्रात्म्यंत्रप्तिः

श्रात्म्यंत्रपिक्षयः

श्रात्म्यंत्रप्तिः

श्रात्म्यंत्रपिः

श्रात्म्यंत्रपिक्यः

श्रात्म्यंत्रपिक्यः

श्रात्म्यंत्रपिक्यः

श्रात्म्यंत्रप्

द्व, च्वेच, ज्वंच, चार, खेच, च्वेच, च्वेच, ज्वेच, च्वेच, ज्वेच, ज्वेच,

५८ र्ये पेर दे। क्षाय यञ्चय या सळ व मसुस्राम्य र दे पे क्षे व व रिव र यो व

क्रैंवायर देशया वसस्याया वनाया समार्केवायर वर्रे ना अना मे सर्वे न नु वर्षे नाम बुषायाः इस्रवाद्येषायदेः द्विम। महिषायाः स्पितादे। पक्षेत्रायमः हेमिषायदस। दमेः याम्मभार्वीषायविष्ट्वेम। देशम्बराम्डिमानुः सारेषायाची। देनानुः ह्वेमानस्म मुः स्रवरायरा वेरासी । वर्षायायार्ये ५ दे। स्रवः वित्यरा वरायरा स्टाप्य ५ दर्ग *'* धुर। 'चुर्यायेर.चिरायाचीराष्ट्रयाचात्त्रे, तर्ने, त्रियात्तियातात्त्रयात्राचिरायाया चु दर्गेष स्था । प्रविष्य प्येद दे। सक्स मा ग्री में प्रविष्य स्था सर्वे से प्रवेश सर्थे स्रुसाधिक या वर्षेत्र यदि स्रिन् साधिक या इससाद में साय दे हिया है या साम स्रिस प्रिस स्रिम स्रिम स्रिम स्रिम स तत्याष्ट्रत्यस्य चिर्च क्षेत्रक्षेत्र त्ये वर्षे चिर्म स्याप्य विषया वर्षे वर्षे यदि द्विर है। दे हिद यम यम यम है भारतमान या है। देश वह सान देव यो ने प्यान मु मान्वन मुंबाने सेन ही । विषामासुर या सूर पिन परि सुरा दुमाय पिर दी। वर्स्रिनान्दार्भिरावन्त्रीयार्वेराचान्दा। वयषान्दार्भान्दाम्बद्धारेनान्दा। नर्देषा त्र-क्रिन्द्र-क्रिन्द्र-क्रिन् । विषयः यात्र ह्रियः यात्रेद्रः ग्राद्रम् । विषयः यस्ययः येवः तत्रित्रे । विवायन विवायते प्रेमिया की मुर्के में बार प्राप्त प्रमानिक प्रम प्रमानिक प्रमानिक प्रमानिक प्रमानिक प्रमानिक प्रमानिक प्रमानिक केर'र्'भेब'यदे'र्धेर। युर'क्स'यदेर'यम। विव'येव'वेर'र्'यकुन'हे'ब'ब'रे' . धेर. त्रमाता रात्रा प्रात्मित्र हो । विषाना सिरमाता स्तर हो । निष्ठे मारा सक्समा पर्देशभी देशविश्वरात्रा दे ज्ञेशपादि देश विश्वरात्री स्ताप्त सामित्र स्ति । स्ताप्त सामित्र सामित सामित सामित्र सामित्र सामित् ररायविवानी अळ्यसार्टा देवे हे प्वियानार सुरार् दिनो खेट ने सार्येट सार्चे र

यान्त्रिम् स्वास्त्र स्वस

प्रज्ञ प्रत्येष्ट्री ।

प्रज्ञ प्रत्येष्ट्री पक्षित्य क्षित्य क्षित्य

पर्कुःळवःस्याने स्थि। बिनामिन्ने प्राप्त स्थान्य प्राप्त प्राप्त । विनेताः प्राप्त स्थाने स्

र्टाच्या प्राप्त क्षा विषामा स्था र्टा में में मा क्षा प्राप्त क्षा यवे कु वार्ये दश हुँ न यवे सुद हो न ये ने प्रति कवे ने कु वार्ये मुश्याया क्रायायिक्र विषयम् मु क्षा मारायायहण्यायदे मित्र प्रतर पु स्वर क्रिका निर्णु बिर हैं निषाया के निया हैन निर नु यह निषाय दे निर नु मुका का कि मिल के निर्णु के निष्णु क न्यायायविष्ट्रम् न्या निष्यायम् निष्यायम् निष्यायम् निष्यायम् निष्यायम् निष्यायम् निष्यायम् निष्यायम् निष्यायम् इ.२४.में भा भूची.चीराक्षे.चतु.२८८.२.चेश.४.घ.भवा.ततु.भूची.ची र्षेता. देः द्वर पु प्यम् ग्रायदे प्रयम पु र व्यक्ष कर्त्वर द्वेर प्रमान प्रयम प्रमान स्वर्थ कर् विक् नु। क् न हि रुमायह ग्रामये निया नु । सुन । ข้าวละเว้าอิพ.ชาชาวาละเก้า อุพ.ณี.ละผู้ในระเว้า สู่ยะพ.ผู้ในสระเว้า नु नुषान व्यन मुडेमा यह माषायान षा द्वी देवे के सावकर गा स्वन कन नु विद्या हुने तर वि.य.लुभावतु क्षेत्र। च्रिकाताक्षात्री वि.य.स्क्रायते विस्नावति क्षेत्र। हिन र्येन ने। हिम्म र्ये में द्वारा हिन या वातु न माय दिन हो ने वा न न माय यास्रोदेव सुस्रानु विदेश मार मी बर नु विद्वा या सि से मित्र से मी साम दिन र विश्व र यदः द्विम। अर्दम। बिर्मायाय अर्द्धिमायायाद्यी। हिन्दायायद्यी। हिन्दायाद्यी। श्रेर्गीर्ट्य विश्वर्द्य स्ट्रिंग्स्यर् प्रम्याय्यर् नाय्यं विश्वास्य नस्य त्रथत्रात्त्रिंदेत्तरः वृष्णत्रपृष्टिषाय त्यार प्रति दिर्दे हो। शर्दे र देवया पर प्रमण

प्रश्चित्रवि । श्चित्रव्ये । श्चित्रव्ये । त्रीत्रवि । त्रीत्रवि । व्याप्ति । व्यापति । व्यापत

विषयम्बेरायुःषाङ्चेषायदेःह्वराये द्वराये दिरादे। सुःह्वेषायाणी स्वापुः वुरा यत्त्रात्त्र्यात्त्र्व्यात्र्यः विष्यात्त्र्यः विष्यात्र्यात्रात्त्रः विष्यात्र्यात्रः विष्यात्रः विष्यात्यः विष्यात्रः व ध्रिमा अर्देम्यम् जीर्याञ्ची मालेर्या निष्यानास्त्रमा स्थापान्यमायाः स्थापित स्थापान्यमायाः स्थापित स्थापान्यमा म्चेर र्पेर दे। मैका त्राज्य स्वाया त्राया स्वाया में या साम स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स वेरिकायाय्व क्रिन वास्तरामारा बामा बिकायि हो विसाय कारत का हो यह काया बाहिकाया के से स वर्ण्य प्रति । अर्द्र प्रथम् भारति है प्रवित्र मु अवव प्रथम प्रदेश हिंदि । वेशम्बर्ग्स दुन्यान्सन्यन्त्रम्यत्रम्यदेःहुन्येन्येन्ते। नसम्सळ्यः किन्यविष्ठम् नुनर्गेषयासेन्यम् सळ् सेर्मिकिषयन्षयम् नेमय्यकुमयविष्ठिम् सर्दर। ट्रेन्वासेट्रयरेर्छ्र्यसळ्य्याहेर्यायराङ्ग्वायराद्व्वायरेर्व्वरावस्त्र यनुम्यान्युरानीयमान्यमान्यस्य सुर्खेरायते सुराक्षेत्रायामसुस्राय्येन दे। नसमा यात्रेषायदे द्वारा चन्रम्यायाष्याचाष्यदे द्वारा नम्भायाद्वाद्वार ह्येदाइसम्बर्धासुर्येदायदेरह्येत्र। दरायेर्येदादी दसमासस्वर्धेदायायात्रेमायादा देरविष्ट्रायकि:श्विरा महिषायाधिताते। तस्तावन्यस्यायम् मायासातेरावश्वरा चर्वः द्विर। नासुस्रायाधिनः दे। कुयायायाधिन्यस्य प्रायमायाधिकार्यस्य प्रायमा यास्यविकेन्द्रियाविरायावयाषाक्रिसविरायान्द्रिया वदीस्रमा तकर्याया अर्देरात्रेषायाद्या वन्ध्रयायाषुषायाद्या क्षाप्तेराक्षेत्रायस्याया

विस्किर्यो ।

विस्किर्यो प्रमान्यविस्वित्यक्ष्मित्रम् विस्वित्यक्ष्मित्रम् विस्किर्यो विस्वित्यक्ष्मित्रम् विस्किर्यो विस्वित्यक्ष्मित्रम् विस्किर्यो विस्वित्यक्षम् विस्किर्यो विस्वित्यक्षम् विस्वत्यक्षम् वित्यक्षम् वित्यविष्वत्यक्षम् वित्यविष्यक्षम् विस्वत्यक्षम् वित्यवि

पञ्चन्यान्त्रभारम् येष्वायक्षयाये द्वार्णे न्यान्त्रभार्या विष्याण्यायक्षयाये द्वार्णे विष्याय्यायक्षयाये विषयाये विषये वि

पञ्ज्ञक्षत्रः तुषायांत्रे र्ह्स्यातु। यते प्तर्ये सुराये पुत्रायात्ता । प्रेत्रेष्यायः स्वाये स्वये स्वाये स्वाये स्वाये स्वाये स्वये स्वये स्वाये स्वये स्वये स्व

त्तुः नीकार्यः स्वास्त्रः स्वास्

स्याप्तः श्वीक्षः प्रश्चीक्षः प्रतिः श्वीक्षः विश्वान्त्रः श्वीक्षः विश्वान्तः श्वीक्षः विश्वान्तः श्वीक्षः विश्वान्तः श्विक्षः विश्वान्तः श्विक्षः विश्वान्तः श्विक्षः विश्वान्तः श्वीक्षः विश्वान्तः श्विक्षः विश्वान्तः श्विक्षः विश्वान्तः श्विक्षः विश्वान्तः श्विक्षः श्वीक्षः विश्वान्तः श्विक्षः श्वीक्षः विश्वान्तः श्विक्षः श्वीक्षः श्वीकषः श्वीक्षः श्वीकषः श्विक्षः श्वीकषः श्वीकषः

यत्र प्यास्त्रेम् प्यास्त्र स्वास्त्र स्वास्त

चित्रस्य क्षेत्रस्य स्वास्त्रस्य स्वास्त्रस

क्रिन्द्रो कुळ्र त्वेवायायमा क्रिम्य प्रति क्ष्य प्रति क्षय क्ष्य क्ष्य क्ष्य प्रति क्ष्य क्ष्य

स्टारिकः क्षेत्रस्य विश्वास्त्रस्य स्ट्रिस् स्टार्ट्स् स्टार्ट्स् स्ट्रिस् स्ट्रिस्

चक्रः क्रवान्त्र व्यक्षेत्र मान्य क्षेत्र मान्य क्षेत्य क्षेत्र मान्य क्षेत्र मान्य क्षेत्र मान्य क्षेत्र मान्य क्षेत्य मान्य क्षेत्र मान्य क्षेत्र मान्य क्षेत्र मान्य क्षेत्र मान्य क

बृद्धिंश्वस्त्राश्चर्याः स्वाप्ताः स्वाप्ताः स्वाप्ताः स्वाप्ताः स्वाप्ताः स्वाप्ताः स्वाप्ताः स्वाप्ताः स्वापताः स्वाप

स्यानुन्सेन्द्रस्व केवा क्यायि हुन्येन्येन्ते। नेद्रम्झव केवा व्यायन्ते हुन्येन्येन्ये हुन्येन्येन्ये हुन्येन्ये हुन्ये हुन्येन्ये हुन्येन्ये

क्री.तायु.ट्यात्री.ताय्यु.क्रा.त्यु.क्री.ता व्यक्षट्रत्यु.ट्यात्री ट्यी.तायद्रत्यु.ट्रट्र.का.ताका.क्रीका.यु.क्रा.ताय्येयात्री.क्री. यक्षट्रत्यु.ट्यात्री ट्यी.तायद्रत्यु.ट्रट्र.का.ताका.क्री.का.यु.क्रा.ताय्येयात्री.क्रा.त्यु.त्यु.क्री. यक्ष.ताका.टे.क्यू.यु.त्रि.त्यु.त्यु.क्रा.तायु.व्यका.ताच.तु.च्रा.तायु.क्रा.ताय्यु.क्रा.ताय्यु.क्रा.तायु.क्रा.

पठिःस्व प्रमान्ति। पश्चित्ति प्रांति स्वा महिषाया महिषाया विष्ठ प्रायति स्व प्रमानिक प्रमानि

स्त्राय्त्रं त्रिमास्त्रं त्रि

द्वीरायर्श्वरायित्वा मान्नियायर्था विकायम्भयाय्ये स्वाप्त्रियाय्वे स्वाप्त्रियं स्वाप्त्यं स्वाप्त्रे स्वाप्त्रे स्वाप्त्यं स्वाप्त्रे स्वाप्त्रे स्वाप्त्रे स्वाप्त्रे स्वाप

यम्ब्रिययिः तुः भूरिय्वयाविद्वा विषय्वस्तर्वे स्वय्यस्त्र विष्ठा विषय्वस्त्र विषय्वस्त्र विषय्वस्त्र विषय्वस्तर विषय्वस्त्र विषयः व

प्रकार्तातृ द्विमा प्रकारतृ द्विमा प्रकारतृ द्विमा प्रकारतृ द्विमा प्रकारतृ त्विमा स्थान स्

मिलेमशक्रिंशम्बिशःस्री विश्वामश्रुर्मा न्दार्रीम् न्द्रमुप्देशः सुद्रमु न्द्रम् मिळ्याचीबारमे। वर्षे अञ्चलाकी बर्दा स्थानिक स् क्रमाञ्चेष्यत्यात्रायञ्चात्रम् त्रमाञ्चिषायास्य त्रात्रम् त्रात्यात्रम् विषायात्रम् त्रात्या ध्रिमा अर्देम देवे क्रिंग निषाद ने प्यतु मुख्य दूर राया ही क्षेत्र प्यत्वा पिया विर्वेष स ુદ્રદયાત્રવું ટ્વદ્યાનુશ્વસાતાભૂजાવમાં જા.વી. ધુના છું જા. જા. સું. તમાની જોજાતા તા. સૂની જા. यर कुं प्रायाणपर दें विषाम्बर्गा महिषाया कुयारेंदि से प्रतः दुष्य से प्रवे प्रते ૡૢ૿ઽ૽૽૽ૢ૾ઽ૽ઌ૾ૻઽ૽ૼૢૺ૽ૡ૽ૼૼઽઌ૱ઌ૾ૻૡઌૹૢ૽૱૽૽૱ૹૹઌ૱૽૽ૢ૽ઌ૱ૢૼઌૡૢૼ૱ भूतुत्विर की विषयाना की वार्तुत्र त्रियर दिश्व राय हेर वर्षे राय होरा महूर. विषाम् र्रेनेर्दिन् समायारमाया हेन योदी । यदेन हो ह्यु ने र षा द्यासासाय समाया हेन देः भेत्र हैं। विकामसुरमा मसुस्रायाष्ट्र दुः मर्से दः यदेः सुर हो देशे मर्से रु'म्बर'दे'स'र्रेव'र्येदे'र्देब'र्मे'य'ब'देर'वशुर'यदे'स्वेर। वदे'क्कॅम'र्देब'म्बिक्ष'ग्री' बर बर्भार्ने १९८७ तु वर्षेत् याधिक के न्येर कार्या में याया सुर हो न क्केन के क्केन न मिर्दर्भकालेकाष्ट्रर्प्यकेर्यास्य प्राचित्रप्रदेश्वर अर्दर्भेक्रिया महिन या पहिन यपि कें हे पा पान महिना हमा सुर हिंद कि यो है हिन या साधिन यन वर् यक्तिं वर्षे प्रमानम् वर्षा विषाः वर्षे निस्ता चित्रपावनः स्वायक्तियायवे सुदान्ते न्यापितः ने। चन्नि केन्यो केन्नु स्ट दशःभूभायानान्द्रत्वोषावितःरवानीषाव्यभावे पुरावन्त्रः देरावन्त्रः विराधितः सर्दरः चर्से ५८ ऱ्रुयः य ५८ ऱ्रेवे ।वयः २० खे ५ ५ त्यः छे ५ ५ , पञ्जा या व्यवे । विकामासुस्या

रची-चे-चालुब-चारु-ख्री-चालुक्ष्मी विस्तु-क्ष्मि विस्तु-क्ष्मियाय्य अप्यादि ख्री-चिक्ष्मियाय्य क्ष्मियाय्य क्ष्मिय क्ष्मियाय्य क्ष्मिय क्ष

दे राज्यात्र्वायात्र्यात्र्वायात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या

इंक्रिं प्रतियार्थे र प्रविषया हैं स्थाया हिर प्रतियान विक्रित्र प्रतियाप पश्चम्याम् सम्भात्र । विषय क्षा सम्भाय सम्भाय । विषय । चनम्बार्यराष्ट्रीचराम्बुरम् विषाम्बुरम् इराधान्यस्य विषा यदे र्शेर प्रमामा प्रमान देवा हैं हैं से स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स व.उर्व.त.व.रम्.४८.कै८.कि..वे.व.वीश्रा.वे..वे.वे.वेथ.तथ.वश्चरत्र.वे.वूंश्य.त. बर्नरावशुरावते श्वेरा अर्नरावेशवार्वता । नवार्श्वेरासावे न्याये साविष्या विषाप्ता प्रमानिष्या महिषा प्रमानिष्या प्रमानिष्या प्रमानिष्या प्रमानिष्या र्थिन निष्ठायमायर्थेन नुर्वेषायायान्ने द्वितायायान्य देवमायायान्य द्वितायमाया वर्षेक्षयाक्षार्त्वेषायम् वर्षाविषायाक्षार्तेमावर्षात्वेषायाक्षात्रमा वर्षेक्षायाक्षात्रमा वर्षेक्षायमा क्रिंट मेरीय तार्म्य यात्र तर्मेष दे पूर्य तथा व्रिय दे त्रिय दे विषय मेरी हिया वर्षिय वर्षिय वर्षिय यावश्चवषायाद्रवाहे विभाद्रावह्रवायवे र्से रावन्ववषाये दि। विभावी वश्चवायवे देरावर्ण्यावरिष्ट्वेर। अर्देरावश्चवायरिः र्ह्यायाः श्चेत्रायरे विश्वात्रमावरवायाः र पत्रयः प्राचित्रात्रे स्त्रात्रात्रा द्वे त्राचे व्यवे त्राचे व्यवे त्राचे व्यवे त्राचे व्यवे त्राचे व्यवे त्र यमः तृरः परिः सेरः प्रमामाणि । परिमामा परिः परि मामा सार्यः समामा सार्यः प्रमामा सार्यः समामा सार्यः प्रमामा स

श्राप्त्रम्भायत् देशान्त्रमान्न्य स्वर्णा स्व

 चित्रः हैं क्षंत्रक्ष्यं स्तृत्वे न वित्रः हैं न वित्रः हैं क्षंत्रं स्तृत्वे न वित्रः क्षंत्रं स्तृत्वे न वित्रं क्षंत्रं स्तृत्वे न वित्रं क्षंत्रं स्तृत्वे न वित्रं स्त

यास्त्रा अषायेषाषायरास्त्रास्तर्भायात्रा सुत्रातात्रकत्तुःस्र

क्रिन्यक्तर्भाद्धः विश्वास्त्रण्याः स्वास्त्रण्याः स्वस्त्रण्याः स्वास्त्रण्याः स्वास्त्रण्याः स्वास्त्रण्याः स्वास्त्रण्याः स्वास्त्रण्याः स्वास्त्रण्याः स्वास्त्रण्याः स्वास्त्रण्याः स्वास्त्रण्याः स्वस्त्रण्याः स्वस्त्रण्याः स्वास्त्रण्याः स्वस्त्रण्याः स्वस

विश्वाकृष्टेन्यविग्यं स्विन्त्र्यं स्विन्त्र्यं स्विन्त्र्यं स्विन्त्र्यं स्विन्त्रं स्विन्तं स्वन्तं स्विन्तं स्विन्तं स्वन्तं स्वन्तं

इ.६वासार्वेवातार्वीयाङ्गी वसीत्याताःसूर्यासास्त्रातायत्वी ।सिटायत्र्वेराता

क्षित्रायमाञ्चित्तं क्षित्त्वे निष्णाम् विष्णाम् विष्णाम

ताक्षेत्राचित्राह्म स्त्रीय हुंग स्वायत्र प्रमान्ता क्षेत्राच स्वाया स्वया स्वया

यद्रा ब्रेर्य्यकेर्थयद्रा व्रेर्य्यकेष्ययद्रा व्रेर्य्यकेष्ययद्रा व्रेष्यव्रेष्ययद्रा व्रेष्यव्रेष्ययद्रा व्रेष्यव्रेष्ययद्र्यः व्रेष्यव्रेष्ययद्र्यः व्रेष्यव्रेष्ययद्र्यः व्रेष्यव्रेष्ययद्र्यः व्रेष्यव्रेष्ययद्र्यः व्रेष्यः व्यव्यः व

व्यासायम् निर्मान्त्रम् । विष्यामान्त्रम् । विष्यामान्त्रम् विष्यामान्त्रम् । विष्यामान्त्रम् । विष्याम् विषयाम् विष्याम् विष्या

कुत्र-प्रमानिक क्रिया क्रिया क्रिया प्रमानिक प्रमानिक क्रिया प्रमानिक क्रिया प्रमानिक क्रिया क्रिया

## जीयायायबियासासी। जीटा स्वीयासी स्थानियासासी स्थानियासी स्थानियासी स्थानियासासी स्य

स्वमाः साम्याकृत्माराय्या स्वावन्त्र स्वमाः स्वावन्त्र स्वमाः साम्याकृत्य स्वमाः साम्याकृत्य साम्यावन्त्र स्वमाः साम्याकृत्य स्वमाः स्

चिर्णुवर्म्यान्त्री स्वर्भात्रवा विशेषात्रवात्त्रीया विशेषात्रवात्त्रीया विशेषात्रवात्त्रीया विशेषात्रवात्त्रीय विशेषात्रवात्त्रवात्त्रीय विशेषात्रवात्त्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्यवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्

तातक्षयायक्षान्त्रेत् क्र्रीयमांग्रीमानेश्वमान्त्र होन्। यथ्ना स्थित हे क्ष्रमान्त्र स्थाना सातक्ष्यायक्षान्ते क्ष्रियायां स्थाना स्था

यः मर्रेष्ट्रियम्भे वळवासेस्रम्यस्ययेत्यम्यम्प्रियम् दर्गेस्यप्तर् यस्यायानुहान र्षेस्यायानु निहान निहान देशायान्तर निहान स्थायान्तर निहान स्थायान्तर निहान स्थायान्तर निहान स्थायान्तर निहान स्थायान्तर स्थायान्तर निहान स्थायान्तर स्थायाच्या स्थायाच्याच्याच्याच स्थायाच्याच स्थायाच्याच स्थायाच्याच स्थायाच स्थायाच्याच स्थायाच्याच स्थायाच्याच स्थायाच स्थायाच्याच स्थायाच्याच स्थायाच स्थायाच्याच स्थायाच्याच स्थायाच्याच स्थायाच स्थायाच स्थायाच स क्षुट 'च' ख्रेर 'चर्डे भ' गुट 'क्रे 'वर्ग 'पंदे 'क्रुं व' ग्री भ' तुक्ष भ' प' प्येत 'ते। देगे 'र्सेट 'द्रगद' व्देन'यावळव'सेससामा क्षेत्र'यासामा सामा स्वापाया स्वापाय स्वाप मिले यथा निवार्श्वे मिषाने प्रमान प्रमान मिष्टि मिले प्रमान प्रम प्रमान नुःक्षेर्द्रमा नुगुर्वेर्ष्यकासुःक्षेर्द्रमा वदेरक्षाङ्केर्द्यम् निम्हालवेरम्बिन्यरुन् ब र्ह्मेंब र्रोर प्रमुर पुरेश रुप। वसेय बिट मुक्ष य प्राप्त स्वाप्तर की प्रमुर बिका स्वायानासीरसातालाष्ट्रात्तुर। रटात्ताचीयाङ्गी स्वाक्र्वायाताया रवीःश्चिरः <u> २ वर म्रे २ म्रे अर झु २ पर म्र प्राया अर्थ अर्थ मु २ म्यू २ म्यू २ स्थाय वर्ष अर्थ वर्ष अर्थ मु</u> वरुवमायमायमायमान्त्रीयशुरश्चे। वदीयाद्देश्चेत्वरेष्टर्न्यवस्यायाच्चेमायमः वृद्। विश्वानुरुषायदे भ्रुमा निवार्श्विमान्त्र विनायान्त्र वायान्त्र विश्वायान्त्र विश्वायान्त्र विश्वायान्त्र यार्थेर्'रो सम्मार्थः हेराम्हिन्सायवे ह्रिमार्थः हु। यात्रेन्युरायसार् राम्याया चर्वःकेन्द्रः धेन्यवे द्वेन्द्राचेन्द्राचेन्द्राच्याच्याचे वक्रवासेस्रस्यस्य प्रवेष्यन यग्नुनेर्भयर्द्रम्भयद्रेश्चयवद्यर्घय। युर्भर्भेत्यम् समयः हुर्द्यः वश्चवयाष्ट्रीवयाष्ट्रात्वेव। ग्राट्येळ्ट्ययर हुँद्या हुद्दे व्यव्यक्तिया यार्स्रायाप्परावक्रवायविष्रेम्रम्भाविष्ठेत्याप्येत्राक्षेत्रायाप्तरा युरा क्रायन्त्रित्यम्। निर्मेश्चित्यम्ब्रीत्यम्ब्रीत्यम्ब्रीत्यम्बर्यान्त्रम् विषयायायकतः मुभमाम् यो त्याप्तमान्य विष्यात्र विष्यात्र विष्या सम्भावन विष्या विष्यात्र विष्या यर परेंद्र यं ने 'देंग' मुं पर्वेग में ।

लट.र्ज्ञ.रचर्यातास्थ्रमात्रेत्राच्यात्रेत्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्या त्रद्रा वक्षत्रम्भम्भम् अत्राप्तमः हूँ स्रापानिहरायर ख्रियः वर्षायमः क्षे बिटाक्षुटायाध्वीरावर्ष्ठ्याव्ययाययायन्त्रायान्ता वक्षवाय्ययायस्या यानुदान क्रिया क्रिमान वर्वायवे सुवाक्रीयात्रम्याये में । दे प्यरायमार्स्यायमार्स्याया केरा ही भी निर्दर्भ नश्चन दीव दिने श्चिर ने किर्ने लिया नश्चे व हिन का मी हिंदा ने किया ने प्राप्त के किर्मे के किर्मे किर्मे के प्राप्त के किर्मे किर्मे के किर्मे के किर्मे के किर्मे के किर्मे किर्मे के किर्मे किर्मे के किर्मे के किर्मे किर्मे किर्मे के किर्मे किर्मे किर्मे के किर्मे किर्म श्रेर्यिः भ्रेरित्रे । युर्वु यायमा वस्त्रवाद्येष प्रेरित्व स्त्रेष्य यर हैं गमाया स्रियात्रायक्या तीरास्य क्र्यायात्रया दे प्रक्षेयात्राह्म्यायात्राट्टा तरायक्या ततु.हीर। रट.तू.चीराङ्गी पश्चेष तरायाङ्गिषाताताः स्वीयायरावधिरायायञ्चरा वर्षायाया वर्षायः क्षेत्राया दे विषेत्रः हे वश्चवयः विषेत्रः याव्यक्ष्यः विषया वर्षेत्रः पर्वः भ्रिमा महिषाया मुना है। पश्चमाया च्रिमाया में निमार्श्विमा महिषाया में निमार्थ में म योशीरकात्तर् क्षेत्र खेळा ब्रेट्रा हे देवीयो त्तर्था स्थात्र क्षेत्र ता यो हेट ता था तहार त्राच्या त्रम्यार्वेप्ययुव्याच्याच्याच्याः क्रियाः स्टियः विश्वम्यार्थे विश्वम्या श्रेन्यादेशाचित्रात्वराङ्गवात्त्राङ्गितास्त्रात्रेष्ट्रीत्राचित्राः नरास्त्राचीयाङ्गी जीरा क्यापन्ने न व्यानिस्यान स्थानिस्यान स्थान स् हेर्नश्रान्ने क्वेंट्रायायार्केश क्वेंब्राब्रुट्रा हेर्ने विश्वान्यस्य क्वेंट्रान्ट्रा देर अ:बर्'स्थायःवृह्'त्वेतंन्त्राह्मन्।यास्थायशःश्लुर्'त्वातहत्त्रः द्वेन्याः यात्रेह्ने वि.च.जम्बामिरमात्रातुः द्वीमा वाषयालमा जीवामानुः भारवन्तमा नेवा. ह्में ८ मिर्डिम त्यायस्थायायि के अध्याप्त कि स्थायका है स्थाय स्थायका है स्थाय स्थायका है स्थाय स्थायका है स्थाय

महित्य देशायवर पर्य क्षेत्र दर र्योदेत्र वया मत्त्रमाम्केमायायस्य पर्यादे वर्त्यूट पर्योत्। केषाक्षर दुवर् वर्त्युट पर सेद पर्योत्य दिन प्रमान यमा मट ज्ञमाम्डिम यासस्य प्रस्ति र प्राची स्वर प्रमुद र विमामस्र स पदःस्थित। यद्गिरायादेराधया। यदा अवायाद्ययाची कृतायाची अवायादा स्थाप यःह्रथः वः ५५ दः ५ द्वा अवस्य दः दः क्षेष्ठः वा विषयः यदः विषयः वि श्रायवर तर वजा समारा वैंट तयु चट वचा चुमार चा तर्श्या वृत्य कु र के र छी. वश्चवः वायायायायि वित् पुरुष्याया विवा द्वियायाया वित्राप्ते वित्रापते वित्र र्ये देर विया स्व केंग्रायया गर ने कें बग्या बर पर देवे कें हैं व ने म्याया र वर्षात्तर में कु क्षामें सेरकाराव की राज्य विषय कि विषय है से विषय युर यथ। सम्रायदे हे भाषा चुर वा दे भाषा श्वापा सुवा है । वा वा भाषा सम्रायदे है भाषा सुवा मा सुवा मा सुवा मा सुवा मा सुवा मा सम्रायदे है भाषा सुवा मा न्तरा र्ह्मायावर्वाकील्ट्रायार्ह्मातामायधरार्व्याक्षातव्यक्षित्रा द्राया ह्रा पक्षेत्र तर भ्राष्ट्रेचे यातर प्रति रात्र रात्र प्रक्षेत्र प्राप्त में स्वाया प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्र यद्दे स्र र धिव बि को देव धेर दे। यञ्च य य दिव य देव र वो रें हिर सम द वा या दिव र येव प्रस्ताया वक्ष वाया प्रमा विष्ण क्षेत्र यरम्बुर्षय्यः न्ता व्यतः न्त्रः वुः न्वेषः यदेः कः वषः न्वेः व्यतः वषः नवः न्तरः वरः वायान्वित्यात्रयाने व्हाराम्युत्यायवे द्वीरान्ता नवे द्वीतानु द्वीरान्ता वायान्या यायान महेन में क्रिन्य सुराना या क्रुन मिन् मायी सुरा

स्थात्रसाङ्ग्यात्रसान्त्रम् स्थातात्रक्ष्यात्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्

विस्त्यायाः केवास्त्रास्त्राध्यायाः क्ष्रियायाः कष्रियायाः क्ष्रियायाः कष्णियाः कष्णियाः कष्ष्रियायाः क्ष्रियायाः कष्णियाः कष

ता.श्ची.प्र.च्याचार्यात्राच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्र

यून्य प्रश्नेत्र प्रक्षेत्र प्रश्नेत्र प्र प्रश्नेत्र प्रप्ते प्रश्नेत्र प्रश्नेत्र प्रश्नेत्र प्रश्चेत्र प्रश्चेत्र प्रश्चेत्र प्रश्चेत्र प्रश्चेत्र प्रश्चेत्र प्रश्चेत्र प्रश्चेत्र प्र

त्रुर्। तर्तातह्रम्। स्थिम्ह्र्यान्छ्य न्वान्छ्यान्च्याम् स्थम्प्रस्य स्थम् स्यम् स्थम् स्यम् स्थम् स्यम् स्थम् स्यम् स्थम् स्यम् स्थम् स्यम् स्थम् स्यम् स्थम् स्यम् स्थम् स्यम् स्थम् स्यम् स्थम् स्थम् स्यम् स्यम् स्थम् स्यम्यम् स्थम् स्थम् स्थम् स्थम् स्थम् स्थम् स्थम

 पञ्चत्रपृत्रं क्षाः चिक्राः सुं त्र कृष्यः मुं त्र कृष्यः मुं त्र कृष्यः मुं त्र कृष्यः मुं कृष्यः मुं कृष्यः मुं त्र कृष्यः मुं कृष्यः

प्रचित्रायाः स्थान्त्राचीका व्यव्याचीका ने स्थान्त्राच्या स्थान्त्राच्या ने स्याच्या ने स्थान्त्राच्या स्थान्त्राच्या ने स्थान्त्राच्या स्थान्याच्या ने स्थान्त्राच्या ने स्थान्त्राच्या ने स्थान्त्राच्या ने स्थान्त्राच्या स्थान्त्राच्या स्थान्त्राच्या स्थान्त्राच्या स्थान्याच्या स्थान्याच्या स्थान्त्राच्याच्याच्या स्थान्याच्याच्याच्या

ब्रेम्प्रेमप्रेस्थिम। यर्पेन्म्भे वर्म्यम्बर्भययम्यर्भयर्भ्यः सुर्वे वर्षे चुवि देश चेश से से देरे राज्य तबर तर बता है अश हैं बेश सबें से हैं हैं राज्य से त्तु.हिर.हे। तूर्.र्वेथ.जर्मा ट्रे.क्शका.हियाशभवीय.लूटम.सी.हिर.वि.ही विश ययद्वयर निमान्य से प्रवेशित । । विर्नेषा परिषा प्रायस स्वरं र स्वरं निमान से वा विषान्ता व्रे न्वनायम्न अहिन यथा षात्रि वहिष्ठा न्या व्यव्यापिय निव्रु र्थे त्रे इसस्य सम्बद्धियाय। सिर्के घर पर पक्षत्र पर व । ब्रह्म पर पर सिन् सर्वे क्षात्र वी विषामस्त्रात्र हिरा वेषात्र रा वर्षात्र विषा र्चय तथा है .से र वो शेरकारा है विशायत से वो शाही द्वार में विशायत है वो शाही वो है वो म्रेन्यत्रेम्बर्यं में बर्यं के विषय्य के विषय के विषय्य के विषय क यश्रचित्रपदेःह्स्यापान्दर्वेत्रापान्दर्वेत्रापान्दर्वेत्वापान्दर्वेत्वापान्दर्वेत्वापान्दर्वेत्वापान्दर्वेत्वा त्रिगा'त्'बे'र्वेत'स्ब'म्भे मस्तर'दे'द्रर'र्देब'त्'यम्ययम्यर'सहत्तरे'त्ध्रत'र्दे। । गरः क्षराग्रमा देखसमायक्षायुविकेषायुषाधिकायक्षाविदायरावया हेर्गु।इसा चन्द्राच्या सुःक्षेन्याच्यक्तान्त्रीःह्रम्याच्यक्तान्त्रीःह्रक्ष्राःचिस्रायदेःह्रम्याच्यक्तान्या दे प्रविष्ट्रास्य सुद्धा मे मुकायाद द्याप्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्व ब्रे.चनवार्यात्रः चे.चतुः देशः चेराः सं. त्र्यं राष्ट्रेशः वर्षाः वर्षाः सं. त्रे स्रायः . युवाष्ट्वर्पर उत्र की दुर पु परेर अपूषि अपूर्व प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्रापत प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप म्चिम न्यम्त्रिणयां है। न्यार्मिन्यान्ययान्ता न्त्यमान्ययान्ता चवर्यात्री म्यासारा हेर्ने या प्राप्त प्रमेत्र सकेवी यासा चुर्या संविधाया म्यासी स्वाप्त स्व गुःदेशःचित्रायचिदःत्रायक्षरःत्राद्धः हिर्दे श्राज्येषात्राहे। के.क्ष्रायचेतात्रात्रा

त्ता, व्यक्ष्यं देट्ट्यू त्र्रेयक्ष्यं विश्वान्त्र क्ष्यं क्षयं विश्वान्त्र क्ष्यं क्षयं क्ष्यं क्षयं क्ष

चीः क्ट्रिंगता जुष्यं ततुः भटिं वाक्ट्रिंग विषाः भूचिंग विट्ट्रेंग भी विषाः भूचीं वाक्ट्रें त्राच्या त्रिंग विषाः भूचीं वाक्ट्रें त्राच्या त्रिंग विषाः भूचां वाक्ट्रें वाकट्रें वा

## न्नरश्यवे सुरा

स्ति । स्वायम् स्वयम् स्वयम्यम् स्वयम् स्वयम्यस्यम् स्वयम् स्वयम्यस्यम्यस्यम्यस्यम् स्वयम्यस्यम्यस्यम्यस्यस्यम्यस्यस्यम्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस

देश्वर्यतः क्षेत्र। श्रीयविर्यत्वेषा विषय्वेषः स्वाप्तः स्वापतः स

 वह्रम्यन्त्री ज्ञामान्यवान्त्री न्नी स्वायान्त्रीम्यायवे स्वायाम्याया वन्नन्ति ने मानसमान नुमानसभाय राधिन न्सायकसभायते न्मीन यर स्रीमानसभाय याक्षरायरायवनायविधिर। ब्रायहेनामी र्स्तेनामास्त्रम् सेरायदर स्रायवन हो। यक्षय यविगिबिग्वरु'त्राकेषासेत्रवरुगम्सुसायसाग्वन्यविकेषिम्यायविस्तर्भातिस् जासिट यम बोर्योट याना वाया १८८ देवी म्हें वाता सुवाया सविष दें वायी ट्या तही मी यमाम्यायम्भामाञ्चर्यायः तर्मे नायाः सुदायामान्याः स्वर्णायायः स्वर्णायः स्वरं स्वर्णायः स्वरं स् য়ৢ৶৻ঀ৶৻য়ঀ৻য়য়৻ৠয়৻য়ৼ৻ঀয়ৣ৾৻য়৻য়৻ৼঀয়৻য়৾৻য়ৼ৻৻ৼঀ৾য়৻য়৻ৼ৻৻ৼ৾য়৻য়৻ लुष्णीरः। पर्सैपःवीःजभाग्यज्ञभाषाः सैशानरः तृमुः प्राधाः प्रविद्वीर। योश्याः वर्ह्मान्त्रेन्याकेषास्त्रन्त्र्यद्रम्यवरास्त्रावन्त्रन्ति नम्स्वास्त्रम् त्रचित्रचार्यः निःस्ति प्रचावर स्विर प्रकट माने भाषा प्रमुद्धि प्रचित्र स्विर विषा स्वित्र प्रचित्र यर सहर दे। क्वेंबरे क्ष्रका के नार्वे र हिर है अप के स्थाप के निष्ट्र के का निष्ट्र के देवर्धे के या देवाया सेवासाया द्वीवासा समुद्रा से प्याप्य से प्याप्य के प्याप्य के प्याप्य के प्राप्य के प्राप्य चालक या चार्के र प्रते प्रमाम मान प्रते हिंद प्रते तर.पर्सेंच.वी.जग्रजावायथग्रासींशतर.ठ्यू.शु.रेट.च.ध्यश्री.ठ्यूट.त.क्ष्याश्री. वन्द्रित्व वर्ष्युवानुःवर्षाम्वयावास्याचे स्वीतान्त्रा देःवर्षाम्वयायविःसत्त्र र्टेशः सुः र्हेन 'न्वेंशया है। र्हेसाया हेन 'यदे केन 'धिन यदे 'हु मा नवे। क्रुंवासान माने क्षेत्रसायायपराष्ट्ररासेन्तुगाबरायार्थेन्ते। नरायायात्रीम् मुस्मार्ठम महिषाया यानर्रे स्रम्भ सुर्धे न प्रते स्रम् देश प्रदेश का कर स्रोवे से के नमानवण में यिष्यात्राद्वियामा सम्बन्धात्र प्रति । के क्रिक्र प्रमेषा या के मान

५८.ब्रॅंट.२८.ब्रॅंट.२८.ब्री विष्ट्य.ब्रींट.वर्षेट्र.वाल्ट.वर्ट्ट.त.२८.व. विष्ट्र.त. र्ट्यु न्वर्यायर्ट्या । यानुषार्या हेर्न्यावी व्यया हुट्या । विषया सुट्याया ह्वर बाधु तर्देतु सुँबायायाचीय तर्देर तर्वीर खुटा। वर्द्धेय र्ह्म्यातायेष्रयात्तर सुँबायायाचीय. ५८। वरः अष्ठअशयवे र्धेवाश्वासम्बन्धानिका सुष्य पुष्य विद्यापा दे विवे प्रवर्त विभाविष्यात्रात्रकात्र्यात्रात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्रात्रात्रात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्रात्र्यात्रात्र्या याम्युसार्थित् हो। त्वावा चु छे या द्वीवा या क्वित्र पा क्वित्र पा क्वित्र पा क्वित्र पा क्वित्र पा क्र्रायाक्रुरावर्षे अञ्चर्षायाद्वा मान्या मान्या मिन्या क्रिया क् ने इयर वा मुकर्ये व्यवस्था येव या स्राया व्याचिव व्यव प्राया मुकर्ये व्यव स्थान रश्चिमायाम् विष्या स्ट्रिं स्त्रीमाया स्ट्रिंग् पुर्माया स्ट्राची पुर्माया स्ट्राची पुर्माया स्ट्राची स्ट्रिंग यःहेषःश्चरामध्व। विवासीश्चर्याःश्चेष्वयाःश्चर्याःश्चर्याःश्चर्याःश्चर्याःश्चर्याःश्चर्याःश्चरः त्मृ.भर्षेष.तपु.हीर। यट्यातर्यात्ये.रटा.ही्येषाभर्षेषेयातु.ध्याचेषामी.ट्र्या यह्रम् स्त्रि हे। इ.चयायमा चैमात्र क्रमां मारक हारा मूर्यमा हि मार्थी मिर्धा यमा म्रायि न्यायि स्वाय प्राप्त प्राप्ति वाया सम्बन्धा स्वाप्त प्रिय प्राप्ति स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप क्विंदायिः मित्रे व्यक्ष मुरुष्ये व्वाद्य प्यत्र का प्रदेश मार्थे मित्र प्रयाप्य कर यः स्वायाः र्सून् रें सुन् रें मुन्यावे रायया सुन् रायवे स्वायन्य रायद्या स्वाय स्वय स्वाय यात्रायासेन्यात्रे वित्यार्श्वे प्राणि मिले व्ययाण्य रायते त्वत्याय र्यात्र स्त्रिम्या सन्त्र कु'याक्के'याक्ष्मिमान्ने'यधुरमायेराने'मिन्ने'याक्षाम्यान्येरायदेशन्नरकाद्यार्थिन्यासम्बन्धा विवाक्तिमाञ्चमाञ्चापार्यम् विवर्षम् विवर्षम् विवर्षम् विवर्षम् विवर्षम् विवर्षम् विवर्षम् विवर्षम् विवर्षम् विवर्षम्

स्त्रीयश्रास्त्रा

त्यभ्रयत्यस्त्रम् स्वर्णः स्व

त्रामिष्ट्रिन् ग्रीष्वभ्रायायन् मार्यदेश्विरान्द्रा ही ह्यमाञ्चायार स्थाप्ता स्था यायक्रवासेन्यन्त्रायदेः स्त्रीरान् प्रस्ता स्त्रीत्रा वस्त्रवास्त्रीत्रात्रीत्रात्रीत्रात्रीत्रात्रीत्रा इस्रान्नान्तास्राप्तान्त्राचित्राम्यान्यस्यान्वन्यान्यस्यान्त्रान्ते। पक्षेत्रायम् सार्हेन्यः यद्र व्यापित प्राप्त विष्य देवी स्त्रीत स्वाप्त विषय स्वाप्त विषय स्वाप्त विषय स्वाप्त विषय स्वाप्त विषय स्वाप यरः अः हेन्न अप्यते प्रने । खुवाप्त प्रमा अप्या । स्वर्था के प्रमा अप्या । स्वर्था के स्वर्था के स्वर्था के स् देराच्या देशद्रवे। र्ह्सेट इस्राद्याया द्वेष येष क्ष्याया येथे स्वीर देरा साम देशेया व अन्मर्भमायहेमायार्भम्याया नमे ह्वार इसानमानीयमाअनासमायहेमार्भम्यास् श्चेत्व्र रव द्रा देखास्य अनुषयम द्रवे ह्वेट इस द्रवा वायास्य प्रमुखाय दे ह्वेट ग्रेन्'न् से'प्श्नर'नवे'रळ्य'यप्ट नेष'यर 'ग्रुवें । पश्चप'ग्रेब'नवे'र्श्वेट 'ब्र्स्वर'ळ्वे र् दीव योव हैं नय से न सके की स्ट्रह्म रे या वे साधिव के विकाय वे सर्मा नुनय वे धुर। ५वे र्स्चितः स्वायायायार दिविषायये दिवायार स्वित्त हो वस्त्रवा स्वित्त हो स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्व ने निष्क्षित्रस्रिते खुवावात्रङ्गेर्द्धायम् सार्हेष्मश्रयन्तर विद्यायात्र विद्यापितः विद्यापितः विद्यापितः विद्यापितः यदे भ्रिम देम वया देवे याना स्ट्राम्य न प्रहेना सेन साम ने भ्रिम स्वी मार्थना याने व्हार अप्येत नि नि क्विं क्विर प्यमानि के क्विर अप्यानि ते क्विर प्यमानि क्विर प्रमानि क्विर प्रमानि क्विर प्रमानि क्विर प्रमानिक क्विर क्विर प्रमानिक क्विर क्रुंरायायारादे सुराकग्रायदे धुरा

न्मोर्श्चिट इस्रान्मान्न मान्न मान्न मान्न मान्न प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षे

क्ष्माः श्राद्धां व्यक्षां स्वीत् स्वायं स्वीत् स्वायं स्वयं स्वयं स्वायं स्वयं स्वयं

प्रत्ने क्र्याम्यर्द्धन्यत् क्ष्याम्यर्द्धन्यत् क्ष्याम्यस्य स्थान्त्रम् विष्यः स्थान्यस्य स्थान्यत् स्थान्यस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य

यदः स्त्रीत्र। यञ्च व्याप्तत्रः यद्भार्याय स्त्रुत्यः यद्भार्यः स्त्रीत्रः यद्भार्यः स्त्रीत्रः यद्भार्यः स्त्र यद्भार्यः यञ्च व्याप्त्रः यद्भार्यः स्त्रुत्यः स्त्रीः यद्भार्यः स्त्रीत्रः यद्भार्यः स्त्रीयः स्

क्षिट न हैं है न हैं है न तर है व जायमान वक्ष्य न क्षा मुका मान क्षा मान है । ৾য়ৄৼ৻ঢ়ঀ৾৽৸ঽঀয়ৣঀ৻ৠড়ৄঀ৸ড়৸ৼ৸৸৸৸ড়৸৸ড়৸৸৸ৼ৸৸ৼৼঢ়৾ঀ৸৸ঢ়ৢ৻ ড় ध्रिराते। क्रेन्यास्यादने क्यामी हेवाया क्या मार्थे द्वारा प्रति क्षेत्राया मुख्या देवाद्या देवाद्या । मियानमा स्त्रीत्मेर मिन्द्रेन त्यास्यस्य स्त्रुमा सुनाया सस्याया स्त्रुम्य स्त्रुम्य स्त्रुम्य स्त्रुम्य स्त्र र्ज्ञ अर हैं र प्राप्त कार्य कार्य विषय कार्य अर्थ मार्च प्राप्त के र विषय है। यन इर पञ्चेर पञ्चेर प्रस्तर स्वा रे द्वर अवर स्वा युव प्रेर के। र्वे रेंहिर ने या की मार्केन प्राये सुदाय मान्न की यहाद प्राये सि माने नि सिंद मी का की मार्केन त्रुत्यम्भः ह्वीर वार त्या चिमायदे हिरा विमा बेरा द्रमा देवी ह्वी स्वार सम त्राभ्रातभ्रेद्रायराच्या द्रमार्श्वेदायमाभ्राम्भर्यात्रायमार्भ्वेदायराम्भराम् यदेख्विम वियायायमा वर्नेन्स्रानुमाने र्सेन्यार्केन्ग्रीयस्यायाने सस्त्रानेन्द्र वर्षित्राच्यालेषात्राच्यात्राह्येत्र वर्षाच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्या निने क्वेट निक्त या की निकेट यदे क्वेट या सुका क्षर नि क्वेट नियस्य या सुका है। र्वे क्यं वि के त्या सहर हिवा चीरा त्यं के समाय देव के मार्चे मार पश्चेरायर वया क्रेन्यास्य अरखेषार्याच्याचेरादेवादे त्वर पर्यास्य स्था वियः है। हूं साचारी सार्र भा की सार्य सारायु र दे वो हिंद से कि दे सार वो किंव की हूं सा

यार्थेर् प्रमार्गे स्वार् प्रवस्थाये हे माया सहर सुना नुवाये से समाय र्वे हे मा च्यानक्किन्यमा क्षिः सायाप्यमाने निमानकि स्वापित स्वाप यवि द्वित्र देवे त्वर वुर ह्र भारागामा यारामा राज्य राज्य त्यार दे राज्य स्वर प्रेत स्थान र्वे । १०५७ वाषाया देविषायवे सर्दे देवायन् ५ विष्ठा देवा सेवाया वार्षेण्या पर्यः इत्याप्त वर में त्या क्षेत्र में दे त्या क्षेत्र प्रमाण प्राप्त निकाय वर र्थे क्रेन ५ र या स्नन प्री ५ प्याप्पर प्यापाया दे ५ र प्सन प्यापे ५ र प्री न विश्व परि देन प्री न यवे द्विरा श्रेम नवपद्रावर प्राच्यापितवायाया स्माने ने न सपर हे से सिर सिर र् 'दशुर'वेष'यदे'र्देब'प्पेब'यदे'श्वेर'र्दा प्यट'ह्य'यगाग्य'वेष'र्सेग्य'ग्री'सर्दे वर् दे.र्ज्ञ.या.वा.श्ची र.तर.वी.ही कीवात्तुवायर्थे मूग्न्यू प्राप्त का.श्वी स्वात्त्र म्हि. ब्रायसायरावश्चरायाद्वा देपविष्ठं क्रियां के मुख्यायाद्वा क्रीसळं मु र्त्रयायक्षेत्रायेश्रद्धार्यात्रा राष्ट्रया स्त्रेश्राक्षेत्रात्रेत्रात्रयात्रात्र । यम.म्। वि.य.म। यद्येथ.म्, प्रय.त्र.क.ज.म.क्र.म.म. ब्रीट. तमालमातम. प्रवीम. यत्रेर्यक्षम्भार्येष्यरम् वशुरायायक्षम् वेन केरा वसुन से प्याप्त स्वरास्त से विष् वः देवा वर्वान्तर्भा स्वामाणीयाक्तरावानम्यास्त्रार्धेमार्धेमार्धेमार्थम्य तर वता क्षातविर्तं क्रियाववार हुँ आर्त्र प्यति विष्ठिता ह्या शासि कुर्ग्ना बन्द्रायायायाय प्रायद्र स्थित। सक्द्र सार्शी । दे प्रावेन पुः स्वरं प्रेन पे कि वार्यात्रमायान्यः सिराग्रेरात्यक्रात्या वित्या क्षेत्रात्यमास्यात्रमान्त्रे सिराग्रेमा सु-त्य-द्व-स-द्वस-य-रेन-य-प्नित्य-यम्भी-वन्य-वी

सुन्यम् मुक्ति स्वाप्त्र स्वाप्त्र

ह्मेर पवि सेर रहा । मुरह पर्मे रह पर्मे नह कहा । र्य सेन र्य सेन हु र्रम्यान्ता विवासवानितानायम् याने मिनेन्याने । निःस्रमास्य यहासाने स्थिता वेषायाः इस्रषाणेषायिः भ्रीमा ने प्यमाञ्चरायकेषायिः स्वमाञ्चरायः स्व पर्रुः इन्दिर पानुवाधिक सेन। ने धिक का सक्षक हिन के पर्राप्ते सुर पाधिक प्रमा ते<sup>ॱ</sup>स्राष्ट्रियः हे। ५वे। र्सेट सम्राङ्क्षर प्रवेद स्थाद्य प्रेतिर प्रायमास्तुर प्रायस्यापितः इट प्राप्त । निर्मे हिट मिश्रास्यान् गृयश क्ष्माय किट प्राप्त या विद्राप्त है स सक्षर् हिन्दि प्रति सुर प्रायाणिक प्रवि स्त्रिम् ने सम्मया सक्षर् शुर प्राया स्त्रिम् यर्द्रमाविक्षेत्रमानम्पर्यस्थिम। क्षेत्रमाक्षेत्रभूभिष्यस्यभीनम्बर्धन किन्कियन्यविष्ट्रम्प्याधिकायमास्राष्ट्रियाः हो। निर्मेश्विम्यविष्ट्रम् स्तुः सुर श्राक्षरमार हैं रातुः सिराय है । या भी भारत है र है। हे मारे हैं र या वे म यदेळें सळव कुर व सुट पर से व से नव सप्दे हिरा दें व नवे हिट वे हे व प्यासळव क्षेर्छियर्यविक्षेळ्टमार्श्चेर्णुः सुरायक्षेर्यस्या विकार्येर्पेर्ने। सरामी स्तुःसूर्याय्यत्रत्रत्यस्यात्रात्यात्रमूर्यात्रात्रात्रासूर्याः विष्यक्षिर्या किन्कियन्यते सूराया देशायहेन्यते क्षुः सक्तार्येन्ते । निषेश्चिरायासायिकायातिः हेब'यासन्तर्भार्यर पठमानितासक्ष्यम् मुरागुराष्ट्रास्ये हेब'याचुरावे सुरावादर सक्षव किरायरायां वायवशार्यरायशारी सूरायहेरायये हिरा

महिषायदे सुराय हुत्र स्वराय महिषा सहत्व स्वराय प्राय क्षेत्र स्वराय स्य

र्त्या अक्ष्व गुराय के देवे बिर छे द ध्येव के शिराय के शिराय के स्वा अक्ष्य गुराय के देवे खिर छे द ध्येव के शिराय के देवे खिर खे के शिराय के देवे खे के स्वा विश्व के स्व के स्वा विश्व के स्व के स्व विश्व के स्व विश्व के स्व विश्व के स्व के स्व विश्व के स्व के स्व विश्व के स्व विश्व के स्व विश्व के स्व विश्व के स्व के स्व विश्व के स्व के स्व विश्व के स्व विश्व के स्व विश्व के स्व विश्व के स्व के स्व

माझ्नायाक्षेत्रप्तिक्षेत्रप्तिक्षेत्रपतिः द्वित्रपतिः द्वितः द्

मान्त्र-प्य-प्रस्क मुन्-क्रिय-प्यक्ष प्याप्त क्रिय-प्यक्ष प्याप्त क्रिय-प्रविक्ष प्याप्त क्रिय-प्रविक्ष प्याप्त क्रिय-प्रविक्ष क्रिय-प्रविक्ष प्याप्त क्रिय-प्रविक्ष प्याप्त क्रिय-प्रविक्ष क्रविक्ष क्रिय-प्रविक्ष क्रिय-प्रविक्य क्रिय-प्रविक्ष क्रिय-प्रविक्य क्रिय-प्रविक्य क्रिय-प्रविक्य क्र

द्रिन् निःश्चिर्निश्चर्यात्रेस्त्रान्त्रेस्त्रान्त्रेस्त्रान्त्रेस्त्रान्त्रेस्त्रान्त्रेन्त्रान्त्रेत्रान्त्रेस्त्रेस्त्तेस्त्रेस्त्रेस्त्त्रेस्त्तेस्त्तेस्त्तेस्त्तेस्त्तेस्त्त्तेस्त्तेस्त्तेस्त्त्रेस्त्रेस्त्रेस्त्रेस्त्रेस्त्तेस्त्तेस्त्तेस्त्तेस्त्तेस्त्तेस्त्तेस्

चुर्भायवि द्वो क्विंट सासळ्य क्यूरायवे सळ्य क्षे साया दे क्ष्रिट या देवे बिट साधियायर यह्रम्यदेख्रिम् विरामाध्यम्भि न्योक्षेत्र्यदेक्षेम्देश्रिन्यविष्ट्रम्यीःह्रुन्यः दे'द्रस्थर'वेद'वेव'य'धेद'यथ। दर्देश'ववि'दद'द्र'ञ्चद'यद'यद्यववश्यर'द्यु' भ्रेन्विशयवे द्वेत्र वित्याधेव यवे देवाधत धेन्ते । अयरुशय देन वाधत र्हे. भे खेबार्चेरायः क्षेत्रायक्षाता क्षेत्राता कार्यात्वात्रीया क्षेत्रा हे. क्षेत्रात्राक्षेत्रा ग्रीभाम। दे।यानेभायायरुपमायायायमेम में निमायसूरायायम। सळम् ग्रीरायदे। हेब'य'ॾ्रूर'अ'ग्रुर'पदे'नुषाब'हेष'य'यठवष'पदे'ङ्कुर'य'ने'हअष'य'अ'थेब'य'अ' ल्रुबे निरंबा ने के क्रिंट की बार ने प्यत्व क्ष्मा सायर वर्ष स्था सक्ष्य मुरंबे हेब'ने'यास्यायदे'यठवयात्रेयात्रस्यायाध्येब'यय। ने'न्नायदे'नेब'नु'र्स्चि'यास्तुन्सी' र्नेषायाक्षयुः धेवायदे द्वेरा देरावया र्ने क्वेंट नेषार्ने के क्वेंट सार्टा र्ने र्ह्येट अमा निवेश्वेट या है माय उपमाय या सुट सेन मुन प्रमानुव परि रिवेर ने प्रतिवर्त्त सम् प्रमा निष्ठ ने प्रति स्वर्ति । प्रति स्वर्ति । प्रमा निष्ठ स्वर्ति । धुःसयार्देवासेन्यातेन्यीवाते। स्रम्यायात्वीवस्यस्याप्यासुन्यस्यस्यस्य हें दर्जायकेंगाः इससायुर हिलेसायदे सर्जे देन पन्नायसासस्य युरायदे ताकुर्यातमा परमाराष्ट्रममायस्यापर्यम्यापर्यम्

र्त्य। अक्षम्भुरायते नियानी श्रांत्या श्रीत्या मित्रा क्षेत्र विष्या क्षेत्र क्षेत्र

पक्षित्र।

पक्षित्रपदिःश्वित्रप्ताः विद्यान्ताः विद्याः विद्यान्ताः विद्यानः विद्यान्ताः विद्यान्ताः

यायनुः नेकाय्यक्ष त्यमायिक याद्र क्षण्य त्यमायिक त्यन्तः द्विक त्यन्तः विकायक त्यमायिक त्यन्तः विकायक त्यमायिक त्यन्तः विकायक त्यम् विकायक त्यम विकायक त्

यम्भूम् नि ।

यम्भूम्नि ।

यम्भूम्भूम्नि ।

यम्भूम्नि ।

स्वायान्य स्वायाच्य स्वायान्य स्वायाच्य स्वायान्य स्वायाच स्वायान्य स्वायायस्य स्वायान्य स्वायान्य स्वायान्य स्वायान्य स्वायान्य स्वायायस्य स्वायान्य स्वायायस्य स्वायस्य स्वयायस्य स्वययस्य स्वय

स्वानाकृट् में तथर से से साम स्वान्त से साम से साम

सक्त्रिं पञ्चे स्वास्त्रम् । स्वाप्त्रम् स्वाप्त्रम्याप्त्रम् स्वाप्त्रम् स्वाप्त्रम्यस्यम्यस्वाप्त्रम् स्वाप्त्रम् स्वाप्त्रम् स्वाप्त्रम् स्वाप्त्रम् स्वाप्त्र

यात्राचर स्रिम्स् । वित्राचर स्रिम्स् स्रिम्स् स्रिम्स् स्रिन्ते स्रिन्ते स्रिम्स् स्रिम्स्

क्ट्रिन्म्यायम् निस्त्र क्षेत्र निम्नायम् स्थान्त्र क्षेत्र निम्नायम् निम्न

त्रिमा चस्त्रम् कुन्द्राचन्यम् कुन्द्रम् प्रमायन्त्रम् ।

क्रिमा चस्त्रम् कुन्द्रम् प्रमायन्त्रम् ।

क्रिमा चस्त्रम् कुन्द्रम् चन्द्रम् कुन्यम् प्रमायन्त्रम् स्त्रम् स्त्रम्

द्वा इया इसमाने द्वा क्षेत्र पर्वेष विषय के प्राप्त का क्षेत्र विषय क्

बेरेरजिन्नशर्भिवेशवि्द्याययम् वेष्ट्रम्यायम् वेष्ट्रम्ययः ८८। वर्षियाक्रियाञ्च प्रश्नियाप्त पश्चेषायग्री रायस्यायाप्त विषया श्री श्रीक्षर सार्श्वेर देवे:ळर'गर्नेग्राय'भेर्र'गुट्य सुट'यम् 'द्युर'यश्चेर'यर्रेग्यम्'त्र्युर्य पर्वः श्वेर है। दे सममाभारकरमा हैंद्रिंगी समायवे हेर महिन्माया साधि रावे श्वेर हें देक्षयत्त्रयादेवे क्वें र सूट यट यायेवा देक्षया ग्री यवर वृगि रेयाया यविष्यस्यायाने याचिस्राययम् साधिष्यये द्विम् नम्ये निम्ने मान्य श्रेन्द्राय्यानु कुर म्म्यूय्य प्रायम द्विषा ने हे श्राञ्च के पायनुमा ने हे श्रामेण ने दे ने प्रमान निर्माने गादि हैं र सूर बिना वर्के वा नर्गे भागमा हुना से न प्रमान यदास्त्रीमा इत्यामानास्त्रमान्यम् माना देस्रमान्यस्यामान्यस्यामान्यस्य याम्रमाद्यम्यायम् म्यान्यम् । त्युर्यम् रावविष्यम् । व्यविष्यम् । स्रमावविष्यदे इस्रमायस्यापाद्राचित्रें हुँ राष्ट्रात्याधेकापराष्ट्रया सुराया सुरायास्यापालका क्षेत्रा ५५'णेब'यवे'स्वेर'देसम्बन्धेर'वहर'णेब'या ५मेनम'वसयाबी स्ट्रांच चमरा.वर.जरामचत.धर.मार्थ्यमान्युर्यमान्युर्ये देग्.पर्ये देश्या.मार्युः विमायोग्रीरमानमान्युर ने अळटषार्श्वेरियाययात्रश्चेराया देवेग्नुबर्श्वेटाक्षायरात्रश्चेरायया क्षेत्रका देवे गुन्दे स्त्रित्यर द्वृत्ये अभग्ये अस्ते न्यत्र द्वार अस्य प्रायन्य यर वि.च.र्सूट चाया सद्य हित्र समाया क्रे चाया है वा यो है। दे साया हिवा सारित स्टर 

क्ष्मास्त्र त्यु राय विद्यार श्री र विकास वितास विकास वितास विकास वितास विकास विकास

्रीका भूतिकार्त्त कर्त्त क्षेत्र त्राकृतिकार विकास कर्त्त क्षेत्र त्राकृत कर्त्त क्षेत्र त्राकृत कर्त्त क्षेत्र विकास क्षेत्र

श्रमः व्याप्त स्त्रीत् स्त्राप्त स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीय स्त्राप्त स्त्रीय स्त्राप्त स्त्रीय स्त्रीय

स्वास्थियात् श्वेमा विषयात् व

द्रिया लये. जये. जये. जये. जये. ज्ये. प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र

म्बिदः त्यव व्यवादि त्यव व्यव क्षेत्रः प्रवेष्यव व्यव क्षेत्रः विष्य ८८.त्र.जवट.र्.श.लूर.८। भक्ष्य.श्राभवीय.वीश.पश्चीर.तर्र.क्षेंट.पर्यःलय वा क्षेत्रं भीषायक्षेत्रं प्रात्रं सिंद प्रयुत्माय त्याचा विषायक्षायक्षेत्रं प्रयुत्सिद प्रयुत्माय त्याचे विष्ठायका विष्रायका विष्ठायका विष्रायका विष्ठायका विष तर ह्रियायायाय मुद्दीत्रपदे सुद्दा पदे स्थान स्था स्था से से सम्भावन स्था प्राप्त स्था प्राप्त स्था प्राप्त स सेस्रमाञ्च साधिव यायमाश्चर यदि द्वराया मुक्ती प्रदेश्यव यमाश्चर स्पेर यदि द्वरा ८८१र्योत्री इतस्यामीक्ष्यात्रम्थितः स्वात्त्रमान्त् र्दे विश्वानसुर्धार्यार्श्वन्याणीयायसूदाराधिदात्री देनायवेष्यसासूनानिहस्रीसंकर्णा यदे'णुवार् । इं'दर्ववाम्री केंबारु बायी बायार मेंबायार प्रस्वाय प्रवे स्वीर हें विवाक्रिवाङ्कायादम्। वह्नेबायगुरावह्यव्यवायार्थव्यवायादेण्यवायानुपर्वावा तर्यक्षेत्रातुः द्वेर। क्रायन्यास्य क्षेत्राक्ष्यास्य स्वाम्यस्य स्वामस्य स्वासस्य स्वामस्य स्वामस्य स्वामस्य स्वापस्य स्वामस्य स्वापस्य स्यापस्य स्वापस्य स्वापस तृ'नर्गेब'य'स'भेब'ते। ने'ग्रुस'ह्'त्युय'मुं'केब'ठब'युय'न्,'नुब'गुट'नक्केन'यते' धिर। भ्रमशतदेवः ह्'तयुवाः क्वी केंबारु के प्येतः दे। व'क्वे ख्रमः क' ह्'तयुवार्धियः या यानुन्। नुष्द्वासूराद्युयार्झ्द्रप्तिव्यक्तियाते केंद्रायाम्वद्राया नुन्दिन्। र्रायुग्राष्ट्रास्यासूराद्यापाधिवाते। ग्राउटातेगारीवारीकेवासेटायरादे सूराययदा यविः ध्रिम् मेनायविः व्ह्रमास्यायक्षेत्रायवे प्यमायात्रायमायात्रात्रेत्रा मेनायमायात्रात्रेत्र न्वीकायवि द्विमा देवि युकायामेवायका छे व्यूमा वेवा वन निष्टि प्येन ने।

याः स्त्रा देश्यमान् स्वाप्ताः स्वापतः स्वाप्ताः स्वाप्ताः स्वाप्ताः स्वाप्ताः स्वापतः स्वाप्ताः स्वापतः स्वापताः स्वा

नम्भग्ना विभायमायक्षेत्रायते स्वात्तात्र सम्मायक्षेत्र प्रतात्र सम्मायक्षेत्र सम्मायक्षेत्र समायक्षेत्र सम्मायक्षेत्र समायक्षेत्र समायक्षेत्र समायक्षेत्र समायक्षेत्र समायक्षेत्र समायक्षेत्र समायक्षेत्र समायक्षेत्र समायक्षेत्र सम्मायक्षेत्र समायक्षेत्र समायक्षेत्र सम्मायक्षेत्र सम्मायक्षेत्र समायक्षेत्र समायक्षेत्र समायक्षेत्र

त्यत्रीयान् देश्वरायाक्षेत्रात्यान् स्त्रीयान् स्त्रीयान स्त्रीयान् स्त्रीयान् स्त्रीयान स्त्रीयाच स्त्रीयाच

च्याक्षेत्रक्षाक्ष क्षत्र क्षेत्रणी व्यवस्थ क्षेत्र क

त्रभुत्यत्रभ्रायत्र न्याये प्रत्यावि य्ययः शुर्त्र ।

स्याये अध्यत्र न्याये प्रत्यावि य्ययः शुर्त्र प्रत्यः स्व प्रायः वि प्रायः वि प्रयः वि प्रयः

महिस्यायस्यायदे प्यत्वाकी स्ति हिंदि हिंद्र महिंद्धर प्यत्विका स्वाहित हिंद्द हिंद्र महिंद्धर प्यत्विका स्वाहित स्वाह

न्यसुर्यायार्श्वेरायदे त्यावार्षे। इसायर रेना ग्रेन यां के रेन में पदे लेस

त्तर्भीया क्षेत्रायाक्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्राच्याक्षेत्रायाक्षेत्रयाक्षेत्रयाच्याक्षेत्रयाक्षेत्

यहे. द्या श्ची प्रमाण । प्रिया के स्वाप्त प्रमाण । प्रमाण प्रमाण प्रमाण । प्रमाण । प्रमाण प्रमाण । प्रमाण

प्रतः क्षेत्र। जम्र क्षेत्रप्र चित्र चित्

यसः श्चिम् सम्बन्धना निकास स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्

ने त्यान्तर ये प्राप्ति विषय के प्राप्ति प्राप्ति विषय के प्राप्ति के प्राप्ति विषय के प्राप्ति के प

मिश्रम्पार्थित् दे। त्राचित्रमेश्रम् प्रति देश्या विश्वस्य प्रति मिश्रम् प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प द्वीत् प्रति प्रति

 यमान्त्र्स्थात्र्व्वस्त्रम्थात्र्व्वस्त्रम्थाः व्यम्पर्वस्त्रम्थाः व्यम्पर्वस्त्रम्थाः व्यम्पर्वस्त्रम्थाः व्यम्पर्वस्त्रम्थाः व्यम्पर्वस्त्रम्थाः विद्यस्त्रम्थाः विद्यस्त्रम्यस्त्रम्थाः विद्यस्त्रम्यस्ति

यद्वापाद्दाक्ष्मान् विषयात्र विषयात्य विषयात्र विषयात्र विषयात्र विषयात्य विषयात्य विषयात्य विषयात्य

षर प्रश्चिमश्यम पुर्वे विश्व र्श्वमश्री अर्दे मश्रमश

महिषायाहेव क्षेणम् अवायकेषायि स्व क्षेण प्रमेषाहे। स्व याविस्य प्रमा केरासरानु र्वेषायान्या वर्नेनायाकुराविराक्वेनाविषाया ननस्रवायान्यान्यासुन यः युराशेसराद्वेनपद्वाप्यविनाद्वेनपदिन्त्र्यादेश्वेत दर्भेगुवाङ्गा सहितः वया क्वाम्तर्मियान्यस्थान्त्राच्यान्त्रस्य वर्षा विश्वस्य वर्षान्यस्थान्यस्य स्वापन्तिस्य ५८। इ.जैर.जमा भर.रे.ब्रुस.त.येचाय.की.वर.रेचा.थे। विर.ब्रु.ल्ज.य.वंशस ग्रीमानमायाप्ती विभागस्रम्भायविश्वीमा गरिमायापुराक्षी वर्देनयाके विमा क्रिना से में भारते नित्र वार वानी भाने रारे प्रदेश पासत्रस्य रारे मि से स्वर्थ प्रति स्वर ने भ सहिन प्यमा पश्चिम्यामित्रमास्य केमा स्थापना । पर्देन के साम प्राप्त । लिब ही विश्वान सुर्शायि हिया निश्वाय नुवा है। निर्माय प्राप्त स्वा स्वर्मिश यर के मुर्वे विकामसुरकायवे द्विरा मसुकाया देरेका ये महाय द्विकाया स्पेर दे। મુંશાયાના કુરાયાના કુરાયાના કુર્યાયાના કુરાયાના કુરાયાના કુરાયાના કુરાયાના કુરાયાના કુરાયાના કુરાયાના કુરાયાના र्थेन्यवे भ्रुमा न्यारे प्रिन्ते। वर्नेन्रक न्यारी निवेद र्येम् से स्नाया वर्षे स्याप वे इट में महेन प्र निस्माय महीसाय। महिस्मामी महेन प्र प्रस्था मिस्स रिवेरिटा हेबलवेयावर्षेस्यायराम्बर्धरमायाक्षात्रार्टा सहरायमा ग्रेटारुमा क्रम्यायस्याम्यास्य वर्षा विषास्यायाम्यास्य प्राप्तास्य प्राप्तास्य प्राप्तास्य प्राप्तास्य प्राप्तास्य प्राप्त तार्चेयः है। चटा वचा प्रटामि वियात्य हिला लूट की शाहितात वृष्ट्रिया प्रहेत्य प्रिया प्रेय ध्रिमा वि:ठेव केंबागी:पदवा:बेद'पर्झेबायायायाया हिमापते व्यापासवयः विदारीयाः वर्देशयवेयम्द्रयवि ।

चल्याक्ष्यहास्त्राच्याक्ष्यायाधिनात्री अर्द्रा मिन्नेन मिन्नानुषानुषान्या तर वेत्। विष्यत्रा क्रिंट प्याप्ये क्षेर विषय प्राप्त क्षेर क्षेर प्राप्त क्षेर यायमान विरावास्त्रराविरे से रात्रानित से सामानिता सामानित र्मेर्न्यार्झेर्न्यते स्वेर्न्, र्झेर्न्यपते ब्रयान्य नियान्त्रे स्यापते स्वेर्म्य स्याप्ते स्वर्या धेव परि द्वेर विवा हिर परि विवासि विवासि परि स्वापि हैं से प्रिया विवासि महिषासुर्धिताते। तर्मेषात्रेनात्ता वसूषात्रेनामहिषासुर्धितायवे स्वेता तत्त्वा र्थेन ने हिंद प्राय इसरायने प्राय रेगायर गुरुष प्रायत है र वित्र से प्रायत है र महिरायार्थिन ने। खुवानामान ने मान में ना क्षर-र्-त्रें न्वा नर्क्षेश्ये नर्वे न्वा न्वा न्वा निवास्य क्षरा क्षर्ये न्वा न्वा निवास क्षरा क्षरा निवास क्षरा निवास क्षरा क लूर.री पञ्चे.लेज.क्रूश.पर्वे.बाकुबा.रट.र्ज्जं.त्रच्चे.प्रच्चे.प्रचा.लंबा.पर्वे.सी क्रियायञ्चान्त्रेनार्योदादो। दनोः र्ह्येटार्क्ययः दुनाः स्वरं मीः स्वेटः दु। सक्रस्ययः मीः बटावाः चिष्याया वर्गे प्राप्ति प्राप्ति विषया है विषय विषय है या विषय है विषय है विषय सु'स'र्येटस'य। ह्र-'चर्झ्स'य'५८'स'दवेव'च'इसम'णेइ'यदे ही । दर्वेच्च'च'चि र्थिन ने। वन्त्र प्रमायमें प्रमा वे सूर में भावमें प्रमा वह माराय वर्षे प्र ५८। विषेत्रियाचीयावर्ग्चीयाइस्याधिकायविष्ट्वीया देःस्यादिक्षीयाविष्याचिष्याचिष्याचिष्याचिष्याचिष यत्रअञ्चर्यायानु पर्धेव है। पर्हेर्पार्पर वर्मे पञ्जेर हेर्ग मिठेग धेव प्रकार्शे । मिठेश यार्थेर्'रो अळब'छर'पवे'स्ब'कु'र्गे'यर्ब'कुष'पर्क्रेप्र'चर'द्वाप्येब'पये'स्वर नमुस्रायाधिन दे। क्वें रापदाके के क्वांचा नहिसानिदि के नसियानिहसा हो। यस ग्रीमानर्भेति। महेबार्येतमाग्रीमहेबातर्स्ट्रायह्र्यात्रममाल्यात्रात्राह्या यथः

यार्थित् दे। देवे चु प्याके त्यारका समामि क्रांक्षण समामित्य प्याप्ता । स्वाप्ता क्रिया क्राय क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिय

भविषात्रात्राम्सुक्रिटाइ स्रमाचित्रात्याम् स्रमास्त्रात्रा नर्मे साम् र्देब महिषासुर्येद प्यये श्विम। दहर्ये स्पिद दे। स्थानिस्रमा सस्य प्रमायम स्वा यर्टा क्रूबाइमायर्र्वायर्ग्यात्राचित्रा वृद्युंहिरमानुषायरे हेबायावित्रा पर्वःक्रेन्द्रः धिवःपर्वः ध्वेत्र। सद्युवःपर्वः मार्केः क्वेतः द्युवः प्यायः यात्रेवः व्यवः स्वयः विस्वयः इस्रायर न्वायर वर्षुर है। न्वे क्वेंट इस्रम्वा वर्षे क्वेंट वा वर्षे के सूर वा यमवारात्रात्रा यहरायात्रात्रात्रात्रेत्रात्ते वार्यायात्रात्रे वार्यायात्रात्ये वार्यायात्रात्ते वार्यायात्रे व यर द्वायर व्यूर प्रवे श्वर दिया प्रकार के विकास सम्मान स्वायर व्यूर है। त्तर्वत्त्र त्यर्व्य रायार्वे रायश्वकः यक्षेत्र वायार्वे क्षेत्र क्षेत्र विष्ट चरि द्विषयाधिद्यति स्विरित्ते । युदायमा स्वाधिसमा समय द्वायि स्विरित्ते योश् ह्वैट द्याया क्रमाइस प्राय दिवाय देवे द्या विष्ण यरत्वायरत्वृरायधिवर्भेत्। कैश्वस्थायरत्वायात्ववात्वेत्तः हुरायांवे र्से र्से पार्ख्या विस्रमा ५८ र के मानिकामा इसायर ५ नायर प्रमुद्राय में क्षाय दे के ५ रुष्येत्रया विरायर र्गागार् वे याळग्यास्ट वि यदे व्यवसास्य या सार रुष्ये रेगा महिकायायसूकार्दिकायम् पुरार्थिताते। मानकामारात् मार्के र्स्तुराया हेना कुं मह अनामह मेश कुं हा पुराविक कुंग है स्वार कुंग है से राज हो दे दे दे हो ना यम्भाक्ष सम्भाक्ष स्थान स्थान

देव द्वा द्वा द्वा द्वा क्षा क्षेत्र क्षेत्र विका क्षेत्र क्ष

पृथ्नी चीस् श्रीट्र प्रवे प्रवे प्रवे प्रवे क्षेत्र प्रवे श्रीय प्रवे श्रीय प्रवे श्रीय प्रवे श्रीय प्रवे प

यदः म्रास्त्रिः मि मिलियः भ्राय्यः स्त्रा द्रम्यः स्त्रा द्रीतः स्त्राः मिलियः स्त्राः प्राप्तः स्त्राः स्त्र

स्तर्भरावे स्थित विद्याय देवा देवा देवा के वे मिल मान्य स्तर्भ विद्या ॻऀ८.ॾॖॕॖॺ.च४ज.ॿॖऀ.भक्ष.चेर.ट्रंट्र.च.ॐ८.चेठ्य.चर्थरल.खं.ल्र.च्रं.स.र्यात्रात्र्य वस्तर्मार्मे । यदान्युरम्बिरयार्स्यासायदेः स्नायसास्। यद्वारेवायान्यसम् यर'न्गुब'न्ध्नि'न्ध्र 'ह्रेब'हे'नुष'ळेग्य'नबिर'ग्युर्य'य। नर्गेय'य'वे'ग्युर' रवायमारावादिदार्याचा कुरानी इसामानमा मुरमाया है हिन्सायदे के दार्पी स र्वे । अर्हेर् यम रगुर इसमाग्री के प्रवेषाया विमागसुरस्य प्राप्ता रुमा क्र्यायायात्रम्याद्वीत् । निः स्वराम्यायात् । स्वराम्यायायायायाः । निः स्वराम्यायायायायायायायायायायायायायायाया वयाया रचिर्द्रास्त्रेयः श्रावयायात्रास्यायायात्राचायात्रेषा र्यायात्रेषा रुष्टुं पर्दे र्गुक् न्नु प्रति प्राप्येक क्षा र्गुक रुक्ष प्येक र्ग्नेका प्रति रेप्टुं पर्दे र्घुर व्याप्त व्यापत लिब द्वीया नासुस द्राप्ति र स्वे प्रते द्वार पिब स्वा द्वार पिब द्वीया प्रतिर म्रे प्रदे हें मध्य मा हे में नुषाधिम दर्गिया परि हिमा नासुर म्यायस में पुरास्त्र नासा यापित दिर्देश विष्य के स्थापित क्रम्भारी के स्मर निर्माय स्मर्थी स्मर्भा । द्वार ॿॱॻॺॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॹॱक़ॣॸॱऒॺऻ ऻॸॗ॔ॸॖ॔ॸॎॱॺॻॱय़ॱॺॱॻॱॻॺॖॴ ऻॸॖऄॖॸॱॿॱॻॺॖॴॱऄॖॱॹॱ अर्लम । हुँम् २८ क् हुँ र में लिय यासी । रिचेर डी यसिय की सेर लिया। विषय वि.का ट्रे. इस्मा की किया ट्रिया अ.का कि. हुरी विभाव सिर्मा सुन

दुनानी त्त्वापा समस्या ग्री सम्पर्देश में सिंह प्यस्य प्रति प्याची प्रति दे'न'यम। कुय'न्ट'न्नें'न्ट'म'ग'न्ट। । कु'र्ह्नेन'वुसम'र्भ्भन'र्भ्भन'र्नुग'नठम। दर्न सम्मानी है निया हि माना । हि से निया में मिन पर्ने प्राप्त है निया हि साम सिया हि सम्मान सम्मान सम्मान सम ने'यर'नुष'ळेंग्राय'नुग'नु'खे'पर्व'रे देवे'ज्ञु'प'खेन'न्रायेत्रेष'यन्ष'नेर'खेन'खेन' खुरायान नुष्याधेन की सर्हें प्रयोधायमा न्युन प्राप्त निर्मा सम्मा ग्रें भृञ्चायासेन्द्रमाष्ट्रियायन्यासेन्। ।ञ्चायासेन्द्रियस्याया । यावयायया वगः भ्रेष्ट्रियः पर्देन। विष्यप्ता अर्देष्द्रियः यदः तुषः क्षेण्यः इस्र्यः ग्रेष्ट्रियः युषायाक्षेरायदी विषामसुरमा में सुपदे र्यट र् मुष्या र्रे र हा मुख्या रेष यः रटार्चेषम्बुस्या स्या वर्षया रगुयाहस्सम्भित्रीसरार्टेखावर्ष्ट्रह्या धिवर्जी । दे व्यक्तिया कु के र विषय विषय प्रवास दिव र दिव र विषय र विष हैंबर्धुर्वेर्धेर्ध्वरक्षेष्ट्वययरवम्यक्षेष्वर्यरख्या देख्यवर्वेगहेर्द्र न्गुब प्रचेट के मुन्य प्राप्त । क्षेब प्रचेट प्रचेट मुन्य प्राप्ति प्रचेट प ૹ૾ૢ૱ૠ૱ઌઌ૽ૢૺઌઌ૽ૼઽઌ૽ૢ૾ૺૹઌઌૣૼઽૺઽઌૹ૽ૺૺૺૺ૱ઌઌ૱ઌૢ૱૱ઌઌ૱ૢૢ૽ૼ૱૱ઌઌૢૻ૱ઌૹ૿૽ૺ૱૱ઌઌૢ૱ૹ૽ૺૺૺૺૺૺૺૺૺૺૺૺૺૺૺૺૹ૽૽ धेव मी। नर्देश री यार्ने टानु पङ्गव या सूर मातुर मी नर्ने दर्श यर मावस यदे स्विर ৳ৼ ট্রিসম্বেশ্বর কিমান্ত্র বিষ্ঠান্য মিআর্মিস্বান্ত্র বারিক্তর বিষ্ঠান্ত বিষ্ঠান্ত বিষ্ঠান্ত বিষ্ঠান্ত বিষ্ঠান্ত वर्रे र र में बाराबा र बाक्र मारा इसका माराबा माराबा का कि स्वार प्राप्त माराबा का कि स्वार माराबा कि स्वार माराबा का कि स्वार माराबा माराबा माराबा का कि स्वार माराबा माराब वन्यान्यावर्षायावरेष्ट्रिम् विष्ठेन वन्याम्यान्याम्यान्यान्याक्षेत्रार्थेष्टेनायाक्षे  ख्या ख्री प्राप्ति विकास क्षेत्र क्षे

देखाविष्याचे वाचे देशायहरादी देन व्यापक्षरायविष्य स्विक्ष्याविष्य वकार्यासर्वीयहेव द्वीकायविष्ट्वि राति। देन त्राच्छाविकायविष्यर दिख्यायाद्वाव ৡ৴৴৸ৢঀ৸ঀ৾৻৻৸৴ৼ৾৻ঽয়৻ঀ৻৴ঀৼৡ৸ঀ৾য়ৢঀ৻ঀ৻য়ৢ৴৸৸য়ৼ৾ৢ৴৻ঀয়৸ৢঀঢ়৴৻ मुः त्राप्तिष्रयाणा । वास्रदेः स्रेषान् मुष्त्रष्ठास्त्रया । न्युवाद्रस्रयाः मुः वि याया विराट्र रव्युर र्रे हिन स्वीय क्रिया नुमान विषय विषय स्विय स्वीय स् यार्चरक्षेत्रच्चितातरत्वरत्त्रक्षेर्रर्टा महूर्त्वावात्वमा रचेरक्षम *ऀ*ॻॖऀॱॿॖॱय़ॱॺऻऀऄॳॱय़ॱॸॖॖॾॱॿॖॱॿख़ॖढ़ॱख़ॾॱॷऀॱढ़ॕऄॱऄॹॱॸॖॻॖॱॺॳॱॺख़ॕॺॱऄ॔ॱऄढ़ॱॸॕॱऻॎॿ॓ॺॱ ८८। ८ नुष् ज्ञान्न खुट प्यर कुं देवे कें या नुष्क या विषय मधुट या पवे खुर व क्रिंव सेर दे। सहूर ऋ पठ मिंबर रेसर क्षे. में में साम क्रिया में कि में में से प्राप्त में में से प्राप्त में में में सक्तरार्ट्सासुःसायह्रम्पयेःध्वेरात्रा व्येयायाद्रस्यायाते मे त्रासात्रा यायमाद्रम्यायाधेमायविष्ट्वेम। दरायेष्युवाङ्गे। मानुरादेभादुमाळेषामायामासुमा रुष्धे पर्व र्यु राञ्च महिषाया राष्ट्रा विषय स्थे पर्व स्थित ज्ञास परिवास रिवास रिवास लर दूव क्रमानकर भी क्षेत्र विवाल क्षेत्र क्षेत्र अव सक्ता सक्ष्य सक्ष्य सक्ष्य सक्ष्य सक्ष्य सक्ष्य सक्ष्य सक् ळें अ'द्रमु'ष्र अ' अळं ब'र्से' देट'दु 'दर्में 'च'द्रहा दे 'दिबेब'दु 'दु अ'ळें म्र अ' या म्रु अ'दु ' <u> युष्पते प्रमुक्त त्त्व प्याप्ता प्रविक्र युष्ठ प्रति प्रति प्रति प्रति प्राप्त</u> प्रति प्रति प्रयाप्ते विष्य र द्वा क्रिया स्वापित क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व

र्गु क्रायळक् अं मुरु पुर्वे विर्वे के अं रे प्रमान हैं ने रापु विषय महत त्रत्रिम् अह्रित्वम्यान्नाम् सम्मायम् क्षेत्रावर्म्याम् मे स्वाप्यम्य विष्वेबर्सेन्द्रासळ्बर्सेन्स्सस्य स्टिन्दुरन्तु व्यक्तुराने। देखन्तुराक्ती स्वापनिवास यायी वि.शतुःक्र्यान्यी.वयात्रक्ष्यः प्रता विचरः इश्वयः ग्रीः श्रापः क्र्यः त्तुः र प्याप्य रिवे केंश प्रमु व का अळव कें के परि । प्रमुव द अका मु वि प्याया। द्युट 'तु 'व्युकुर 'रे 'दे 'विविव 'तु। । त्युव 'इसस्य 'ग्री 'त्त्र 'व 'वि 'वि 'व स्थि 'त्रे स्था हिंस 'त्यु 'व मुर्तु 'वशुर'रे 'विषाचु 'चर' श्वर हो। न्धेन 'त्रार प्यर 'श्वर देवे 'केंब 'न्गु 'वष 'र्षेष ्छेब.स्.त.च्चेंच ।चट.च.क्.अ.क.ब.स्..५८.त.ट्.द.क्..छेब.स्.चीट.त.५.५.व.ची४.स्। ।चट. मिळें सळ में सें मुहार रिवे कें दिन सें रिहा राम रिव्या स्थापना न्व्र क्री व्याप्तिकायाणी विष्ठाविक्षात्र क्री विष्ठा विष्ठाविक्षात् <u>२चरम्चे ज्ञानके रचर ज्ञारचेर रेंदि क्षत्र क्षत्र ज्ञान कुर क्षेत्र पर प्रवेश्येत या</u> त्त्राचस्रयः कर् ग्राटः सर की रेटें रहे है। दे त्या हैं ब तत्त्र स्वाता प्रतापर की रेटेंवे के सर्वाप्तय स्वाता सक्षत्र सं रेट प्र प्र क्षूर रे । प्र मुत्र सस्य ग्री के प्र विषय । या खुट प्र र प्र क्षूर रे विषय ॻॖॱॻॱक़ॆॱॸॖग़ॗक़ॱॻॖऀॱॿॖॱॻक़ॆॱॾॣऀ॔क़ॱॿॖॱॻख़ॖॸॱॸॊॱक़ॱक़ॴॸॖॻॖऀॸॱॿॖॱॸॱॻॱक़ऀढ़ॱॻॸॱॵक़ॱॸ॓। ॸ॓ॱ तास्रम्भात्त्रम् त्राचित्रत्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रम् । क्ष्रिव्यत्तित्रत्रम् व्याप्तम् क्ष्रिव पर्वः अत्योवायदी द्वायायहे ब ब ब यावावाया केंद्र गी द्वार ही द्वा ब हिया है वा विषय 

संस्वीक्षयविक्त्यक्षित्रं क्षेत्रस्व क्षेत्

वियानिकासी क्रिया रहित दे त्यायवि छ्वा करात् यह स्वराधिया विका वेरा दे । वि वः वह्रानु क्षेट दु के सामुद्र वर्षेद सम्मान्य स्त्री क्षेत्र के स्त्री के स सवरविगतरवर्ग रिमायरवर्दिक्षेत्र। वर्द्रिया ५.७८.वर्गा १.१४४. वनानिक्रमायार्भ्यः प्रतानिक्ष्यः विद्यक्षेत्रः क्ष्रियः क्ष्यः प्रतायः क्षेत्रः प्रवायः क्षेत्रः विदायः क्षुः यम्भेरम्यायार्भरायम् कुपाक्षेप्यम् प्रतिष्टुम् नेषाष्ट्रियायार्थेन्यम् वया वहस्य नुःम्रीट प्देन हैं। अनु ह पर्मे न अवर मुनाया के रे र न प्रा है। क्रें पर्मे न अवर । क्षा क्षेत्र'त्रे'सान्चर'यम् राम्यर'म्या केर'न्यर'र् क्षेर् पर्मेर'सम्राधित हेर चिर्-र्-व्रमःस्त्रेन्यःस्विषायविदःस्र्नःयःवर-र्न्-व्रमःस्निष्यःयविद्यःन्यःस्त्रमः रु'वर्द्युट'चर'ष्ट्रवा दे'द्रवा'वी'क्कें'द्यट'रु'ब्रस'क्षेत्र'य'र्सेव्यस'रुस'सहस'रुद्युट' यार्थेर्प्यवेष्ट्वेरा हम्बाम्बरायेकायार्थेरा वर्रेर्न्ना रेप्नामीकेष्ट्रर्प्नुका ब्रेन्ज्रभक्षेत्रभ्रम्भेष्टात्रभ्रम्भ वरम् क्षेत्रभ्रम्भ वरम्भेन्भे प्रमास्य अवअयम्बर्ग वर्रेन्यवे द्वेम वर्रेन् अनुषाने ने न्यां में के निर्देश म्रेन्यमा है न्यरम्भायप्पन्यमाप्पन्यमाप्पन्। यरन्ति सम्बन्धमायसम् ૹ૽ૢ૿<sup>੶</sup>ઌ૱ૹૡૢઽૹૻૹ૽ૢૢૢૢૢૢઽૢઌઌ૱૾ઌ૽ૼૺૢઌ૱ૹૢ૽૱ઌ૽ૹૡ૱ૹઌ૽૽૱ૹૢ૽૱૱ૺ नवाक्षेक्षः वरः न् द्विन् क्षेत्रः अव्यास्त्रस्य अस्यावसः ब्रह्मः यदः द्विरः के। ने द्वाः मिळें न्यार् द्वित्र्वास्य म्यान्य म्यान्य स्थित्र देश स्थाप स्वर्तेत्र प्रमिष्य प्रते स्थितः ८८। ८.८वा.वी.कु.वेत.२.हूंब.८४।वर्षाचराः चर्षात्रकाः हूंब.छेव.सथराः सक्याः लट. तर्ट्रेट. टेर्मुश. ततु. ही मा क्रायतु. चिया त्यां मा व्याप ही मा व्याप ही मा व्याप ही मा व्याप ही मा व्याप

कु.भ.क़ैर.पर्मुर.भघर.घेब.कुट.। चेट.रे.क्रु.पर्मुर.भघर.घेब.ततु.कु। चेट.रे. वयास्त्रीत्रायां व्याप्तायां विद्यात् याच्या स्त्रायाः व्याप्तायाः विद्याप्तायाः विद्याप्तायाः विद्याप्तायाः व सेर्यम्बया साम्वयप्रेतेष्ट्रमा वर्रेरमा ब्रीट्यिक्रात्रस्यस्या प्रविद्यः नेर्द्रमाय प्रविष्णु रायदे न्त्रीताय वि राष्ट्रमा सम्बन्धा । क्रिं चिर रे के अद्यानम् रामाने कर्मे रे अन्याम निष्य पर्रे रामाने दे क्षेत्र पर्रे र बः श्विट खरेवे दगुबः त्वार देवे दर्भे खर्म अप्युषः सुः श्वे द्वार खरेवे दगुबः त्वा विषः यासेन्यम् वयाची । वन्यायहेन् न्याप्तम् न्यापित्रा मुन्या विष्या सुर्वे पर्वे न्या प्रमान सवर विचा कुर्। क्रुँ विर चिश्र अरित क्रिंच क्रिय अथ अथ या चित वहूँ आरित । सवर विचा कुरा क्रिंचिर चिश्र अरित क्रिय क्रिय अथ अथ या चित्र क्रिय प्रति । ळें , वसाब्रेट् छे.साब्दायार्सेन्यायवि सक्साट् से प्रवृह्यये गुपासवर हेसायर । यः ह्री विर्वावे सेर्परिवृत्ति केरा से तवर्परिवृत्ते विर्वाविका केरिया व ष.क्रम क्रि.चेट.मध्रम.मी.क्रू.पर्मूट.भघर.घेम.त.टरा चर.मेय.मध्रम.मी.चेट. वर्चेन्'अवर'व्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्राध्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र सक्रयपद्मा व्यव्यविष्ठाद्वित्वेष्ठास्त्रम् सक्रयप्यद्भाविष्ठापुरवहेसा यार्थेर् केटा देश्विष्मिक्षणादेरुषासु नमावे देश स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त यर विव्दार पर विदे प्रवर के विद्य दि । इर प्रवर प्राथम विविध्य में

यत्तर्भाषात्री वसास्त्री क्षेत्रां विषय प्रस्ति क्षेत्रा के त्यत्ति क्षेत्रा के त्यत्ति क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्र क्ष

ेने 'ब्रिट'पविर'न इर'न इर'स इसा निग्न'न ग्ने स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन स र्धेरामक्षायवे क्षेत्रात्री ब्रीटावर्देर के मार्चेराचर्चेरामवरा व्यवस्य वार्येश.री.वीर.पर्वेर.श्वर.वीवात.ररा उरुर.क्री.पर्वेर.श्वर.वीवात.या वाष्य. क्रें गुनि क्रे प्रेनिक स्पर दिए सेर प्रिय केन प्रिय क्षेत्र परि क्षेत्र प्राप्ति का स्वाप्ति क्षेत्र प्राप्ति का स्व २ च र र गु म र र य वि र य र्ये क्षे 'दर्भे अप्यर' घद 'गार क् ु अप्यअ के नाय थे 'खेरा व्यद 'मिं क' रे। हिंद 'ग्री 'में ह 'दु है 'भ्रेन 'यन्न 'यं से 'यह्म 'ने। निन्न संयायस्य न्नु म सु स्वी कें संयक्त न वर्त्तृत्यन्ता न्त्रमाद्यस्योक्षेत्रायकुन्ग्रीष्ठित्रावनायासस्य सेप्युन्रस्यायस् मृद्या देव्यू त्या न्या निष्ठा प्रमान्य निष्ठा प्रमान्य निष्ठा निष्ठा निष्ठा निष्ठा निष्ठा निष्ठा निष्ठा निष्ठा मनम्भायते युगमाने। स्नियमायने मायमायी योगयते स्वीमा यदायन्यासर्मि यावारीम र्ने राञ्चात्रम्यविः अरारिविः क्षेत्राम् रीमात्रमाविष्यम् अर्थी अर्थी विद्याप्यीता हो। हेता वचेवासर्रावेवावमा क्रक्रमन्च्यायाम् धिक्या । द्विवाचायाम् विवास यहूरी । कुर्यासीरमात्रातुः कुर्दा कुर्वसैतायस्वे तातुः सार्ट्रात्राम्याता रहीरः <u>ॿ</u>ॱॸॱॻ॔ढ़॓ॱऴॖॣॴॻऻॶॴऄॴय़ॶॣज़ॕढ़ज़ॾढ़ॖॱज़ॸॱ॔॔ॱॳॖॴॴऄ॔॔ॸॴॴ॓॔ॗढ़ॶड़ऻढ़॔ड़ॾॖॸॱॿ॔ॱढ़ र्तृतःक्र्याचेश्चात्रयाच्युत्तिःचरःक्र्यत्त्रवाचीःर्याःसीचीरात्राः वयाःसरायम्याः यवि क्षित्र ले का ने के ने के ने का प्रधान ने वा युर ने अन्यापित हु का युर ध्ये प्रधान *ૄ૽*ૹૢ૽ઽૢૻઽઽૹૹ૾ૢૼૹૢૻૣ૽ઌૹ૽૱ઌ૽ૼૹ૽ૼૼૼૼૼૹઌઌ૽૽ૢૺૹઌ૽૽ૢ૽ૺ૱ૡ૽૽ૢ૾ઽઌ૽૽ૼૺઌ૽ૺઌ૽ૺ૱૱ૺ

चिर्-२-२८-८म्।त्रीय-विग्-१ विश्वतिर्यतुः सैयमः स्रो-१ क्ष्मः मीत्रः त्रीयः त्र

मानिषालां विकास स्वास्त्र स्वास्त्र

णविष्याचार्यः भीत्रः भ

यस्यां अर्थे विद्यामा विद्यामा विद्यामा विद्या विद

कृत्वर्शः द्वीतु देश्यः द्वा प्रकृत्वे प्रवृत्तः कृत्राचे प्रकृत्वे क्षेत्रः विक्रा प्रवृत्ते विक्रा विक्रा प्रवृत्ते विक्रा विक्रा प्रवृत्ते विक्रा विक्रा प्रवृत्ते विक्रा प्

त्रित्यस्यां स्वास्त्रित्स्य स्वास्त्रित्या स्वास्त्रित्या स्वास्त्रित्य स्वास्त्रित्य स्वास्त्रित्य स्वास्त्र विद्यायस्य स्वास्त्रित्स्य स्वास्त्रित्य स्वास्त्रित्य स्वास्त्रित्य स्वास्त्रित्य स्वास्त्रित्य स्वास्त्रित्य

बियां के भागी प्रवरात् प्रकार विषय अर्दे वाया विषय विषय विषय ॱॡॸॱॴऄ॔ॱॾॗऀ॔॔॔॔ॸॎढ़ॖॱॸढ़ॎ॓ॱय़ॱड़ॖॴॱऒ॓**ॐ**॔ॴढ़ॴॱड़ॖॴॱॸ॔ॱऻ॔॔॔॔॔ड़ऄॱॸ॔ग़ॖ॔॔॔॔क़ऄ॔॔॔॔ सक्सरासी, थे. माचया, यो थे सार्वे सार्वे राता दे साता व त्या प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प दिरायमा वीममुम्भाममुम्भाम होता रे एतुरायर ममुरमाय भे पद्य रहे। इतुरा कि'न्नुक'के'चर्र्ज्ञिन'सळसस्सु'के'स्रावना'निकेस'निकेस'चर्र्स्नि'य'यवना'न्नाय'यये'स्रुरा लट्रायक्रम क्षेत्रांचनाम्क्रमायापुर्वाक्रमासुसासुराह्रा स्रेशावनाम्ब्रमायापुरा थळेंबालनानी त्त्वापान्युसप्तरायु प्रसार्दे बाल्यापा केवालनानी त्त्वापान्या ळॅश्रावनानी त्त्रापाद्वाप्टर हित्रावना त्या द्वापादी त्त्रापाद्वाप वनानी चें नडिन दिन्ति वना पड् प्यूट प्यते द्वि र क हिन वनानी द्वार दुन्य प्रेये र्ये मसुस्रात्रा कें भावना मी 'नयम'नु 'ग्रु भायते 'ये मसुस्राक्षम कें मान मान सुस्राकु' क्रैयाद्राविमानम् विक्रम विनाया क्रमावयाद्वेमावयायास्मा र्थेर् छेर् विर्यर वे के सार्के पर्वेर् बर्भ विरायर्वेर् सम मुग्य पर्रा श्रूर प्यर <u>ક્રું.તર્ને</u>ટ.જઘ૪.ઘેંચે.તા.ક્રુંત.તડુ.છ્..મેં.સે૧.૧૧૫.ગ્રેંગ.ધિજા.ઘ૧૪.૧૨૮.<u>ફ</u>્ર્યાય.ત૪. वर्ष्ट्र.य.लुष.तथ.विषा.त्र्यत्थ.क्.यत्.जू.खेष.वी क्र्याववा.सेश.यकी.यैवा.वी.क्र्र. वर्तरा विवावनासुस्रायकुः दुनान्तुः स्ट्रायरा देर्दरदेवे द्वरः दुन्ध्रायवे वे यञ्चारु वहें वायासायार्ने वासा वीयाञ्चार में वासाय स्थायहें वासी विसायितसा

इ.चतु.ज्रा.भार्ह्यायात्रपु.हीरा ट्रे.संर.य.चथट.ता.संर.वी.विभार्जुतु.चर्येथयांगी. क्र.वा. हिंभाञ्च ८८। देवे.संभार्द्वः क्र.वा.हिंभावचा.चेठ्यः ८८। दे.संभायकः दैया. ङ्'य'देव'वन'सुस्र'नकु'र्जुन'र्ङु'रे'स्थ'र्रा, वनान्विनानी'यवि'क'र्डस'र्रा हेस' वनासुस्रायकुर्ने द्रानिकेन प्राप्त वनानिकनाने पर्वे निवस्त्र स्थाय विष्टा प्राप्त स चतुःस्रीचुनाम् देवान्त्राची प्रमार्यः मुर्गाम् विष्यान्त्रमा प्रमार्थः मुर्गाम् विष्यान्त्रमा प्रमार्थः मुर्गाम् दिन बिन इ निवे के निष्ठा के अलग ने निवन नु मुर्थ पवे न निवा की निवा वनानसुस्र स्नार्दर वेशनसुरसा रर ने खेनस हे सिनस हे नहिस नर ने हिस स्यायम् सुःसहर्प्यासहरिष् । विदेष्ट्रम्यम् यम् यात्रस्यस्य विषयः विदेष्ट्रम् विषयः <u> इस्रस्युम्ब्रयःयः ५८ स्रम्ब्रयः यदेश हस्रस्य</u> स्वान्यः क्षेत्रः या स्वान्यः यद्या स्वान्यः यद्या स्वान्यः व र्वासानि श्राम्यापये हेसासुण्याम् मुयायानु र्वासायवे स्वीरानि माने वास्त्राचितायवे स्न वा त्रा विवास के विवास के लिए के ति विवास ने<sup>भ</sup>्ने ने प्रिक्ष के अपना सुका कु त्यका स्थापित हो ने सुका तः र्यात्रेयः कैवायवृत्यासीरावाः श्रीरमायुः सर्वेश । र्यास्त्रेयासायायवे विषयः चन्द्रायद्रायद्राङ्गेद्रा । द्रायासुस्रासिक्षयाग्रावासिक्षेत्रसिक्षेत्रसिक्षेत्रसिक्षेत्रस्य गुःन्मायमाकुयायदे न्दिमामुयार्द्ध्या

स्ट्रियान्त्रिक्ष्या नहीं न्या विद्वायन्त्रियां क्ष्याक्ष्याच्या हेर्याक्ष्या स्ट्रियान्त्रियां क्ष्याक्ष्यां स्ट्रियान्त्रियां विद्वायं क्ष्याच्याय्यक्षयां स्ट्रियान्त्रियां विद्यायां क्ष्याः क्षयः क्ष्याः क्ष्याः क्ष्याः क्ष्याः क्ष्याः क्ष्याः क्ष्याः क्ष्यः क्ष्याः क्ष्याः क्ष्याः क्ष्याः क्ष्यः क्ष्यः क्ष्याः क्ष्याः क्ष्यः क्षयः क्ष्यः क्ष्यः

म्रियायययः विक्रियः विक्रियः

चर्षेश्वराचर्ष्वश्चर्यं व्यक्तात्वर्यत्वर्यात्वर्यत्वत्यत्यत्वर्यत्यत्वर्यत्यत्यत्वर्यत्यत्यत्यत्वर्यत्वर्यत्यत्वय्यत्वर्यत्यत्यत्यत्वय्यत्वर्यत्यत्यत्यत्

चै.त्यु.सू.चृंद्रा विश्वानित्यां विश्वानित्

चित्रमास्त्रम्भावत् वित्रम्भावत् वित्रम्भावत् वित्रम्भावत् वित्रम्भावतः वित्रम्भाव

त्र त्रिक्तं के त्र क्षेत्र क

चक्रियात्मरत्वयत्त्वेचात्त्र्य्यस्त्रम् क्रियाच्यत्त्रस्य स्मित्त्रम् विक्रण्यस्य विक्रणस्य विक

देशाचीयः क्ष्र्यः स्विच्यात्रः श्री त्राच्याः स्वाच्याः स्वाच्याः

स्ता निवान के विश्व प्रत्ये क्षेत्र । निवान के विश्व प्रत्ये अर्थे विश्व प्रत्ये क्षेत्र क्षेत्र

तर.वी.य.क्षेट्र.लुब.ब्री विस्तामान्नीस्थानायस्य वाराहरी विस्थानायते इं.क्ष्ये.ब्रे.ह्येब्रात्रात्र दी.ट्यूब्राज्ञी विष्यात्र मान्यात्र या.च्याच्यात्र व्याच्ये ब्राज्य विष्यात्र अट्रे. वर्वेर.व.जम.च्यास्या । भर्र.वर्र्थ.तात्रात्ताः भर्रूमा ज्यामामम् स्था मर्नेन है। क्रमाक्षेत्रणूट अप्वाविषाय हेत्र नर्दे । त्रोप्यत्न क्षेण्यहन क्षेटें। भ्रानुषायाक्षेत्राधिनान्। महिषायदिर्दि। दिषायुद्धान्यमासुस्रायदेर्दि। दिषायुद्धान रेषाणीषार्से । भ्रीतुषादानावदायापर्रेयापरापुरी । भ्रायनुपादादाने पर्वुदाष्ट्रीषा र्से इस्मानुष्यरादेश द्रम्यान् इमायान्यम् मान्यान्य मीयार्से । नुसानुष्यदेन यानि । लियं ये हे क्षेत्रीय प्रमुप्य प्रमुप्य प्रमुष्य के स्वीत्र मार्थ प्रमुप्य प्रमुप्य प्रमुप्य प्रमुप्य के स्वीत वस्तरायम् स्त्रिया दिस्ते वहिमाहेव सायुर्यया विवादयर में वसर मृयत्तर.भूग । क्रम्पर्टा वश्चम्यत्तर.वै.खुट.रवेंट.वर.वी । मटमाक्रमः यह्रम् यायम् नायम् । विष्ठायुरि विभाषात्रामः केमायिम। विकेष्यम् नार्षेत्रे वर्ष्यायर है। विद्विषारव कुष्वार्षे रयम् व्रिषाय व्यविषाय वि तथा भिग्ने,यदु,द्रात्र्य,र्य,र्यासिरश्येशा सिंग्यन्त्रताच.श्रराष्ट्रीराराद्वीरा। क्रियान्त्रीम्यायस्य स्पूर्ते। म्रम्याग्रीन्स्रम्यायस्य हेम्मीन्स्रम्य

यमया कें मिदान्स्रीयम् यमया नुमाग्री केन्याय यमया कें मिदान्स्रीयम् वस्ता नुमाग्री केन्याय वस्ता कें मिदान्स्रीयम् वस्ता नुमाग्री केन्याय वस्ता कें मिदान्स्रीयम् वस्ता नुमाग्री केन्याय वस्ता कें मिदान्स्रीयम् वस्ता निमाग्री केन्याय वस्ता केन्याय केन्याय वस्ता केन्याय क

चेर्द्रांषेशत्विरायायम्। सक्सर्यात्रक्षायक्रायद्यात्रम् म्यूर् मुह्याया भार्चेराय। र्ग्रीयात्विरात्वासक्समायकरात्वायम्भारीयान्नुरान्नीरायवा ध्रिम नेपर्य प्रविद्विषयं देश्यमायायनु प्राष्ट्रिय क्रेम्य प्रम्मायि केन प्राये य.यधु.यर्थे.तूर.य.लुब.ता ४८.यधुब.मी.शक्शश.मी.कुब.मूत्रशा शक्शश.मू. के'पठन'य'धेव'य। द्वेंग्रथ'पविर'सळव'स'पहव'ये'पठ्वंग्रथ'य। कु'र्पे'स्ग्रथ' सक्षरात्वर विष्यात्रात्वर विषया क्षर निर्वाचित्र विषय सक्षरा पर्व विषय थेव'या ग्वव 'रग्रेथ'विर 'यवे 'सळस्य रायठ र 'यवे 'के र 'रु 'सळव 'स प्यह व 'यें ' पर्वेच्यात्रात्रात्रात्रेया देवामी देवामी देवामी देवामी निष्या नि मु नियन्त्रम् मुसम्मिन् के नियन्त्र नियम् नु स्वर्मा मिन्यम् स्वर्मा स्वर्मा स्वर्मा स्वर्मा स्वर्मा स्वर्मा स वहिना कुरि 'द्रवर' दुषा व 'श्चे र 'वहर' या सळ सब 'र्ये 'के 'वरु द 'यरि 'वहना कु 'गुव' मुभायहेम । नुस्रेम्भायसयाने सळ्सभारीकिये म्हान्ते में क्रिंट प्येन गुहाने सामिन्य यवि न्यीयायिक प्रवि अळ्ळा अप पठन प्रवि ब्रह्म नु ने में क्षित्र को न को प्रवि वा प्रार्थिवा अ लंबन्यते द्विम्। अळ्अयन्छे कुट न्वरु पा से द्वा सळ्स्य निर्मेश द्वेद पा पट सर्देर। सक्तममायठर पर्यानिमार्थे वे त्यमाया द्वित्यमात्रा सक्तमात्रा विद्वा विष्म्याक्तित्व त्राचानाम् निष्म्यानाम् निष्म्यान् विष्म्यान् विष्यान् विष्यान् विष्म्यान् विष्यान् विष्यान् विष्यान् विष्यान् विष्म्यान् विष्यान् विष्यान

महिष्यमहेष्णु निष्ठम्य प्रत्या स्त्रिया स्त्रिय

८ वा म्हुं या मुक्षा मुक्षे मुक्षे दिया स्वाया मार्थी मुक्षित प्राया मित्र या स्वाया मित्र प्राया मित्र मित्र प्राया मित्र प्राय मित्र प्राया मित्र प्राया मित्र प्राया मित्र प्राया मित्र मित्र मित्र प्राया मित्र मित्र

नमुक्षायाकें निवेदिक्षेनमा प्रमाया स्पित्ते । क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र पर्देशतमासुष्रियावसिर्यात्रेम्। ईवात्रकृत्तर्भ्राचेख्रा विमासूर्यमासूर् मर्म् स्वाप्त्राच्यायम् । न्यायान् विषयायाने साम्यायायाने साम्यायाया रु'र्थेर'री अर्रेम रे'र्डस'यर क'र्चुक'र्चुक'र्चेक'र्मेक्स'म्ब्रूरक'र्नेट। रे'यर रे. दी ब. बी अ. पञ्च प. प. प. प्रेर्टा विश्व मा शुरु अ. प. प. प. प्रवास्त्र विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व व यनु मा ह्वेरी । इसमा सामाबन निराय क्षाया हिना प्रोत्ता । मासुसाया विष्वित् देवित्रामस्त्रमायायमा मस्स्यापित्रमायायायविता महिसापित्र गठिमानी पर्त मारीमापर्म मरिमाप्य मारीमाप्य सामे निमानी स्थाप्य सामे मारीमाप्य सामे मारीमाप्य सामे सामे सामे साम र्म्यायाक्त्यात्वयात्र्यार्म्द्रियात्रे मुन्यात्रियात्रीयात्र्यात्रात्रात्रात्रात्रे प्रा भर्ने तर्ने सममाग्रीमा विद्या निर्मे निर्मे त्वी समामि स श्चायायेग्रायरायाग्यायायेवाते। देखार्द्राया द्वेवाञ्चयाद्वेदाद्वेतायाया दे भ्रोचित्रप्रत्विर्भास्त्व रेषापये अर्देवे बुषापषार्चे ब्रापये स्वरा विषात्षा त्तुः दक्षेम् अप्यक्षयः प्रेन्द्रे । यक्षः यन्त्रे व्यद्यक्षः क्षेत्रः व्यव्यवे विकायवे स्वर्दे हिन মূম'বন্দ'যা'অম'র্নী'বুম'যবি'ষ্ট্রিমা

हुर।

यद्भभावसान्त्रस्त्रित्त्वा हेर् स्वान्त्र विश्वस्त्र स्वान्त्र स्

क्रमः स्वीत्रायां स्विमः स्वीत्रायां स्वीत्रायां स्वीत्रायां स्वीत्रायां स्वीत्रायां स्वीत्रायां स्वीत्रायां स्वीत्रायां स्वीत्रायां स्वाय्यां स्वायं स्वयं स्वायं स्वयं स्व

विश्वास्त्रा विदेशकु नियम् स्वर्णा विष्यापि में विषय्पे में नियम् स्वर्णा विषय्पे में नियम् स्वर्णा विषयम् स्वर्णा स्

श्राक्ष्यकारातुःश्चिम।

श्राक्ष्यकारातुःश्चिम।

श्राक्ष्यकारातुःश्चिम।

श्राक्ष्यकारातुःश्चिम।

श्राक्ष्यकारातुःश्चिम।

श्राक्ष्यकारातुःश्चिम।

श्राक्ष्यकारातुःश्चिम।

श्राक्ष्यकारातुःश्चिम।

श्राक्ष्यकारातुःश्चिम।

श्राक्षयकारातुःश्चिम।

श्राक्ययकारा

त्यस्त्रित्यः चेत् । शिवेशव प्राप्तः विश्वरात्यक्ष्यः ता क्यां विराप्तः विरापतः विराप्तः विरापतः विरापतः

मुन्नप्रीःश्चिमास्य प्रस्तिमार प्रियम् प्रमान्ति प्रस्ति प्रमान्ति स्वर्णा मुन्नप्र प्रस्ति स्वर्णा मुन्नप्र मुन्नप्र स्वर्णा मुन्नप्र प्रस्ति स्वर्णा मुन्नप्र मुन्नप्र प्रम्भ स्वर्णा मुन्नप्र स्वर्णा मुन्नप्र मुन्नप्

चुर्रभयान्द्रम्यान्त्रेक्ष्यान्त्रम्यक्ष्यभ्योष्ट्रीम् न्युम्यक्षय्यद्रम्भ्रम्यक्षय्यान्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रम्यक्षय्यद्रम्यन्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रभ्यान्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रभ्यान्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रम्यक्षय्यद्रभ्यान्त्रम्यक्षयः

पर्वेच्यक्षियाःकर्र, विष्युक्षियायक्ष्यकाराःक्षियःक्ष्यं प्रिक्षः विष्युक्षः विष्युक्षः विष्युक्षः विष्युक्षः विष्युक्षः विषय् विषयः विषय

ने स्र न्य में भाव के मिल के नियम स्था के न

यन्दर्भेत्रो हुँर्यन्दर्भेत्रेष्ठ्या स्थान्य स्थान्य

क्षत्राची क्षेत्र च्चार प्रेरा

यतुष्पाः स्वापाः स्वाप हि.क्षेत्र.ब्रैंचात्री क्र्याचर्वे.जाहाक्षेत्र.ब्रैंचात्री क्र्याचर्यु.क्वं.क्वं.क्याग्री.श्रर्वे सूर्या वर्ष्यात्राचा वर्षा विद्या हित्र हित्या वर्षा वर यमायर पक्क केर मुषर या पहेनाय सेन भारता बर राय कर या सेर का प्रीति का प्रीति र याम्बर्यायाम्बर्यायाम्बर्यायाम्बर्यायाम्बर्यायाम्बर्यायाम्बर्यायम्बर्यायम्बर्यायम्बर्यायम्बर्यायम्बर्यायम्बर् युवान् वर्षेन्यर वृद्विषान्ता वरायाच्छेन्यायान्त्र वाक्षेत्रान्ता वरा र्टायरुषायषायर्जेन्यायाम्ब्रायामान्त्रीयायमान्त्रीयाय्याया म्रेन्'ग्रीभ'ने'वर्वुट'यर'वर्गुर'य'हेन्'म्'नेवे'नुभ'धेम्'म् । विभागसुटस'य'म्रसम ग्रीभावस्रुष्ठायविष्ट्रीम। मृतिभायाळेंभावसुःविष्याद्देःसम्सूनयार्थेनिन्। सेटामेविः मियम्बर्यान्ता र्रेन्या केंन्यान्त्रे केंब्रान्त्रवान्त्रे वित्यान्त्रे वित्यान्त्रे वित्यान्त्रे वित्यान्त्र विनावनानुने नुन्यस्ययाधिक परिष्ट्विराने। यर्देरा येरानेविः विन्वकुक परानुदि। ्रि.शूट्रशक्ष्यक्र्म्वा.घवा.क्र्याश्वयेतात्ववैट.घर.वर्चेर.क्रीय.ट्रेर.क्र्.ट्रट.र्ज्ञयाट्या. मिशळॅमशयञ्चेत्रयमञ्जरित्वेषञ्चेत्रय्ययः उत्तर्देत्व्ययार् निहित्त्व्ययार् सर्से वह व या निर्माय प्रत्याप निर्माणीय स्थाप कु प्रवित सस्व में नामना मुर्केया सक्ष्यायाञ्चेषायर प्रतिति । विषास्याचाराणेषायञ्चर प्रतिति । वास्यायाञ्चरायर्डा

च्ची-त्रीक्षा-वर्ष्ट्या-वर्ष्ट्यक्ष्य-त्रिक्ष-त्री-त्राक्षय-त्राक्ष-त्र-त्राक्ष-त्र-त्राक्ष-त्र-त्राक्ष-त्र-त्राक्ष-त्र-त्राक्ष-त्र-त्राक्ष-त्र-त्राक्ष-त्र-त्र-त्र-

निष्णान्ति विष्णित्ते । क्षुत्ताति त्वानात् वे त्ता क्षणीत्वानाः विष्णान्ति । क्षणीत्वानाः विष्णान्ति । क्षणीत्वान्ति । क्षणीत्वान्ति । क्षणीत्वान्ति । विष्णात्वानाः विष्णान्ति । विष्णात्वानाः विष्

प्रस्तु प्राचित्र प्रिक्षं मित्र स्वीता निमान हो स्वीत् प्राचित्र स्वीता स्वीत

चतुःकुं अळ्यं क्रीशरे हें र चहूरे ततुःकुरा चतुःकुं अळ्यं क्रीशरे हें र चहूरे ततुःकुरा चतुःकुं अळ्यं क्रीशरी र चेचार क्रेंचे त्या क्रियं क्र

महिकायान्त्रीम्बायम्बयायम् नुरार्थेन् ने। खुवान्तीन्त्रीम्बायमवा नुषा ग्री'द्रिम्बर्यस्य हेर्बुच्दिम्बर्यस्य म्बर्याच्चित्रस्य केंगिदेः र्भगमानमयाम्ममानुष्यित् प्रते द्विमा दहार्ये प्रितिने गविवसामहा वर्गा वर्हिणः यदे निवान निवास प्राप्त स्वर्थ स्वरा निवास स्वर्थ मिन निवास स्वरायदे । मिल्रेन्ने प्रत्ने अस्य अस्य से स्विम मिर् अस्य द्विम मिर्स स्विम किस यःस्युःप्रिक्षर्यदेःस्विर। विदेशयःप्पित्दे। स्ररायम्द्रायःस्ररस्यायर्द्वेःस्विषः वयासरार्ट् क्रियाचित्रमानी क्षुरेटवायरवयान्वाचार है। है। स्टायर पा रुषाणी र्स् र्र्यार् रियो स्ट्रिंट तव्य में या कर तेंट र में स्वाप में सिंह र में देश स्वराम सुसावया वयानवान् ने ने ने न्यान्या ने प्यान का ने वावान ने के ते प्यान के कि ने वावान ने के ते प्यान के कि वावान ने के चिमानमायवाराभूजारुमानमायमायमाये देश्या प्राप्ता धिव परि द्विरा नासुकायाधि दो। दने द्विराद्विर दन दने स्तुवा की देविकाया व्वर सामा श्चिरः सान्तवार्यः यन्वान्तेनः ने विदेशानानः स्टानी ह्या स्वान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रा रविःवःद्रःचवःधिता चित्रःधितःते। सक्षमभामान्यःभामान्यः। ब्रिमा सम्मार्येन ने। स्वायक्रियायम्यम् स्वायम्निमायम् विस्तायम् यम्बार्यक्रमायह्रियान्या स्त्रान्यायस्यायन्या न्यामान्ये विम्यान्यस्य पर्यागुराने सामुकायि के सामिन मिलेंद्रे निम्मान् हे प्यत्ने निम्मान् हे निम्मान् है हुे ५ प्रिके में देशका गुर पें ५ दे। ५८ पें २ ५ में केंद्र देश केंद्र विश्वेद प्राप्त के विश्व के प्राप्त के प वयादवी र्श्वेट स्वा दे वयादवी र्श्वेट स्वा दे वयादवी र्श्वेय सम्बन्ध रीया द्वाराधिक

तम् द्वीर्यक्षात्रिक्षः चि.यः भाषाद्वीष्ट्वाक्ष्यात्र्यः स्वीत्रात्रः स्वीत्रः स्व

प्रस्तान्त्रस्य प्राप्ति स्वर्णक्षित्र प्रक्षित्र प्रक्षित् प्रक्षित्र प्रक्षित् प्रक्षित्र प्रक्षित्र प्रक्षित्र प्रक्षित् प्रक्षित्र प्रक्षित् प्रक्षित्र प्रक्षित् प्रक्षित्र प्रक्षित् प्रक्षित्र प्रक्षित् प्रक्षित्र प्रक्षित् प्रक्षित् प्रक्ष प्रक्षित् प्रक्षित् प्रक्ष प्रक्ष प्रक्षित् प्रक्षित् प्रक्ष प्रक्ष प्रक्ष प्रक्ष प

चिश्वभार्त्त्र कुष्ट्रान्य द्वार्थ क्ष्यात्र क्ष्यात्र क्ष्यात्र क्ष्यात्र क्ष्यात्र क्ष्यात्र क्ष्यात्र क्ष्या क्ष्यात्र क्षयात्र क्ष्यात्र क्ष्यात्र क्ष्यात्र क्ष्यात्र क्ष्यात्र क्ष्यात्

त्तुःश्चरः जुन्दर्भः साल्च न्तुः श्चेरा न्तूस्य स्तुः श्चेरा व्यामाव्य न्तुः श्चेरा व्यामाव्य न्यः स्तुः श्चेरा व्यामाव्य न्यः स्तुः श्चेरा न्यूस्य साल्च स्तुः श्चेरा न्यूस्य साल्च स्तुः श्चेरा व्यामाव्य स्तुः स्तु स्तुः स्तुः

महिश्रायहेत्रभ्रामा भ्रीत्रप्ता स्त्रियाम् । त्रुत्रभ्याम् । त्रुत्रभयाम् । त्रुत्रभ्याम् । त्रुत्रभयाम् । त्रुत्रभयाम । त्रुत्यम । त्रुत्रभयाम । त्रुत्रभ

यः र्घराम्याय। र्घराष्ट्रीम्याम्याम्याम्यान्ता न्वयान्वयःर्वामया माञ्चरमाया मानाववानाववायामा क्षेत्राया ने त्र्येतायामाधिवापने वीमा तर मैं पे देव हैं र रें पर्छेष तर हूँ में साम विषय में साम सें साम से साम से साम से साम से साम से साम से साम स नः व्रेप्तकक्रियासधिकप्रतेर्धेन्वरासुःसर्भेरप्याधर्तिकार्यरान्त्रिम् युषामान्त्र पु पञ्चू र पार्के मिदे हे व साधिव प्रषायुषा द्वा स्वा पु माव षा प्रदर प्रेषिषा र्भे । १०६८ प्याचेर से रुट एपट हेर या द्वर पार्थे दे। सर्दे । सर्वे । साम साम कि यद्याद्रा श्यावन्त्रयान्याद्रा द्योख्याने हेर्याद्राहरी विश उर्वेट.च.जम.म.म.२२४.मध्य.२.वम.म.म.म.म.मूर्यम.२२४.वम.म.म. उर्रेट. ट्रेम्ब. तर्य. ही मा च्या. क्या. क्य. क्या. क् ग्रिटावरावक्षेत्रायरार्हेग्रायात्राग्रिटानु रुटायाधेत्रान्। लुप्यायया नगे स्था ब्रामहब्रायमित्राविषानुर्वे ।देरविष्रानुर्वे ।देरविष्रानुस्त्राम् क्रुंस्र्र-विषाञ्चरकात्र्वात्र्यात्रमुराविरावराविष्यागाःसळस्रवाद्येतावीयात्रेर्न्नर वयायितः वापार रुटा मुर्चमार प्रतामिता प्रतामिता स्त्री देवी प्रति । प्रतीमा स्त्रीमा विकास याने हिन प्रेक्त की विकासिय अर्दे स्वकार्की विक्रिय निवस्त अञ्चरकारा र्नेष्यायर मासुरस्यायाप्यर न्वार स्थाये स्यायकुर मानिर यार्थर स्री सुर प्रेर निर र्नुषणीर्षुःस्राप्तरान्त्रम्भारतिराष्ट्रीःसर्वेदायर्देरायर्धेरानुतास्या देंदे ळेंश मुडेम या श्रायमुद पदेद प्यापेद पदे द्विय त्रेश मुस्स हे पदमा में ।

योशियात्रे हिंदा त्याता विश्कृताया विश्कृताया विश्वेषाया विश्वेषाया विश्वेषाया विश्वेषाया विश्वेषाया विश्वेषाय विरायमा हुर्युयुविरायमा बारमाजी विरायमा चर्मासूयुविरायमा समा यः गर्नर्यवेद्धायम्बद्धर्र्युवया क्रिंशंनिश्वम्भुम्भुम्भू मसुस्र नर्मे सम्प्रे स्थिम। यदे मसुस्र प्रकट्याया सर्मेम। दर्मे सम्बिदे पुर्माणे नेवाचा निवेदाः अवस्ति निवेदाः क्षेत्रः अवस्ति ।

क्षेत्रः अवस्ति ॱॻॖऀॱॠॆॸॱय़ॸॱय़ॺ॒ॸॱय़॔ढ़॓ॱक़ॗॴॱॺऻ॔ॶॴॶॕॴॴॹ॔ॸॴॱॴढ़ॖॴय़ॱॸॖ॔ॱय़ॗ॔ढ़ॱॿॎॗॸॱय़ॸॱ र्थिर'दे। उटायादटाळदाख्रायाहेशायमा दटार्थायाकु उटाया द्वीयमाउटा यः विर्देग्रेन्या ग्रमःश्लेनमः रुट्यः इसमः द्र्येमध्ये भ्रमः ग्रमः य क्रिंश'र्मिश'माशुक्ष'म्ची'के'क्र'५८'। दे'यश'ङ्कषा'य'य्यट'रुट'य'य्येक्'यरि'द्विर'दे। वयद' यद्यः अः मुकायः प्रता वार्षे रः अः मुक्तावायः प्रत्यावायः वार्षे वार्षः तत्। विन्यक्ष्रीयात्र्विषास्त्रविषात्री स्त्री विष्याययाप्य विष्याया त्रमास्त्री विश्वस्य मास्य भी विष्य स्तर्भाति हो। क्रमास्य मास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास र्भाष्परार्द्रायवे क्षेत्राद्रा ब्रुका श्रुत्रायु निष्यवरा निराय कना वार्षाये । हिरा वि.य. रा टे. श्रातवर री स्था हिर रे. याययर हिया वस्तर रा याळवाया यक्षेत्रेन्न्यके वर्ष्ट्रेन्वियके व्यक्ति वर्षेत्रेन्त्त्रेन्त्रेन्त्रेन्त्रेन्त्रेन्त्रेन्त्रेन्त्रेन्त्रेन्त्रेन्त्रेन्त्रेन्ति यहरायाने व्हराधिक ग्रामा वदी यमा प्यम्या ग्री मिषाधिक यमा खूसा ह्वा स्थान से से यार्ह्नेमायते द्वीमायक्ष्यारे रे पेर्पा प्रति प्रति द्वीमा न्येमाम् स्मापमायने मार्केमाने मार्गमा स्वासाम्बेद्यात्याद्यो स्त्रीत सार देवि १ तर्वे प्रति १ त्वी १ त्वी १ त्वी स्वासाम्बेद्या । र्वे । विश्वास्त्र विश्वस्त विश्वास्त्र विश्वस्त विश्वस्त्र विश्वस्त्र विश्वस्त विश्वस्त्

स्यानु सात्र सात्री त्रीत्र विकाल सुन्त सात्र स्थान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

यर्ष्याच्या हि द्वाप्याचित्र प्राप्त हो हि स्वाप्त प्राप्त हो स्वाप्त हो स्वाप्त

## न्वृद्य्य स्वाप्य प्रवासी ।

महिषायायायिव र्येन ने। वनासार्येन यम केंग्रायम स्रेमायम स् अळ्थायात्री, बटारी, मुंश्याचियात्राची वासूत्राची वासूत्राची त्राची त्राची त्राची त्राची त्राची त्राची त्राची त यर्चे यर्झे य म्रेंबिय य त्यव बिम् यवे खार्या क्रा में व व मान्त्र या मान्त्र या मान्त्र या मान्त्र यो क्षेत्र दे.यधु.सर्.तमा विकास स्वास्त्र में विकास सुर्वा स्वास स अक्षभगः की बिराद् में अञ्चन प्राप्त विद्या विद्यालय है। विदाय प्राप्त विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या देखान्तर्यम् मुर्वे । नर्षेखाया मुक्षाने देखे का केनिका गुक्षा यह का परि हिम दे यम् अर्देवे देव प्रमान द्वार विराज्य प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रम के प्रमान के प्र यशस्य निकृत मित्र दे दे में यद्व में अर्थे अ वर्र रग्नु र मान्य पर्वर र मो पर्व र मी या है र या मुयाया यम या मा नाया है र मो पर्व र मुभायबेर मर्केममें भायरे रमे १ यर् में भारत मुभा माना मिना में स्वाप में भारत में स्वाप में भारत में स्वाप में यक्क्षेत्रक्रिंदारमानुःयम् गर्रमायहेत्यार द्वात्वेषायविदेन प्यमायविद्वेषा मासुसा यमिर्टियर वर्षेश्वरादे द्वे क्षिट वे क्षिर के विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय मशुक्षायश्चेत्रा नमे पत्रमायार्हेत्या नमे पत्रमायते शुक्राया हे मासु शुक्राया यन्दर्वि र्थेन् यदे श्वेम ने यवि सर्ने यस मसुद्रम स्वा र्थेन् ने। वगु यन्द्रा इ्चयन्द्रम् विव्रञ्चूर्यन्त्रम्थन्त्रार्थेन्द्रम् वर्षेन्यरम् वर्षेन्त्रम् ग्रिट प्रस्तुर र्से । ग्रिट र्से । प्रिट र्से क्ष्य पुर्वे स्वर्ष तराच्छित्रायान्ता क्रिन्द्रस्यायन्वायन्वात्रायक्रम्यान्त्रात्रात्र्या B्रि-रुगामिश्र-र-र-मि:क्रिशमिश्र-इस्य-र्नुट्र-पर-नुद्रिक्शक्रिम्श्र-यःयान्हिर्

प्रत्येत्विषाप्रयाम्ब्रुसायान्त्रः । यनु प्रते भूष्याः हेषासु भूष प्रत्या । यन्त्र प्रते भूष्या । यन्त्र प्रते भूष्य । यन्त्र प्रते प्रत्य । यन्त्र प्रते प्रते प्रत्य । यन्त्र प्रते प्

निरुषायान्दिषानिवाणेन्द्री यानमुदानिदायरान्स्रिषायवेदनो सिदानेषा व्यञ्चतात्रीः ह्युवास्त्रदेष्ठर पुरक्षियावस्य व्यस्तर स्वर्धाः स्वरं स्वर्धाः स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वर्धाः स्वरं स्व क्र्यात्त्रवार्यस्य प्रमान्त्रिय प्रमान्त्र प्रमान्ति प्रमान्ति प्रमान्ति प्रमान्ति प्रमान्ति प्रमान्ति प्रमान्ति प्रमान्ति प्रमानिति प्रमानिति प्रमानिति पञ्चरायरासी । पार्टर देखियासी विषापासुरयायया र दार्ये र ने पर्वे प्रमास <u>२८.ज.बोर्ट मू.जुम.जम्बोर्य पश्चात्र, इस.सी.र्चवास.कुवा.जम्बार्य पश्चात्र</u> धिवर्की । मासुस्रायासह्मार्थित् दे। सर्देर। दमोर्श्वेट रे रे दे स्वर् वर्तु गर्फे यहेट हे बिश में यर मुदे बिश प्यमूट प्यायश यहें स्थ प्रेर हो हैं है र देश सुप्यमूट यर चु प्राधेत प्रवे द्विर। द्वी र्द्विर वालक क्रम्म ग्रीम प्रहें प्रय चु प्राध्य प्रवे दे। सर्दि। ग्राबन भी ने येग्राय प्रतिहारी। विन पुष्पित रेपा विष भी चु पाणिक प्रति श्विमा सक प्रिक के प्रकट प्रमुख पर्हेना ना सुस्र भी श्विम प्राप्ति प्रमुट प्र ययविष्रुप्रस्थर अयप्राप्त वर्षा अर्थेग्रास्थर सेव्हर विरक्षेत्र याचियाँ विक्रु यानश्चरायते स्वार्ये दिया मारामिका मश्चरायते प्रमार मुका मार्थे का ब्रॅंटर्न्यानश्चिट्यर्भुव्यर्भेट्यं ने हे हिन्याया है की प्रवस्थायनस्थायर शुरु में स्थापम्य ब्रेन्यर्थेवेन्त्रों ब्रेन्य्वेषायक्षेषात्रस्त्राच्यात चुमान्। यहेरायदे नानमारे हिरातु यञ्चरा युनाहे उसातु यञ्चरायदे त्यरातु

२४.२.यथवात्तराश्चात्रेष्ट्राचुकासूचकाउर्वीट्याक्षरावित्रात्वात्त्रक्षरा २४.योक्षरायरावी यम्र्यात्तरावी श्रीवात्तरावित् । विश्वारीयात्रभीट्या विषायी श्रीयाक्षरायश्चीटा। श्रीकाहाक्षरायश्चीटायपुरियटारीविषायात्रभीट्या

साधित्रप्रश्चित्रपरिःक्षेत्रत्रप्रश्चित्रत्रप्रश्चित्रप्रश्चित्र। सासासुसासुराधितः रे<sub>१</sub> सक्स्राचार्यः यास्रेरायदे साम्राचकुर्। सक्स्रमाचार्ये पादिसा वादिःसा अप्तकुर्। अळअशयात्रेपार्थेर्पदेअअग्वकुर्। क्रेर्पयार्थेर्पहेशः वाप्तेर सासानुना इसमा सुर्धिन प्राये द्विमा नदार्थे प्रिना हे हिमानसाय में प्राये सामानि ५८१ देशयमः क्वेन्यवे साम्रायवे सम्मार्थे प्रति द्वेम न्द्रिम न्द्रिम वर्वेषः भेर मुरुष र्ट तम्रेया परुषा मुसार्थेर । यदे स्वी र पदि र में सि र पदि र में सि र पदि र से साथ र से या એન્'ગ્રી'અઢ્ઠંન'નિલ'પેન્'ને નિને ક્રેન્'ને અ'વન્ન' ગ્રુ'વ'સ્ર અઢઅઅ'ત્રન'વને મંસે र्द्भिन रेडेट रहे दाय पुट प्यापट की ब्रह्म स्ट्रिस दुप्य सम्बन्ध स्ट्रिस प्रिस कें सक्तरात्तरात्र्याचनादेवःक्र्यान्यात्र्यः विवाप्तः त्वेत्रात्तः त्वेत्रः त्वेत्रः त्वेत्रः त्वेत्रः त्वेत्रः त यवः भ्रीता वदे वावचेवा से द रेशा महें दि रावे क्या संस्ति हो। साम महिता मी हित यः व्यत्यते प्रवास्य स्वास्य स रें अक्षमायमायर्भायाम् रेप्याचारी द्विरक्षेप्रेर्मायरे मेममाने तालकाचीयातपुरिष्ठे में चिष्ठेकाताक्किं मायकातच्चीतपुराक्षात्रचेलायककाचीसीकालूरे. ने ने के केंट्रिं के अपनित्र के केंट्रिक केंद्र के कि केंद्र के केंद्र के केंद्र के केंद्र के केंद्र के केंद्र के केंद्र केंद्र के केंद्र केंद तार्चित्र्यः यत्रभार्यः तथात्रायायायाया द्वार्त्यः भ्रम्भाराः तया तृःर्वेपयः ५८। क्रेन्यः क्रेक्षकः क्षेत्रायः क्षेत्रकः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः विवायः विवायः ८८। क्रेट्रायायार्यायविष्यस्यायाकु्ट्राळ्ट्रायाम् देविःक्रियांनीयाचीम्यायस्यस्यायस्य तरत्रीर प्राथवर विवास रहा। पश्चिषाता विवास रहा। प्रथम पार्केष १

म्योत्त्राच्या ह्रम्यविष्ण्याचे स्वार्थित्याच्याचे स्वार्थित्याचे स्वार्थित्यचे स्वार्ये स्वार्थित्यचे स्वार्थित्यचे स्वार्थित्यचे स्वार्ये स्वार्थित्यचे स्वार्ये स्वार्ये स्वार्ये स्वार्ये स्वार्ये स्वार्थित्यचे स

चलक्ष्म्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्य स्त्रम्य स

महिषायासळस्यायायीन महिषा चायते छे सासायकुन प्येन ने। येन महिषा

याधीन मित्रमा अविकार्या हिन्या सामित्रमा सक्त सम्याने निष्य सक्त सम्याने सम्याने सम्याने सम्याने सम्याने सम्यान दर्न विदायम् या स्र में क्षेत्र प्रति हिंद । विदासी ह्येन प्रामित्रमानिका सुरदिन प्रमित्राति। रे रे रायाय द्येया सेन प्रमाय द्येया परका मासुसा लट.र्ह्नर.यधुष.बु. विश्वेषाता.शक्षश्वाता.पु.य.लूट.त्यु.श.श.यक्चेट.लूट.ट्री उच्चा. सेन महिमानमा वर्षेया परुषा दुवा सेन परिवासिन वर्षेया सेन महिमासिन हो। सक्तरायात्रे प्राप्ति छिटा। क्रेन्यायात्रे प्राक्षेन्यमासक्तरमाणी क्षेत्रे स्वास्यात्र प्राप्ति । ধূদাববিশাদ্মান্ত্রমান্দ্র ব্যাদ্র বিশ্বাদ্র ক্রিমান্ত্র ক্রিমান্ত ক্রিমান্ত ক্রিমান্ত ক্রিমান্ত্র ক্রিমান্ত্র ক্রিমান্ত্র ক্রিমান্ত্র ক্রিমান্ত্র ক্রিমান্ত্র ক্রিমান্ত্র ক্রিমান্ত ক্রিমান্ত্র ক্রিমান্ত विगानु शुराया दे भिराये हिराने। हेरा सुरायेयाया से दावि विरायया सर्दे । विरायया सर्दे । मुप्यते क्षेत्र ववेषायरुषा दुगार्थे ५ दे अळ अषा ५ ८ क्रे ५ या गुरेषा गाया रे या र्येन्यमासळसमाग्री द्वी रेवानु स्वानम् निष्केन्यवि स्वायायमा मुर्चियाय सेनामा नार्यायात्राच्या अक्ष्रयात्री वरार् देनार्याया विदाय के वार्याया विदाय विदाय विदाय विदाय विदाय विदाय विदाय विदाय नु'वशुर'वरि'क्षेर'ने। भेंद्र'त्र'हेद्र'यर'वशुर'व'हेद्र'क्द्र'त्रेष्ठ्र'वेष'यरि'सर्देष'शुव' यविः ध्रिम् अळअषान्दाक्षेत्रयाष्ठिषाणाः यामे पार्येन्यपायुवाणाव्यन् सेंदापा वं त्वे त्त्व कु त्या कु स्या कु त्या श्चायदेवाकुटा सम्लूम्इमास्यायद्वाक्षा देव्ह्रमान्नमास्यास्यास्या यायाजे अर्घेषाणे प्रमान्यक प्रविष्ट्रिमा विषयपरि अर्देषा व्यापि हिमा यविष्यः क्रेन्यायाध्येन विषेषा अयविष्यासानु वार्धिन ने। न्रार्धाय वे विषयि स्थान

सक्षर्भराद्रा केरामायायद्रमान्यायद्रमान्यायद्रमान्यायद्रमान्या

र्मिन्स्यन्त्रिक्षः स्वस्थर्थः स्वर्भः यात्राक्षेत्रः व्याप्त्रः स्वर्भः स्वर्भः स्वर्भः स्वर्भः स्वर्भः स्वर्भः स्वर्भः स्वर्भः स्वर्भः स्वरं स्वरं

देख्न स्वामाय विद्या स्वामाय स्वामाय

त्तरमिश्रम्प्रियास्त्रेश्वर्म स्थास्त्रम्भ्यत्त्रम्भ्यत्त्रम्भ्यस्य स्थास्त्रम्भ्यस्य स्थास्त्रम्भयस्य स्थास्य स्थास्त्रम्भयस्य स्थास्त्रम्भयस्य स्थास्त्रम्भयस्य स्थास्त्रम्भयस्य स्थास्त्रम्भयस्य स्थास्त्रम्भयस्य स्थास्त्रम्भयस्य स्थास्त्रम्भयस्य स्थास्त्रम्भयस्य स्थास्य स्थास

वर्ळे प्रविश्वे प्रित्त स्वार्ण कर्ण कर्ण प्रति है। वर्ष क्षेत्र प्रवित्त क्षेत्त क्षेत्र प्रवित्त क्षेत्र

यहणाची न्यान्यान्य विष्णा विषणा विष

## यद्दा अर्देवे प्रम्दायम् रायम् रायम् रायम्

दें वा केंबानियानसुम्राञ्चसाय्वरादाः क्षेत्राचाराः के संसादाः स्वरायाः स्वरायाः स्वरायाः स्वरायाः स्वरायाः स्व वः वन्दर्भे द्वाञ्चर्भे द्वाञ्चर्भे द्वाञ्चर्भे विष्याञ्चर्भे व्याञ्चर्भे व्याञ्चर्भे व्याञ्चर्भे व्याञ्चर्भे स्वर्तनाविरन्गुःष्पवःकर्षिःसुःस्यय्यवःकर्रे खुट्यायानिन्यर्थे। १दे प्यवःकर् ैं कें अप्तुर्वे । ५८ पें मासुस्य प्य है ५५५ मामी क्षेम्य प्य स्तु ५५५५ मासुस्य प्रस्ति । विहिष ्रेट्र्वियायविंदायाता स्थास्यार्था पर्वायश्यापा पर्वायश्यापास्था कुर र क्रें र मासुसा वर्ष्ट ख्या वर्ष्ट पत्तु वर्ष पत्तु र मुर मासुसा के. मुः इत्यार्च वार्या इत्यास्यार हित्यः हे के वार्यः ह्री र वास्त्र या दितः र्ये नसुस्रायाञ्चेनसातुः क्षेत्रात्रामसुस्रायाञ्चेनसातुः क्षेत्रात्रात्वे। घ.भ.चीश्राता.क्रीट. २८. क्तंत्र्य. त. २८. व. व्यूषाता.क्षेत्रा. त्यूषा. त. व्यूषा. युः भ्रेत्रात्रम् अवराज्या अवर लूर्त्रातुः हीरा पूर्या स्थास्य र्ट्या मैंग्याति हिंदि स्थिर लुवाह सिर लुवाह सिर लुवा व्यवर रुर्येर दे। सर्रा इस इस इस के विकास के प्राप्त के प्राप वयान्वयः नुः भ्रम् याद्वेदः दर्वे स्वीयाः स्वीयाः स्वायः देन निष्यः स्वायः स्वीयः स्वीयः स्वीयः स्वीयः स्वीयः स न्नामिशर्भी । सहरमिशन्र न्यामिशन्र स्थान्तु र वर्षी । विश्वमासुर स्थान ब्रेन'य'सेन'म्डन'नु'यहर'ववे'ळंय'द्युर'इसम्म। म्डिम'मी'इर'वन'नु'म्डिम'स त्त्रियाम् अर्घि न्याम् पुराष्ट्रियाम् विष्याम् अर्थाः स्रेया स्रेया स्रेया स्रेयाम् स्रियाम् विष्याम् विष्याम न्यन्द्रात्वेषात्वःवेदा वेदान्ष्याद्रद्रषासुयन्द्रात्वेरः द्रवाद्यवेषाः

ह्निभाग्री र्ह्सारा नार्श्वर प्रिया प्रमाण्य प्रमाण स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स

ल्यात्रात्र्याक्ष्यात्रात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र

यान्ता भेगान्ता भागान्ता भेगान्ता भेगान्य भेगान्ता भेगान

प्रज्ञास्त्रिम्यत्ते स्वत्यास्त्रिम्यत्ते स्वयास्त्रिम्यत्ते स्वयास्त्रिम्यास्त्रिम्यः स्वयास्त्रिम्यः स्वयः स्वयः

चिर्यया । तियात्त्रिमायस्य क्षियामम्बद्धाः । विषयामिर्ययात्त्रः द्वीमायस्य क्षियात्रक्षात्रः विषयात्रः विषयात्र भाक्षात्र्यम् । विषयात्रः विषयाम् विषयाम् विषयात्रः विषयात्रः विषयात्रः विषयात्रः विषयात्रः विषयात्रः विषयात्र विषयात्रः । विषयात्रेषिमायस्य विषयाम् विषयात्रः विषयात्रः विषयात्रः विषयात्रः विषयात्रः विषयात्रः विषयात्रः वि

यः देवे द्वर द्वर द्वरा युवर दुर ग्री सक्स र्सी । वर दु है वे वि र विट 'यथेय' मुै 'अर् ब 'मुै 'ब नब 'बेब 'र्सेनब 'मुै 'अर्द 'नब्दु ह्या देव 'यवद 'व प्यवेट ' वर्गुर है। युवादव्यादर अववादिवामी अक्रमा मक्षेत्र या अक्रवा स्रमान्तर यद्रम्भागवर्यवस्यक्षम् ग्रिन्ध्रम्भानुर्यः यद्रम्भानुर्यवस्यम् कुः यार्येट्यार्डे्ट्रियंदेविवयाद्मय्यासुर्येद्रायंदेख्डिया दरार्यार्थेद्रादे हें विद्या न्युषासुःपत्वणायिः व्रमः वःशिषाम्यतः विराक्षरः क्षेरास्ववः येन् याने क्षुंबाकनः न्युषाः ५८१ स्व.कर.श्वर र्वियाणेवा हैं.व.के.प्रीट.ट.प.व्यातालेवातात्रेयाते.क्वे.कर. न्युषान्तायम् कन्यम् व्यविवाधिम् म्यान्यम् विवास्यम् विवास्यम् । चित्र दिर्मे हे मान् म की प्र मान मान प्र प्र मान कर् ग्रीट.पर्वे.र्रेची.लूरे.त.प्रट.जीचेश.शे.चेत्री विच.क्रच क्षट.क्षट.क्षर.सूचेश.पर्ख. র্মান্তর্বাধার্ম বেলের বিবাদার দার্বাধার্ম বিবাদ্ধর করের প্রত্তির বিবাদার করে বিবাদার করে বিবাদার করে বিবাদার लिब है। दे प्ववि द्वुम द्रम् अवय प्विच ग्री सक्सम लिब प्वे में ही में पुरा द्वुम ग्री अक्षर्भार्श्वेषायवृहायमार्शे । इन्हन्मानिहेषायार्थेन ने। ह्वेरायनहायायुवा

द्विस्तुं रा क्वानु स्वस्ति स्वस्ति

देन्द्रभ्यान्त्रियार्थः भ्रम् विषय्यान्त्रम्य द्वा द्वा स्वर्णः विषयः प्राप्त विषयः विषयः

स्वाप्त स्व स्वाप्त स

वित्र प्राप्त स्वर् क्षेत्र प्राप्त स्वर क्षेत्र प्राप्त स्वर् क्षेत्र स्वर् क्षेत्र प्राप्त स्वर् क्षेत्र प्राप्त स्वर् क्षेत्र स्वर

वीचार मूं शारात क्रियान त्या च क्रियान विचाय विचाय विचाय क्रियान विचाय क्रिया व

त्राक्षात्रक्षत्रात्रे ने निष्ठे के क्षण्यक्ष क्षण्यक्य

त्रमान्निक्षात्रात्रम् विष्णान्यस्य विषणान्यस्य विष्णान्यस्य विषणान्यस्य विष्णान्यस्य विषणान्यस्य विषणान्यस्

चनान्तर्वेच्नात्त्रः श्रेष्ठः न्नेक्षात्तरः स्वर्णः स्वरं स्वर्णः स्वरं स्वरं

स्यात्रिक्षं वृद्धिकार्यत्रे द्वापन् विवास स्याप्ते द्वाप्त स्वाप्त स

त्तरम्भान्त्वम् म्यूक्तम् प्रमुक्षम् मारम्भे क्षम् मारम्भे क्षम्भे क्षम् मारम्भे क्षम् मारम्भे क्षम् मारम्भे क्षम् मारम्भे क्षम्भे क्षम् मारम्भे क्षम् मारम्भे क्षम् मारम्भे क्षम् मारम्भे क्षम्भे क्षम् मारम्भे क्षम् मारम्भे क्षम् मारम्भे क्षम् मारम्भे क्षम्भे क्षम् मारम्भे क्षम् मारम्भे क्षम् मारम्भे क्षम् मारम्भे क्षम्यम्भे क्षम् मारम्भे क्षम् क्षम् मारम्भे क्षम् क्षम् मारम्भे क्षम्भे मारम्भे क्षम् क्षम् मारम्भे क्षम् क्षम् क्षम् क्षम् क्षम् क्ष

पास्त्रम्थान्त्राप्तराद्येष्ट्रम्थान्त्रम्थाः । विष्ठम् द्वान्त्रम्थाः स्वस्थाः स्वस्यस्य स्वस्थाः स्वस्यस्य स्वस्थाः स्वस्यस्य स्वस्थाः स्वस्यस्य स्य

क्ष्याक्ष्यभान्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम्यात्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम्यात्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्

पि.श्चर्य यी. प्रमानिट देश प्रेट मी. खेंबे लिब अपने प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा ह्युरायविष्यतुरायादे। ह्युबार्क्केन्युर्यविष्ठ्युबार्ग्युः रेग्यूबार्भ्यव्यादे। ने क्रिंद्यारुटायमाञ्चटावदेग्वतृत्वायायम् वित्रा वर्देदाम् वात्रसायाः श्चित्रावदेः यहुट यायाप्यट देर व्यव्यो । वर्दे दिश्चे बुष हो। दे विवाय दुव यवे ख्लेव की देवा लब्रायदे ख्री र है। दे ख्रायद् ब्रायदे ख्राव दु विव की यायक्षय है। दे रायदे ख्री र । क्रा ५८'वि'च'श्च'चर'दशूर'ब'अ'थेब'हे। र्रे'५८'वि'च'श्च'चर'दशूर'ब। गर'शूर' स्निर् छ्वा साध्येष परि ही र विषा त्रेरा। सर्हे प्याया। वि छ्वा वा रे स्याया है र वा दे प्याया वि'साधिव'हे। नुषाञ्चना'यायायहेव व सीयकनषायर प्रश्नुर परि द्वीर न्दा। ने ู่ ๔อี๊ ะ.ฉร.๘อิ๊ ร.ฉ.ศ๗.๓.฿พผ.ฏพ.ฉอัฺ 2.๓.พ.๗฿.๙g.฿ฺ ร.ฮิ฿.ฏพ.ฉฺฐฉพ. ग्री'युग्रम्भ'दे'अ'प्येब'हे। दे'प्येब'ब'ब्या'स्थंब्रम्भ'र्दे दिर्म्युय स्थाप्य रे तु'रस'या'बुर'पदे'पतुर'प'दे'वुद्रांचुर्भायक्वपर्भायर'वु'प'संदर्भादांदेद्रां'देवुर' न्निकायवे स्थित ने न्निकाने। ने ध्वेन ना चनु मान ने ना चनु न प्रमा चीन की का पश्चयश्रात्र म्युः पार्थे प्रतेष्ठिष । विषाः स्थार मुवेष मुक्षाय स्वयः प्रत्य स्वयः । विष्यः स्वयः प्रत्यः स्व धिव द्वीषायति द्वीरा दराया वाया है। दे त्य दे त्य प्राप्त दे विवास यति ह्वव ही। देन्याच्येत्रायान्तिन नुषाययाञ्चनायायाञ्चेत्राञ्चनषाद्यायहेत्यायायान्त्राय स्वीयित्वे क्षित्र निर्मायका विष्यायायान्त्र कर्म निष्यायायान्त्र क्षित्र क्षत्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षत

स् स्वर्वे त्राची प्रम्वा त्रिया क्षेत्र त्राची स्वर्ण त्

यहनायिःश्वेम। श्वन्यायित्मःश्वेन्यवे स्वयायत्मात्त्रेन्यमःश्वेन्यमःश्वेन्यमःश्वेन्यमःश्वेन्यमःश्वेन्यमःश्वेन्य उत्तर्द्रात्मेश्वयार्द्रा श्वेष्यम्बन्यस्थयः स्वयं स्वयःश्वेन्यमःश्वेन्यमःश्वेन्यमःश्वेन्यमःश्वेन्यस्यःश्वेमः। अस्यायश्वेष्यस्य स्वयः स्व

यवि'य'ञ्चर्र'य'र्थेर्स्र'र्श्चेर्'यये'ग्रस्र'र्द्र्र'ष्ट्'ग्वर'ग्रेर्र् र्नेषायदे र्यट र् मुष्यम्। अळअषायर्डेष र्ट ल्वा खेँब मु हेषाय से व्युट यदे केर'रमा वहुष'र्रेब'ग्री'रवम'र्'ग्रुष'बा रेब'ळब'वरुब'ग्री'र्ब्वे'ब्रथ'वन्र'यर' वु प्राधित प्रवि द्वि र है। मन्न भागार पु र प्रदाय र मार्चित प्रा हेन मार मी भागार्चे प्रा र्थां विष्यु के विष्यु के विषयि के विषय चन्द्राया द्वरावरावर्ष्ट्रवायदेवायवे कुं इस्रामा सुर्वे यो द्वार्ये क्षेत्र दे भ अक्षमभावराके वितर दरायरुषायाध्येवाय। सरारमा सरादर के वा विवा यर द्वर वा गुक्र या अर्वि ववे क्षे विर सेवास साधिक या दर्गीक सकेवा नी से वर भारत्येता सम्प्रत्राप्तक्षापात्र्या इत्राप्ताप्तवन् स्रेमाण्या र्वासायत्रिम् ह्वासार्ट्सान्स्याच्यान्त्री रे.जसाम्बन्यायमयः विवायकर्सः न्नेंबा वनविन्नानु पठन गुरासन् स्वाधिक स्वाधिक स्वाधिक वन्त्र प्राप्त नेंबिन नेंबिन नेंबिन प्राप्त नेंबिन नें वर्ग्य रच रहा वायर क्षेत्र क्रुन क्षेत्र सुरव्ग्य रचते न माना चारिया यार्थेरादे। द्रवीयत्वराष्ट्रियाविषावास्त्रायाक्षेत्राणीयाध्वीराद्रवाणीयावहरा यर मु बिटा मु मु मु मिन में प्रते अद्यय अस मु ट प्रते मु मिट में भू मिट यमामी न्रुषाम् र्रित्। श्रेस्रयाय सूर्याय वे स्रव्याय विषय विष्ठुत्य विष्युत्य विष्ठुत्य विष्युत्य विष्ठुत्य विष्ठुत ब्रैंट र प पु स र पें भ मुर्चे । यभ ग्री सव र यभ ग्रुट पिर पे र पिर के र मे र दे न

यर अविक किर मंत्रिमार परि स्थान विषय परि यह मार्गि स्थित रहन या के यत्र विस्ति मि पर्वाची क्षरमान हुँ रातर हमा सुरदे वापर शुरु केवा केमा यव नासुसा पहेरा त्तुः भ्रुष्याञ्चेषाञ्चेषायञ्चयत्तराञ्चायाध्येषाद्याञ्चेर। देराषाञ्चरायहणायव्यायद्रा रुटावटा द्वेब क्वेब प्रचक्ष वास्तर प्रवास प्रवास की क्वेड प्रवास की क्वेड प्रवास की क्वेड प्रवास की क्वेड सर्रा में क्षेत्राचीया में द्वा त्यवा विटार्ने स्वत्र द्वा या द्वी राया स्वासी स्वासी स्वत्र हो निया वर्नुत्यः स्रम्यः दुत्रावतः विकावीया वास्त्रवाः वावावतः तुः स्रवेः चुत्रः यदे द्वाया विकावीया विकाव बः यन्नार्येन्द्यः न्नायः अर्थः यायाः द्वाबः स्ति । वाष्ट्रमः वाष्ट्रमः वाष्ट्रमः वाष्ट्रमः वाष्ट्रमः वाष्ट्रमः यमामिरानु अवि मुकार्सेरामी मार्थेषा सुरामिरामिर्छमानु छिनाया थिकार्के। विदेशया के यः यर वी वाव या सु रिवे रेट विट खेयाय वित ही । द्वा या सु यव द रेपित हो। अळ अया बरपुः अषापर्रेष्यप्तरा वनार्येब्यरप्तवनापुः सुरप्तरादेष्ट्ररपिरेष्ट्रिरा वर्षात्रेर्विष्यक्षेत्रवर्षात्र्वीयात्रेष्ठिष्यत्रेष्ट्रीत्रेष्ट्रिष्ट्री ह्या र्येषियात्तात्राम्येष्ट्रम्भार्यक्रमस्त्रात्त्रम्भारत्येष्ट्रम् गुरावर्ष्च्यानु पुरावरे क्षेत्र। स्याकु अध्वर वर्षाया वर्षेत्र प्रवे क्ष्या वर्षिन ने वर्षेत्र यन।विट्नो क्वियायसान्त्रि स्तिन् स्तुन्य स्तु प्वट्ना प्रति । विट्ना प्रति । विट्ना प्रति । विट्ना प्रति । विट मिन्यास्तरायवे क्षित्रवायम् वार्षेत्र प्राप्त स्वार्थित स्वर्थित स्वार्थित स मुंबाजुबोबात्रात्रस्थात्रकात्र्वेषात्रवेषात्रस्य विद्वा । र्योजार् पर्वेषात्रस वृदी विश्वस्वायायवृत्यस्त्री।

त्तुन्नेन्द्रस्त्रिः भ्रित्त्रः भ्रित्त्रः भ्रित्त्रः भ्रित्रः भ्रित्यः भ्रित्रः भ्

यिष्ठाक्षा । इ.र्यामी इंशातायिष्ठ । त्रिर दिर दिर अर र्यामे या विष् तत्रविष्टान्यः भ्रिवायान्यः प्रकार्यते निष्ठायान्यः विष्ठायान्यः विष्ठायाः विष्ठायाः बै'यबैर्दे। बिस'यवुर'य'ङ्गर'म्ररम्र संदर्भे'यद्र'य'यकु'म्डिम'र्धेर'यदे'य्वेर'हे। र्वे.श्वर.त्रु.केव.श्वर.टिंट.त.ज.४.वी लेज.ट्येश.शे.श्वेश.त.चश्चर.त्र.ह्येश. स्वः निवःश्वितः प्रते निवानि द्वे द्वेन्यायाः स्वास्याविकः सम्बद्धाः स्वास्याविकः स्वतिकः स्वास्याविकः स्वतिकः स्वास्याविकः स्वास्याविकः स्वास्याविकः स्वासः स्वासः स्वासः स्वास्याविकः स्वास्याविकः स्वास्याविकः स्वास्याविकः स्वास्याविकः चित्राक्षराय। र्वे क्षिरासदे र्वा वार्वे या पुरा र्वे संस्था प्रकृत व्देन'य'र्य'म्डिम'न्र्न्य् अमु'य'र्ह्हेन'य'य'न्मे'र्ह्हेन'य'अ'यकुन्। नमे'र्ह्हेन'अदे' तर्म्यायात्वात्वा सुरायाच्या रवा सुरायाच्या स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता विवित्तिः पक्षेत्र यम हिन्यायाया निने क्षित्य साम्या निने क्षित्र या निने क्षित्र विविद्या निने क्षित्र विविद्य यद्रः रूपः क्री द्वा सूर्यः महिषान्ता विवरन्तरविराधरायीके पर्याके महिषायी विवर्ष र्तुषासु र्वो र्सेट सावरु विवेषा समय विवि र तु विव र व ब्रिमा अवयःवितानुः प्यानानु र्श्वितायुः अन्य स्थायक्षेत्रायमः हेनियायानु रुतः म पर्वे.सूर्य्यप्रमाध्या क्षेत्र के क्षेत्र के मानिका स्वाप्त किया विष्ट्र मानिका क्षेत्र मानिका क्षेत्र मानिका यदे के 'द्रो 'र्सेट 'यविष'यक्षेत हे गषा रुट 'य 'यट 'यन द 'वेत 'हें।

<u> २८.लूटश.२च.लेज.पा पश्चेय.तर.श.हूचश.त.श.लुय.ता संशत्त्रा.</u> विषयातामात्राचा अक्षमाम्राचीयातामात्राचा क्षांटवारीयाद्वीका चट.र्ट.र्टर.र्ज्य.त्रु.र्ज्ज्या.सं.२४.श्रात्त्राचा ४.चषथ.क्ट.जग्राज्याचेशता.श. धेव या विव्यायरुषा साम साम साम साम साम विवास के मान का प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त सर्क्रेनामानवस्याधेवस्य रहारावेवर्त्राचे स्वयाधिवस्य सर्वेवर्धाः सर्वेवर् तात्रात्त्रेयाक्षेत्रपञ्चान्युमाळ्टान्नेत्रायदेख्या ने सम्मास्त्रेत्याम्यस्यास्त्र र्थेन ने। क्षेत्रन्वायर वित्र निक्षित्य क्षेत्र मार्केन मार्केन क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र वित्र वित् स्राण्यक्र के । दिवे क्षेत्र यत् व यात्र प्रिम्स सुत्वायवे के वा यस सामिव या के ति है। पक्षेत्रयम् आर्ट्स्वायायान्दाष्ठ्रस्यायान्दा सक्स्यरास्यायान्याया क्ष'य'ठव'दर'रायानवव'व'यावराय'दर'द्य'द्र'यर'यावराय'द्रसम्यायाद्रसम्याय विषयान्द्रम्यस्यायदाद्वेषाविष्ट्राच्यास्य । विन्द्रन्यस्यायस्य त्त्रवार्म्यायर मुस्याय है। क्रियं क्षेत्र मुन्याय प्रयापित हैं प्रयाप है। र्भहर्पयाक्षे केंबार्स्ववायवायवाचित्रकर्ते क्षेत्रविषायवास्त्रीया विष्यावस्त्र साल्यान्त्रेमान्यमान्यान्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त स्त्रिक्ती, यस्वेशस्त्र वि.य. तयदाव्यव्यक्षियां स्त्रास्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स् वः वर्षाविदाक्षात्वात्रात्वेषात्वात्रात्वेषात्रात्वेषायावेषायावेषायविष्यायविष्यायविष्यायविष्यायविष्यायविष्या धुरा

क्रमा ने स्प्राचित्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त स्प्राप्त स्प्र स्प्राप्त स्प्राप्त स्प्र स्प

याययवालेगायवायमाण्चेमाचे नाही । इसायाचसमाउन नुनमाय वर्ष्य राया है। साधिमाने। मुमायानेन धिमामाने साधिमाने मानिमान यर बुषाय हित 'पीक 'क्षा चिक 'चीका पक्ष प्रकार मार्थ प्रवास 'रे के *ঀৢ*৴। ष.ठ्रम तमायक्रममायायङ्गाद्विरादेशाद्यमाळ्नाळ५७० ग्रीमामार्ममाया विनाद्रनेषायाक्षायवद्यायम्बया देषानेषाणुटान्चेषानुष्यायक्षायाये के निर्वायाया वयवःविषायवेःवसावळणसायवेः ध्वेरावेषा क्रिवः से न ने ने रामा स्वापक्षेत्रायमः दे'च'व। द्युन्यायक्षुत्र'यदे'न्यस्वित्यदे'वस्य वसूच'चुर्याद्यस्य व्यव्यव्यक्षित्र'य क्षे.ये.लुषे.त्रु.हुरा लट्रांच्ये.प्रा जर्यातक्येशताजासक्ये सर्वेषात्रात्रीत्रेया यरम्या निमें र्सेट अदे निम्मे यें अं राष्ट्रेय तर ह्वायात्र तया स्थया वा भूट अळव श्राभवीय की या तकवाया यविद्धिरावेषात्रा वतुष्रायास्यास्यावाष्यरास्रीत्रेष्यराष्ट्राय मञ्जूषायमाप्यरा चरामरावर्षेत्राचवर्षात्रेत्राचेत्राच्चा मुस्याच्चा विस्तुत्राच्या विस्तुत्राच्या विस्तुत्राचेत्राच्या विस्तुत् यार्जेन्यवे भ्रुमा वेशयन्ता वक्षेत्रयम हेंग्ययन न्यानुस्राय स्था तर्रेष्यात्रात्रात्वर्तत्राच्या वर्षेत्रविद्धात्र्यार्था तथामित्रा क्षृंब मुक्त र वो द्वित द्वार वा पु र के अया पेरि द के पोब गुत्र पाय प्रकाय प्राय दे द्विर विषयन्त्र भेष्ट्वायम् वर्षेत्यास्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व झ्ना भ्रे पर्ट्र मार्जे प्रति मार्ग में मुक्त मार्ग मुक्त मार्ग में मार्ग में मार्ग मार्ग में मार्ग मार्ग में मार्ग मार्ग में मार्ग मार्ग

म्चेत्रपुः श्रेष्यगुरुः हो। वियया अदेशयि त्यत्र यत्त्र यत्त्र यत्त्र यत्त्र वित्य ते वित्य यत् । के ले प्येत्र व्या अल्गु श्रायेत्र वियय अप्याप्त । विवयय अप्याप्त । विवयय अप्याप्त ।

ग्रम्भायाक्षेत्रयाम् केषान्तान्य विषया श्रे अधुव य ५८ । वर्ष य द्वे र क्विंग में श्रे अधुव य महिष ५८ चय ५ में ष यदे धेरा अप्दर्भपदि से सम्बन्धिर प्रायायमा के मार्त्र मार्टि स्वापार्टी भारी। भर्रा देवःभक्षभाक्षीःविरासंग्रेस्वमान विःश्चरायराव्यातास्यासमाने ता वर्षात्रावर्षात्र ह्यासुरामानुगयायाद्वेर प्रावेश वर्षु ह्या वर्षा अळ्यया बर्द्रिन्ने क्वित्व क्वित्य रेविया युषाया युषायाय तुषायाय तुषाया क्विया पदि न्वतः पास मिन्या सक्समा भी नित्र स्तर प्रति । यर प्रवी मिन्य समा भी मारे मा तर.प्रेम.समायत्रेचमाता रचमम.मासम्बन्धत्र.तय्यम.च्रेट.ताम.लुक्ता चार्म्य. यद्रश्रात्रात्रात्र्वेषात्राङ्गेर्व्याक्षरायात्रेयात्रात्रीयात्रात्रीया पर्चेन'मे' से सम्बन्धार प्रमान के प्रमान के सम्बन्धार के सम्बन्धार के सम्बन्धार के सम्बन्धार के सम्बन्धार के स मुग्वित्रासुमिन्निमानितासूत्यासूत्यारादेशया ह्युत्यायायायास्यास्याया रतः प्रविष्ट्रं मुब्बाया प्रमाणप्राप्तम् या प्रमाण प्रमाण प्रमाण बरावे प्रतिब दरावरुषायासायिव या इसषा दर्गेषाय वे भ्रिया से देया के देया के देया यर क्रेन्यायम मामायाय अने क्रेन्याने यमामावम्य मायाने क्री सामुक्यानम द्वन्न हुँ न प्यमायमामानुसम्पर्म रहायविक नुष्म स्याप्त हा। हमायहा वे.भ्र.भद्येष.त.४२.२) विश्वासित्रा

महिषायाचे निष्णायाचे प्रति निष्णायाचे प

म्रिस्तान्त्रस्ति न्त्री विस्ताम् विस्ताम् क्षित्र स्त्री विस्ताम् स्त्रिस्तान्त्रस्ति स्त्राम् स्त्रिस्तान्त्रस्ति स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम स्त्

यद्भार्थः त्रात्तः त्रियः विश्वत्रात्तः त्रियः विश्वत्रात्तः त्रात्तः विश्वत्रात्तः त्रात्तः विश्वत्रात्तः त्र स्वस्रात्तः त्रात्तः विश्वत्रात्तः विश्वत्रात्तः त्रात्तः त्रातः त्रात्तः त्रात्त

र्स्याया के वाहूं चीका की क्ष्याय चाक्री प्रत्या की वाहूं का प्राप्त प्रवास प्रत्या की प्रत्य की की प्रत्य की प्रत्य की प्रत्य की प्रत्य की प्रत्य की प्रत्य की की प्रत्य की प्रत्य की की प्रत्य की की प्रत्य की की प्रत्य की की

स्टायिक, टी. योष्ट्राया ही प्राया तीया अक्ष्या अधिषाया ही प्राया स्टायिक प्राया स्टायिक प्राया स्टाया ही प्राय असिटाया श्राया प्राया अधिषाता प्राया स्टाया स्टाया

महिमायार्स्स्याये स्वाप्ता स्

त्रश्चात्रभायक्षद्वात्रभाक्ष्मण्डेन्द्वात्रभाक्ष्मण्डेन्द्वात्रभाक्ष्मण्डेन्द्वात्रभाक्ष्मण्डेन्द्वात्रभाक्ष्मण्डेन्द्वात्रभाक्ष्मण्डेन्द्वात्रभाक्ष्मण्डेन्द्वात्रभाक्ष्मण्डेन्द्वात्रभाक्ष्मण्डेन्द्वात्रभाक्ष्मण्डेन्द्वात्रभावत्यसभावत्रभावत्यसभावत्रभावत्यसभावत्रभावत्यसभावत्यसभावत्यसभावत्यसभावत्यसभावत्यसभावत्यसभावत्य

त्रसानेसास् ।

त्रसानेसास्तिस

महिश्रायात्रस्यायविष्यत्रायि । यदुः वेश्वर्णी । यत् । यात्र ।

वस्यस्य होत्यस्य दित्यः क्षुव्यः स्वत्यः प्यत्ये प्रवेषः हो सित्यः वाद्यः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व व्याप्तः व्याप्तः विष्यः विष्यः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः विषयः व

विवीत्त्रात्र्वेवात्त्र्वेत्रात्त्रात्त्रेत्र । दराया न्यात्राह्मा व्यवास्त्र व्यवास्त्र विवाद व ध्रेराने। १८४४ मा सामिता स्त्रीय स्त्री विकास के स्त्री विकास सुन र्यरम् अगुप्राञ्चेत्रपाक्षप्रित्रयमामाधित्रपायादेवायमासुपर्निसानिष्ठीत्रयमा त्रीयकन्यायि द्वीर है। देश द्वायायश्वाय स्थान त्रभाश्ची विश्वभाषाचीयाङ्गी त्रभाग्नीरात्राकु,चेतायश्चराश्चरायाः क्रुवाशाङ्क्वाशाङ्क्वाशाङ्क्वाशाङ्क्वाशाङ्क् इस्रायर विविधाराङ्गे वस्रास्य स्वराय निर्वे त्रास्ति । विदाय हिन्य बक्केना सार्हेन वा पा इसाय राय विने वा या छे न हैं विवाय वे सहें या वा की । न न रहे वे न्द्रीम्बायसयार्येन् ने। यार्रेयार्येबार्नेबार्मीयाबामब्बान् मुर्खेया बेबायाङ्गातुः कर्यायायमायकग्रायदे भ्रिम्त्री न्वीरमासु मर्गियावेमान्याया स्वामाया ऀबे'य'र्रेव'ग्रीक'रोक्षक'गित्र'य'रेत्'योर्ड'र्य'प्येब'र्बे'वेक'यवे'कार्ने'व्यक'र्के। ।गिरुक' तत्रम्भवमानम्यास्त्रित्ते। वर्ष्ट्रवायाम्बन्तुराष्ट्रायते विष्याने हिन्यते प्रमा तम.सैर.त.वेष.पेर.की.जम.विमातमातक्यमात्रातु.हीर.पे। वेष.पेर.की.की.योवष. यादेवेदेव दु प्रमम्भायमान्त्र द्वेद पाने प्रक्रम्भ सिन्ध्य प्रवेस स्वि । यास्य यदे दश्रम् अप्रयायम् वर्षे देन देन में प्राया से महित स्वित स्वापित विमान प्राया यायारायमायकन्यायदे द्वीराते। देवानी स्नियमार्गानी र्मी रेमाय द्वानमायमाने

क्ष्मां अन्यत्ति ।

क्ष्म

यश्यास्त्रस्य स्वादि प्रति द्विम् न्यास्त्रा प्रति द्विम् यस्य स्वाद्विम् स्वाद्

पश्चिमः मुद्दान्तः विकास्य मिल्वान्तः प्राप्तः स्त्रान्तः स्त्रान

पश्चित्रया श्चित्रया श्चित्रया श्चित्रया विद्या वि

५८.वर्ष्य्यत्विभ्यत्वभ्यत्विभ्यत्वस्यत्विभ्यत्वभ्यत्वभ्यत्वभ्यत्विभ्यत्वभ्यत्वस्यत्यत्यस्यत्वस्यत्वस्यत्यत्यस्यत्यत्यस्यत्यस्यत्यत्यस्यत्यस्यत्यस्यत्यत्यस्यत्यस्यत्यस्यत्यस्यत्यस्यत्यस्यत्यस्यत्यस्यत्यस्यत्यस्यत्यस्यस्यत्यस्यत्यस्यत्यस्यस्यत्यस्यस्यत्यस्यस्यस्यत्यस्यस्

चीरावर्द्धाः चक्षेत्राचार्वत् त्राम्रक्षणाचार्ष्णात् विष्णाव्यक्षण्यक्षणाव्यक्षणाव्यक्षणाव्यक

त्त्रीयत्त्रम्बर्याची क्रिंश्ची प्रत्ये महिर्म्य क्षेत्रम्य स्वाप्त्रम्य स्वाप्त्य स्वाप्त्रम्य स्वाप्त्य स्वाप्त्रम्य स्वाप्त्रम्य स्वाप्त्य स्वाप्त्य स्वाप्त्य स्वाप्त्रम्य स्वाप्त्य स्वाप्त्य स्वाप्त्य स्वाप्य

यर्ड्स्याग्री त्यस्य स्थान्त्र स्था

देख्र-क्ष्यायायार्ष्ट्वियायस्य द्वियायस्य वियायस्य द्व

प्रवित्ति श्री स्वित्ति वित्ति स्वित्ति स्विति स्विति

स्रक्षश्रुः स्ट्रिंश्च विद्यात् क्षेत्रायक्षेत्रायदे त्रवित् प्रवित् प्रवित्

पश्चित्रयास्त्रित्याप्ति ने क्रियास्त्रित्या क्रियास्त्रित्या क्रियास्त्रित्या विकास्त्रित्या क्रियास्त्रित्या क्रियास्त्रित्या क्रियास्त्रित्या क्रियास्त्रित्या क्रियास्त्रित्या क्रियास्त्रयास्त्रित्यास्त्रयास्त्र विकास्त्रयास्त्र विकास्त्र विकास्त्रयास्त्र विकास्त्र विकास्

चत्रियात्रम् त्रुर्श्वात्वेति यात्रात्र व्यव्यात्रीयायाय्यत्र प्राप्ति त्रि श्वेत्र श

शुः तहार त्रात्तां क्षेत्र विद्या स्त्रात्तां क्षेत्र ।

शुः तहार त्रात्तां क्षेत्र विद्या स्त्रात्तां क्षेत्र ।

शुः तहार त्रात्तां क्षेत्र । यहेर स्त्रा विद्या स्त्री हे स्त्र विद्या स्त्र स्त्रा त्र स्त्रा त्र स्त्र त्र स्त्र स्त्

त्रायात्रम् द्वित्वात्रम् वित्रायात्रम् त्रायात्रम् त्रायात्रम् विष्णायात्रम् विषण्यात्रम् विषण

त्र क्रिंशक्ष्यक्षेत्र क्षेत्र त्र क्षेत्र त्र क्षेत्र विष्ट त्र क्षेत्र क्षे

प्रवित्तिकृत्यः स्वित्त्यः स्वित्तः स्वित्तः स्वित्तः स्वित्तः स्वित्तः स्वित्तः स्वित्तः स्वित्तः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वतः स्वितः स्वतः स्वितः स्वतः स्वितः स्वतः स्वितः स्वतः स्वितः स्वतः स्वतः

यग'लटश'री.प्रेट्र'तर'रर्केर रू. खेश यहूरे तर प्रे. ये त. त्री राष्ट्रेर

ल्यार्ल्य-देन वर्ष्ट्रमाञ्च-त्यञ्च-त्यञ्च-त्यन्त्रम् विद्यायः क्ष्यायः विद्यायः क्ष्यायः विद्यायः क्ष्यायः विद्यायः विद

 ने पानमानु मान्या हो ने प्राप्त हो ने प्राप

मिन्नियायाय प्रमानियाय विवादी मिन्नियाय विवादी स्वादी स्वा क्षरप्रयच्चर्यस्थानुदी विष्यक्षरम्परम् वर्षेत्रेत्री विष्यनुष्ये निरण्टर द्राप्यस्थित्रस्वित्रस्वित्रस्वा सर्देर्देव्यन्तर्र्यो सुरायास्त्रेरायर्डेयः न्दर्भिष्ठिन्द्री न्द्रिशसुः सुद्दायान् वायमाय विव्यान्य स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वाप इसायर न्वायविष्यन प्रेन पर् विवायविष्ठेन प्रेन यविष्ट्वेम विष्न सुराविष्ठेन रेग्रणीयार्श्वेष्वयाधीरावर्ष्यास्त्र्वाचित्रात्त्र्वाचित्रात्त्राच्यात्रात्त्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्र यामञ्जा क्षिरायद्रायस्यामञ्जूनाळ ५ त्याराय शुरायाञ्च । देशेन दिन्दी ५ नायर वर्ग्य राम्याध्येत्र हो। वर्षण्याया मुकायविष्य प्रतिष्य स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास् यमगम्बद्धार्याये स्विर विष्ठा विष्ठ स्विर प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त स्वाप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र ग्रे क्वेंब्रबाक्षेर पर्देष दुषायायाद्रवेषाया क्षेत्र प्रसावया दे सूर दुषायवासूर पर्दे वस्याव क्रियाकर त्यर वर्षेर त्यस्य लिया वर्षा विषय स्टिप्ट श्राच्या वर्षा विषय स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त क्षरार्य्यक्रायते द्विरा मालकाया अरार्ट्यम्यार्या हिराका सुरा यायमासूरारे विमानासुरमायामाया स्राम्या स्राम्या स्राम्या स्राम्या स्राम्या स्राम्या स्राम्या स्राम्या स्राम्या ब्रिमा युरायबाने स्मामबुरबाना नेते रेते रेते के यन नायबाया मुरायमा युरा यमाने व्हार मासुरसायाने। ह्वार प्रायासीर देनामा ग्री क्वांसीर पर्वे सास्त्रीय प्रायासीय नुः सामुक्षायवे निवन् नुः सहन् यवे द्वे ना विकाने ने देवे देवे पेनि हो द्वरायाय निवा प्यः त्यक्षाचि वक्षा ह्या निकार्य के स्वार्ध के स्वार्

यदः त्यान्त्री स्विम् स्वम् स्वम्यम् स्वम् स्वम्यम् स्वम् स्वम्यम्यम्यम्यम्यम्यम्यम्यम्यम्यम् स्वम

त्रित् सुर्यात्वायम् द्वेत्यित् सुर्वेत्या भवन्यत् द्वेत्यात् स्थित् दे । स्थित्य स्थित्य

५नोः र्श्वेट्-स्राध्यक्षं न्युर्-प्यते क्रें स्ट्राट्-प्रदेश्वर्मा विद्याः स्वित् प्राध्यक्षं प्रदेश क्षेत्र क्षेत्र स्वित् प्रदेश क्षेत्र स्वतः स्वित् प्रदेश क्षेत्र स्वतः स्वतः

तालट त्त्रेय स्थान्त्र स्

सर्वियायार्थित् दे। क्रियायि स्व तिवावि स्व ति स्व तिवावि स्व ति

च्यमः ज्यमान्त्र स्वाप्त स्वा

त्र न्य त्र क्षेत्र । क्ष्र प्रकृत क्षेत्र प्रकृत क्षेत्र प्र निष्क क्षेत्र प्रकृत क्षेत्र क्षेत्र प्रकृत क्षेत्र क्षेत्र प्र क्षेत्र प्रकृत क्षेत्र क्षेत्र प्रकृत क्षेत्र क्षेत्र प्रकृत क्षेत्र क्

यत्र क्षेत्रा चुर्थक्त प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृत्र प्रकृति प्रकृ

प्रियाय क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत

नामर्याप्तरे केषाया दे । अर्थेया मन्तरे । दे हेषा सुदामा देश मिला अर्थेया मन्तरे याधेन्यवे स्वेरित्रे मे सुटायायकयायवे हेमायास्य न्वायर न्देमायानेवे सुटायान्या यरक्षे'वशुराववे'धुर। वरुवबाहेबादे'षदास्रवेवाचाद्रवाववाबादावहिबाची क्षेत्रमान्यरम् प्रायाधिकाया देवे दर्भा सर्वे यास्त्र यास्त्र देवे पर्मे महिन दर्गे विकारी स्वार्थ यसुकार्रेक महिकार्ये पिराये स्थित । पराये स्थित है। यठ यका हे का यन माना परि हे का र्'रुट'य'र्टा हिर्'यर'र्'ञ्चनास'यठवर्षायदे'हेष'य'सर्वेव'यर्षार्श्चेय'वरून्षा यवि हे ब 'तु ' सुट 'यवि 'क्केत 'ये ब 'यवि 'ख्वे र । विषेषाया यहुष 'ते ब 'ये ति 'ते । युवा वाट ' यासर्वियान। हेन मुग्नामा जनमान मिनासर्वियान। दर्दिन संग्नामा सर्वेयान। कें स्व मु अ तुव दु च य भव य ये सुरा मि कि अ य भे दि । य क्षेत्र है मि अ मु के स्मार्थ मेर्ग्र-रेटालये.कट्रटार्ड्या जैंगवाशकारी.योयशाना चर्मश्रातास्टायंख्ये. नुमानकाया मानकानकास्युद्धायानेकान्यायाध्येतान्त्रीया मान्यसायाध्येताने। ह्या य.यश्चर्यात्रपुं क्षेत्रातात्र्याचा चर्च्याचित्रक्षाचित्राचित्राच्यात्रपुं क्षेत्रा यायमाम्बद्गाया रहामी कूरारहाय विषयर प्रिया हे कि मेम मेहारू न त्र वेशत्। रूर अर्घुवाय दिस्य वेषाय देश मुर्चवाय र मुर्च परि द्वेर। वर्षम चु ५८। सम्मायन्यम् यदे ने मायायम् नात्र प्रमायन्यम् निमानि ५८ से सर्वेवासी निषया निष्ठमायासर्वेवानु सी सुरावदे द्वीरा

 यामा मेथूर्। ।

शु. चुमान मेथूर्य ।

हुमान मेथूर्य ।

शु. चुमान मेथूर्य ।

हुमान मेथूर्य ।

हुमा

महिकायनिवाकाक्षेत्रप्रस्ति विकास विकास स्थान विकास स्थान स्

यक्ष : स्व म्य विषय प्रति : स्व म्य विषय स्व म्य स्व म्य विषय स्व म्य स्य स्व म्य स्व स्व म्य स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्य स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्य

यथ्न, त्रासूच, त्री में शह्या, यहंया, व्रिष्ट, त्रासूच, व्याप्त क्षेत्र व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप

हुरा महिकायायामहिकायका न्यां हे आक्षां हुरा नहिका हुं या निवाका या वा निवाका या वा

स्वास्त्राचेत्रचेत्राचेत्राचेत्रचेत्रचेत्राचेत्रचेत्रचेत्रचेत्रचेत्रचेत्रचेत्

चित्रके । द्वायाञ्च प्रमा द्वाप्य द्य

महिषायार्श्वे पार्श्वे प्राये खुवार्षे प्रापे प्रवास वार्श्वे प्रापे हे कर्श्वे मार वनानार ने श हुरिया निवस निर्देश हुरिया हुरिय निर्देश हैं दि यः युक्देश्वे ५ द्वे ५ त्ये ह्वे ५ त्य हे द्वे ५ द् र्थेपित्ते। निवायत्वात् व्यामा अस्यमा वर्षान्त्रामा वर्षाया वरायविवात् याब्याया अळव र्राट्रास्या अस्तुव या दे त्या हे दिया यहियाया या हिरा यहियाया हिरा ही यर्बेन्यवेषाम् वर्षान्त्रमञ्जून्यमञ्जून्यमञ्जून वर्षमञ्जून विष्ठा ब्रेन्यियाब्रमन्त्रम् सुन्यराम्यायाधेब्यियाः चित्रयाधिन्ते। स्वासायर्यस्य यवि देश या दे देश या दे त्या यवि कि देश या वि या स्थित देश वि या वि या स्था यवि वि या वि य म्बर्भाहे क्षेत्रपाते क्षेत्रत्य मध्येष्व प्रविष्ट्विम दुवाय प्रविष्टि । वित्रप्रमण्डव की र्ब्वेन यास्य क्वेन प्राप्ता निष्ण स्वापित क्वेन प्राप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता र्टाय्वृहायराय्युरायावेहिन्यान्हा। यववार्ग्यायाः क्रिकाश्चिषायहरावेहाय्या यात्राञ्चर महत्राते हुन्यर द्यापणेत्रायवे हुर। हुन्यर उत्र हु हुन्य स्थित यःसूर्रे, चेंबात्रुःजबायर्चाच्चराचित्राचित्राचित्राचित्राच्चा त्रुं प्रथम् साम् स्ति प्रमा देवी हुँ त् सम्प्रिया मुर्गा सुर प्रमा स्त्री स्त्र प्रमा स्त्री स्त्र प्रमा स्त्र शुःगोर्नेग्रायदेः चुःवःश्वरः वः दह्न वादेः विदःय र दरः देशःयः श्वेरः वः इस्रायः लयात्रित्री रा रथयार्श्वीर संस्थारे हो। यर यर मी र्ये अर्थे हे स्र र स्वया केया  र्युः श्चिम्। र्युः श्चिम्।

मिर्देशतास्त्रीयात्रियात्रियात्रियात्र्यात्र्यात्रियात्रियात्रियात्रियात्रियात्रियात्रियात्रियात्रियात्रियात्र क्याप्ता प्रमुत्यवे भ्रीत्रावर्षे भाक्षे भाक्षेत्राचित्र भ्रीता प्रमु नर्नेन यन्ता अग्ना र्हुन यमित्रा र्येन प्रेर दिन ने ने ने स्वा केर ही निरं स्निम्स न्या देः व्या देः व्यादा के न्यादा के न्य यम् ने अमिन्य में । श्विं अम् मिन्य प्राप्त मिन्य प्राप्त मिन्य प्राप्त मिन्य प्राप्त प्र प्र यर वित्रें के वित्रें देश के वित्रें के वित् स्रवे प्रच्यम देश द्वा प्रवे के द्वा प्रवे वा स्रवा प्रवा विद्वा विद्व विद्वा विद्व विद्वा विद्व विद्वा विद्या विद्य विद्या विद् यांत्रे प्रतृत्यायकम् सायि हेत्र पुर्यं के प्रति हिमा सम्मायि के प्र रुष्वेत्रपरिष्ट्वेरप्रमा निवेश्विरास्त्रविष्ट्वेषप्रविष्ट्वेत्रप्रविष्ट्वरप्रमायिः ब्रेरपर्डेबप्यदेळे १५ 'पेबप्यदेख्या क्षेप्रा क्षेप्रामिक्षण्यात्रवाम्यर्भेतु ने भें र्श्विपार्वे न र्श्वेन रक्षण स्रायक्षण प्रति । त्रिष्ट रिश्वेन प्राप्ते रिश्वेन प्राप्ते । त्रिष्ट रिश्वेन प्राप्ते । यदे द्वेर दर्ग अगु पर्ने क्वेंट मेश्रावन दुन दर्ग दने क्वेंट अश तुन दुन दुन चु'व'भेब'यवे'ध्रेम र्झें'सम्'ग्विष'य'स्चु'वन्द'ग्रे'हिद'यम'भेद'दे। र्झे'ववे'स्चु' र्नेब पन् नेब के पा अगु परि श्च रेव श्च ग अरि प्र हुट पा पळ ग श परि रेव पु प्र गो वर्ष्यम्भाषाम्याः वर्षेरायमास्याः वर्षः न्यायदिन्त्रानुन्योः र्स्तित्याया विष्यापदिन्यो प्यन्त्रा सुवाषा स्रामुन्य राष्ट्रीन्य साने स्मून वहें ५ यदे खे र

मृष्ठेशयान्त्विरावशास्त्रियावर्ष्ट्रशास्त्र्वात्राधिरान्ते। त्यावारावान्त्वान्त्राह्नितावर्ष्ट्र यः हेन्की मार बना मार मेश हेर्या सुर य मार द्रमाय हेर् नामर मेश हेर्या झ्रायनर या इस सार सुर्थेर यदे हिया रह ये केर चकु'वस'है'-वृदे'म्रम्स'ळॅट'चदे'न्ने'वनुन्सळॅन'हैन'न्ट'स्न य'य'न् हुट'च'र्केन यर मु न प्येत प्रेत मुक्ता महिकाय प्येत दे। मुक् र्सेट न के रामकुत ग्री ह्रेट तु मिट वनाविर्तत्तर्भ्य निर्मात्राचारा हिर्तित्त्र निर्मेष्ट्रिय निर्मेष्ट्र निरमेष्ट्र न म्चेरा नमुस्रायार्थेन्ते। इनास्रवे सुरायान्दिरायाने पित्राया नारा बना मिन्यरा क्रवासाधिव परि क्रिन्दि परि तर्मेयायर स्तिनिया हिर्मिनेषानित द्वापर बुषाया वरुवषा यन्तर्भाष्ट्रम्यवे सुरायने न्यायम् चु नवे केन् ध्वेम् यवे स्वेम विषय के याया मैशर्चुर प्रायाम्बुर्यायशः ह्ये रापास्य प्रवित प्राप्त प्रायाने मिर्वे पाया वित प्रायाने प्रा ग्रीभाग्चायाष्ट्रन्यमञ्जामित्रयम्य निष्यायान्य स्वित्यम्य स्वाधिक स्वा सर्गणवेरमायक्षित्यराचेत्ते। सर्दा तेषिष्ययमाण्येषाच्चित्रं । । तत्ति वायरारी दिरावर्षेणकायायरारी । गार्केवावादरावर्षेद्रायादरायेवेवावरादुवि। क्रियम्भायाक्षास्य रावक्षेत्रायाक्ष्री विष्टे रायक्ष्री । विष्टे रायक्षा सम्बन् पुर्वे बेस नस्तर्भे दें न सर्दे रे ने निक्ष हो र पि है र ने र ने प्य हुन ञ्चनायाने पुराव अर्वेषाने पुषायाने महिषाविनाययाने विष्ट्वीर मिवाव स्थाप स्थयाया क्षेत्र ह्वी व के लियाय पेरे देव हि स्ट्रिस प्येव ले वा वन्तर पुर्णेत दी स्वायाय उपया यवे हे सायाय न मा द्वीर पुरे ने वित्त प्रकार में साम कि न में मिल प्रकार में में मा कि प्रकार में मा क्रं स्वास्त्रियरपरादेशस्वायायर्गेष्रात्र्वायायर्गेष्रात्रीत्रात्रीत्रात्रीत्रा

युंद्धिन।

चक्षित्राच्यास्त्राचा क्ष्री प्रचेत्राच्या स्त्राच्या स्त्राच्या

ब्रिंट्स्ट्र्ट्र्यं क्रियं क्रिंट्यं क्रिंट्र्यं क्रिंट्यं क्रिंट्र्यं क्रिं क्रिंट्र्यं क्रिंट्र्यं क्रिंट्र्यं क्रिंट्र्यं क्रिंट्र्यं

प्रतः क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र प्रतः क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र विद्या क्षेत्र प्रतः क्षेत्र क्

ॡॱॾॣऀ॔॔॔ॱॱॿॖऀ॔॔ॱॱॸॖॺज़ॱॾॗऀ॔॔॔ॱॡॱॸ॔ॸॱॖॱऄक़ॱय़ॱऄ॔॔॔॔॔॔॔॔॔॔॔॔ॵढ़ॺॱॻॖॱॻॱऄक़ॱय़ऄॱॺॗऀॸऻ ॻऻऄॺॱय़ॱॸॺॱॸ॔ॸॱॸॺॱऄक़ॱय़ॱय़ॾॺॱय़ॱय़ज़॒ॸॱॻऄॱॻॿॎ॓ॱय़ॿॸॱॸॱऄऀ॔ॸॱॸ॓

पर्वे.च्रिया पर्वेच्ययत्त्र स्वर्याच्या स्वर्याच्या स्वर्याच्या प्रवेट्ट पर्वे । च्या प्रवेट प्र

 यसन्तिष्ठ प्रात्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्व

त्रवादान् विकानिक्षात्र न्या स्वाद्य न्या क्ष्या विकानिक्षात्र विकानिक्षात्र विकानिक्षात्र विकानिक्षात्र विकानिक्षात्र विकानिक्षात्र विकानिक्षात्र विकानिक्षात्र विकानिक्षा विक

यविष्याधित्राः श्चित्वो मविष्यत्र पुर्णितः ते। सुत्य श्चितः द्वा श्चितः स्वा याधिकाया देण्यत् दर्मेषायदे द्वतः दुः चुकाका क्षुत्राचा सूत्राका द्वकाया क्रमायदे द्वतः यद्रा द्रम्यक्षमञ्चिर्यक्षयम् द्वायद्रम्य देख्यहेम् म्यास्य इस्रायर द्यायर द्यूर प्रदेश्के ८ ५८। वर्ष्ट्र सार्चे द्वा प्रीयर द्वा प्रदेश हो। युवा यारायाश्चराया हेबायारायीयाश्चराया याबयायाराष्ट्राश्चराया पुराबयाश्ची छें। म्रोटाना निवानारायाम्रोटाना क्याहास्त्रम्म्रोटाना म्रोटानवे मुनाहास्त्रम्भूनाया इसस्यस्य स्वेत्रा द्राये स्वेत्रा द्राये स्वेत्र हो। के स्व विष्य प्रकृत स्व विषय स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स लिब्रयदेख्विम् क्रियामकुन्द्रिन्ते। सम्बुन्द्रेश्वामान्द्रन्ते। स्वाम् लय.कर.रट.र्जयता चर्यमाता.रट.च्युय.री.योयमाता तीमात्रामाता.री.योयमा यः विषयः वर्षात्रास्त्राचा क्रियास्त्रीत्रास्त्रास्त्राचा वरायास्त्रीत्राचा र्वो वर्त्रवाचार्रार्वेरायम्बुषायासाधित्य। ब्रोटायार्येर्द्राबेरव्यूषायासाधितः याम्बर्यात्राचेन्यत्राचेन्यः विष्यायाचिन्तः केषान्त्राः विष्यान्त्राः विष्यान्त्राः विष्यान्त्राः विष्यान्त्र यदे ख्रेरा क्रेंशन्त्री यहें वर्षे व भविषाता द्याः श्रुट्यामा श्रीटाच सक्ष्यामविषाता वा श्रीटा योषा तीया व्याययः ज्ञानम्या वर्षस्य स्टायत्वे न् ज्ञानस्य वर्षायस्य देशयक्षेत्रः त्रतृत्विक्षाक्षेत्रया श्चरापुवाद्याक्षायासाधिकाया श्वस्रक्षाया क्रमण्येष प्रतुः श्चिम् वास्रमप्राप्ति दे। श्चिम्य प्रमान्य साम्य साम्य साम्य साम्य साम्य साम्य साम्य साम्य साम वेषायवृहायायम। निवायये मवसासु स्रोह्मा प्रमाय प्रमाय निवास ग्रीस नमवान्द्रमे वर्षे वर्षे निवस्य स्युत्त्र विषया वर्षे वरत् वर्षे वर ची.त्य.स्या चार्र्यकाताः स्त्रीचित्रात्वचातः त्याः स्त्रात्तचेतः स्त्रा चार्र्यस्य प्राप्तः स्त्रा चीत्रात्तः स्त्रा चीत्रात्तः स्त्रा चीत्रात्तः स्त्रा चीत्रात्तः स्त्रा चीत्रात्तः स्त्रा चीत्रा च

हुर प्रकूश मुनेर प्रदेश प्रिक्ष प्रविद्य मुने स्वाप्त स्वाप्त

त्त्रायमान्नम्भभागुं प्रति प्रति स्त्री प्रति स्त्री प्रति स्त्री स्त्री

निर्ध्याप्तर्थान्त्राचि

बः अर्रे यमान्वे पत्तु वाक्यी पत्तु वाक्यी पत्ति विकास सम्मान्य प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र प्राप्त प्र प्र प्राप्त प्र प्र प षसर्दिन'देशः खुंयः विदायेन'द्रामानुनायमा से निषा सेनामा यसूदा दिन। यसून देन लट विरायर की मिले प्रविर खेरी दें बर्टा विरायर की के बार विराधित खेरी रे वि बाकी र्ने बार्य प्रतिकारी का स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र चर्दुन'य'न्चित्रम'र्स्नेन्य'ग्री'युन्यम'नित्रेय'सुंप्येन्'रेट्न। नित्रम'नायाग्राटा। युत्र में क्रिंश वित्र प्रदेव प्रवित क्रिंश वित्र प्रदान में मुन्न प्रवित्र क्रिंश वित्र अर्थे हैं प्रवास वि.यद्र.इंट.ययात्रह्या.तद्र.हिर.हो ई्य.तयात्रेयदेयात्रात्ययाम्याया ग्वानिमार्गीदुदिग्रुदिग्रुद्विप्यासर्विप्यसाङ्ग्रीमायान्। क्षात्रसमार्गीमायायायहसा युवेश्चिर्न् केंबरणु विरावेन्त्रें राम्नें राम्या केंबर हे बिबादर्ग सहेंद्र यथा केंबरणु त्वर्यं अहिर प्रत्यावसावसाम् अहिर प्रसायाकसायि विकारि हिर प्रते कुं सक्त रेपेन ने। विक्र र्थे रे ब रेपे के न्राय दाय प्राय के न्या प्राय के न्या विकास क्यार्ल्य हो। विविद्यक्षेत्र म्रा श्री मान्य त्वी मृत्य विषय विषय विषय र्वे देव दे के वा हेट रे विषय प्रति । विष् में विषय प्रति विषय विषय निर्मा भ्रीतास्थायन्त्रम् म्रास्थास्थास्य स्थान्य कुवायामवारु वर्गेरायाम्मभार्येरायायविष्ठात्। सर्वेरावामान्यस्याप्तेराव्या देःलर्वावश्वरात्त्रियाचे यदेव तात्वाद्यवाषाय्यव्यवस्य त्याद्रा विस्वरादेवास्वरे यदेव यायानुक्रीम्बाब्यायववसायान्ता स्नान्डिमास्यादेशसमुद्धीसासुरानुस्या पर्रा परक्रियेषाण्चिराष्ट्रायमाकुषापर्रा इसार्चेषायमाकुषा स्थान्तः स्थानः स्यानः स्थानः स्थान

पाक्षभायाद्विन्यम् क्रीक्षभायिक्षभायोव्दर्भ क्षित्र प्राप्त प

महिसायार्स्टिन यास्त्रिमायर्से साम्यास्त्र यास्त्रिमायर्से मार्थिमायर्से मार्थिमायर्से साम्यास्त्र स्वा

र्रेन्यविष्यराद्यायवे केन्तुः प्येषा वर्ष्यानेष्ठा कु। निवरानु द्वाया हेन्यवे कु। र्टेची र्र्हेचा र्हेर्यां बेर्ह्या र्हेर्यायस्य अतेर्देबा बेर्ह्हेर्यस्य अतेर्देबा र्रेंद्रियासहराष्ट्रीयावदेरळ्याइसस्यासुर्येद्रायदेख्या दरायेर्येद्रो बरायी.क्री मुदि क्या महिमा स्वापित प्रति मुद्रा निर्माणित हो। वर्ने निक्रमा मिन्समा मस्मार्यने प्रमायते सुरा महिमारा प्रेरी महिरा विद्या स्रेर मे कुर्म न्हेंबार्येदेनेप्वतिबादिन्यार्थेवायराङ्क्ष्वायान्ता हित्यन्ता द्वरायान्ता यक्तिन्द्रा यमायामनुक्यासी हुक्यार्ये विमायनुद्राचायमान् नर्देमार्येये दे विक कि न वार्येक पर क्षूय पर दिया कि ता कि ता विक कि वार्य कि वार कि वार्य त्यरातासविषायां भी ही वाय स्थारा सी स्त्रीत्र त्रिया हो या वि स्त्रीत्र की या वि र्थिन ने। नम्प्रिय केन खिराईन प्रदेश कुष्येव। महिष्य प्रदेश क्षेत्र प्रदेश त्तु के लाया यसियात के सिट हिर हूर ततु के लाया चर्च तथी चि च तथा हिर र्इट्रिप्यते कुं प्येव प्यंते द्विम। महिषाया प्येट्रिन्। मलव मीषा क्री सम्बन्धाय स्थ्री सामि क्रिंगामी ध्रिर रु सेस्रममार्वियाविट प्येवित रु प्यहेत प्रये नेमाया विमामी ह्रेट त्रमायहेंगा यदे हिन देन वहाय प्रति हैं प्राप्त अस्त वर्ष प्राप्त वित्र प्रिक्ष यर प्रवित्याद्र प्रविष्या अष्ट्वित है। दे इसमाई द्रायंत्र प्रविष्य प्रायित यायान्वित्यायायीवायविष्ट्विम। न्येमावा विष्यविष्टिनाया यत्नेम ही।

नमुम्रायके प्रति प्रति प्रति । विचार्मे राष्ट्रे प्रति प्रति । विचार्मे राष्ट्रे प्रति प्रति । विचार्मे राष्ट्रे प्रति प्रति प्रति प्रति । विचार्मे राष्ट्रे प्रति प्रति प्रति प्रति । विचार्मे राष्ट्रे प्रति प्रति प्रति । विचार्मे राष्ट्रे प्रति प्रति प्रति । विचार्मे राष्ट्रे प्रति प्रति । विचार्मे राष्ट्रे प्रति प्रति । विचार्मे राष्ट्रे प्रति । विचार्मे प्रति ।

भ्राम्त्रभाष्ट्रिः स्त्रिं प्राप्ताक्ष्म् प्राप्ताक्ष्म् प्राप्ताक्ष्म् प्राप्ताक्ष्म् प्राप्ताक्ष्म प्राप्ताक्षम प्राप्ताक्म प्राप्ताक्षम प्राप्ताक्षम प्राप्ताक्म प्राप्ताक्षम प्राप्ताक्षम

पति पार्के निया निर्देश मान्य स्थापित निर्देश स्थापित निर्देश स्थापित निर्देश मान्य स्थापित निर्देश स्थापित निर्देश स्थापित निर्देश स्थापित स्थाप

गुः अर्दे ब सुमा न मुर्चे वे सर्वे न सुमा न ने व तु ब प्रवे रेवि सर्वे सुमा न सवा यदः सर्वे सुमा नमयः यदे नमयः यदे सर्वे सुमा नमे वि वि नम्बन में सर्वे मुमा है हैं देंदर यहें न प्रदेश महें न मुमा मन मान मही दिए हैं न प्रदेश महें न स्था मही स्था मही स्था मही स्था इसरासुर्येद्रपदिर्धेन। महिरापार्येद्रदे। द्रार्धेन मेवार्धे मेवामहिरार्शे सहिर ૡૢ૱ઌ૽ૢ૽ૺ૱૱ૢ૾ૼૺૼૼૼૼૼૼ૱૱ૢ૽ૺૡ૱૱ૢ૽ૺઌ૱ૡૢ૱૱ૢ૽ૺઌ૱ૡૢ૱૽૽ૡ૽૽૱૽૽ૼૹ૽૽૱૱૱ वि'यर द्वेता नेशवि'अ'क्शव'त्वे'यर्तुव'गवि'र्वेदे'अर्देव'सुअ'क्वेशवर द्वेता देशस्त्रित्रमात्रुर्चेत्यराधित्रम्त्रम्ययायाः हैरङ्गमायवि द्रेमे वर्षुत्रमात्रीयः यमानियम् द्वीत्। देशसानिष्म नामायायात्रे यमाध्यस्त प्रमु क्रियामायायास्य स्त्री नवे प्रचे प्र यदेशम्बर्यायदेर्द्रमे द्वित्रम्भावत्यम् । देशद्रमे त्र्रम् मिवे स्वामित्र देश क्रिंद्रायाञ्चेद्रायम्याञ्चेत्र्रायवे द्रवो र्ज्जेद्राविवायायान्त्र। देशदवो यद्वा श्रेष्यावमः यार्चे कृषानिहित्वयाञ्चानाम्युयाची नरात् प्युयाने देवे स्रोहित सुयाची यात्र होता नेशस्त्रित्र सेन्य सेन्य प्रियामहन ने। नेशसे सेन्य प्रियास साम साम यर'र्'सुयाववारेवे'सर्देव'सुसाम्चीवावे'यर'म्चेर्। देवासावे'वापर'र्हेर्'या'ह्वेर्' देवे सर्दे अंश की शांबे पर क्षेत्र पा पी व पाये क्षेत्र।

महिसयम्प्रस्मित्वे चेत्र्यित्ते । इस्माइसस्मित्वे सम्मित्रम्मित्वे मित्रस्मित्वे स्मित्रस्मित्वे स्मित्यस्मित्वे स्मित्रस्मित्वे स्मित्रस्मित्वे स्मित्रस्मित्वे स्मित्यस्मित्वे स्मित्यस्मित

र्चेशनार स्तर मुश्र हे वि प्यर मुद्दायाधिन यदि मुद्दा नाद स्तर मुख्याधिन दी। नावि । मरायाचु परि द्वार पु चुराषा केंग्रा समायर महत्र या यमेनमाया भेता में या यः अर्देव सुअ पकु र र्हेव रु र्सेट परे पानु पर्न । सुवाहे सूर ने र पवे र्वट र् निमान। क्विर्र्भासह्याम्बर्भाक्ती क्विष्ठा क्विर्मा क्विरम्भावता क्विरम्यम्भावता क्विरम्भावता क्विरम्भावता क्विरम्भावता क्विरम्भावता क्वि सामुवाक्षे हैं राववादितरातु निषामा हिंवाकीराविस्त्रम् सामिता देश नवीःवर्वान्त्र्यवेःर्देवःर् वार्श्वयानावरेन्ययानार्मः। नवीःवर्ववःवर् विवेश्वयः। ग्रे पुष्पानुष्याम् अर्थाणिक परि स्विमा नर्देश मिलि रिष्टा निर्देश मिलि स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित **ब्रिः अः निर्देश न्यात्रेश व्यव्यक्षार्यात्र अः स्वार्धिनः निर्देशः निर्द** हे दुवाद्या येव यर्थेकाक्षे येव यास दिन्द रायेव या विवाद राद्व वार्षे द्राये स्थित प्राप्त स्थाप त्रुं चुरा ह्री वर्षे अरुपार्ये अर्के अर्गी स्थ्या के राजा प्याप्य प्राप्य के अर्थ के राजी स्थाप के राजी स्थाप क्यं विट मिर्पे द्वार है। हेट मिर्पे विषय है य दि से विषय है य दि से विषय है य विटायेबायाम्बारमास्यास्य प्रत्यू रायदे व्यवमानु दाया है। युमागु मिक्रा दिया मुः स्वाप्तिर मी प्रस्वायाय स्ति प्याप्ता है हित्य प्रमान स्वीता स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप इ.टे.टे.ह्यू सत्तर्भात्य के त्याची यहिषात्र विषयिष्य के विषयिष्य के विषयि क र्क्टेन पार्क्ट भार्सु निषा सुरविष्ठ रक्षस्राया क्षेरियो पित्र ग्री मित्र सार्थ रिष्ठ मा अस्माया पित्र प यानुवाक्षे र्केशक्षेत्रम्भे र्क्क्षाक्षेत्रम्भेत्राक्षेत्रम्भात्रम् वेर्क्क्ष्यम् श्रेषेष्यर्रा न्वेष्ट्वाम् रिवेष्ट्वाम् रिवेष्ट्वाम् रिवेष्ट्रा रि

क्ष्मःश्रमः क्ष्मिमः संभ्वः त्रः विमाहेमः संभा क्षेत्रः स्त्रः स

पाढ़ खंदी त्रा क्षेत्र त्र त्र क्षेत्र क्षेत्र त्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र त्र क्षेत्र त्र क्षेत्र त्र क्षेत्र त्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र त्र क्षेत्र क्षेत्

गमुम्रायाः सुराधिरार्केत्यावे छेता वित्राचीता सुराया स्टार्मा देश्वेता विकास के स्टार्मा के स्टार्मा

त्तुः क्रें न्यात्वायात् द्वित्यात् वित्यात् वि

तृ ख्वै र त्य कें प्रायो केंद्र प्राया प्याप्य स्था केंद्र प्राया केंद्र स्था केंद्र प्राया केंद्र स्था केंद्र प्राया केंद्र प्राया केंद्र स्था केंद्र प्राया केंद्र प्रा

मुन्या क्रममान्त्रियायर्क्रमायदेष्यम्यम्यमायम् भेनान्त्रेन मिन्यस्यम्यम् येन् परि पर्दे प्रज्ञापन विकासमा निकासमा कर मी मिल के मानस्य साथ मी मिल पर्स्र पर पु प धिर है। अर्दे र रि र्शे र वर परे र्स्स प्रशासकेंग यार प रू पु र चयुःसियोःचेत्र्। भाषेभाषः स्वेषःतात्त्र्यः। भाष्ट्यः सः सार्ट्यः तात्त्रत्त्वेषः सूर्येषायायारी । र्टेब.चन्दरं.क्र्यंट्र.ट्री सिवा.चि.चतु.स्था.चच्या.चन्द्राता चर्द्रवा.जवा.वट.चट.ट्र. यक्ष्यात्रयाम्बर्यायक्षेत्रया विटायये क्ष्यायाया क्ष्ये हास्याय्या स्थापिटा रुप्तिर प्रतेप्ति र्वेष्ट स्पानि स्वा अर्के रहेन मुस्यान स्वापित प्रते स्वर ८८ र्रे स्रिट्दी युवानाट वासुना द्वाता हेन निर्मेश द्वाता स्रुवाह स्रिट्दी द्वा यम्बर्स्सर्येन्यते स्वेर नर्यो प्रिन्दे न्या न्या क्रिस्स के नामस्स नर्ये स्वर् परि पुरास प्रेमा सक्त समुद्र पर सम्बद्ध मात्र सम्बद्ध पर प्राप्त प्रयाप प्रयाप प्रयाप प्रयाप प्रयाप प्रयाप प्र क्रुंभभत्तर उर्देयतात्र्रीर्टा उचयमात्राक्षभातात्रीयाक्ष्माचीत्राक्ष्मात्रात्रीरा योप्रेमा यर्थेर्'रे। मुकेर'तु'र्रा में बाबिका किनाय र्रा अवाकी बाह्य मार्थिक या विवानीयानु पाये प्रति भी वासुस्राया स्पिति हो। स्वायवा स्थाय प्रति वास्य प्रति । सिवात्वामा हिन्दान्यमायहिन्दार्यास्वातान्यस्य स्वत्यात्रम्य स्वत्रिमा मुष्टेशत्म मुद्रुम त्यम निष्ट मिट पु पु प्रते मान स्थान स्था

र्ये पर्युर विश्वस्था पर्यु प्रवर्ष निष्ठ देव विश्वस्थित है विश्वस्थित है विश्वस्थित है विश्वस्थित है विश्वस्थ ૹૢ૾ૺઽૢ૽૱ઌઌૹૠૢ૽ૼૹઌૺૹૺૹૡૡઌઌઌૢ૱ૺઌઌ૱ૺૺ૽ૹ૾૽૱ઌૢઌ૽ૹ૽૽ૺ૱ૡૺઌ૾૽ૹ૽૽ઌ૽૽ઌ૱ૺઌ याना द्रूर किंदायपुरावेष अंद्रिया यार प्रीय प्राप्त द्वीर । वार्षेषाता वार्षेषाता वार्षे ळॅंब'के'हे'हे'सु'तु'तुग्राय'णेंद'दे। बद'यर'ग्री'हेट'वहेंब'श्ले'श्लेर'देंबर'रें' यार्सेन्यायुन्यायराष्ट्रित्याये स्वर्याये स्वर्या विषयाये दिन से सिम् रु'विराविर विराविर विरावि । काल्यायर द्वि । हिरारु । हिरारु । हिरारु । विराविर विराविर विराविर विराविर विराविर चले.त्र.र्मा.म् । इंस.५.भ्री.चतु.स्रम्भ.२४ . च्ये. क्ये. क्ये. चले ४.८ . त्र्य. त्र्य. त्र्य. क्किंत्रन्त्राणुरार्ट्य । त्रुषासुर्वेद्दरक्ष्मषाद्दा वे सूराद्दा वाहे सुनाद्वा स्वार्देब द्रा हुवाद्रा स्वावी इसायर दे । ह्रा सादे विषय विषय विषय विषय वि.र.विर.लीच.मे. १५४.१८ विजायर उर्वेट. यदाला तथी वर्षे विश्वर हा विश्वर उर् श्रेम्यायांतरि भीषायबुर यमम् । हिर्मा राष्ट्रायम् क्षेषाश्चारम् याषायर्षायते । र्गीयाविर्धर्भाराधिके परार्द्धेन पर्वा विमानु पर्देश सम्मान विदानिसानु परि क्र्यामासीयकर्तात्रमासीयासी । दे हूँ मात्रा हो दायावनाय र होती । विमानासुरमा यःक्षरः व्रेष्टर पुष्ठा प्राचित्र प्रवेष्ट्री र

मर्करावराख्याक्षेत्रपरा गायाक्षायुक्षिरांत्री विषाययुरायाक्ष्रात्री सरायषा वहवाराज्यमञ्जूरायात्रार्श्वेरासी । दे स्ट्रिम व व त्यायते सद्वे प्रायाय विवाय येवारा

## यर'यम्द'बेब'र्ने। ।

क्रियाके, यम त्विम क्रियामीर वाचित्र, त्रीय दिया में या वित्रास्त्र वित्र वाचित्र वाचित्र वाचित्र वाचित्र वाचित युरःळेंग्यर्देरःवह्याप्यभार्यात्गुःभाषापत्गांत्रेत्रज्ञान्याम्युयापहेयायस्य चिंद्रकृत। विर्मुत्तिः समायम्यायायम्यायाः देवायमः स्मित्रः सूर्यमार प्रिमान सम्बन्धियः क्रूमाग्री प्रमेमामेषे मुक्ताग्री है प्राम्मायर दिय प्रमाय प्रमाय दिया है या । द्रमा से र्यत्वर्श्चेर् दे। विस्ववाशालीयाक्नी अष्ट्र्यु ग्रुंस् विष्ट येट येशास्त्र वर्गे वार्षु र प्रास्तु स रु'ब्रम्भ'हे'र्विर्'विस्रस'र्ययारु'व्वेस'या । ब्रिं'र्वेस'कुय'सळंस्टें'सेर'यर्गेर्'स्स वकर हिर हिरायत है दिर वर्षे भारते वर्षे वार्ष मुं सेर क्वेंनिश्वरायवुर क्वें कुं पर्वायनि से व्यक्ति में कि प्रत्या प्राप्त में कि प्रत्या प्राप्त में कि प्र त्रुव। । स्ररः पर ५ मः पर्वे अष्ठे पर प्रवि र प्रवि व पर्तु य पर स्रु पाय स्रु पाय के स्रु पा पर एतुः हूँबर्यत्यर हूँब्रिव्यित्र्या । १८५०१य १८६व लेश क्षेत्र मुग्या कुण सळव सहैंब्र तर ह्रीत्यार्टायह क्रेवर्ने वर्षे युवायाया सेन्या साम्यास्ययाया । श्रिःसा चिष्ठेषाण्ची चासुर रच येवाषाय निर्देषे या यहे ब ब ब सर्वे धीर गाय य मेवाय युर रेवाषा क्षेत्र, क्षेत्र, त्यक्षेत्र, त्यद्गे । इत्त्र क्ष्य, त्यस्य, व्यस्य, स्त्र त्यस्य, स्त्र त्यस्य, स्त्र त्यस्य यत्रह्रम्यर रयाम्बर्गास्य द्वीत् सर्वेषा वी से देश सुरा विवन दर्श सहसा विषार्याय्ट्रेन्द्रियाय्येषात्रीया । याद्रीतार्यायाय्ये प्रविष्यायाय्येयायायया । यद्री तस्रिव,त्यम्भःकिंव,शु.तक्ट्र-त्रःक्ष्ट्र-कींच-क्रम ।

यस्रिव,त्यम्भःकिंव,शु.तक्ट्र-त्रःक्ष्ट्र-कींच-क्रम ।

यस्रिव,त्यम्भःविंद्र-विःत्रश्चुत्र-क्रम ।

यस्रिव,त्यम्भःविंद्र-विःत्रश्चुत्र-क्रम ।

यस्रिव,त्यम्भःविंद्र-विःत्रश्चुत्र-क्रम ।

यस्रिव,त्यम्भःविंद्र-विःत्रश्चुत्र-क्रम ।

यस्रिव,त्यम्भःविंद्र-विःत्रश्चुत्र-क्रमःक्ष्यःविंद्र-क्ष्यःक्ष्यःविंद्र-क्ष्यःक्ष्यःविंद्र-क्ष्यःक्ष्यःविंद्र-क्ष्यःक्षयःविंद्र-क्ष्यःविंद्र-क्षयःविंद्र-क्षयःविंद्र-क्षयःविंद्र-क्ष्यःविंद्र-क्षयःविंद्यवेद्र-क्षयःविंद्

द्रभायत्वात्वात्वायः प्राव्यात्वायः विष्णायः स्वर्णात्वात्वात्वायः विषण्यः स्वर्णात्वात्वायः विषण्यः स्वर्णात्वात्वायः विषण्यः स्वर्णात्वात्वायः स्वर्णात्वायः स्वर्णात्वयः स्वर्णात्वायः स

## २०१ विष्यः स्ट्रिंग्यः प्रस्ति । विष्यः स्टर्णः स्ट्रिंग्यः प्रस्ति । विष्यः स्टर्णः स्टर्णः । विष्यः स्टर्णः स्टर्णः । विष्यः । विष्यः स्टर्णः । विष्यः । विष्यः । विष्यः । विषयः । विष्यः । विषयः । विषयः । विषयः । विषयः । विषयः । विषयः । विष्यः । विषयः । वि

र्ह्नेबर्ष्यस्थायविवर्ष्यव्यायार्थिवेषात्रेम्। देश्वायवर्षम्या गर्भिर्ह्नेदर मि'निविदे स्नित्रभार्याम् र्रे ह्विट के ह्या पार्ट्या प्रवृद्ध प्रति के न प्रत्य के न प्रति के न स्व नगुनःञ्चन। नधिनःश्रेषागा नद्यमःङ्गेनानुःद्वानुःद्वानुःद्वानुःद्वान्तःस्रेन्यः त्वान्त्रवान्त्रिकाः सुमासुरसाय। तुसमिते भ्रायमासु तु इराष्ट्री सावसाये सार्वे तुसमे सार्वे केतातु नुषाळेन्यायान्नुवा नुधेना नुध्या नुध्याद्युरानुग नुध्यार्थाः चवि दर्भे मिक्रिया मुन्य चित्र चित्र प्राप्त चित्र प्राप्त मिक्र चित्र च देवावनान्त्रम् अघदासायाञ्चापानस्यायादेशसान्द्रमानीसासार्यप्रयापास्परसा तर्रा रचिर्वषुषु स्रवस्स्रार्यर विर्मेष्य स्राप्तव कर्षे स्राप्तव कर्षे स्राप्तव कर्षे नुनुषाळेषाषायानगुषा निधना निधना हेष्त्राने प्रविक्रा क्षेत्राचे प्रविक्रा केषाया प्रविद्वा <u>तृ.घ.क</u>्ट.चर्यंश्वाचर्यंशाचर्यंटराता.ट्रा अ.८ह्चा.झट.चतु.सेचरा.यं.ट्रापट्यं. यदे क्रिं र पुरान्य वित्र यदे में बार्य वित्र यदे के प्रायन वित्र के प्रायन वित्र वि गुः त्रायरुवः वहिषायर विशुरायवे द्विरा सम्मुयात्रा ह्रण्या देया द्या ळॅन्यायायुनानु क्षेप्यवे प्रमुक् क्षेत्रणी ज्ञायानिक्याय प्रमा स्पर्मानु क्षेप्य प्रमान न्गुमः त्वः प्रते प्रांते प्रति त्वः प्रत्यः विषाः त्वः प्रति । त्वः । त्वः प्रति । त्वः प्र स्पर्माम्बर्भातु स्वेष्वते प्रचित् स्वेष्ट्र स्वास्वेषा प्रमानिक प र्थे भेता दुवानु खे परिनद्य सञ्चाविष्ठ पराने क्षेत्र ज्ञास परिवा स्र खे परिनद्य स विराद् देराये दरावरुषायवे द्रषाया वासुसार् स्वे पवे द्वर त्रास्व स्वास्व सावासुसार्ची र्माणुमाष्ट्रयायदेख्या

पि.श्रुच र्या. क्रुचेश क्रि. मा.से भराष्ट्रा त्याया प्रत्ये राय मा.से मा.से मा. रुषार्टर्गुम्रुरुषागुर्धायम्यार्थिनेषात्रेम् देखीयवर्धम्यवा संरुषा ८८.मिट.र्भारवीकातमार्थीय.र्भारटार्चित्रर्भारवीकात्र.चीर्ध्याताचाराचीवी हैंबर्त्राणीवावाकरायवायविर्वाणीवाद्यीयायविर्द्धराते। देवायायायया हेंबर য়ৢॸॱवेॱळर'वववर्ष्णयइ'चवे'ऄॗर'इठुर'रु'ववर'र्ने विषाम्सुर्षायवे'ऄॗर। दे क्षरकेवायायावित्रारी रिधेराञ्चारायकेषाठवा र्गुवर्त्यायेवायराधया र्ग्व त्त्रायित्रायित्रायित्रिम् हम्मायमा वर्देन्त्रा म्हायित्रायम् म्हाया वर्रेर्यवे धुरा वर्रेर् के कुषाते। कं वर्वे रुषा धेष यदे धुरा रेर वया रुधेर न्याधिव प्रति श्विम । विष्या हेव निषया यथा विषया विष्याप्रति स्विम र्ने र र न्या विषाम्य प्रत्याय र में र मान्या र क्षिम्य या स्वारम्य र मान्या र क्षा क्षा या स्वारम्य र मान्या रुष्टुं प्रदे रुष्टुं रुष्णेब् वा कंपदे रुषणेब् प्राया र्वे रिषायदे प्रेरा यह रिंग वारी कुष्णराकुष्टित् त्रारायाळेबाठवा त्युवात्रायायवायरावया द्येत कुष्परकुष्टित्र्यार्थेत्यवेष्ट्वेरा इप्यरप्टेत्वा त्गुन्त्राधेन्यरष्टवा वर्रेर्पवे द्वेरा वर्रेर् का मूट रुष प्येष यर म्या वर्रेर्पवे द्वेरा वर्रेर् का कु'न्र'कु'न्धुन्'न्न'र्रावे'न्र्य'नेर'क्षे'न्न'स्ययायाद्मस्ययायान्यत्वे र्वेदेर'न्ययान्न् यरम्बया दे मूरपर्वे दुस्राधेम पर्वे द्विरा वर्दे द से मुस्र है। दुस्र देर कु म् र दु र्थःकूर्वेरक्षात्रम्।ह्रमात्रमात्राविष्ट्रम्यात्रम्।ह्रम्। ৻ৼ৴য়ৢ৴য়ৢঢ়য়ৢয়৸৴ঢ়৾য়য়য়য়ঢ়৾৾ঀৼৣয়য়ড়ড়৸ঢ়য়ঢ়ঢ়য়য়য়য়ড়ৢয়ড়ৢয়য়ড়ৢ৾য় य्याना नेट्या क्रियान्य क्रियान्य प्रियान्य प्रमानिय क्रियान्य क्रियाच क्रियान्य क्रियाच क्रियान्य क्रिय क्रियान्य क्रियान्य

यद्धित्वः दे। क्ट्रियः द्वाद्धित्वः विकान्नः विकान्यः विकान्नः विकान्यः विकान्नः विकान्नः विकान्नः विकान्यः विकान

नुभाने क्षांके क्षेत्र व वासक नुभान्ता क्षांके क्षेत्र परि वासक नुभाने पर्दे सामु क्षेत्र ततु.धेथ.र्थं संसीसीयातियात्रा जायात्रा ही मा लामा हुवा रवीय र्रेसा सूर्याया र्भक्षेन्रभाविः र्यायायम् वया र्षाक्षेन्रभायात् नास्रीयविः र्षात् नार्यायन् क्र मुं पर्य क्रिं प्रवाय। प्रवेर मुं प्रवेर प्रवेर प्रवाय। गुरु प्रवेर प्रवेर गुरु स र्धे त्वायायते भ्रिमा विषया साम्राम्य दियम सम्मान्त्रीय प्रमानिक स्वापनिक स्वापनिक स्वापनिक स्वापनिक स्वापनिक स श्चायन्यायान्य न्वे श्चित्रत्तर्वे श्चित्रयान्वे अत्युष्ट्वे प्ववे ने विषयान्वे अ याक्षातुःष्पेब्रायदेःश्चिम् देखाविष्वामे पुषाळेषाषायाषासुसानुःश्चेष्वदेननुमन् ८८। वस्त्राष्ट्रीयदेःह्रेन्द्रस्यवायायम् वया वस्त्राद्रष्ट्रियदेःद्रसावस्त्रादवाया ८८ हैं ब दुषायम्यायम् वया वर्दे द्रायवे द्वीमा ब स्वाप्त हो। मुसुसा दु प्रवे प् न्वराञ्चान्ध्री साङ्गित न्त्रासु नम्न निका पर्ने ना विष्ठे व पर्ने ना व पर वरेवमायाभ्रीविष्ठ रहे। नमुम्रानु रहे विष्ठ र तुमान र हिन् र तुमानी महिन थिंद्र परि द्वि र है। क्रेंब : म्राया दे दे : धिव परि द्वि र । सामुया द । दे के सारु द । दे र चया इसमान दिना द्वी साधिक परि द्वी मा विकारी दिन पुर किर की र्नु मा सु हगान्दिमाणीः हिन्यन्ना अदिगावि अधुकार्येन्यमा उक्नन्वणी अनेनेने लुबे.त.पु.हीरा भार्चीयायी ट्रा.कूबा.श्वया ट्रेन्स्चा र्ज्ञासायार खुबी.ही.सालुबे. यदे द्वेर वेव विययमान्द्रद्राक्षेत्रक्षे । यद्वेद्द्राके नुषक्षि यानासुसार् भ्रियते र तुरु र तुरु र्षि रायराचया तुरु क्रिन्य यानासुसार् भ्रियते र तुरु रुषप्तरा देराधु प्रवेश्हेंबरुष क्षेय्यायायवे धुरा बेखा वर्दे प्राधिव ही।

र्मः क्रिन्मः व्यान्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्य स्वाद्यः स्वत्यः व्याद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्व

योष्ट्रेश्वराञ्चरायस्य स्ट्रियर स्वाट हित्यर्त्वेष्यस्य स्वित्यया विद्वेष श्वर स्तुः नियम् चुमानायर दिस्वाद् त्वीं प्रेमिनाना नामा राजा विदारी वास्त म्नेर्नरर्ने विश्व अत्राहर्मे अर्द्राह्म र्नेर्ने स्वर्ति स्वर्ति स्वर्ति स्वर्ति स्वर्ति स्वर्ति स्वर्ति स्वर अकु'८८'मशुम। ।८गुन'ञ्च'मशुम'ग्री'१'स्नर'धेन। ।८चें'८८'नग'य'स'मा'गसुम।। लुबा विषावर्धरा ४. सरावर्गे विषाह्चीयात्रार्टा रेगीया श्रीराव म्राचित्राचर्के विश्वराह्में वारात्राची त्रेचा त्रीयात्राची हिन देवा हिन देवा हिन देवा हिन है वा हिन है विश्वर विवार्ह्मकायकार्ड्स्व अस्त्रित्र स्वाक्षर हिवाकायर प्राप्त प्रिकाया विवार्षेत्र देवे रेवे रेवे स्वाकाया विवार यायमें प्रति ही मा पर में निर्मा कर्ने हे के स्रोते हिर में यस पर मानी हैं. स्रम् भ्रीम दिया पर्हरी । श्रापाक के श्रास्तर प्रमा । हिन्म श्राम कि प्रामा । विदे ब्रे.प्रचः प्रे.चोबोबाता त्राचे विषाचोबी त्यात्र हो प्रो चोबेबे त्याता है स्रा उन्न राय र वया रुषाळ्याषायावित्र क्षेप्यदे र्वाट रुप्य प्राप्त स्थाप्त स्थित रुप्य वित्र स्थापित स्थापति स्थापति स्थापति स यदे द्वेर देरवया दूषक्रिवायाय स्राप्ते प्रदेर द्वेर प्रवास प्राप्ते स्थित दे वर्षे निक्षे विष्ठ । तुषाळे निषाया दुना मु हो निवे दिन दु निष्ठ । तुषाळे निष्ठ । तुषाळे निष्ठ । तुषाळे निष्ठ । यः भेष्यव्यत्याम् वित्र क्षुं अळव्यात्रव्य अर्थ्य स्वायः द्वित्र ह्यायः वित्र

याक्षात्वर्यस्य वित्रिक्षेत्रा ने त्याक्षेत्र ने स्वर्धेत्र स्वर्यत्य स्वर्यत्य स्वर्यत्य स्वर्यत्य स्वर्यत्य स्वर्यत्य स्वर्यत्य स्वर्यत्य स्वर्यत्य स्व

ह्मजो क्र्यान्य देवा स्थान क्रियान क्

सम्मूच्या सम्मूच्या स्थान्य त्रीमान्य त्रीम्य त्रीम्य त्रीमान्य त्रीमान्य त

<u> ५८.२२५४४५७। । ञ्च.८.छे२.२८.५४४५८। । ज्ञ.८.छे२.४५४५</u> वः भ्रावस्थायसालनाः सेष्ठायमः देन। विस्वानस्य स्वर्धन। नस्यायदेनः वया रायायविराधिवाकुरानीप्तरापुत्रभाषापुत्रायविरापिवीरायापुत्रावापुत्रभाषा वर्चेट र्ह्नेब र ह्नेब व स्था भी सर दें या गर्श ह्वें ट वर्ष पति या वर्षेट वर वर्ष र्टे.ज.चेश्रु.ब्रैंट.चर्चे.चढुं.चर्चेंट.चर.चर्चेट.त्रु.त्रीरी टेट.त्रु.ट्रेर.घरा टेगे. र्झिटानी र्योद्देशयायमा नार्शे र्झेटाट्राट्रना छे मा है स्वास्तावि हो। ट्रम्बा स्वाय हिटा ૾ૺૼૺ૾ૻઽઽઽ૽૾ૢૢ૽ઽ૽૽૽ૢૢૻૻૻ૱૽ૹૢઽ૽ઽઽ૽૾ૣૺૼૼૹ૽૽૽ૢૻ૱૽ૻઌ૽ઽ૱૱ૡ૽૽ઌ૽૾ૼૺ૾ઌૺઌ૽ૼ ब्रैट् हे. पर्वे. पर्वे. तर्ज् । सैचे. श. धे. पर्वे. संतर् खेश चोशेंट श. तर्ज ही में स्वोश चीशेश. यदेराच्या न्वे र्ख्याची र्योद्देशयायशा क्यान्दान्ति न्दा । व्हुः हूर-विभग.शेर.शुब.टेंच.तक्षा उर्ट.क्ष्मश्च.वु.क्च.त्तु.हु.चेबा 19.हीर.चेश्र. ब्रैंट यर् यह यह या हे मार्च म ग्रिः भृञ्जापायिकार्दरायिकात्री । सर्हायिकाये प्रवेशि । यार्कार्मेटार्झ्स पर्रेन'नग'मी'छेत। । स'म'त्र'ने खुं हेरित्र' । ते प्रतिन प्रस् स्त्र स्त्रेन दुम यरुषा कियर्टर्युषुषायुः याद्वेदा द्वार्युदे स्वर्ट्दे यहुर्यादे राय्टेदा विषा মধিংপ্রমান্ত্র দ্বী সা

स्ट्रियंत्रक्ष्म्याद्वीत्वा क्ष्म्याद्वीत्वा क्ष्म्याद्वीत्वा क्ष्म्याद्वीत्वा क्ष्म्याद्वीत्वा क्ष्म्याद्वीत्व स्ट्रिक्ष्मयद्वीत्वा क्ष्म्याद्वीत्वा क्ष्याद्वीत्वा क्ष्म्याद्वीत्वा क्ष्यात्वा क्ष्म्याद्वीत्वा क्ष्याद्वीत्वा क्ष्याव्वा क्ष्याद्वीत्वा क्ष्याव्

त्रिनाहेब प्रति नियन् प्रति प

थिव गुरा ळेंबावनानी निर्दर नुष्यायदे नार्के हुँ रावर्के स्थाय थिव यदे हुँ रा हुँ न ૻૻઌ૽૽ૢ૽ૺ૽૽ૺૻ૽ઌૻઌૢૻ૽ૹ૽૽ૺ૱ઌ૽૽ૢૻઌૡઌઌઌ૽ૺૡ૿૽ઌ૽૾ૺઌ૽ૺઌ૽ૺઌ૽૽ૢ૽ૡ૽ૺઌ૽૽ૢ૽ૡ૽ૺઌ૽ૺઌ૽ૺઌ૽ૺઌ૽ૺઌ૽ૺઌ૽ૺઌ૽ૺઌઌઌઌ૽ૺૺૺૺ मुरा मिन्रारी ने के प्रवान या स्वारी मार्के हुँ राय सुरावि याप सुरावि साम *देवे:सर-*देन्विन्वन्यन्नेवन्वन्यन्यन्यन्यन्यन्यन्यन्यन्त्रन्यन्यन्त्रन्यन्यन्त्रन्यन्यन्त्रन्यन्यन्त्रन्यन्यन्त क्रदायास्यादेशाची वे व क्रींब से दे। दे से दा विव क्रेसायस वेसागुर मर्भिः र्ह्वेट परु पति पास् रे भादे वे स्वे क्षेत्र तम के भाय वे स्वे भाव मार् मार् प्राप्त है भाव मार् वनाःसः पञ् ४ द्रादे प्रायुः वना प्रदान मान्य स्थान । प्रायुः प्रवास । स्थान । स्थान । स्थान । स्थान । स्थान । *॔*ॾटळ्ळाल्याचर्ट्र.कंट्यक्टरचक्केट्रायचेलाचीलंटिस्याचीचतत्त्रत्वेत्र। ट्रेस्ट्रास ৾৾ঀয়*ৢয়*৾ৼৢ৴ॱॿॖॱॻৡৢॱॻऻৡॻॱय़ॱॡॱॻৢ৾ঽॱড়৴ৼ৾৾ঽ৾৻ড়৾য়ॱॻऻৡॻॱয়য়৻ঢ়৾ঌ৾ॱॡऄॱঢ়৴ॱ৶৻ড়৾য়৻ चिरमार्ज्ञाम्भमार्गीः विवासात्रमात्रीमारामार्थेन विवाद्यात्रीत्राच्यात्री विवासात्री विव सर्दे यहे वे ही पर्दे हा के साम में में सम में में हिए सुरायर स्था वहें हैं यदे द्वेर दे त्याव केना वर्ते न या धेन हो। यर देवे के मान्य पर्के ख़ हेन मायदे क्रुंधेयावयात्र्यक्रिं ह्यायात्रात्रीम। याष्ट्राह्येतात्र्यक्रातात्र्यात्रात्रा र्द्धरम्बर्भिन्धिन प्रमानिक स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स विनायकुरविवित्नास्रिक्षुटाधेव द्रविषायविष्ठिम् विक्षावयाय्युराद्रारीयासाष्ट्रिया वर्वे क्रिं रेन्स् र र्ने न्यानि के यर दूर यथ निय मु र र्धे र छेन

नावन 'प्पर'। र्विन 'ग्री 'र्विन 'अ'न् र 'र्वि 'अर्चि 'प्रकेष 'ये विकाये विकाय के प्रकार के प्रक

तत्रिश्चर। देरावय। दूराबातक्रिरात्रायराद्ध्याक्षरात्र्रात्यात्र्राणात्राचा र्वे.र्टा क्षे.ययमा.क्री.र्या.क्षेत्र.वर्वेट.य.श्रातचरी ट्रेप्टाश्चराय्वेयाता भ्रायवर्। द्रेर न्न्यति यये सर्दे स्थापिका प्रमान्त्र मान्या के नाम्या के नाम्या के नाम्या के नाम्या के नाम्या पक्षेत्वन्यवे स्वायन्य देशेन्य ह्या क्ष्याम्य विष्यु वार्षा रवे तर्वे प्रवेदः थ्रे. कुटः क्ष्मात्री क्रि. क्षमात्री क्रि. क्षमात्री क्रि. त्री क्षात्र क्षेत्र क्षमात्री क्रि. क्षमात्री क्रि. क्षमात्री क्षात्र क्षमात्री क्षात्र क्षमात्र कष्ण क्षमात्र क्षमात् ग्रे'र्ये'अ'क्वुं'र्वेर'ग्रुर'ग्रुर'र्'र्र्र'र्वे'यर्त्र'ग्री'र्वाना'र्न्चे'य्वृ्र्र'यरे'क्न्रेवश्येर्'र्रेश' चित्रात्रात्रात्र में के द्वा देव के नियम स्था की ज्ञान में के कि नियम के नियम के नियम के नियम के नियम के नियम ञ्चायायाने त्युत्याक्षात्वनायवे ख्रीमा अस्मामाने मायाने मावणा नुसुमायवे । त्त्राचायाः अपनुत्राचादितायाः अपवितायवेताः अपने वित्यायाः वितायवेताः क्षुतायाः अपने वित्यायाः वित्यायाः वित्याय र्टामे संप्रतिया स्प्रमिट्यिट्ये र्र्यास्य प्राचनित्र विकास्त्रम् स्वास्य यर्टरम्बर्दरायदेः द्वेरा इन्त्रवायम्बर्धरायन्त्रम् वया देःयः रूषक्र स्वरास् चतः क्रींब भेरि पर्व क्रिंस ञ्च प्राप्त र्ष र कर विचय पर्व र का भी ब पर्व र क्रिया दगरायवे यादेरावया दे यार राक्षेत्र स्यास्य विदेशीत सेंद्र स्वर्णे त्त्रापाने प्रयाक्रेरकर निर्माव परि नुषाधिव परि श्विरा मानव परा हिन् ग्री नहर ষ্ট্রি'মানম'এম'র্নের'বুম'র্মা'বর্লব'র্নাম'র্ল্লআ র্ন্রা'ন্ত্রিম'র্ন্তর্না'র্না'র্না'র্না'র্না'র্না'র্না'র্না इयार्टा विश्वश्हेर् ज्ञापदायर दूर क्रया क्रिया रिवर है। श्रदी वश्येव देवाय त्तर्भुर क्रमायेरा मुल्द्राञ्चर्तरक्रमाम्डमाम्मावेषास्मास्रम्

स्त्रिन्त्रायात् स्त्रिम् विकास्त्रायाः स्त्रिम् विकासः स्त्रिम् स्त्रिम् विकासः स्त्रिम् विकासः स्त्रिम् विकासः स्त्रिम् विकासः स्त्रिम् विकासः स्ति स्त्रिम् स्त्रि

त्रीर्यत्रीयात्री

क्रम्मान्नेश्वरान्ने राचना ने त्वन्ने स्वर्माने स्वर्माने स्वरम्य क्रियाने स्वरम्य स्

त्तुः क्षेत्र।

स्वान्त्रः क्षेत्रः विद्यान्त्रः क्षेत्रः विद्यान्त्रः क्षेत्रः विद्यान्त्रः क्षेत्रः विद्यान्त्रः क्षेत्रः विद्यान्त्रः क्षेत्रः विद्यान्त्रः विद्यान्तः विद्यानः विद्यानः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यानः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यानः विद्यानः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यानः विद्य

प्यत्तिव्वः दे। क्रिंग्क्ष्मश्चित्त्वः क्रिंदेन् क्रिंग्वः क्रिंग्वं क्रिं

म्नी स्वाहित स्वाहित

त्रिभाग्नीः स्रायस्य स्त्रांत्रेय द्वात्त्र स्त्रांत्रेय स्त्रांत्र स्त्राय स

र्झेन'र्न्धन स्ट्विनाबास्तर नोबासहर्नायते 'योखायामानर'णे स्ट्विन'से खबा देखार 'र्ने कुं.<sup>ब्र</sup>.प.ब्रेथ.त.ल्। वि.श्यु.कुंश.टेबी.वेश.शक्त्य.टुटा, टेवेट.ब्र.व.केंट.लट. मुं देवे के अपन्या क्रांके अळव के प्रेट दें। । न्युक क्रम्म ग्री के प्रावी प्राया न्युक त्तुःचॱॡ्टॱऄॗ॔॔॔॔ॴॺॱॴ॔ढ़ॆॺॱय़॔देॱक़॓॔ॺॱॸ॔ॴॗॱढ़ॺॱऒ॔ऻॎढ़ऀॱॺॱ॔क़ॗॕॴॱॴॸॱऒॱक़॓॔ऻढ़ऀढ़**ऄ॔**ॱॸऀॸॱ यदेवःक्षी सक्षत्रभ्रासुरायराव्यूरारी विषादरा र्सेवाद्येताव्दुत्यवार मिषासहर्पित विवायाया सर्हे प्रदासम्बन्धायाया । प्रमुक्त मिष्टा प्रमिष्ट स्वायाया त्तुःवःकुटःवीःयःर्देदेःक्ठेंशःदगुःवश्यक्वंवःर्वेःरेटःर्दे। ।दगुवःत्तुःवःकुटःयरःग्रीः र्देवे ळें यान् गुष्त्र या वियान्ता मन्मयायवमा महिया सुष्यता नुमुन ह्वा छुता यर म्री दिवे के बावकुर या अकंब के बि प्युर उस वर्के वकुर पेरि दे। केब के प्युर र्यायर् महिषापि केषात् मृत्यायम् कताय्यम् विष्याची हिषासि प्रमुत्रित्र विषाद्रा क्षित्रवि क्षेर्रायेषा क्षेत्रायर्के त्यायक्षु धिव की । त्युव ल्ला व्हर रट.यधुष.लट.। विचर.क्रीष.पीट.थु.यहूर.तर.वी व्हिं.लु.हुंबाष.सी.हीष.यस. मिटा १४.भ.लूटम.मे.त्वूर्ययर मेरी । भक्ष्य.मू.य.कृ.पक्चर.मुम्यर मेरी १४य. त्रातिष्यं भ्रात्रेश्वात्रेश्वात्रेशात्रा । किवात्तराश्रक्ष्यास्त्रात्र्यात्रात्रात्रेर। विषयात्रात्रात्र बर्सेबर्ग्नेध्येबा विषर्पात्या सक्षेत्रे न्नाय्येत्य मेत्रा सक्षेत्रे प्रकेष्ट वेयायर क्रीया वियावेद पुरावयायर यय देरी इस्वर द्वर है। वियावेद या ५८। ५ नुष् त्रु प्रति प्रत्यासुर प्रति। ५ वृत्र ते प्रेना म्मा प्रति । न्गृत्रके के के विवादिका निवादिका न यःयः दर्गेरसः यः धेत्रः हैं। विषः बेरः यः से व्यवदः दे। इरसः यवे यर व्यवे यर्दा

त्रीयः अवश्वात्त्रत्यत् विक्रात्त्रत्यत् विक्रात्त्र विक्रात्त्र विक्रां विक्

अन्यस्था वर्ट्रायविः ध्रिमा वर्ट्रा अनुस्तान्त्र विस्तान्त्र विस्तान्त् विस्तान्त्र विस्त

मिश्राम् प्रमायन्त्र क्षेत्र क्षेत्र

श्रेन यम म्या मिट या प्रविदेशिय देशिय हुन हु दि प्रविष यम प्रमेण परि मह प्रमेण सेन्यति द्विमा नेम्या नेप्यति सम्योवाने साधिक यति द्विमा नेप्यसमावकः पर्वः स्टारवोवार्वित्रणीः स्टारवोवाकोत्रायवेरक्षेत्र। स्वाबाक्षेत्राविषा प्राचेषा मुयामा नेषामु केषासमा सामिता स यवे न्वर ज्ञानिक भाषान्त । इतकायवे प्रताये विष्णे की निर्देश सु पक्ष कायवे न्वर ॿॖॱॿॱख़ॖॖॖॖॖॖॸॱॸॖॕक़ॱॺऻऄॺऻॱय़ॱॸ॔ॸॱॠॸॱय़ऄॱक़ॣॸॺॱक़ॺॱॸॖॸॕॺॱॺॖॖॖॖॱॻॾॣक़ॱय़ऄॱॸॺॗक़ॱ ञ्च प्रविष्य प्रत्य प्रत्य प्रत्ये प्रत्ये विष्य की प्रत्य क्षेत्र प्रत्य प्रविष्य ज्ञान किर प्रतिष्य र्देव मिर्डमान्तुः रेम्बरायर वया अम्युयायादेवे श्वेरा वर्देदावा ह्रेव ञ्चारायाद्रा गल्टास्यरार्ह्नेबाञ्चारायाद्वा ५८५७ ज्ञारायायात्वेबासस्याद्वाराष्ट्रायण्ट् यरः वासुर संपितः प्रति स्थायः प्रति स्थायः विषयः की प्रवि सः त्राः विषयः की प्रवि सः त्राः विषयः विषयः विषयः व ञ्च व कुर क्षेत्र सळ्त देर वुर पुर प्याय प्याय स्थाप विष् मल्टाम्ययवियादिषायह्रमञ्जूदियविम्यवेषाव्याविष्यवेष्ट्रिम् देरावया देखर्वे रद्भावस्था अपर्वे महायानि र्येवे दिस्साम्बर्भे स्माहि मिलेक र्याय

यदः रद्येयाध्येषाध्येष्ट्रेरा ह्यायायया याववाध्या वित्रीयाद्यायस्यः श्चारवर्यम् वया स्यापे मारायाविषायहेषाहेष्य मानाषास्तरि ग्री हे साया हिष् सक्सम्यर्ट्स्यस्यायम्बर्धान्यम् द्विराञ्चानःकृतः की त्याराङ्केतः स्वराधितः श्रेश्चरपदेष्ट्वेर। र्रायेर्र्राचया ह्येर्र्वानुप्तवर्पायमानेमानेरा हिर यरम्बुरबायान्दा देख्राये वेषाये विषयाये विषयाये विषयायाया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषय रटायुन्य भाक्षायुर्य सहँदाय दिन स्वतायन विष्युर्य स्वति हिन्य साम्यायुरा बः वेषानुःर्केषाञ्जा र्हेराञ्चापञ्चापञ्चान्त्रेषाञ्चापदेःष्यरदेवाञ्चरानु हेन निषाया हेन हेन सक्त सहस्राया दिया हिर त्राचिया सामा त्रायि प्यास मित क्रमायक्षरायार्श्वराष्ट्रमायम् साम्यायाः विष्या साम्यायाः देवास्त्रमा वर्नेन्त्र। न्ध्रेन्छेन्द्रिन्धेन्यास्याम्यायायायायात्राचि महेन्चीः स्ट्रिन्स्स्यान्न्याया વૃંધ ત્રક્તાલિયક્ષી ષદ્દ્વારી સ્વરક્ષ્માળવ્યા છે.તે.તો વિ. સુરક્ષ્માર नवाण्याः । । त्वाः कुः व्यन्ते । व्यनः विवाः विवा वयार्ग्राट्रासुम्रान्तुः वश्चुरा । केयानुयासविः स्नानः केवासायकुः नदः हिः सुदेः स्पुतः स्वानः यः देवः स्नद्रिना सम्मर्कना देवः दुना स्तृते त्यु सर्मा सरम् केना सम्मर्कन । दे सुसारु याप्पु र संसावित । दे सुसारु या देव त्वा विका । दे सुसारु या ह्वा या विका वर्हेनायवे द्विमा त्रायाये प्यायीन द्विमायवे प्रति त्रायाये प्रति विषयाये विषया विषय च. चर च. कुच. मू । षुषाय विराय क्षेत्र चर च. च. कुच. त्रेत्र अव अक्षव द्रर चिर चिर प्राय प्रैंतक्टर्तात्वमानेमात्रार्वीया देवा हेन्यात्रात्रीया स्वानामान्त्रात्रात्रीयात्रात्रीयात्रात्रीयात्रात्रीया स्वानामान्त्रीयात्रात्रात्रीयात्रात्रीयात्रात्रीया स्वानामान्त्रीयात्रात्रीयात्रात्रीयात्रीया स्वानामान्त्रीयात्रात्रीयात्रात्रीयात्रीया स्वानामान्त्रीयात्रात्रीयात्रात्रीयात्रीयात्रीया

द्वास्त्रकृष्ण्यास्त्रम् वित्रक्षायास्या वास्त्रक्ष्यात्रम् वास्त्रक्ष्यात्रम् वित्रम् स्वास्त्रम् वित्रम् स्व द्वास्त्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम् स्वास्त्रम् स

ग्रिकायाः ह्रेंब् : न्नायायाः गुःरेंदि : क्रेंका न् गुःवका सक्रव : सेंग्नेट में । न् गुव : इसका ग्रीकि'यिवे'याया सुरार्'यगुरार्सी दि'यविक'र्'र्गुक'क्रमण्यी ह्व'यायविदेख' सर्वः क्षेत्रात्रमा सुरानु । वेषामासुरमायरा सुराने। न्धेना त्रा राजायरा सुराने। देवे के या न मुंच या भी । कि या क्विमार्मे । मान मि के या कव के में मान मि के या के विकास मि के कि के कि के कि बु८'पर'दशुर'र्रे । यार'यो'क्टें'अळब'र्से'बु८'प'देवे'क्टें'देव'र्से'रेट'पर'दशुर'र्रे। वेय: द्वाप्याययायया ५५x कुं च्चायावेय:याया विकायत्रेयः न्वाप्ययः सक्य द्वा विषय विषय के दिव र की खाय है। दिव र खाय है विषय के कि का है विषय है क्ट्रिंश प्रेर्पर प्रवे प्रवे त्या व्यापा व् र.च.लर.क्री.सूदु.क्र्स.ट्यी.बेस.सक्ष्य.क्रू.सुट.चर.दर्कीर.सू। ।ट्यीव.बेससराक्री.बु. चल्नियाय। द्युराद्युरार्से विषामसुरसायात्री नमुन्ते होन् त्रात्री होन क्राक्ष्म र्धेराञ्च रायाकाषीयर प्रति प्रकारी रेपार्धेराञ्च रायाराष्ट्री ह्युःक्र्यान्यीं वेयात्रक्ष्यः शुः ही हियाय्ये स्थाता स्थयात्यया चेया यर मु प्रति भ्रुप्य प्रदेश स्वर्भ प्रदेश स्वर्भ प्रति । स्वर्भ प्रति प्र यम्बर्यायम् देवम्बर्याकुर्वायङ्गव्यायदेकिन्नम्यम् केन्द्रम्यायदे हें। म्बिन्द्रम् देविम्बर्यामुस्य दिवेषास्य नियायायाय विवास सहद्यार वर्गेर.पर्मा भैजारुषु संभागेयासार प्राप्तेसायेषेष सर्थ रास्त्रे स्वम्या में प्राप्ते स्वाप्त में राम् यायकन्यायार्क्केषाणु क्षुत्राञ्चत्रान् हे किन्णु मासुरायसामस्यायदे क्षुत्रान्ता रहा त्रमेथान् साचन सारमेथामी ने कार साम का कार साम का सम्मान साम सम्मान साम सम्मान साम सम्मान सम्मान सम्मान सम्मान क्षेत्रविवर्गेषाग्रीः देट मुट दुव्यू र ब्रेषाया उद्याया मिनिषा स्वयोवा वदी द्वाया वदर

यस्युट्रिया कुवारेवे सुकारीकावेव मृत्यन्य प्राप्ते स्थापि हेन हेन रिवेर व'र्म्यायशक्ति'र्गु'र्वे'स्र'र्ज्ज्ञिन'त्र्व'गुट'स्नायार्गु'स्नेष'यर'द्गुर'प्रवे'र्धुर'त्रे। देर' गामिषानुषायरावसूराने। नधेनान्नाराणराद्वितक्षेषायस्नान्तीन्। क्षेत्र'सळ्त्र'सक्ष'य'द्रेरिय'सु'यङ्गत्र'यायय'म्मणय'ळेर्द्र'मु 'द्र्य र के क्विंग'दुय'दर्ग र्वेष.धु.मुब.र्था.विषात्रात्वीरावष्त्रीय। स्वाबारारात्वी रावता हूंब. र्ने र ब्रु 'न् गु'यदे' प्यर 'र्दे दे 'क्रें भ 'न कु न 'य' है ब 'र्से 'पुन 'र्ड स' न रु 'न बि 'न म। सक्र न र्शेष्पु र इंग पर्दे देवा लूट तर प्रमा नेत्र कुरा नेत्र कुरा मुंदि ही सा मुंदि ही सा मित्र प्राप्त र र्इ.भठु.र्र्यामानाः सिरायालयात्रपुरीय। र्राप्तमात्रपुर्यः सायव्याप्तियात्रपुरा यर विषा दे विषायवि र्देर ञ्चापठु पठिषायविष्यर देवि ळेषायकु दाया देवा से प्याप्त रुषायर् महिषार्टा सक्ष्यार्श्वायर्श्वायर्श्वायर्श्वायर्थः यर देवे के बार की राजा प्राप्त की की की प्राप्त की प्र यवर र्ष्ट्रास्तरे देनामाया हुँ र पाद्यापित है । इस्मामामिक पाया हो पित पर्के खं पर्के खं त्या वर्षे मार्चे माल्ला स्वार्थ पर्वे साम के निकार के नि

पर्श्व प्रकृषाक्री देख्या हुन्या अक्षव हुन्यी का स्वावित हुन्।

यश्च प्रकृषाक्षी देख्य स्वावित हुन्या अक्षव हुन्यी का स्वावित हुन्या हुन्या स्वावित स्वावित

त्रभा व्यात्रेश्रभ्यक्षित्राचित्रः वित्राचित्रः वित्राचित्रः व्याव्याः वित्रः वित्रः

यायवर्यये द्विरा वर्देर से नुषाना देवे के निरानु नुषा द्वेर नुषाने पर याणुन्रस्मान्ग्रांचिन्। क्वेंदिन्ने सुवन्त्रसम्बस्याक्षेत्राणु वर्षसाक्षेत्राचित्र यमम्भद्रायदेः द्वेरा ह्रणमानिकागानि राष्ट्रया देदे के प्रम् की सक्र में या खुद रंभायर्रे पकुर भेरि। क्वेंदे सळन भेरिया पुर रंभायर्रे पकुर भेरियदे क्वेरा देर वया देवे के नरप्षेत्र अंक्रिय पर्वेद अवर विषय पर्पा के र देवे देवे के अर्क्ष वर्चेर् अवर व्यापार्थेष्या के विष्कृति विष्कृति विषक्षित् विषक्षित र्'हे'न्राक्षाहेत्येर्'णे'यर'ण्राक्षाक्षायर'ष्या रक्षायरत्ये सारे प्रवर र्द्यान्गु'र्थेन्। चुर्न्नु'र्छ्, प्रम्मक्ष्रिक्षुंनु'ग्री'यम्'यापुन्द्याधेन्न्राम्बुन् यमम्भेर्पदेष्ट्विम् ह्रम्भामहिषामार्नेम् वया देवे के बुवार् हिक्से या सुर उसा वैत.पे.धु.भ.वेर.पर्चूर.भघर.वीयात्रार्टा वेर.रे.धूब.धुब.भक्ष.भथभात्र. हिरा हमकाप्तका र्विन्दरो हे स्निन्पर्वेन् प्रवे र्स्नेव्य स्वर्णन विरिक्ति मी निष्या के से निष्या के का से निष्या के का से निष्या के कि निष्या कि निष्या के कि निष्या कि निष्या के कि निष्या कि निष्या के कि निष्या कि निष्या के कि निष्या के कि निष्या कि निष र्द्याङ्किपायाण्येव प्रदेश्विम् विषाचेमायान्विम् क्रियायान्य विषायान्य विष् महिषापि दिव है। साम राज्य का है। सादी राज्य राज्य प्याप्त रहें साद मुग्या या का दिषा 

यःलेब्रायवेःस्रुर।

पि.श्राचियात्तुःक्षेत्र।

पि.श्राचियात्तुःक्षेत्र।

पि.श्राचियात्तुःक्षेत्र।

पि.श्राचियात्तुःक्षेत्र।

पि.श्राचियात्तुःक्ष्राच्यात्तुःक्ष्र्युः, स्वाच्यात्तुः क्ष्र्यात्तुः स्वाच्यात्तुः स्वाच्यात्तुः स्वाच्यात्तुः स्वाच्यात्तुः स्वाच्यात्त्रः स्वाच्यात्रः स्वाच्यात्तः स्वाच्यात्तः स्वाच्यात्तः स्वाच्यात्तः स्वाच्यात्तः स्वाच्यात्त्रः स्वाच्यात्तः स्वच्यात्तः स्वाच्यात्तः स्वाच्यात्तः स्वाच्यात्तः स्वाच्यात्तः स्वा

र्यायायात्री व्यास्त्रित्रा देवा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्र क्षे

ब्रिट'र्'रे, अनुवयार्टा वह्रअ'तुवे ब्रिट'र्'रे, अ'सेर्पार्टा व'ब्रट'र्हेर्'र् कें अप्रकरप्यविषिठेषाकरपुष्ठुरिवेट। नेप्विष्ठुरिवेट। र्झ्रिके असुवयादा सुवद्कि असे दियादा इत्दिके अपकर वाविद्वा गर्रमायमुद्दारायभेषाते। वसास्चेत्रियासुयायात्रा । विस्रास्चेत्रात्रस्य मेड्रम । इसामद्राप्तराचायायाया इसाम्चरायवाम् । देशम्य । सामुदायाद्या के साम्चेदाद्यकर दुषाम्चेत । नाम ने कें दुम ने मुं से क्षेत्र रुष्राभुर्यते छ। न्र मुःयुषाययग्राभूर रुष्रे सामुरार्ये। । पह्रायुःभूर रु बिक्षेत्रसञ्चित्ते । प्राञ्चमञ्चित्तः विक्षेत्रस्य सम्प्रात्ने । ते प्रविवाद्यायात्रस्य । ह्युरायरामुर्वे विकारमा देवामक्यायका नेपविवानुमाववानायाह्यरा यर मुर्य विद्यानस्तरमा हे स्र राज्य विष्य नार में के पर में खेरा यसनाया ब्रिट'र् व्यास्ट्रेर'य'रेवे'ळे। वह्यानु'ब्रिट'र् 'हे'यानुव'र्वा । तुव'ग्री'व'ब्रट हेंर र्'हे'स'सेर'र्री । इट में से केरहेन र्'हे हे सम्मर्भी । विश्वास्य प्राप्य रे प्रविद र्मवर्मिया सुरायर द्वाया भेरती विकाम सुरकाय दे सुरादरा दे मवर न्नायाञ्चरळ्यायारायह्यात्वेश्चेरान् व्याच्या वाच्चराञ्चेन्त्राक्षाया याया चुर्निषाय वे द्विरा विष्तरो दे स्री प्रवादा दे । चुर्नु दे स्राक्षेत्र पर्वे द्रास्तर वियात्तरक्राम्रीटायर्चरायम् राम्यात्रम् स्वापार्यम् स्वापार्यात्रम् विटान् सळ्वासीय्यान् विः वार्यात्रात्रेवार्केषार्ये प्रविषायि द्वीया द्वीया व्याप्तात्री व्याप्तात्रीय विष्या

पतः क्षं चीतः प्रति क्षं स्वार्य क्षेत्र स्वार स्वार्य क्षेत्र स्वार स्वार क्षेत्र स्वार स्वार

यशा चियाःक्ष्याःशाम्युर्याः स्रोट्याः स्तुराः स्तुराः स्वायुर्याः स्वयुर्याः स्वायुर्याः स्वायुर्याः स्वायुर्याः स्वायुर्याः स्वायुर्याः स्वायुर्याः स्वायुर्याः स्वायुर्याः स्वयुर्याः स्वय्यय्याः स्वय्यय्ययः स्वय्यय्ययः स्वय्ययः स्वय्ययः

क्रिंस् क्ष्मांची ज्ञाला ची रायम् रायम् रायदे निकास के रची क्षित्र क्ष्माय क्

## ७४१.चे.प.पर्वेचस.सूरी बिस.चे.प.पर्वेचस.सूरी बिस.चे.प.पर्वेचस.सूरी

चस्यान्त्राच्यात्रच्याच्यात्रच्यात्

हुन निर्मित्र मिन्न स्वर्भ नि । प्रिक्ष म्यानिका । प्रिक्ष स्वर्भ मिन्न स्वर्भ मिन्न स्वर्भ मिन्न स्वर्भ स

चित्रभावाम्या ।

विक्रमावाम्या ।

विक्रमावाम्या ।

विक्रमावाम्यायाः विक्रमायाः विक्रमायः विक्रमायाः विक्रमायः विक्रमायाः विक्रमायः विक्रमायाः विक्रमायः विक्रमायः

ञ्च.त्रध्न.ला.ला म्यू.श्रम् । ट्वीय.क्षे.त्रञ्ज्ञी । त्येय.क्षे.त्रम्यायाः विश्वास्त्रम्य प्रमुख्यः प्रमुखयः प्रमुख्यः प्रमुष्यः प्रमुख्यः प्रमुष्यः प्रमुष

यर रें ये। विकानमार्थी सर्वी पहें न विभाने ना विकान मुन्ति न सुरा स्थान |र्षाण्चीरवावार्वे वर्षुरायर्गा |क्रम्कुःदुरायार्सेषाण्विर्षा |रषाक्रेमायर्ग बै'नर्गेष'य'नम्। विरक्ष'नर्गेव'य'ङ्गेव'नुष'स्। ।रष'केव'ञ्चेन'वै'नर्गेष'य'नम। | ५५ वृत्वाः त्वतः स्राप्तः क्रें सः विष्ठवाः या । स्राप्तमुदः यहेदः प्रमः वयः यः स्ववायः स्ववायाः । दिसः यासर र् प्रवृत्य है। विषाद्व सेन हे नेषायर है। सिर्देन परि मल्रा र श्रायम्याने। विभागम्याम्यान्त्रम् । विभागम्यान्त्रम् । क्रिम् । निर्मुम् न्नायिष्यायायाया । विस्तरा न्ना निर्मुम् प्रिम् प्रिम् प्रिम् । वियायमायकनायमा विविषायमायायायायाच्छ्याची क्रियस्यायस्र्र त्रतः सर् हे या । रहीर रह तमर हर के त्र बुवा ही । र्ष के ब तर्हर वर निष्ठ यस्त्रा । र्रेर व्याप्त स्तर की रूप । क्रियम् सर्ग सर्ग प्रमे प्रमे विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य लट.द्र्यतात्रात्त्र्यत्त्रे विवाक्षराचवात्रः इत्याद्यस्या विद्वात्तरं गीयः की विवा म्न. विरा विश्वर्ष्ट्वित्यवित्यम् दुम्स्येषाया । दुम्मः पुःस्वे प्रवे म्न. प्रस् मुनयांत्रेत्। विवृत्यमान्यस्यायसम्बर्तियमार्वेत्यमा क्रिव्युवासर्तित्वस्य वनवाही । अर्रे के अहं र बाद्ध व दनायायका । दिन्ने दा त्रा देवे हा हो । वर र्रेष्ठिर याक्रेय सुया मी। दिशक्रे अय वृद्धा यत्र मार्था स्था प्रेरा । देर स्थार प्रेर स मिर्देव के भाविषा विराधिक विषयि । विराधिक विरा त्त्राच्यात्रा । त्युक्षक्षेत्र्यः अर्वे त्युद्दाययः स्त्री ।

चले.त.धे.भ.चर्ड्यने.रेंसत्ता ।रेंस.की.उंत्रूचर.कुत्.ध्या.कुयं.री ।रवेर.की. <u> च</u>याम्हिरायाची विरासेम्याप्त्रीत्रायायक्तरायाचा । स्टायम्यायदेवायासा सहरे.हरा किंगःतुरस्यामी.ह्यामनाता विवासासी.ट्रमेश.हे.हे.हेर.टरा। वर्षेवायाम्बर क्रिंब अर्दे अद्युव महिषा । इत्यावयामी ब्रुव न्त्रा । अक्रु न्त्रिय लर.ह्यु.क्र्याचिर्ता ।रचर्र्येष्युं भुवातविरावरावधरा ।वर्वेत्युंगा द्रवःक्रवः प्रस्टाप्य स्था । विष्ट्रियः स्टायम् विष्यं मित्रविष्यं मित्रवास्यः ह्ये विनास्ट्र-प्रति**न या । विराधन रेन्न वार्ययायाया केरा । इ**प्यये क्रेना मरा चर्षे. तृ. त्री । क्रूं म द्री द द्री म अक्ष म अक्ष म द्री म च क्ष म द्री म स्व म स्व म स्व म स्व म स्व म स्व म षद्र। विनर्भुत्रः सुरिवस्यायार्येदे। विन्नेर्यायायेव म्यायेव मुन्तियः यदिः सर्केन्यायम् सम्भाने । वित्य वित्य वित्य वित्य स्था सह्राताली । भट्ट्रिटावम्यायावम्यायम्यायम् । वर्ष्युरार्भ्वेषायः ह्रेंब नशुर्या निवब रु रूट र वेष पर्वाप र वाया । र व्या वि स्वाप र र रे पी । वि सर्वः क्रें भार्त्तुं व्याया स्वार्त्ते स्वार्त्ते व्याया विद्राप्तः विद्राप्तः विद्राप्तः विद्राप्तः विद्राप्त र्रे देव से प्रत्रें व विषा चु मालु माले वा के बासी पर्युमा। विषा व सम्पर्य मालु मा वरिक्री । हिन्दि दिने किन सक्त सक्त सक्त या निके कि । निके कि से किन पित निक्र धिव यम । ५ उट हिव अळव की अहम यदि। हि हिंग दि सामु नाया हिव। । वदि धियान्व क्रेंन्य प्रद्विय से देवे विवय स्थित स्थित विवय स्थित विवय स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स र्वायायविषयाययायव्या हियसुंब स्ट्रायायायी वसूब यारास्त्र डेमासराये नसुरमा दिरासराई यम नुमानसायी सिमोसुराह निमानु है।।

स्मान्त्रे सार्याम्य स्था । त्राचित्र क्रिं म् जित्र स्था । जित्र प्राचित्र प्राचित्र

यम्ब्यायदे हे सामायह्म । यमाबयायदे हे सामायहम् ।

नेशक्षक्षक्षयाके। । विरादरान्य दुः क्षेत्रिक्ष । विरादे दिवा के असि । कि न्य इक डिग प्रत्य प्रति । श्री प्रति प्रवि र हे व रिर्टि कि अळव मुद्या । भर्षात्र त्र्विर त्रुद्ध र मान्य क्षेत्र मिन । र मान्य त्रुद्ध त्र स्रोम विषा गसुरका दि'धि'यहद'य'युर'क्केट'यविया दिन्नर'के'दन्नर'सहस्रावि'क'दर'। पर्वियार्ट्र स्थ्याया । विष्ठेमाने विषक्षिमा सम्बाधित । विष्युं हिंदि से हिंदि । र्त्यारेर केंब्राबना दुना दुना दिवायते र्त्या मार्च स्था । त्रा हो या पर्दे वा या धिव विषा । अधिव व्वाप्तिय दिर पाँची । कुय रेंदि खुग्य पर पार्श्व दर्गिय किया ने भी खुन्याया है 'ब्रून' तु। । है 'चु 'चु 'च 'प्याया पर्वेष। । विषाया व द्रः भ्राप्यायावयार्गान्यः स्तर्त्ता विषयात्रायाः स्वाप्यायाः स्वाप्यायाः त्तुं ज्याम्बर्भः ह्वायायात्रा विद्यालया हितायर की विद्यालया स्था हुं क्र्याचनात्वतिष्वाः सेनायाया । साम्युः ज्ञानस्यायास्यायास्यायास्या ह्निमार्यतः मुद्रे चित्रमा । स्यापि स्वामार्थमा स्वामार्थः मुत्रापियः विराम् । स्याप्रेयो मुस्मियायाम् । ज्ञाप्रमियासमा निराम् । स्याप्रेयासमा । पि.श्रुच, विभागू प्रमायात्रा सहता विषय असारात्र जू चिश्व स्वा र्युअर्द्धुः झ्वाप्यदे क्या । त्रुप्यदे प्यर्विया दुः दे हिन्यदे दिन्। । स्यायदे खें दुवा अर्ह्णिया

ने प्यट में स्त्र महें नियं है। हि स हैं नियं हिट सह महिता है मिले हैं वयाः स्थित्राचर मुना हिनायायर विभागी र्याणिय है। सियदे र्या विषा दे राय हिना <u>देःलान्द्रुःमहिषाकः व्यक्ति। व्रिकाम्वीः ज्ञानाम्बिषाः प्रिकाम्वी । देः प्रविकादेः पीः सुकास्त्रुवेः </u> कः भृष्टिभावनाम् वेनान् भेषायर द्या । इत्येते भूति हेन षाया । विवानमा र्रोषात्रकी.ट्रैया.द्रे.सी क्रियाचया.र्रोषात्रकी.पर्टेष.द्रे.योट्रया दिए.चर.सेया.द्र्या.द्रेया तम्त्रेम । १ सिर्द्धमातम् विभाग्यातम। विभाग्यातम। विभा विचा द्विभायते र्ज्या नामुसादा । व्रिकालना सुसान्तु : क्ष्माय र र्ने । व्राविच रहे भावे दे यायह्री । इत्यतः व्याद्वेना ह्रेना याया । विवालना हे यायते व्याद्वेना दिना । विवा वगःसंसाद्वः स्वाप्य स्त्रामा विवानु स्वाप्य विषाय राव्यू मा नि हे से विषय इत्याप्रभामी थी। क्रिमानर भामी र विचानियामा निष्यान र्माम हिता हीर. ८८। विविद्याम्विकायिः वास्त्र वास्त्र विश्वा विष्ठ मान्य वास्त्र विश्वा विष्ठ वास्त्र वास्त्र विश्वा विष्ठ वास्त्र वास च.र्श्चर.र्ह्नेय.र्ह्हेर.श्र.पृथा.पृटा विशान हिंदीर प्रवापित वायर प्राप्य विशासर क्रवाः ट्वेर : इत्यावयाः या वित्र क्रवाः सः पुराय त्रायाः ध्या । व्यापार प्रवीयः न्दार्चित्रदेश । विक्रांसित्रविक्रित्रविक्रित्रवा । गुन्नुक्रिक्ष्यदेन हेन्द्रिन्य यूर र्वेन । डेशर् शक्तेनश्री केनश्रा प्रायहर प्रायह्म प्राये कु कु विश्व प्राय परि हो। नुगुवे द्वो क्विंद प्रस्ति वस्त्र म्याम्य स्वि द्वारा स्राप्ति द्वारा स्वि द्वारा स्वि प्रस्ति । नुसुर रच इससायायेनसम्म र पुर्व प्रति केन्सासु पठ र दे हेव पर्व ।

मृञ्झे देन्न्नियाची ह्रेन्यासहस्रासेन्युन्स्य विन्याने हिन्गी सहन केन याया व्यान्तर्वत्रम्भमार्थेयायवेत्याम्भम्याम् म्यामान्याम् यावारीम निर्देशियायासुप्रस्थस्यरायरायर्रियार्दा यदास्यवसाययेर्दान्दर र्मिर्दरावबर कु अर्के र्सेन्य पञ्चन्य होयाय सुनद्दर्स सम्मान प्रवेत रहेर । यनुयासर्दि । कुःखन्यमायायायात्रमानुमानुमायोवसाद्वाराष्ट्रमायान्यम् वाराष्ट्रमा याञ्चापन्स्रम्भायम् प्रतित्रित्। स्टार्धेन्याणीयन्यास्मिन्स्यम् स्रापाद्मम् यायक्षस्यायरायबेदायासँग्रायुग्रायायाद्वायापुत्रायापुत्रायावेरायाव्या त्तात्राभवसाचीयार्थ्यः याचराकी अष्ट्र्याचेरातां संस्थातीया सीता विश्वासा होता ता सीता सीता सीता सीता सीता सीता क्रं स्यर् मु द्र्येषाया दे द्वर वदर यद्वय सर्वेद दर्ग द्र्य यविर प्रमित्र समित्र श्रीयविष्याचरायवरात्राक्ष्यायाः क्ष्यावाक्ष्यां भाक्ष्यायाः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याम् वात्राक्ष्राचित्। श्रासद्यापात्राक्ष्राक्षराव्याक्षराव्या र्'र्ल्यूरम्म्यम्याय्त्रर्'र्याक्षेत्रर्'र्यायि, र्लूर् रे। यह क्षेत्रः मृत्यू स्वेते र्याक्षेत्र मु इस्राप्तवनायमा र्साक्रेमप्ति है परि धिम हो। विर्वे पर्स्याके प्राप्ति पुर क्वा क्रिंगरविरः स्थायमायवर्षायवि विषात्रा देर्गायवृत्रुत्तुमास्थायम इस्रमाण्चिमार्चे राञ्चाप्तरायक्षेत्राचे। क्रिंसाक्ष्यायम्यायक्षेत्रयक्षेत्रयक्षे न्गु'या । वर्डे स्'वर्डे स्'विवर्डे स् वेष'य' सूर पित्र'या

म्द्रियाया हुन्यस्य प्रमात्त्रेत्र प्राप्ते न्या विष्य स्वाप्त क्षेत्र प्राप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त भ्राप्त स्वाप्त स्वाप्त

यः र्यक्रियक्रिर्द्री झुममासुल्यम्या सुर्वह्रममया रवर्र्द्र्राया कें तसुवार्ट्सेन यदे नुमाकेन। सुम्म वामावन मायदे नुमाकेन निम्म नियं प्र हिरा ट्रेस्समाग्रीवटवया क्षेत्रमासंविधया सहयत्तराधटाक्ता श. <u> ८व.तम.तर्भाक्षेतातर्भेव.तपु.रीस.कृष.भभभामा.भ्र.तपु.लम.र्म.कृषातर्भु.र्ज</u>न वर्द्दार्याधेवाते। देव्हारायुरायीयायायीक्षित्र। दरायेव्ह्रुव्यवायादेविता कु केर रेवायायमा निवेश्वित्तन्त्रात्त्व यनमान्य म्यायायमा निवेश्व यत्। विश्वास्यस्यः स्त्रेम्। स्रोह्मः स्त्रः स् व्यायका वर्ष्ट्रमास्त्र विषयः स्वायामा विषयः स्वायामा विषयः स्वायाम् विषयः विषयः स्वायामा विषयः विषयः स्वायामा ब्रिमायनमान्ध्रेन ज्ञान क्रिमायावे प्रायवे विषामस्मायवे श्रिमा मस्साया लट.चीय.ई। भर्र.ई.कीट.उर्थ.रेट.वी.चेब.चनर.भर्ह्र.सूब्रायात्वरातवर. म्चिर'८८। हे वस्रमाउ८ सामिष यदा देश के में प्रक्रिय पर्स्न पर्स्न पर्स्न पर्स्न पर्स्न प्रामा निमा चि.र्ट्रम् ञ्चात्रध्रायाच्या । र्यामानुत्राकुष्याची क्ष्याचात्रकुः साया । चितार्वामानुस्य बुग्रायार्में व्याप्त क्ष्य प्राप्त विष्ट वेशम्बर्धर्यायते.हिरा श्रुप्तह्रस्यायते.र्यं राक्षेत्रं प्रान्ते सामा त्रुप्ते प्रामा त्रुप्ते प्रामा त्रुप्ते क्र्यायर्श्व.क्षेत्रयासीषिया ट्रे.ययातीयात्ती.क्षेत्रयासी.श्री.श्री.यातर्श्व.य्यरायवीया वयाह व्याप्त प्याप्त प्रति केया पर्के स्थाप क्षु प्रमुख्य या प्याप्त प्रति । तुष केव क्षेत्र प्राप्त स्व पर्रुषायम। सक् ज्ञानेषा पुरित्र ज्ञानेषा ज्ञानेषा । न्यार पिर्द्वेषा प्राप्ते ज्ञानेषा पर्रेष स्या वियन्तर्यस्यस्यस्य न्या केषाम्यस्य विष्यम्यस्य

धुरा द्वरायायावित्रारी देशीयवदादी हैंन्यासक् व्वायायावह्मसरायादा त्रिंशकी अरवारी "भ्राप्त प्रमान प्रमान विषयात्र प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान पर्व कें भापर्वे स्वाय अक् ब्रिके भापर्वे स्वाय स्वाय मुल्य अवस्था से दावि स्वाय वेषा परेवर्सेना देवरणूटाने धेर्मुवरसेन ही हिरायहटायान्ने त्वायवस्यस <u>૱</u>ત.ત.તક્ષ્મત્રત.૮૮.1 કંમત.મી. કાત.તર્ે. તર્યો તાતાનું તીર હુટે. તત્રા યોજી પ્યા हैं ने प्रविष प्रमेग्यायामार यापस्याव्यायस्य प्रमान मुन्न हैं हा सुर मी का योगी विषा निर्ण प्रमाण्ची प्रमाण्डेन पर्रेन प्रमाण्डेन प्रमाण्डेन स्थापा स्यापा स्थापा स्यापा स्थापा स्थापा स्थापा स्थापा स्थापा स्थापा स्थापा स्थापा स्था वैयात्तर्दा वेयानीयेंद्यात्तृत्वेरा रवानु वृद्यते नुयाक्षेत्रके वे याना ह्वापते । लर.ह्यु.क्र्याचक्चर.ज.वर्वेर.व.लुब.धे। रेंब.क्ष्य.क्र्य.वर्श्य.ज्या या.व. विषाम्बर्द्धराष्ट्रियः त्रुपविष्याधी । ५ ग्राम्यादिवः र्युनिषामी क्रिकाया प्रमुद्धार्था । क्रुका विषामासुरसायवे धुरा ने प्यरास्य मुन्यवे नुषाळे दावे षाया कुषाये वे युपार्विद ब्'र्नेब'ग्वन'ग्रे'व्विसंबर्भ विसंसेन यस सर्वेन 'हेब' इस न्यान्य 'दुन'तुं 'हेन' ग्रे'न्तुः क्षे 'हेन' भ्रिषायरु ५ दे त्राय वय ५ द इङ्केषाय विषाय सेषाया भ्री । सह ५ त्या दे १ दि । रुषासुन्य सार्यानुदानी रहुषानिस्रयायनेषायर परेति यात्रा । यदार्यानुदा यक्षेत्र हैं नमारुषा अवसारु प्रावेश प्रमाय पर्दे र प्रावे खुन्य में अध्वार प्राविश पर्दे न र्सेन 'ने 'महिकामान 'यर्नेन 'मुना रव' हुन 'मी 'नुका क्रेव 'कामिय क्रें का पकुन 'या अर्केन ' हेब इस अन्ता दुर न् न्तु ः सु न उठन या या यहे ब न विषाय थे छि मा

क्रिंश'विर क्रिंर'पवेर्'तुष'क्रेब'यामहिषायषा ८८'र्ये प्रदेव प्रविवे क्रिंश'विर न्सूर्येर्न्सक्षेत्रक्षेत्रक्ष्र्र्म्यः स्ट्रियः स्ट्रिक्स्यायेष्टे व्यायेष्ट्रात्रक्षेत्रः स्व ञ्च पर्वः पर्वे त्यः या अर्दे व पा र हिन वा पा मुद्दा क्या व वा पत्वे पर्वे व प्वीयः पर्वे प् यदेव यत्रिक्त व्यवित्र मी हेत्र यदिवाय उसामा मित्र प्रति सामा स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्व े वे क्षेत्र प्रचयादे प्रचयादेश माने यो । विष्य स्वीय प्रचया सम्बद्ध स्वाय स्वीय स्व पर्वियापिते र्ख्यासहरायाम् करमायमाम्बरम् मुलिर र्यो सिपमा हिरादार स्वर याविषायुवावसायार्भिवायायात्रवायात्र। वहिषाहेत्रागुत्रावाङ्गिराहे सम्मवायसा मलक मुंगिर्मेश्वायाय प्रयाप का हिंसा । क्रिंग्नेरिय प्रयास स्वाया प्रयास । वि धियार्षयायायत्वत्रस्यार्वेराय्येत्रा विषार्धेग्रयात्वयात्तीयवेषात्रसार्वेषायीः विंदर्भिः विंवासर देट सुर द्राद्य वा हुँद विदेश वा विंद्र विदेश वा के विदेश वा के विदेश वा के विदेश वा के विदेश रक्षेरप्रदर्शेरखुरप्रियंत्रित्वार्थानुष्यात्रीक्ष्यात्र्यात्रीक्ष्यात्रित्वा क्षेत्रत्विर पक्षिर विषयपदेव पविषय मासुस्र क्षा मार्स पर्यु मित्र सुप्र में राज्य । ख़ॱॾॖ॓॔ढ़ॱक़ॗॖ॔ॖॱॴॱॴऒॱख़ॱॸऀॴॱऄॖॱऄॗॴॱय़ॱॴॱॸॸ॓ढ़ज़ॱॸऻढ़ढ़ॱक़ॕॴॱढ़ऻॕॸॱॸ॔ॖॱॸऻॿॴॱऄॸॱॸ॓ॱ लट की की त्री त्र के का त्री त्या लेक की निकार की त्र की त डेशनुर्देर त्तुर्वायाणी । त्यार रेविर ध्वेन्य ग्री केंशय पति यात्री । केंश विष्ट पर्झेर परे र्ष के के प्ये प्र प्र मुस्या विकाम सुर का परे हिरा

महिष्यप्यत्मायत्यस्यासळ् हेन्सेन्यवेळ्काविस्यक्षिर्येन्त्राहेन्। विश्व क्रियायायावेळे स्थायाचे विश्वायाविक्रियायाच्छा स्थायाचे स्थायाच्छा स्थायाचे स्थायाच्छा स्थायाचे स्थायाचे त्तु है जुरु बचात अप प्रमान है के प्रम है के प्रमान है के प्रमान है के प्रमान है के प्रमान है के प्रम है के प्रमान है के प्रम है के प्रमान है के प्रम है के प्रमान है के प्रमान है के प्रमान है के प्रमान है के प्रमा कुवारी ब्रापायवर रीवा पुषाविष्य अकुर प्राप्त का अक्षापु वि केरि खुर रीवे प्रेर नेर द्वेब की अर्रे मस्त्रायदे द्वेर है। रुष दिवर इ कुर यथा किंब यथ है किं सिर् रु.री विषार्यासार् वास्त्रिय स्वाया विष्ट्र हेव र्याया स्वाया सिर्ट रे वार्य विषा इंट्यासी ट्रिप्वेष इंच्या संक्षा मधेरया है। विषाम संस्था है म ययस'ग्री'नु स'क्रेब'बे'में हि'नु 'ययन 'यदि'यह क्रेब' वृ'ग्रा' वे सेंग्रा 'में हि स' इसस'ग्री' चब्रेन्यन्युवायाञ्चयवेष्यर्देवे क्रिक्षयर्के स्थायके स्थाय व्युत्यर यम् यम् त.भ्र. पक्षमत्रम्भावना पर्वे न मालामा कुत्र रिमा चिमा में भारते का मोलामा रिमा में भारते किया में भारते हैं भा सुसार्ड्र इग्नसुसार् हिन्दी रहर हासा ज्ञानामसुसार् विवाशीसानेसा रहिया त. ञ्च. त्रु. ल ४ . हुत. क्रु. तर्यु. क्रु. हुत. क. ज. र च च . र च . अहरी हुत. क्रु. क्रु. ज्या ज. *ॕॻॖऀॱय़ॖॺॱढ़ॾॕॺॱय़ॖॱॺॖऀॸॱॸॗॸॱॺऻॺॺॱॺॾॎॕॸॱॺॺॸड़ॖॗॺऻॱय़ॱॿॖॱॸ॔ढ़॓ॱख़॓*ॺॸ॔ड़ऀॱख़ॸॺऻॴ र्मे अहर्यात्रा विष्यम्भायति स्वायन्त्रीय विषयः मित्रा मित्रा मित्रा विषयः र्'त्र्वेब'यर'ग्रेंब्'य'य'यह्यप्यश ह्रेंब्'यश्वण'यर्व ब्रब'द्वेब'यर'व्यामुश यवेशायमा झाइसमाणी न्यसासाय हुउ या नयमासामा नयम न्यम नु मु विसास्त्रमायस्वायाया हिन्या दिनाया दिनाया विसाय विसाय दिना विसा भ्रमानुनायान्य वारान्य क्षातानुमान्त्र काली वारान्य वारान्त्र वारान्त्र वारान्त्र वारान्त्र वारान्त्र वारान्त् भ्रमानुनायान्य वारान्य यदे क्वेश पर्के त्थे दे हैं दें क या न न न न न न हो सह न ही दें पह सामु हो हो र न से प्रसार

तकर छट हे 'घममा उर 'मिन परि 'र्म केन मी 'पहन पर्टम 'यम ने। मिट पनि ' क्षरानुषात्रषादे त्रषात्रवापत्र्वापत्रषात्रषाद्द्यानु क्षेटर् प्रेयषायायाप्रषात्रेव सहरारी देखेरायमा वास्त्रमावेमानुर्देमात्राप्ती सम्मानिकानी कुं.भुःमक्षिरायां वी । झःयसायवसायवे दुसाक्षेत्रायसाम्मस्या विसामसुरसा त्रवृत्ति । रद्विवायाम् प्राप्तम् अद्भित्ते विष्याची प्राप्ति । रद्वि विष्याची प्राप्ति । रद्वि विष्याची प्राप्ति । र्श्यु रियाया से ५ दे । दे र ज्ञान मुर्ग रिया के साम है र मित्र साम है र मित्र साम है र मित्र साम है र मित्र स ग्री'पर'देव'विषा'पर्व मा'याञ्च'पपर्या'ग्री'र्या क्रेव'पर्वुट'पर'विषा'न्नर्या'ग्राट'प्याया यः सेर्'र्री । कें प्रसुषामु र् साकेम की र्ने न्निते कें सामरिमा मधानरें खेरा परा पा तर्वैर.प.लुब.ए। षर्ट्र.इ.भ.भइ.रम.खेंब.के.बचा.चा.पर्वैर.टचा.त.क्षमतानमा.ट्रीट. त्तुः र पः श्लरः अप्तर्विदे क्वें अपि हेना देश प्रदेश स्वे प्रदेश । विश्वप्तरः। तुश्व केदः। ष्ट्री'पङ्गब'पर्रेब''यबा दर्पे' ज्ञा'बेब'' द्वु'देर' ज्ञा'बेबेब'य' थी। । ५ गर द्विंगब' ह्युं' ५ ८ ' विर्यम्क्ष्यम् विर्या विष्यम् विष्यम् विष्यम् विष्यम् ग्रुत्रप्ये द्विम दें न दें न दें न स्थान सक् त्वा व के व द्वा प्राप्त प्राप्त मान सहरमः भ्रुव त्वादः विवायमा ग्राट दे द्वार प्रत्य प्राट प्रवाय विवास मित्र स्वाप्त विवास मित्र स्वाप्त विवास स् दे। सक्ष्यःभूर.की.केल.त्र.चर.ब्रीट.पत्रस्तुर.ट्येट.ट्यम.मी.ट्येट.की.ट्येंच्ये. ट्यूयातार्विटायया इत्रिंदाप्रायातायह्टातया जुङ्कातास्ययात्रीयायह्ट्या ब्रुव विरेका गुर दे प्रविव रुप्त क्रुर परि स्रुर

 र्वेच्चन्तर्कीर कुच ।

विषा यह चाड़े थ कि प्रमान स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त के प्रमान स्वाप्त के प्रमान स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स

म्रम्भाकेन्यस्य स्वाप्य विष्याचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राच्या र्तुत्र मर्थिम । र्थान्य र प्यत्र प्राचारे ब क्रिया में स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित न्यारक्ष्यान्तर्यराण्याक्षयाक्ष्याक्ष्या । स्थान्याक्ष्यायक्ष्यायाः श्राच्च । तर्ट्रेट. तर्हुतु. रेत्तच. तथ्या हिंच. ततु. सं. रेट. श्री । पींच. रेचा त. क्रुश्यात्र र सहर् यास्वाप्तक्यायी । स्वित्तेत्र स्थाप्त स्थाप्तक्ष स्थाप्ते स्थाप्त स्थापत स्य स्थापत स्य स्थापत स्थ गर्लेब देब क्रिक सार्य हेव बिटा विश्व सक्ति सुर्य है तर सार्य देव देखें प्राची विष्ट सा वया विवायक्षवार्त्रस्यायवायम्पायम्पायक्ष्यात्रम् । विवायक्षवार्यक्षितः र्या भाषा । सहस्य प्रति प्रस्ति के विषय सुवाया सुवाय स्वया विष्या भित्र विषय स्वया स्वया विषय । धामनुम्बर्केन्या हित्युर्ध्वर्भर्भः युरक्रेव्यक्त्र्यक्ति । श्चरण्य वर्भूर दश्य दर्दे त्ववर पर्द स्था विषा वश्य र अर्क्य वस्त्र वास्वा वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र क्रिंयात्राक्ष्म अर्थे व में कार्या क्षेत्र में क्षेत् चार्येश्वाचनारा। । एव.सूर.किर.ब्रीर.विर.वर्गू.चीयावयशाचायेथ.ब्रीया। वर्रावयाञ्चायाः यर'सह्रे, जास्त्रे वा तक्का विष्या । देयार क्षेत्रा र वा प्राप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप सर्हर प्रमा । विरक्तेम द्राप्य सहर् वास्त्र वा चैम्रीयुःक्र्यमान्त्रभाग्मीमा । प्रमूर् नममानुद्रायन्त्रमान्त्रभागः नेत्रमा । द्रमः क्रेब प्तर्नुब ख्रेब प्रिंच प्रिंच क्रिय क्रिया क्रिया विषय क्रिया क्रिय

वह्रम्यरम्भा । ह्रिम्यानुगायर्डमान् मुत्रिम्यन्यमान् । सह्रम्यानुगायर्डमान् वर्तेवायक्षेत्रातात्वेषातक्षवात्त्रा हि.ला.सट.क्षेत्राप्तवीट.व्राधायक्षेत्रात्वा ।सक्ट्र ग्रीमा । पर पु विपायर सहर या सुना पळवा वी । सुनिमाळेमा पहिना हेन हिन यस्रावयात्रमा विषाप्रदेशस्राम्भुष्मरे रेदि हिट ययर पदी विष्टु वह ब्रेन्डेवे प्रमुन्तियसहन म्या । यम प्रनेवे गुक्त स्वय यासुना परस्या विनावः यायकुः मुद्रमा सम्बन्धा सम्बन्धा यस्ति । वस्ति । चर्चेचेश्राचेष्ये । श्रि.ह्याच्याश्रास्त्र अस्य अस्य अस्य निष्य ह्या यक्षेत्र या सुना पक्ष या ये। १ रे प्रायम कि निया प्रायम के निया सक्ती। विस्राय प्रायम हिट यहें ब या प्रत्वे मार्थ र विद ग्रीया । हिट मार्थ संप्रत्य प्राप्त प्रत्ये ग्री व सामा क्षेत्र। विश्वश्रात्रावियात्रात्रास्त्रात्वेयातक्वात्त्र। विश्वश्रात्वेद्वात्रात्रात्र्ये यगुर परे मिनेगराग्रीया विभवत्र मिने परेत परेत परेत परेत में विभवता विभवत यदः भुष्यक्षवादे प्रदायमा । धुिनमाग्नवादमे द्यारा सहताया सुनायक्षयाची । धुः विवाखानायाव वार्यके दिश्चे वार्श्वेषा । यो निवाना निराय में वार्यके वार्य वार्य वार्य । विराय दः ह्रेंदः दृदः देशायकुः सः सुर्था । श्रेदः नासुस्रास्य स्थायरः सहदः यासुना वर्षयाया। पर्रु.र्ज्ञ.यो विषयः सह्र वर्षा विष्यं स्र त्यरा हिंद वर्षे र सहर संदर् हेर हिंदा विष्य विषय स्थित वर्षे र वर्तेर सहर या सुना वस्याची । दे वह दे दे सस्य रहे वस्य पन्न स्याप्य राष्ट्रिया।

सर्याक्चित्रात्री, पक्षेष्रात्र प्रमान्त्र भारत्र मान्त्र भारत्र मान्त्र भारत्र भारत्य भारत्र भारत्य भारत्

यद्नयत्रश्च दियाः व्यव्याः विष्याः विष्यः विषयः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः विषय

त्तु.श्रद्य.ल.त्तूर.की.श्रथम.२४.४४४। किंज.तूर.कीर.४४१,५४१,१४८,४५८४ द्वा ।गीय,गीट,मुंखुट,कुश्वा,शह्ट, तिया,उक्षत,जूर ।कुश,चक्रेट,केत,मुंब, की. वि'सर्केर्'यदे स्वा विष्यं वि'यया श्चर क्रे व श्च पश्च प्राप्ति । विव री प्रवि र् स्वाक में हे स्वा । सु क्षेत्र में कि या प्रहें समा सह प्रमा पर के पार्थ में में ने के सु ह्रेम्बर्विर हे हिंद स्मान्म निमु दुःबद्वा कुषा हुन्वर सेंद रव कु कु गुःचरुर् द्वेदिश्वस्य वस्य वस्य वर्षा । गुन्यमुर्द्व वर्षे संवित्सहर् द्वमायस्य र्या । क्रिंस न्गु क्रंट्स प्रवे कुयार्यस सर्केन प्रवे क्रं। । क्रंट्स प्रवे प्र न्नु । व्रुव प्रवे भुःश्च्यात्रमा । भुःयमःदिनः बेरः श्वःक्विममः रवः वर्धेः वा । गुतः श्चेः सर्वितः वासहनः यास्वमायक्वाची विकायसुक्वाक्वेराक्वेरायदे सकेन्यदे स्वी श्रेन्सेदे यम र् वियायवि भुः श्वयात्रमा विरावेर केत्र ये सूर विरागमणायर सहरा। गुत्र की सम्राज्या प्रमाणिया पर्या पर्या वर्षा व यदे कें। क्षित्र य से ट मेदे वि य पत्तु गरा पत्ति तु । क्षित्र से से से दे दे दे पी मिट च्र-क्रिन विश्वर वे क्रिया हेन सहर त्या हिना प्रक्या विश्व विश्वर देन'यम क्षेत्रच प्राप्त प्रता विकाद र प्रविक क्षेत्र के विकास का कि <sup>५</sup>वरु'ग्रुअ'कुव'र्ये पुरुरेश'अर्केन'यवे कें। विर्वेशय'वनु विक्वि'र्वेन'ग्री'ह्रे'व' वया । क्कि क्षे प्रदेव प्रविष्य प्रदाय स्था क्षेया क्ष्या । दे प्रविव क्षेट प्रायुक्ष हिपा सह द सिवातक्वात्वा । पर्वेत्वधालिकाला वर्षात्रक्षी । भार्येवासहित्र समस्त्रयः कुथ.स्टारे.रेटा विश्वतः हूटा स्थानकी.स्टिश्टेंद्रः हूटा विश्वाधिय। विश्वतः श्रटा सर्ट्य. तर्मार्नायायर्त्ता विषात्त्र्या ॥ भूष्मायायक्ष्मायत्त्रम्भ्याय्यायायाया । विष्ट्रात्त्रम्भ्याय्यायाय्या । विष्ट्रात्त्रम्भ्याय्यायाय्या । विष्ट् विष्यायायक्षमायत्त्रम्भयाय्यायाय्याया । विष्ट्रात्त्रम्भ्याय्याय्यायाय्याय्याय्याय्याय्याय्याय्याय्याय्याय्याय्याय्यायय्यायय्याय्य

## ्ञा । क्रिंस या संस्कृत में ति दि यो ते यो स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व

ची १९ १८ जायर र र्ह्म् मामसेमा की र याद याद याद मामसे मान से प्राप्त से मान से मामसे मामस

श्रुश्चरत्त्रः र्ह्यायायार्त्वाश्चारत्त्र्त्ता । यत्तित्रत्ता वाश्वर हिवाश्चार्त्वाश्चारत्त्र्त्त्वाश्चारत्त्र ह्यात्त्र्यात्त्र ह्यात्त्र ह्यात्त्र ह्यात्त्र रह्म त्रित्रत्ता वाश्वर हिवाश्चारत्त्र ह्यात्त्र ह्यात्त्र ह्यात्त्र ह्यात्त्र ह्यात्त्र ह्यात्त्र ह्यात्त्र ह

इस्यायाम्बुमा स्यायान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यायाः न्धन्या महिन्द्वयायानेनस्यान्धन्यये । न्राधिया विकेष सेष्टरार्ह्स्स यदेर्देचें याद्रस्यायर देवा हो ५ 'ग्री 'वा तुवासा ५ मा स्रायर देवा हो ५ साधित यदे । मञ्जूमार्थमार्थेन के राजेन। ने के की प्रचन ने के मन में का प्राप्त का का यर रेग हो र की मा बुगाया या प्रेय र वेशिय परि र विकास स्वार की स्वार र रेग व्रेन'गुर'स'भेर नेविषा प्यामी'स्रायर'रेवा'व्रेन'गुर'स'भेर नेविषायदे'स्रीरा हमार्थामहिरामा देरावया सर्हेरायया युषाइसारेमा क्वेरार्वेचरासुयरेना विषा ५८१ ८गाइस्र रेगा छे ५ है । दिस्य स्थान तुन्य ग्री हो सके ५ ५८१ है। श.भ्रे.दु.भ्रे.भक्षट्र.रं.चर्रट्याताचार.खेच क्रा.घर.र्झ्यातालयय.भ्रे.भक्षट्र.दे.च्रिया निरायर साधिक द्रेषियायदे द्विमा दे प्येक का के का ग्री क्वें सके दायदे ना बुनाया प्येक ट्मूसत्तृत्रह्मे चेषयत्तरहि्चसार्म्याम्यत्वट्टी तक्ताक्ष्ताम्चीम् यदेः स्वादिसमा प्रमा इसायमा मेना हो ना हो ना हो ना हो ना समा प्रमा हो मा शहूर तम्बाताता हिर्याय क्षा हिराय है। तकवायव स्वाप्ति स्वाप्ति समामिता स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्व र्जायर वास्तरमा देवा हो रामधे नाये वा मुन्या साम के स्वर्थे के प्राप्त प्राप्त के स्वर्थे के प्राप्त के स्वर्थे के प्राप्त के स्वर्थे के स्वर्थ यायार अयो द्राया द्राया र रेगा हो दायो दा के यो दि या विका मुस्या यवे श्वेरा

रटाची खेबकाडी के सम हैं अप क्षाय देवा हो दारा धेव पर वा नुवाय हैं बर देश पा धोव हो। सहें रायशा इस देश सेव इस ग्रासुस विश्व हा। व्हिंस दर र्द्रेसायास्त्रेन द्रामालन्। विषामासुरसायाद्रा र्द्रेसामासुसायवाद्रीय। ह्रम म्राज्यात्रमान्यात्रमान्यम् । विकारमात्यमन्ने भ्रियरपर्देन्। । केमप्रमुद्राने क्रिंस मस्सा मस्सा मिलमा में 'देर्गे एस स्वर प्यति हिन स्वर मिल्स स्वर स्वर मिल्स स्वर स्वर मिल्स स र्र। ट्रम्यत्रिः स्पर्वेषात्रीयार्वेदादी सुराष्ट्रास्यस्य स्वादीदारीका पर्स्या यवे भे वर हैं अय थे दियवे के अहे दिया युर महिषयि दें के भे वर हैं अय इस्रायर रेग ने दार्थ मा तुन्य पार्थ मा तुन्य पार्थ के लिट प्राह्म पार्च रे खुरा प्राय्य पार्थ पार्य पार्थ पार्य पार्थ पार्य पा र्टेर्चरक्षुविषायवेर्देबाधिबायवेर्धुरा वेषाविष्ठातुर्वेष्वरादे। युरास्थाय इस्रायर देवा छेत् साधिक यदे वा बुवाका वा केंद्राय केंद्राय केंद्राय का वा क यर प्रमुक्त या **उ**क्ष प्रमुख के अर्थ के स्थान के स वेद्रायमाञ्चेष्यरावह्रम्यमाविद्राण्चिमाहे स्मूदाङ्क्षमायाद्रहारम्यायविष्ट्विराद्रहा। वङ्क्ष्य *चुवे खुषा* म्याची इस्रायम स्वाचित ध्वेत प्रवेत्ते वर्त, चित्र वा व्यम खिला स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप ८८ स् वर ह्रियायदे मिल्यास्त्र प्रित्ता वहुत स् वर्षे वर्षे स्याय से वर्षे स्याय से वर्षे स्याय से वर्षे स्याय यर रेग मे र र र र्हे अयरि मिले अद्युत र्ये र र में अयर र र्हे अयर येत र रे र में र र र्ह्रमायदेगित्रम् महामायमा स्थापमा स्थापमा स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स यन्द्रायां के त्या वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा विस्तरा के विदेश मुन्तरा विदेश विस्तरा के विदेश मुन्तरा र्झेट स्थापित्रमा इस महिमारी विषामसुटमाय ५८ पेटि इस देगा इस

म्यान्त्राचित्रपट्ट स्वान्त्राचित्रप्रदेश्य स्वान्त्राचित्रपट्ट स्वान्त्राचित्रपट्ट स्वान्त्राचित्रपट्ट स्वान्त्राचित्रपट्ट स्वान्त्राचित्रपट्ट स्वान्त्राचित्रपट्ट स्वान्त्र स

युर्गानेश्वर्ययायायात्रियायात्रियायात्रियायात्रियायात्रेवा विदेशे विदेश

डिनान्दर्भित्री र्रोसिन्स्पितः स्थिपासाधित्यस्रेसिन्स्यावित्रन्दा देवेः स्निर् छ्या.योध्यातासूर्यायाच्चे.योध्यायायात्राच्ये च्या प्रत्ये प्राच्या ह्या त. चट . त्यु . स्रेच ४ . ग्री . क्षेच . द्यो . ग्री टी . स्रेच . क्षेच . प्रेच . प्रेच . प्रेच ४ . प्रेच . प्र इस्रायर रेगा वे दाराधिक या स्नद्र के गादिर में के हिर प्रति दुस्य सुप्र विदेश देश या यसग्गुरःस्रेग्नर्बेर्'रो। न्ने'य'यन्त्रर्येवे'यस'यस'न्रेस्यन्निवेवे'न्स्र्सु;इस'यर' रेगान्ते न स्पेन प्यर हिन प्यायानिनामा नेति नुमानी इस्यायर रेगान्ते न ने निन्तु प्यमा यम्द्रम्याविरावळदायामधिन्यवे श्वेराद्रा देवे द्रमाग्री इसायर देवा होदा ने ह्वें र प्राप्त अहुनानित सुर पुर देश परि हिरा पर से मुरा हे। देवे प्रमेयाया लट.रच.तर.वेरमतपु.क्षेताविष्रमात्र.क्षमतर.रच.वीर.त.रच.तमात्रमतपु.हीर.तमा ग्री'यम'गञ्जनभ'ठक'यत्क'के'गर्देक'के'ञ'चर'क्स'यर'रेग'ग्रेट्'र्रा'रेग्'ग्रेट्'रम' लुबेन्य चिष्ठ मा लिक चिष्ठ मा देवःवर्धेःयम। यमःयमःग्रेःहेरःवर्द्देनमःहममहेनम्हेनःमः वाद्देनःग्रेः रदाविवाधिवादी विवाददा यदाहाउँ वा विवाददा विवादि । वर्र द्या इस यर पत्र वा हे शेर द्र श्रेव वा केर यर से शेर प्र शेर हे द्या है शेर द्र भी ह्यें र प्रायीम में । प्रमुम प्रायान में भार्सेना मर्सेन प्राय प्रेन प्राया प्रेन प्राया र प्रेन प्राया र में म ब्रेन्द्रम देवः स्नन्छेना ने सस्य य र देना ब्रेन्स धिक य निर्धाव या देवे विषय हो। यसर्ट्याणे वर्षे विषर्रा तर रूप में रे अर तर ही र रूर विषा में यह तर है से र में से पर में यह में यह में

त्या क्षेत्रप्रेष्ट्रीता वेषाचेत्रप्ते वित्रप्ते प्रमाणिक प्रिया विष्णाचित्रप्राय विव्यव्या विष्णाचित्रप्राय विष्णाचित्रप्राय विष्णाचित्रप्राय विष्णाचित्रप्राय विष्णाचित्रप्राय विष्णाचित्रप्ताय विष्णाचित्रप्ताय विष्णाचित्रप्राय विष्णाचित्रप्राय विष्णाचित्रप्ताय विष्णाचित्रपत्ताय विष्णाच विष्णाचित्रपत्ताय विष्णाचित्रपत्ताय विष्णाचित्रपत्ताय विष्णाचित्रपत्ताय विष्णाचि

मुक्तियान्त्रीयाक्षियान्त्रीयाक्षित्रायान्त्रीयक्षेत्राक्षित्रायान्त्रीयक्षेत्राचित्रायान्त्रीयक्षेत्राचित्रायान्त्रीयक्षेत्राचित्रायान्त्रीयक्षेत्राचित्रायान्त्रीयक्षेत्राचित्रायान्त्रीयक्षेत्राचित्रायान्त्रीयक्षेत्राचित्रायान्त्रीयक्षेत्राचित्रायान्त्रीयक्षेत्राचित्रायान्त्रीयक्षेत्राचित्रायान्त्रीयक्षेत्राचित्रायान्त्रीयक्षेत्राचित्रायान्त्रीयक्षेत्राचित्रायान्त्रीयक्षेत्राचित्रायान्त्रीयक्षेत्राचित्रायान्त्रीयक्षेत्राचित्रायान्त्रीयक्षेत्राचित्राचित्रायान्त्रीयक्षेत्राचित्राचित्रायान्त्रीयक्षेत्राचित्रायाचित्राच

चर.चीसीटका विकासीसीटकात्तवु, रूचाला इकावचर वि.श्वम श्रे.चमा.श्चे.चवु. युग्राया र्से वर रेस पत्तर् राष्ट्र साव र प्रक्षेत्र ग्राम सिर्म विषय प्रमानिक र में मुर्थाप्रस्थासुरवर्द्धरासी विषान्तर्यस्थायाः सूर्वा वर्ष्क्षेत्रस्थाः स्विषायः क्रम्यान्त्रवाद्यात्रात्रेयायायात्रीन्तरायात्रीन्तरायत्राक्षेत्र। सर्ने से यात्रे तर्मे पान्तरायत्र र्ट्यार्श्वर्ष्ट्वेट्यं व विषय्वेट्य प्रिंट्य प्राप्ति या मार्य प्रिंट्य विषय्वे या दे विषये वहर्ते। वर्षायायुरायमान्ने प्रमाञ्चायवे युगमानि सामिना वर्षानि सामिना व्याष्ट्रीय मुभायक्षेय पायका मी क्ष्याय स्वापार पाय प्रत्या पायका प्रदेश मीका बुषायदेः सर्रे व्यषागुरा निषे हुँ र प्रसाबेदसार पातृ पुरायकें वा विषाया विषाया मी दुर दु र्सेर क्षे लेस मसुरस या यस मुदाय दे हिर दरा वर्ष यदि मात्र मित्र के मा वीमा सामित्र पाने प्रमेशन मानमा ग्री में सामा प्रमेशन माने प्रमेश माने मिन सामित्र माने मिन सामित्र सामित्र साम यवै द्विर दरा अर्दे के यवै खुन्या प्रमान प्रवास के प्रवा चार र्वर ख़ु त्या सेवास या से स्था धेर यदे त्वे प्यते कुर त्या पक्षेत्र वात्र साथी हे साय । चार्यर पुरुष्टियर वासुत्राय स्रोत प्रति द्विर प्रता व्याप्य वो प्रक्षेत्र प्रता स्रोत वास्त्र वास्त्र वास्त्र व त्राचिश्रम्भायतर येन्न भारतु । विक्रिन दि । क्विन अर्घर नमा अर्रे के जमा में रेरे र उम्में मुम्मा विमायर्रे में ता जी में स्थापन हैं वि में सी प्रचर दे हैं दे स्थान मिर्यादर येंग्या हन में साई पादे पहेन पान सामा ने सादर्नेन र्नेषायषान् उटा वयावरे धुरा

देःयावित्राचे वेत्रा द्वापक्षेत्रचीशद्वीयात्रेत्रची क्रेंसायायवेत्रायासु र्राच्या देशचक्षेत्रवात्रमाणीः क्षेत्रायायर्ववात्रासुर्द्रायावादावेवा दे द्वीः पक्षेत्र क्षेत्र क्षेत द्रवायात्रत्ये भ्रुप्ता स्वाया के विषय के विषय के विषय विषय के का कि विषय के कि का कि का कि का कि का कि का कि क त्तर् त्व त्व द्व प्रमास्य प्रमान स्वर्ण त्य प्रमान स्वर्ण क्षेत्र त्व विष्ठ प्रमान स्वर्ण प्रमान स्वर्ण प्रमान यः अभित्रम् देशयक्षेत्रभात्रभाग्रीः क्षेत्रभायेत्र क्षेत्रभायेतः स्त्रीम् स्त्रिः अभ्यानुयः ह्री हें वर्णयंवरं सर्दे । दमें क्विं में प्रमानमें खुंवर पर दमें खुंवर में प्रमान में प्रमान में प्रमान में प्रमान विषाः व्यत्यायायञ्चयः यावत्याः क्रिनाः तुः प्रविष्याः प्रविष्याः प्रविष्ये राष्ट्रे राष्ट्रे राष्ट्रे राष्ट्रे इ'प्रबि'हे से प्रविदेशेप मर्द्र प्रमुद्द्र स्थायि हें सायाया मन्साप्रवित पुरित महिमानु पर्वेटशतपुःर्ह्सयता मिर्यायी क्षेत्रा प्रेच कूर्य प्राप्ते प्रमान अस्त्रा अख्या । र्श्वाचराययम्बर्धायाक्षायुष्पेत्र। वित्रारेश्वासस्मित्री श्वराष्ट्रायकुरागार्श्वरा त्तुः र्ह्म्यत्त्र्येय्यात्रेयाये व्याप्तेयाये स्वाप्तेयाये स्वाप्तेय स्वापतेय स्वाप्तेय स्वापतेय स्व ८८। इमिर्वार्श्विर्यये प्रवास्त्रेष मीषायक्षेष माष्ट्रिषाय है सामायेष रेट्रियाय है स ८८। रवे। श्रूट वेश र्वे अर्वे अर्थवाश सु विश्व हिस वि श्रूट वि श्यूट वि श्रूट वि श्य भार्येशायेशार्यम् अस्तास्यामास्याचित्राचित्राचित्राचित्राच्याचित्र पक्षेष्र,योष्ट्रभाता,जुष्न,तपु.क्ष्.झट.चि.क्ष.हु.ख्र्य,तक्ष्यु,यप्र.र्टे.झूट,यप्र,पिषा. ब्रह्मायार्जिन्यदे ह्रेह्नानु ही सामासुस्र हैन मुडिमानु हिंहानदे गान हिंहाने साबहर स

यदे श्वे र वे जा अपहण्यपदे हेर्पाणे ज हे हैं अप केर पाना वसके वर्षा यर:र्। वेशःगश्रुरशःयःस्ररःश्रेषाःगुर्हेरःसःयुःष्परःहेषःवगःगुरुषाःगीःयरःर्;श्रेरः चर विश्व खेत्र परि क्षेत्र व्याचिन क्षेत्र परि प्रवेश पक्षेत्र क्षेत्र ता विष्यं व के अपुर मेर्टर के र सूर लाट । के आ जबार मूर्य ता तथ लूख के। लूट बा <u> </u>ह्नेबल, टबे, पश्चेष, ला, टे.श. लघ, त्रिय, लघ, क्विय, प्रेष, लघ, त्रिय, त्रिय, त्रिय, त्रिय, त्रिय, त्रिय, त्रिय, यंश्वेरवाद्यात्री सहूर्याचा चावयात्रवाद्यां क्षेत्रच्याय्यात्र मुन्नेत्राची स्थित्र स्थ अर्थेट प्राया केत्। विषात्वी पहेल की र्हेकायात्र एक की स्वर्की वारा वर्षा विषय गामानक्षेत्र वात्रमार्गी र्ह्ममाराज्ये सारायम् रायम् रायदे स्विर राय वारास्विर रायदे रागे राय यम्बर्भायदेवमाने भी द्विमा । यदे दे पर्वसार्यसार्वसारी सामार्थी हिंदावमाने रहेसा च्याया विषापश्चेत्राम्बर्गाणुः र्ह्यायाष्ट्रियायदे गर्या श्चिरा पुरा विया यदे नर्सि हुँ त्र प्येत त्र न्यतः कुत 'स्व 'चे 'त्र ने 'त्र क्षेत्र 'चे 'नर्सि हुँ त्र प्येत 'त्र निस 'यदे 'हु र ' वेषा हैं विषये दें। युर स्थाय द्वीय हेव की या हेव वावय ही स्थाय हिन्य या हिन्य बःश्चे पारुं अप्तर्धे अष्रिष्ट्र स्विष्ट्र ने प्रश्चे के किष्ट्र के कि रट्युषाञ्चरषायाः संतुष्टिषायदे योषी र्ष्ट्वेट प्रवाह्म द्रायदे स्वराह्म द्राया स्वराह्म स्वराह्म स्वराह्म स्वराह्म स त्तु योसु हिंद रद्द प्रदेश योष मार्गी हिंसाता योष्ट्र मारा मुक्याता योष्ट्र पार से प्रदेश से वि सामिन वाश्वि सामामिन याने प्रमिन सामिन यान्या श्री सामिन वास्यास सामिन या ब्रे.रेब्रे.पक्षेत्रक्ते. क्रेंक्स.त.रेट.श्र.रेब्रेस्य.त्यंत्रक्षेत्रके श्चान्य प्रसम्बन्धित प्रदेश मान्य प्रमान्य क्षेत्र विष्य विषय प्रमान्य प्रम

## चरि चक्केष माष्ट्रभासु मु या मु चरि सु मा

कुं कुं क्र त्यर त्यातर क्र र त्यातर क्र त्यातर क्री विश्व मश्रीर शत्र तृत्री स्था त्या क्षी स्था त्य क्षी स्था त्या क्षी स्थ

त्र्वमश्क्रमां के प्रति स्थित्य के प्रति स्थित स्थित

 ताचीच हुँथे। चिंद मुँचाना ता ने पूर्या ना मुन्या ने प्राप्त हुंय।

ता चीच हुँथे। चिंद मुँचाना ता ने पूर्या ने प्राप्त चीच स्रचय स्था ने प्राप्त ने प्राप्

मिन्त्र ते। अर्दे हैं प्रते खुनाका विन्त्र के नाकिन कि ने क

चित्रस्य के प्राप्त प्रमान के त्र के प्राप्त प्रमान के त्र प्राप्त प्रमान के त्र प्राप्त प्रमान के त्र प्राप्त प्रमान के त्र प्

ट्रमेंबाजा ट्रे.लट.वि.कु.वे.चंबाझांत्रवु.जीबंबालुब.वी.बाट्ट.कुं.ताट्ट.लीज.ट्रेंबा रट.जीचराष्ट्र.क्र.क्र.क्र.क्र. रिवा.चक्षेष.क्री.क्रूम.त.जुष.क्षेत.ख्री श्रीचरा.बी.ठ्यी. बिट रिनो पक्षेत्र रु विश्व विरुध परि क्षेत्र क्षेत्र परि क्षेत्र परि क्षेत्र परि क्षेत्र क्षेत्र परि क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र परि क्षेत्र परि क्षेत्र परि क्षेत्र परि क्षेत्र प केन्न्यस्यययर्वोद्धार्यस्य नेप्यस्य नेप्यस्य निवासी यर्ह्र प्रमाळ्या प्राप्ति । सर्ह्र प्रमा न्यो प्रमेश में प्रमा । स्मा यायक्षेत्रायान्त्री क्षित्राचित्रा वित्राचात्रुत्यायये भ्रित्रा च्री प्रचा कु च्री कि वा र्श्वित तासूचीमाजुबाक्वातावाकुताक्षमायात्री रहातूरातूरमाहूचीमाजुरियोत्रक्षेया र्वेष्याच्चरयाण्या द्वेषाप्रयास्यविषयाम्याच्याच्या ङ्गानुनाः हुन्यान्ता ङ्गानुभावशुरमायमाङ्गायनायः हुन्यान्ता नासुमासमा प्रवि,प्रबेर्यात्रयात्रात्रयाकुरार्ह्ये यरात्रह्ये यराप्रबेरयात्रेत्राक्ष्याक्ष्यात्रिष्या निरम्बायन्ता अपम्बात्यन्तिकक्षाक्ष्यां विस्रकारकवायां विस्ताने सिन् पर्येट.प.ज.चेश्नेटश.खेश.चेच विश्व.चेश्नेटश.त.क्षेत्र.प्री विचेत.कुश.त.श.प्रटश. त्तुःक्ष्याःलय्त्राराभूर्द्धारा प्रतायम् । त्या विषया वसाम्डिमान्त्रस्याग्रामान्त्रो मान्ने वात्रु वात्रु स्थान्त्राचित्र स्थाने वात्र स्थाने वात्र स्थाने য়ৢয়ড়য়৽৴ৼয়ৢয়ড়য়য়য়৾য়য়য়য়ৼৼয়য়ৼৼড়য়য়য়ৢৼয়ৢয়য়ৼ৾ৢড়য়ৼৢয়য় वयानसूर पाञ्चानिक मार्श्वि पार्श्विमार्श्वायास्य प्रायहेन क्रिया विष्ट्र स्वाया देने प्रायहेन ঢ়ৢ৾৾৽ঢ়য়ৢঢ়৽ঢ়৾ঀ৾৽ঢ়৾য়ড়ঢ়য়৽য়ৣ৾৾ঀৢয়ঢ়৾ৼঀ৽ঢ়ৼ৾ঀ৽ঢ়য়ড়য়৽ঢ়৾ৼঀ৽ঢ়৾য়ড়য়

क्षा क्षेत्र, स्वाक्ष्य त्रिया क्षेत्र, स्वाक्ष्य त्रिय त्रिया क्षेत्र, स्वाक्ष्य त्रिया क्षेत्र, स्वाक्ष्य त्रिया क्षेत्र, स्वाक्ष्य त्रिया क्षेत्र, स्वाक्ष्य त्रिया क्षेत्र, स्वाक्य त्रिया क्षेत्र, स्वाक्ष्य त्रिया क्षेत्र, स्वाक्ष्य त्रिया क्षेत्र स्वाक्ष्य त्रिया क्षेत्र स्वाक्ष्य त्रिया क्षेत्र स्वाक्ष्य स्वाच त्रिया क्षेत्र स्वाच क्षेत्र स

पश्चान्त्र प्राचित्र प्रा

क्रिक्सत्त्रभ्रात्म्भ्रात्म्यत्त्रिम् स्वर्णात्म्यत्त्रभ्रम् भ्रम् स्वर्णात्म्यत्त्रभ्रम् क्रिक्स्यत्त्रभ्रम् क्रिक्स्यत्त्रभ्रम् क्रिक्स्यत्त्रभ्रम् क्रिक्स्यत्त्रभ्रम् स्वर्णात्म्यत्त्रभ्रम् स्वर्णात्म्यत्त्रभ्रम् स्वर्णात्म्यत् स्वर्णात्म्

च.इ.स्रट.तक्कुत्र.चर.टे.चसैट.क्षेश.तर.भक्ष्ट्रश्रातपु.क्षेर। भर्षेथ.इ.श.घ.टट.टे.भ.ठुच.कर.टे.क्षे.च.भट.तपु.क्षेर। टट.त्र.चीच.क्षे। चसेश. त.चसिश्रात्त्र.क्ष्य.त.पुचस.भव्येथ.चट.खेच चट.त्रची.ची.क्षेट.जा.क्ष्या.त.पुचस.

मुशुक्षायाक्षेत्रम् व्हेंकायवे महिट खुवायादे मुश्यायाद्वी रायाद्वी रा भुःश्राचरत्तुः र्ह्म्भताता विष्युम्भाम् मुच्याक्ष्याक्ष्यात्त्रीयात्रा विष्युम्भास्यमः ग्रीभाक्ष्यभावर्भे विभा । निर्मार्श्वे में विर्मेश्वर्म मार्थ प्रमा । हि. म्रीन प्रके स्थापन में मुक्त स्था। ऀवे'पवे'ळे'ब'र्ड्स्स'प'ग्रेंह्र्प' । ह्रेंस'प'इसस'ग्री'व्यस'प्'वे। । क्रें'वर्स्स'वस'वे' उर्वैद्यत्र उर्वेत्र। विद्रक्षिय मुश्रम् द्रविद्य हूं मात्र इसमा वित्यस्य म्याग्नेदः इंश्रास्य विद्या । दे द्या वी दे कुं अळव प्यादा । विव ह्या स्याद्य स्याद्य या स्रवा युषाद्मायषात्रे क्षेप्रयायात्रे । विष्यियायात्रा विषयि क्षेप्रयायात्र विषयि विषयि क्षेप्रयायात्र विषयि विषयि क्षेप्रयायात्र विषयि वि बर्ड्स्सयम्पर्ति विषर्भात्म चिरक्तास्स्रस्य र्वे स्रिस्स विष् भ्रुभः भ्रुरः मञ्जन्य रहतः स्रोता । देशः न हे स्रोतः स्रोस्य साम्यस्य । देः प्रायरः दुः ह्रेसः य'र्थेर्। । अर्रे कुर्'नक्ष्र पर्टे अ' वस्त्र अ' र जी। । र मेर् अ' य' य र हे 'रे 'हेर 'ये हा। विषाम्बर्धरकार्यतः हेषासुः तत्तरमा व्यापा । विष्वाः स्विष्टां स्वरः स्वरः हेसायाय। विषः व्याङ्ग्याच्चे प्रमाञ्च प्रते त्युम्य ५८१ व्यापाळे बर्धेते त्युम्य महिषायम। ५८१ र्यः विष्वस्थायया गरितः ह्रेग्ग बुगया उत्राप्तु रायवे ह्याया प्रवासवे स्वरापा गरिया त्रमु नि दर्बरायरा से मिहिट हो। मा बुम्या उदासा धिवा विषा बेरा हो। दे व हा सा यायममान्त्रन्तुं र्हेमायाद्दा वना सेदानु र्हेमायार्केमारु द्वा देवार्थिया वर्तेरक्षिनुषात्री सहरायमा द्यामिष्ठभान्ने संसमाहेषात्रवर्षा विषापरा

स्रेस्र त्या विस्त्र विस्त विस्त विस्त्र विस्त्र विस्त्र विस्त्र विस्त्र विस्त्र विस्त्र विस्त्र विस्त्र विस्त चयुःक्रैं दच्यासी चर्तरा चर्या चर्या वर्षा वरम वर्षा वरम वर्षा वर् विषय्तान्त्र विषय्त्र । विषय्ता वस्त्रवाया वस्त्र त्रेष्ट्र विष्ट्र विषय्त तत्त्रमा विश्वतिष्ठश्रात्त्रियाप्त्रित्तिक्तायन्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रा चैतःही रे.चेष्ट्रशादवैंदावक्रीयाल्यात् हीयात्। यात्राववींदायक्रियांत्री क्रिं-विश्वायतुत्ववृत्त्व्युराधेषायते श्वेराते। सर्हेन् विवायायशा वशसामात्रमः ५८ वर्षाया से १ वर्षा वह्रम्यमाञ्चेमायाक्रमायायमानुरावादरा सान्नमायवेष्वनुरावाक्रमायेषानुरा र्से वर रेग्र पर्तु व म्बुग्र उव मार विग इस रेग् स प्रे म स्यान्य स्या चमिरमा वेमाममार रेचा हो रामाधि राहा च हिमाया है सामा है য়য়য়ৢয়৻৴ৼ৾ঀ৾ড়য়৻য়৻য়৻য়য়য়য়য়৸ঢ়য়৻য়য়৻য়ৢ৻ড়ৢ৾য়য়৻য়য়য়ৢয়৻ঽৢ৻৴ঢ়ৢ৾৽ चविः द्वेर। वेवः हे। इस्रायरः रेगः द्वेरास्रायन्य व्यवः र्वे । विषा क्विंव क्विंदिकी तुषा है। युग्य पदी यायय ग्री दिने ग्रा नुग्य रहत दु नेषान्ते ५ द्वा वाका महिषा के स्वापित के स्व ग्रीमान्यायितः हो। इस प्रमान्याः स्रमाये स्थान्याः स्रमाये स्वाप्ति । स्रमाये स्थाने स यदे द्वर द्वर द्वर प्रद्वर प्रद्वर विकास मानिक विकास म सुर्धेन सेसस्सेन्री मनस्स्मित्रस्य सुरसेन्यन् सेसस्री हेस्य दन्द मीर्नेन

धवायि द्वीय प्राचित्र प्र

मलकायमा वर्षाक्षराधीः क्रियायमा बुम्यारुका धिकायमा वर्षा दे वर्षा है। क्षि.याञ्चयम् अवस्थिव त्राचे स्थित हो। जया स्थान क्षित्र व्याच्या स्थान व्याची स्थित । यःक्षःयुवेःबुग्रयःकु्राणेःस्यायः व्यास्यायः व्यास्यायः व्यास्यायः व्यास्यायः व्यास्यायः व्यास्यायः व्यास्यायः व मृ.चीयःङ्गी तपूर्यः रटायश्यायासीटातृ.जी । ष्रियाचीयीटयात्तर् ही या चार्ष्यायाः मुपन्हे। ने खुन्य पदने खान्न पठका धिन पदि द्विमा ने खार्विन मे नानुन्य केन प्रमान विकास माने विकास के देश साम के माने विकास माने विकास के प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के द्रम्यायाया वर्त्राक्षानुषात्री मञ्जूषाक्षात्री हेन उन्ने भी वसम्यायवे कुर यात्रमास्त्रेन्त्रीः र्ह्स्स्यायार्थेन्यदे स्वी स्रस्यार्थेन्त्री त्यसम्स्यायस्य स्वानी कुर्वायारे र्पेर्प्रायदे द्विमा अवास्त्रेरावसवायायदे सेस्रया उत्तरमा वियावासुरया यायमानुवायविष्ट्वेरावेषा क्रिकासेनाने मनुनमासेनानु । मनुनमासेनानु । मनुनमासेनानु । मनुनमासेनानु । र्भुं प्रसेर्प्या विस्रमान्त्रमान्त्रिमाणु वस्यामायाम् त्रुवामासेर्प्यान्त्रम् ફેરા ક્ર'વવ,<sup>ક્રૂ</sup>વ,કેર.ત્રુધતત,ટું.તો ષટ્,ક્રંતવ,તીયબ,ગ્રી.શૂ.ઘર,ક્ર્યત,સુ. उस्याप्रयाभ्रामिट्राचर वया ग्रम् मार्थ साध्याप्रयाधिरा विवाय प्रवास लटा व्रचाक्रिक् ख्वाका की स्थाय दिन स्थाय वित्र स्थाय स्थाय वित्र स्थाय वित्र स्थाय वित्र स्थाय वित्र स्थाय स्थाय वित्र स्थाय स्थाय वित्र स्थाय ने द्वर पर्देन याना दिया मालु माने पित्र प्रायय में दिस रामा राम प्राय कि माने प्राय कि स्वार प्राय कि स र्ये नुपः ह्रे। दे नि वर्षे अप्याय अपित हिर परि हिरा हमा अपिया सप्याय वर्षे दिया

बुषाने। वेषाक्षेषायुष्पषायाः वित्यविषायषायानित्यवे स्वाधाविष्यविष्ये व्यविष्ये विष्ये विष्ये विष्ये विष्ये विषय

નાલય.તાર.વૈર.વ્યંત્ર, જુવા. જુવા. જુવા. તારા કુંવા. તારા કુંવા. તારા જુવા. જુવા. જુવા. જુવા. જુવા. જુવા. જુવા. चर्षेट पर वया दवस स्थान देव स्थेरा वर्दे देवा चेट क्वि सेसस ग्रीस वेन यदिः सिंच र देंसाय देत की जार वा निवर्ष समासी निवर्ष प्रमासी निवर वा वर्षेत्र या देवे ध्रिम विवयम्बुवर्छमा वर्नेन्यणमात्रीत्रुषात्री सवान्ते व्यवा नेषात्रानास्वी क्रियादी । प्रथम:प्रश्नेमयाद्वीत् ग्रीय: बेन्यदी । क्रिया: देन स्वयं प्रयापायादीन য়ৢ৸৸য়ৢয়ৢয়য়য়য়য়য়ঀ৸ঢ়ড়ৢঀৠ৸ৢঢ়ঢ়য়য়য়য়ৢয়ৢয়য়য়য়য়য়য়ঢ়ঢ়ৢয়৸৾ঀয়৽ त्रत्र कुष्रभ्रम्भ प्रभ्नेत्र कुर्या विष्य विष्य कुष्य क्ष्मिय क्ष्मिय क्ष्मिय क्ष्मिय क्ष्मिय क्ष्मिय क्ष्मिय पश्चत'य'स्य'त्र'ने'वर्धेष'त्र'। । इ'त'कत्'य'य'र्थेन्थ'य। । निर्नेर'कु'गुब'क्येष' श्रामिह्रात्तिमा । रे.क्षेत्रात्त्राये वे.स्याप्तियात्तिमा । ह्रियातासीयात्तरात्तीयात्रीयात्तीयात्रीया भार्येत्यात्रमाः मुन्त्रम् । चित्त्रमाय्यायात्रम् । चित्रम् म्यायात्रम् । चित्रम् <u> </u>ई्रम.त.सी.ययु.कु.ये.बोर्यूटा। विट.क्या.श्रमम.पी.र्ड्सम.त.टटा। वि.ला.यचम.यी. विष्यर प्रश्नुमा विषामासुम्सायास्य र्यो प्रमायन प्रमाय प्रमाय विष्य मे विष्य प्रमाय विष्य श्रिम् भी मूर्या मुर्थित त्रिमान मान्ति त्रात्र मान्य मिन क्रिमान मिन क्रिमान मिन क्रिमान मिन क्रिमान मिन क्रिमान मिन क्रिमान विपर्धेषप्यषाक्षेणिहिन्दि। विवा देपद्वेष्ट्वद्यस्द्रवेष्ठे क्षेत्र्षाक्षे दे ब्रषाचिर क्या क्षेत्रकारी वर्षा बर प्यतर ग्रीस हेन। विरे वा ह्वेन हैं की र ने विर हिन्या। विवास र हम हिंस खुन्या च्युक्यत्त्रम्भान्यक्ष्यः विश्वास्त्रम्भान्यः विश्वास्त्रम्यः विश्वास्त्रम्यः विश्वास्त्रम्यः विश्वास्त्रम्यः विश्वास्त्रम्यः विश्वास्त्रम्यः विश्वास्त्रम्यः विश्वास्तयः विश्वास्त्रम्यः विश्वास्त्रम्यः

द्रावस स्थान श्री संस्थान स्थान स्य

र्ते क्षेत्र र्श्वे प्रश्वे प्राप्त क्षेत्र र्श्वे प्राप्त क्षेत्र राष्ट्र क्षेत्र राष्ट्र क्षेत्र क्षेत्र राष्ट्र क्षेत्र क्

इस्यावन्त्रं त्राया विषया विष

महिटार्टिलेश बेरार्टी । मानव र्मार्थ क्रिंश वृत्य यायशा मानव र्मा व रे। र्या यदेःक्रियंत्रप्रायमान्। दर्भः स्रायदेःक्रियंत्रप्रायम् प्रस्तर्भावि वसमा २८.८८.तमामी.भवतःसभाभारतत्वीराष्ट्रभात्रम्। वि.कु.सभास्रे.वीर. याया । युः वें कें कें रायते का के शासुः वर्षेता । वा के खें खान मुं खें या समस्ये वर्षे वः ह्यिषाम्बर्धा १ स्वाप्तान्त्रम् । सूराया म्बर्नित्रं त्रात्त्रात्त्रं त्रात्त्रिष्ठात्रक्षात्रम् स्तर्ते विद्वात्त्रम् विद्वात्त्रम् यः स्वानिस्र न्दा वक्षयान्ते स्वानिस्र मानिस्र मानिस्र मानिस्र मानिस्र निस्र निस्य निस्र निस्य निस्र निस्य निस्र न वनविनायकेरणम् प्रिन् पुर्येष्णम् कन्ययम् विषक्ति । विषण्नसुरस् दे लटारीयोश्वाटरात्राक्षेत्रायर्ट्रेटात्रपुरक्षेत्रायुर्भात्र्येत्रात्र्येत्रात्र्ये वी वि क्षित्रात्रेत्रायव्यर ने समायान्त्री स्ट्रिंग स्ट्रिंग परि १ तमा स्ट्रिंग परि १ तमा सम्बर्ध समायान स्ट्रिंग स्ट्रिं पर्वः श्चिरः हो। सम्मार्यः वृतः प्रवेरः ने गुर्ने द्वार्यः यो श्चिरः यो स्वरः द्येर। युग्रमामिक्यायाक्षेत्रायाक्षायवादादी द्याक्रिकामुनाम्बर्धेन्यायाक्षाक्षेयायाक्षाक्षेयाया लूर.श्राम्प्रिंत्रपपुरक्षित्र। यश्याताश्रातवरात्री देव्हित्रम्भात्रप्रात्रवीःह्रीता यदे मित्र कु प्येत सेत मित्र भाग मध्य पदे क्रिंत पहु मि से प्याप्त स्थाप विस्रशः इस्रायर 'न्नायानिहरू इस्रायानु के 'नु 'दन्नवा'न्ने स्याये 'धुर 'न्ट' र्क्स्यायवे ' र्धुग्राम् जैवा दिस्या त्रस्य प्रमान्यस्य उत्तर्वया नु स्त्री सुत्र प्रमानित प्रमानित स्त्री स्त्री प्रमानित स्त्री प्रमानित स्त्री प्रमानित स्त्री प्रमानित स्त्री प्रमानित स्त्री स्त्री प्रमानित स्त्री प्रमानित स्त्री स्त्री प्रमानित स्त्री स्त्री प्रमानित स्त्री लज्ञान्वस्थान्य त्युर्वे रावतः दियः दियः वस्यान्य दियः परि दियः वायः *৾ঀ*৾ঀ৾৽ঀয়ড়য়ড়৾য়ড়য়ড়য়ড়য়ড়য়ড়য়ড়য়ড়য়ড়য়য়য়য়য়য়য়য়য়ড়য়ড়ঀঢ়ড়য়ড়ঀ৾ঀ

यह्रब्र-ट्र्य्म्ब्रिश्काक्षत्रक्षत्रव्यद्द्रम् क्ष्रैक्षत्रक्षत्रम् विष्ण्यान्त्रक्षत्रक्

नगर या इस द्वीत गत्रवा परि यस लेस परि देन दि । वा क्षेत्र गिर्दे से गा से प्रवाद । दे। बिर्तर्र ने 'येशर्मा मी 'यशर्मा मी 'श्रार्म में राज्हें माराया के दुर्गीय ख़िरा में कु का या श गर्नेगमा नुमाणी गाम केंद्रिया केंद्रिया केंद्रिया निमानिया निया निमानिया निमानिय निमानिय निमानिय निमानिय निमानिया निमानिया निमानिया निमानिया निमानि ग्रीमाइसाञ्चेदायत्वमाङ्गायङ्गपायङ्गपायदीदायसेत्। साद्रोपायदेःयमाग्रीमाइसाञ्चेदायत्वमा यरे य त से व से प्राप्त के से प्राप्त में के मार से प्राप्त के मार तृ'न्गर'यर'व्यूर'र्रे । वार्डवा'तृ'वाबवा'यंवे'व्यक्ष'बे'वार्डवा'तृ'वाबवा'यर'व्यूर' र्रेः । १८५४ साम्रम्भ गण्ट पर्देषास्य प्रमुर र्रे । विषाम्य प्रमुर्य परि द्विर । इ द्यायायाष्ट्रेयायायुवाह्री यहेंद्रायया यहेयाययाद्रायायद्वायुद्री । यहिया ता है या सी तिह ना ही देश में बिका मार्थित या से देश में ये हैं है। से या तर रेगान्ते रामाभ्यम् यदे यमायमार्गे माने गानु ममार्भे राने रामा रुषाणी गान ब्लॅट्बे इस्रायर रेग हेर ग्री रेर्केर शुरायेर हेरा ग्री खारा ग्री कार्य के ब्लेट हेर हैं ए र्वेषित्रत्युः द्विम् इत्तर्युः ह्यायद्विष्ण विष्यायाच्याय विष्याचीया स्वा ब्लेब यते सुवा विश्वणा क्लेत्र या है तय दे यह स्थेत यदि स्थित है। तवी यदि यश तर स्था तवी यदे विषय में मिले सम्बन्धेन परि द्विमा विषय मे। ने से विषय मिन ने मिले विषय ग्रीभाइसाञ्चेदायन्भासूनायस्यायन्निदायाँद्रा निर्वनार्यायायारादे स्रारायीदा धिरा ८८:र्ये मुयःहे। कुर्वः गुर्वः र्ह्वेटः क्षे ८ मे प्यः ८ ५ सः ग्रीः गुर्वः र्ह्वेटः ८ मे प्यसः च्रमायदे वमा देमा इस देन व वस है या व इस त्रिया व देन त्र है र हो दे मा के दे गीय चैतः ही ट्रे.ल. क्षा हैय हिंच तहला ट्रेंट विट तर तचीय छेट की की हर

यथ्याः त्रित्त्रे विकास्त्र स्त्रात्त्र स्त्रात्त्र स्त्रात्त्र स्त्र स

यने क्षे. ये. थे. श्रुच त्यायाय दे ही मान्या विष्या सुर साथ ही मा वर्षेत्र ततु.शर्थायर्द्धराग्री.शु.रेग्री.यतु.तर्थाश्ची इ.श.रेट.शु. द्रेश.त्रेर.ह्रीयश. र्येप्य ही कर की कुष्ण या भूष्य प्राधिक प्रयोधिक रही। यही वाया परिष्ठित प्रयाश है भूष्ण कर की नवीयः प्रमान्यः प्रमान्यः विष्यः प्रमान्यः विष्यः प्रमान्यः विष्यः प्रमान्यः प्रम वर्देन्यवे विस्रमान् से न्वी यापदिन से सायर न्वी याद्र वर्दे या दे साथित है। दे क्रैंपशर्मर द्वारावे द्वीर में । प्रेनाय है क्रिंपशक्तर प्रवे द्वीर परे प्रमाय हुए। विषाम्बर्धस्यायते स्थित। वर्ते निहेष त्यानमे स्थान मेवि स्यास्थित व्यवसाम्य क्रून मुद्या यायदे यम यशुमात्री हेन ने यान्यो क्रीन विदेश्यम महिमायदेश या प्यिन त्तुः द्विरः क्षेत्रायात्रातियः क्षेत्र राज्या क्राचरः क्रियायात्या विष्ट्रायादेवाय शु चक्रुन'ग्रेक्ग'य'नुषास्राष्ठस'नु'र्स्यन'युम्' इस'श्चेक'यन्यने'यर्के'न्ट'टक्'यर्के' इ.हीर.श्चेष्रत्रत्वीर.व.ही.वी.लुष्याची इस्त्राचिष्याचिष्याच्याची विषये. तमारित्रात्रात्राचेमाराचिराचारा विरामित्राक्षेत्रात्री विश्वामान्याः र्यट क्रिक् र्रे क्रिक्ष । क्रिक वार्षिक क्रिक्त क्रिक्त क्रिक क्रिक्त क्रिक क यार्नेम्बर्यान्ध्रन्यवे मान्साने न्हार्येवी ।

मित्रभायान्य पश्चित्रभायान्त्र स्थायान्त्र मित्रायान्त्र स्थायान्त्र स्थायान्य स्थायान्त्र स्थायाच्यायाच्यायान्त्र स्थायान्त्र स्थायान्त्

यर यार्ने मुषायान् धुन यार्थे। निर्धा विष्ठे मा सुरा है साम सर मुं है। यारे हे म र् सें घर रेन्या पर्त्रामा रेट राष्ट्र पर दिन राष्ट्रिय प्राप्ति वा राष्ट्रीय प्राप्ति वा सें र्शेर वर पर रेग्याय पुत्र भी। १६ग मु र्हेश ग्वन व्यापा । यह र खुर शेसय रमदुःर्ङ्ग्यमाधी । स्रयामध्रिमध्यमावनम् स्रामध्रम्यमाप्ता हरः राजर्था ट्रे.ज.घट.क्व.स्रम्थर्थादेवर.ब्रिस.तदम्। रच.पे.वैट.च.घट.क्व.स्रम्भ यायेन्यते हेन की मारा वना र्हे भारत वुराय भारती है। की प्रवाद है। दे स्वरान इस्पानु त्रेन् पान्न विक्र के देव त्या मुद्र देव प्रमुप मुज्य मान्य प्रमुप प्रम क्किंब प्रह्मायवे क्षिर प्राप्त युर महिषा ग्रीका की महिषा के सामित प्राप्त में रुष्रे की दिनद्र निर्मा त्योवायमान्त्र केर ही स्वरूप दे दिन वर्षे मान गार्ट्संप्रयदे न्वेर्म्ययायवन्त्र। इरार्ट्सं प्रन्रें व्यक्ति विवक्ति ब्रिट म्बर्स मार्ट स्त्री के प्रिक्त का के वित्र क्रियाय कुर क्षेत्र प्राप्त किर क्रिया क्षेत्र यदे देव विरायम छव धिव निर्मेष यदे ने विराय देव विराय विरायमा ने या चिरक्तिम्भ्रम्भर्दि। विभायत्मानेम्भ्रम्भायत्वे स्त्रायाये स्तर् र्ह्मेर् रेप मृप्य कर देप पात्रा देवा रेप र मिर्ग के र मिर्ग में स्वार के र मिर्ग के र पर में से र पर में से र यार्ह्यित् गुराक्त्यासेस्रस्य प्याप्त म्या गुराक्त्य मुत्रा क्षेत्र प्रस्य प्रस्य प्रस्य विषा हूँ भः विन देश गुर येन भः स्वा विश्व विश्व येर भः विन के भः न सुर भः पदे दर्गे र भः तथाविरार्ड्सार्ट्सासी.योगरार्टा श्री.पदार्ध्वा त्रवाल्याची विराक्वितास्रासारात्रा

चिष्ठभात्मक्ट्राचीशानुच क्षेताता त्रुचीशाता नदीन त्राचुी म्याने ने मान्ने साम्याने स्वामाने स्वामाने

लुबा । सिर्यान्य मुन्ति राज्य राज्य निर्मात्य राज्य राज्य राज्य । मुन्न मान्य राज्य राज्य राज्य । रुषाताता मुन्ति । विन्ति मुन्ति । विन्ति मुन्ति । विन्ति । धे<sub>र</sub> र्नाट त्रमा इसमाया द्वरकी रहा | विमार्टा | र्नुसरे युगमा की सम्मा पश्चेर तरी । श्रेम्भ रुष गुष चीष येषा शह्य वा । हिष्म स्पर्म सुष गुः सुर र्युर वेषा । अर्दे दित्य ह्रेष पर्टेष इस्रायायायायायायाया । विषादता हे ह्रे राय ह्रा ग्री मार्चिन ही। मिर प्रत्ये प्राया देश ही या। दि प्रविन स्रमास समास प्राया मार्गमा पश्चेत्रः ह्रेगारुद्रायात्रीः श्चे। हिः ह्राराद्रायाः प्राप्ति दे। विरार्टे ग्वर द्वारा स्रम्। दि पतिक पत्रास्य सेस्रम्य प्रमुद्दे गुम्। विष्य प्रमुद्दे स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य मुचेल.चेर्येटल.तपु. हेल.उचेट.केशल.चे. ५। ज्रुष्यत्र.चेश्चेट.त.क्श.की.ज्रुष्यत्र.चेश्चेट. त्तुःर्के'ना'या व्रवःर्वेष'यदे'युग्वष'न्टा वेग'केव'यदे'युग्वष'गविष'र्येन्। न्ट' त्रांजा ४४.मूब.८चे.पङ्थ.त.८८.। ४८.मैज.८८.। ह्र्येब.तपु.बर्बा.मैब. श्रम्भानम् । त्रिनाक्ष्मार्भित्राम् । युरायमा विकिनाक्षेत्रक्षेत्रामु । युरायमा विकिनाक्षेत्रम् स्रम्भायक्षेत्रभूति । विद्धवाद्भीत्रभूति विद्धवाद्भीत्रभूति । विद्धवाद्भीत्रभूति । विद्धवाद्भीत्रभूति । विद्धवा ब्रे.स.य.म्रेर.तय.चिर.क्य.पे.म्रम्भायक्रीर.र्रा विषावर्षरमात्रम्या ह्या. क्रेब्रन्याया नृतुःस्रान्दाःस्रस्रस्रान्तुःसुन्यान्ताः स्रिक्षःस्रिन् ने नित्रहेसःस्रान्तानः ५५.तथा १.८८.व८.२.तव्याचतुः वित्तात्राक्ष्रभावाच्ये वित्तात्राच्या । हें। विरायत त्या का त्या के प्रायत है के का त्या के का की त्या के त्या की त्या विकास के त्या की त्या विकास के वयान्यूट रहुंवा के वड़ । वक्षया व रिष्ट्र पर्वेष रहुंवा के वड़ प्रवेश रहें या वड़ प्रवेश रहें या वड़ प्रवेश रहें या विष्ट्र रहें या विष्ट् हैं कुर यथा यनेय महेर न्याय निय हेर निया विय सेन्य न्या समेर

र्या सुरा ग्रीका के ना नेवा नेटा हिटा हे खुंया विक्षया स्वा विवासेन वा प्राप्त विकासेन धेरा निरुषायानुवाङ्गा सेसमाउसायवे युन्नमानु दे यो नावे हे न दुर्से ह्वर देसा वर्षाचर देर केर जा है ने जा है ने जा विश्वासी के जो है जो केर तर है के जा के हिन विराधाने के प्रति हिंगा के प्रता प्रति है । विश्व प्रता मुना है। है र पा की प्रता न्हें भावति से प्रदा सह्वासे प्रदायि द्वीरा न्हें से सम्बन्ध संस्था स्वा सक्री सम्मित्रायम् विषयायम् विषया स्वर्थायम् विषया स्वर्थायम् वरळ्टाद्री दवुस्यप्यन्यवायत्वायम्बर्मवार्मवार्मवार्मवार्मवार्मित्या जुब्र-त.र्ह्य्र-रे.तयर ब्यायहेवा.र्ह्या.जुब्रा रिये.मा.ह्युंच्यरहेवा.वी.र्ह्याता.वायुया.क्षेत्रा. डिना-तृ-येब-यदे-धुरा नासुस्रायाधिब-ते। सेस्रसारस्यायासिब-नार्सेवाचेता नतुः सातारम्यावन्द्रन्तरमञ्जीदायराष्ट्रीत्रायरेष्ट्रिया साम्यायान्यायस्य स्त्राया वर्षानुवाहे। स्टानुस्हित्ने म्हार्यास्ट्रान्ये स्टान्ये स्ट्रान्ये स्टान्ये ग्रेन। न्युःस्यकुःपत्नेरःग्रेन्यदेःश्वेर। स्याधिरःपर्वेषःस्वयाक्षेयद्रःह्रे। स्रेस्र क्षात्रात्रच्यात्रत्त्रेट्ध्यास्रुस्यायायम्बन्धा चिष्ठवाची सर्वे द्राद्धिवास स्रम्भा वेषा चमिरमायास्त्राचेत्। न्तुसायान्त्रमाक्षेत्वासिर्वायमानुत्रायास्त्रा वर्षेत्रा ग्रवर्ता धेम्वच्कुःवञ्चर्यस्यः सूर्वर्यर्गयर ग्रुर्यंदे धुरा वेर्षा वेरः र्रो ।

देखानु स्वाप्त प्रमायते प्रमायते स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप

सर्याक्रियासुर्येयस्य पञ्चित्रायासुर्यातु र्यायायकत् त्रेष्रियायाते इसस्य होता क्रेत्र यदे'युग्रायायद्द'रुद'बिद्रा विवा विवाधियाय्यावुग्रायादे'ग्रासुसारु दिहे पदे'र्दे विद्रा व्रेन्द्रामीयान्त्रम्, कुन्यविष्ट्रम् विषाक्रेद्रायान्द्रिमाणीः व्यापान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमा वर्षेवाबाद्वीरबायाविवायवे श्वेत्रा वेबायवे हेबा क्वे श्वित्यरायवित्यापर स्री वन्दान्। स्वान्त्रम् म्रान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् यायर्गेनाक्षेत्रुषाययिष्ट्वेम। वितायमान्त्रुषायुन्षाणु हेर् यक्षत्रक्ष्याक्षेत्रवात्र ર્શે : કરફેન 'નુ ' સુદ 'શ્રેન 'ગુદ' ફિન્ન 'ફેંસ'ને દેશ સુષા નામ મનુ ' ક્રે 'વંદે કેન'નુ 'શ્રે 'વેંસ' त्तर्भ्वेम जुष्रत्तर्भ्वतिविरत्तम् त्वर्त्तालर्भातवर्त्ते अश्रमास्य सार्यः जीवाया जा हुँ या विष्या सेयया विष्या में व्यव साविष्य साविष्य साविष्य साविष्य साविष्य साविष्य साविष्य स यायर्न मुपाक्षे। हे स्र-र्क्ट्र मुन्यने मिन्य मुन्य । विषार्य मिना ने महिषाक्ष्य स्रम्य डेग'तु'येब'यरि'क्कें ग'स'पेब'यरि'धेर'ते। क्यांत्रिसस'ग्री'बे'पश्चप'य'८८। विसा <u> શૂર્યાયા ર્સ્વાયા વૈદાનુષ્ટ્રાયા ગોર્ફ્સાતા પણ અન્તર કુર્યા તે કુર્યાતા કુર્યા સંતર કુર્યા તે તુર</u> भ्रेत्र। बह्यावयानबुहाळ्याची विहासरायनहाराष्यहाळातवहाही। <u>च</u>हासावया चर्षेरश्रत्युक्त्वश्रविष्यात्युविराष्ट्रश्रश्रात्युक्तियत्यत्यः विष्यात्यात्रः पश्चित्रप्तिं स्वाप्तिं स्वाप्तिः स्वाप्तिः स्वाप्तिः स्वाप्ति स्वाप्तिः स्वापतिः त्रुक्त्वमाञ्चरमाय्रुचिरम्भभभागीःर्ह्मायादरात्न्यत्र्वाराञ्चनाव्येषाग्वरा चिर

 र्श्वर्यात्रम् । विषय्वत्। विषय्वतः विषयः विषय

तालाचिष्णां होचाःकुषालाष्ट्रियाःश्रेष्णायाःविचाला चार्यलायाःचियाःचार्याः श्रेष्णाः स्रमःश्लेषाःश्रेषणायश्लेरायते स्विताःश्रेषणायाःचियाःचार्याःचियाः तेषणायाःचिराःच्याःश्रेषणार्थाःविष्णायाःचित्राःचार्याःचियाःचार्याःचियाः

કું શ્રુપ્તાલું દૂધ કું ને ત્યાં કું છે. જુલ જુલ હું વા હું અપાન ક્ષ્યાને ક્ષ્યાં કું યા ત્રામા કું તાન ક્ષ્યાં કું યા ત્રામા કું તાન કું તા કું યા ત્રામા ત્રામા ત્રામા કું તા હું જુલ હું વા હું સમા ત્રામા ત્રામા કું તા હું તા હું સમા ત્રામા કું તા હું તા હું સમા ત્રામા ત્ર

ययः विषायितः श्रीमा

ययः विषायितः विषायितः विषायितः विषायितः विष्ठाः विषायितः विष्ठाः विष

यह्नाः क्रिंग् मुंद्रिंग मुंद्रिंग प्रति । यमां ने ना प्रति मुंद्रिंग मुंद्रिंग प्रति प्रति प्रति प्रति में में स्मान प्रति प

भक्दिम् ने मूस्य पुरादे क्षित्र प्राप्त क्षित क

यदिःचिरःर्ह्भायहिर्ययः अर्थ्याप्तः श्री स्वायः प्राप्तः श्री । दे विष्यः प्राप्तः श्री । दे विष्यः प्राप्तः श्री । दे विष्यः प्राप्तः स्वायः स्वयः स्

त्यः श्रीत्रः त्यं स्वात्तात्रं स्थ्या ।
स्वीत्रः त्यं स्वायं स्वीत्रः त्यं स्वायं स्वयं स्

न्यत्रिक्षात्राचित्रम्यवित्राम्बन्धात्रम्यत्यत्यात्रम्यत्यात्रम्यत्यात्रम्यत्यात्रम्यत्यत्यात्रम्यत्यत्यात्रम् भवतिक्षात्रम्यत्वित्रम्यत्यत्यत्यस्यस्यत्यस्यस्यत्यत्यत्यत्यात्रम्यस्यस्यस्यत्यत्यत्यत्यत्यस्यस्यस्यस्यस्यस्य

विटा डे.जयर.लय.जयायधु.लूट.ड्री समाम तर्चे.क्यें.क्ये अमार्श्वेट.योट.मेंट.योड्यो. श्चि केंद्र द्राप्त वार्श्वे द्राप्त वार्ष द्राप्त वार्ष केंद्र वार्य केंद्र वार्ष केंद्र वार्ष केंद्र वार्ष केंद्र वार्ष केंद्र वार्ष केंद्र वार्ष केंद्र वार्य माञ्चेषाया ने प्राञ्चे रायापन्वाया हेषार्श्वे ने याहेषान् सेवाषासु से प्राञ्चे धिवर्के । यस्याय र व्यूरायाया दे प्रविणा स्टार्मिया है। हे या हु न र या बुनाया यदे'दे'स'वन'यद'ळद्'द्रं'हें'ळं'विय'र्थेद्'न्नर'रुट'ळुट'ट्'ठॅस'क्केस'यदस'देस' र्श्वम्यास्य स्वाप्तरात्र स्वाप्तरात्र स्वाप्तरात्र स्वाप्त स्वाप्त प्रमाणित्र स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त क्षेत्रप्रमित्रासुःक्षायार्ष्यप्रमुत्राम्यात्रुप्तात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्र र्शेप्तः धेरु प्रवेष्ट्विम् हेर्सार्ह्ये दिया हेर्स प्रवास है स्वास है स्वास है से प्रवास है से यः प्राप्ता यम् विषया प्रमानिका विषया ने प्यत्र आपीत नि के सान् सेना सार्या हु प्याने कि हो त्या प्यान हो हो कि साम कि साम कि साम कि साम कि साम कि स त्तुः क्षेत्रः दर्। क्षेत्रः त्र्यावायाः स्वाद्याः द्वाद्यवाद्वायः विस्वयः स्व बर्नेक्वियार्धेन्विक्षान्ताङ्काप्यासान्त्रान्ता केषान्स्रेष्यास्यान्त्रान्ता देगिर्वर्षश्चाक्षेण्याष्ट्रियःह्री स्याय स्ट्राहरी विवादिनाय विवादिनाय देशस्त्र । ग्रे सम्मायाय्यके प्रकृत प्रमा हेमायुमाने पुरामी सुरामार रेमायहेमार्भेगमानेया यरके पश्चपद्धितः धे को खुर पु प्वर्गित यायश्व के शयर द्विति ।

<u> स्यमिर्यस्य प्रत्यं प</u>

यवर र्श्वाचर प्रत्य प्रत्य वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष के में वर्ष वर्ष के में वर्ष वर्ष के वर्ष वर्ष के वर्ष वविःसतुन्त्रन्त्वावायावव्याववे क्वेनावहेत्यायार्दे वर्षेमान्त्रामान्त्रामान्त्रामान्त्रामान्त्रामान्त्रामान्त्र ततुः ही म विषान्न म ने स्वरायम् प्रमायन्य विषाक्रमा विषान् मार्था विषान् में वर या नबुद नर सानु बान र नुवान बारी कर नबुद नवि सन सिन स्वीत गुद । म्रायम् भ्री क्रियायास्यान् के। म्रायम् क्रियायास्य स्वर्धाः क्रियायास्य स्वर्धाः क्रियायास्य स्वर्धाः वशर्ट्स्यायावबुदावावरुदायेदादादावाम्यादवादार्वेत्रायुवाद्वीत्रायुवाद्वीत्राय्या ब्रैंट्र प्ट्रम् स्वायाययाम् स्ट्राययायस्ट स्वायस्य स्वयायः स्वयायः स्वयायः स्वयायायाः म्। मिर्यायेषायस्थित्यास्य स्थातात्रा वस्यवतात्रविताक्त्यास्यास्य स्थिता विर *্র্ছি*ম'লাদুদ'র স্থাম'স্ত্রদম'যাধ্যুদম'যের দুর আ'বি ন্টবা'অর 'লবিধা'র্ম্য'যাস্ত্রম' रुट में देर सब कर के रुट बेश बेरा मलब द्वा दिर में ब्रट संपर्द । ध्रिस यव महिषाने मासुसाय सुरादु र दुर विषा ने रायमहिषा मासी यह दि। यव महिषा वेषानुराषराम्बर्धरषायात्री ह्ररान्चरषायायाहेषायवेषाद्वेषायाय्येषान्ची निरावर्देन यःक्षरामाणेब्रायदेःद्विर। देःक्षराब्रा श्वरःव्वरषाकेवाःक्षमःदुःमायममाया समा यस्याम्बिरायायार्भेवायर्द्ध्यातु द्वेषाति वसायायम्बिराविदास्यात्र स्थान्यायम् तस्यमात्रात्रास्त्रमात्राम् द्राम् वित्रमा द्राम् स्राम् त्याप्य स्थापायकवा श्रर्नियं स्थास्याव्यान्त्रम् वित्राच्यान्त्रम् वित्राच्यान्त्रम् वित्राच्यान्त्रम् ५८ से १८५ में १८५ से स्थान विष्युं से १८५ से लट. सर विरमान कर्त्रमान क्षार्या से भारती हो यो पार्य भवे प्रति हे व त्या है। स्थारा हुट

वर्षास्त्रम् स्वाप्ता न्वे स्ट्रिंग स्वाप्त स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वापता स्वापता स्वापता स्वापता स्वापता स्वापता स्व

पर्वः कुष्मळ्य दिः प्रीवः विष्व। देविः यदिः प्रीवः हि। हि रः से विरः या विषाः या के कुरः प्रीवः सुर्धेद्रगुर्वा वरुषायान्यस्द्रियदेन्न्युवानुविन्न्रिंदेन्। वेन्द्रस्रम् न्या विष्या निषार्श्वेषायायेष याळे दे त्या विषय विषय विषय विषय विषय षम्रात्रात्रक्यायक्षायित्रम् अ.सं. त्रात्रम् वात्रक्षात्रम् स्त्रात्रात्रम् स्त्रात्रात्रम् र्'विश्वात्त्रं अस्ति विदाला हिंशाया बिर्शात्त्रं त्रीशात्त्रं विश्वात्त्रं विश्वात्त्रं विश्वात्त्रं विश्वात्त ग्रीमायम्दर्यते द्विम। से वमाञ्चमाञ्चर द्वारा द्वारा प्रमाणिक विष्या विष्या २८४ मी मिर्यान्य प्राप्ते मी मिलक प्राप्ते में निर्मेश्वर में मिर मी में स्थाप में मिर मी में स्थाप में मिर मी यायमायानुदायाम। देवेर्वेनादे मान्नगायम केंद्र दुः स्र पञ्चेद्र प्रवेशमायाने हुद ८८.श.चल.चर.लूर.थ.हीश.घटश.ब.ही.चर.छे.चर.त्वर.वीश.बेश.त.त.लाश.वीशंटश. त्तु हिर् ह्या क्रवाकुर की सूरवर स्र स्वर सर्मात्म स्री पर ही विषे हिया. क्रेब मु मु न स्वाप्त प्रमान स्वाप्त क्रिय क्षेत्र मु मु न स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व पञ्चयःमिन्ने स्पर् स्रेते स्वया । मामया ग्रेन खेमसाय मन क्षेत्र ग्रेन माना । समार ग्रेन नर देव केर नर वा विवा है वा गा अद के की बुआ विका विवा केर देव है . देरायमानुराकुवासेसमाद्रावेश्वेसायायादेवामायाद्वीरायवेषातमाङ्गाविसायवे। चस्रायास्वरास्त्रायाद्वीयायाद्वीयायाद्वी सद्स्वराग्नी स्ट्रास्त्रा

८८.कैं २.इ.चधुत्रत्वभाग्नी.सूर्वातात्र्वीयतात्रीराता इवायार्ह्यात्रवात्रहेय ५८:ब्रुट:विदेः खुवावार्दे निषाया द्वीदाया दे प्रदाय विवादि प्रदाय विवादि । यन्धन्या वेन्नव्यक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रयायानेन्नव्यन्तर्वे । निर्देशे स्वा न्द्ये व्यमा सर्ने न्दरस्वमा की कि विदेश कर की कि विदेश कर की की की क्षर विषान्त्र अराज्य अर्थे हें दर्ग विषाय ग्री खेर्याय स्थाय दिन हें ही विषाय श्री राष त्र, ह्रा.सं. दचें स्था.पं. १ वे वेश. रेवर. वश्चें र.व. सूर्या सात्री सात्री र.व. सूर्या सात्री सात् ह्माबार्ट्राया स्वाप्त के वा स्वाप्त के व र्देशसंबिद्याया विद्यानिकारी वर्ष्ट्रवायर्थेशस्याया विदाद्याः विश्वास्त्रवायर्थात्या इंचरा, मैं प्रमुख, प्र त्तृःकृ्चाः हुःश्कृत्या । भर्ट्रः र्ह्नगाविष्यभाषास्यस्यस्य स्वत्रः । । नेटः स्वरः रह्मवास्य स्वरः भूषात्रम् । क्षेत्रमूषातामूर्यकानुदायात्तरा । बर्धानुषायक्षेषाद्रम् स्टास् श्रेष्रा विषायवृह्यये महायाद्वराष्ट्रीत्या वतुष्रायाष्ट्रिषाणीषावयदायाम् बुम्बरा त्रुवि हेर योव में ख़िते द्वाप वर्षेत्र व्याप के राये दिन के दिन के प्राप्त तमा देवस्त्रिम् न्योवायिम् यिवम् खेवमा विने विवे विवासि स्विम् स्विम् । सम्स मैश्राट मैयाद्रेय तुर्वे र मैश्रा विषय मैश्राद्ये र प्यादर्भे र विषय प्राप्ति र । यत्रिः स्रम् । सम्भ्रित्वे विषायाया प्रेरिया युवा स्त्रुप्ते विष्टा स्त्रुप्ते के विष्टा स्त्रुप्ते विष्टा स्त्रुपते स न्यवाया ने स्रेन्त्र मुनर्चित कुर विरक्ते म्युस की स्यान्ते विषर विदा दे:क्षरावादियाः मुयायाः सुदादाः अर्घेदाया अराधेवा । मुयायादि वेदायाः अरा

साराम सहकृता सह क्षेत्र स्वाका स्वाक

त्र्राम् । स्ट्रिन्षास्यान् कृत्रस्य क्षेत्रस्य क्षेत्रम्य विषाः स्रुक्ता स्रुक्ता स्रुक्ता विषाः स्रुक्ता विष

चबुष.री.टेर्म्य.मीय.मिरमा विषा.मीसीरमात्य. हमासी. पचरमाये वि.श्रमाये. रे इत्रहे से से प्राप्त प्राप्त के प्राप्त के सक्षेत्र के प्राप्त के स्थान के स्था के स्थान क स्वांनी हे भार्याय द्वार भारत दें दाळ न भारते के भारती है। या वे स्टाउन विवाय हुना मी इसासी, यचे त्या ये सारकु, याकु सासी झैं, यो यो ये, सीयो, कथ, क्षर सार्य दुः इसासी, यचे तसा श्रर्जे.कैरा क्रिंट किरा व.कीरा क्रांट्यूर केराचित्रमा व.केर.जी.र्जूटमा तारम्या अस्यायम् इतारम् राम्यायाय। इतारम् राम्यायाय। क्ष्रिं हिराचर्यायाचा चि.क्विरास्टातीयायाहिसाचर्यायाचाहीयविषयादार्म्याचा र्त्तृ र्वियः वयमा से यी येष्ट्रमा य त्रु। सरम्भिम्यम्रतम्भह्रात्रुःस्माद्र्भम्भुःश्च्राव्यम्रद्रा हे.ये. रे.त.रेट.ह्.प्रस.भहर.तपु.श.वविषातपु.स्वेचित्रस्य से.वी पुष्टार्य्य. चिर क्वा अक्रवा वीय सहर प्रत्य त्वीय या हुन र राष्ट्र यह समार हिससा भ्रीप्यमेयाम। सुःस्राने गेहिस्ससह्दायदे स्याम्बस्य भ्रीके मासूप्य धेरुपा हासा चित्रुमान् कृत्यायन् वास्त्रुन् कृत्यमान् कृत्यायन् वास्त्रमान् कृत्यायन् वास्त्रमान् वास्त्रमान् वास्त्रमान् यश्चेर् सेर्प्यर प्यवर प्यवास केवाति रेपूर्य वात्र प्रति प्रति विष्य प्रविर यर प्रवेत प्राप्ते देर सा बता थे से से हैं है गुर्व प्रत्यायम प्रवाहित स्रेते प्रहेत यसेद्यद्या थे वेष सेस्र यदे यदे यद्या सेद्या सेद्या वेष सेवार सु

क्र. इंचा चाक्र्यात्तर विकेट दिन त्रा स्वीया चाक्र्य विवास विकास विकास

ने या पर में कु पक्षे पिर्वित प्रमान मान प्राणि में हैं पिर सामित है। प्रमा ૄૡૄૼ૽૽ૺૠૢૼ૽૽ૺઌઌ૽૽ૢ૽ૺ૾૽ૢ૽ૼૹૠૢૼૺૺૡ૽ૻૻઌઌ૽ૻઌ૽૱૽૽૱૽૽૱ૺ૱ઌ૽૽૱૽ૺૹ૽૽ૢૼૢ૽૱૽ૺઌ૽ૺઌ૽૽૱ઌ૽ૺ૱ૺૹ૽૽ૢૺૢૼ यायाचेत्रा कुत्रस्यविष्मषाणुरामरात्रमार्डात्रेष्मषानिमायत्यास्त्रित्यस्त्रत्रात्र कुर हे से से प्राप्त निया की राय के राय के सम्मान के स्वाप्त के स् रुष्ट्रियार्थेनायायानुन्यारे वर्षेत्रादेतार्देन् सेर्प्यारे क्षेत्रात्रा केरातु व्या यमर्देशपदि द्वेम विकामी दिकागुक क्षेट नेशासह दायदे न्याय निषद पद्वाया त्र विच तर्वे व.ज.सूर्व स.तर् किंट ज.ट वे ठ.च. व.च. म. मी स. किंट व क्षेत्र तर वी सीट स. यंभ्रेप्यम्यम्यया देशप्रेप्यमुयाश्चेत्रयार्थभायाद्वेत्सायायभ्रम्भ वित्रम् म्। श्चरारात्र केरारात्र विषय हिन मर्गा स्थानिय मर्जिय विषय स्थानिय । यवे श्वेर वेश क्षेन या के क्षें में अंदिर यर में यर मुराय धिक है। हन शर्र रिंग पश्चित्रपञ्जान्य प्रतास्त्रस्य प्रमान्य देश्य प्रमान्य विष्य प्रमान्य विष्य प्रमान्य विष्य प्रमान्य विष्य प्रमान सिर नक्षेर विनवि क्रूर क्षेत्र क्षेर भारतक्षर विनवि क्रूर ने निवेत क्षेर मास्र मास्र सामा प्रा तालट विजावश्चिर तस्त्रे प्रत्ये प्रत्ये तस्त्रे प्रस्ता है र रही ।

<u>ૄઽૹ.ઌ૱ઌ.ૡૺૺૹઌ.ઌ.ૹ૽૽ૼૺૺૼૺઽૢ૽ૼૼૼૼૼઌૡૢઌઌૢૻઌૹ૽ૼઌૹૣઌૹૢઌઌૢઌ</u>ઌ૱ૡ૽ૼઌ.૮૮.૽૽ૺ. कुर्यायन्नायक्केर्येरायरायकर्यार्थेन्याक्षायवर्ते। हेर्त्रियान्ना ह्यूया ब्रासेन्'ग्री'कुन्'क्य'यर्चे र'कुन्'र्बेन्'कुन्'न्यय'यर्व'र्क्वेक'यर्ग'र्वेन्। यर्नेन्क' श्रायव्ययात्री क्ष्यार्ग्य्यार्ग्यात्रात्म्यात्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात् महन्ध्रासम् इत्राप्तस्य प्रमानिया विषयप्रियानिया विष्या ८८। वालक क्षे वालि वालिका स्पर्ने प्याचे पालि वा वालिका प्राप्त है से पालि प्राप्त विकास वास्तर्भाक्तिस्वासर्वरात्रभावस्यात्रेरम् विरा विःह्येत्रवास्त्रभावस्यविः स्वास्त्रस्य चमार्गिट दे.क्षेत्र.चीसीटसारावु.क्षेत्र.देटा ना.चेमार्ट्र होगीयातमायपेसाग्री.वीट.ट्रे. वित्र च कुर्णे वर चुर मे मर्या च त्र समामहत्र के प्या प्यमा वर्षे माम स् वनविनायन्न निन्द्र से यक्षेत्र यस्य स्वत् व दुः स्वत् विकायाः ५८। वक्कुरम्बर्भागुक्तें युभानु रायदे यससायसा असायस्य प्रदर्भियां देशवक्कुर नवसारी नवर पोसार्हेनसाय पवरपदे द्वीरा द्वीसाय दे त्वात है। रे द्वराव कुर इंग्वेंट अ इस महिषामी 'नवट प्रसुर विवायि मारा वर्षा में प्रसुर मारा स्थापित है । यर व्यायति श्वेर है। सुर र्ये अरम कुम ख्रायन मिन्न । ने या यह मा श्वेन प्यक्त याधिव। विवामिबीटवायवानेवायदे द्वीर। देवातीवामिदे राष्ट्रायवायाम् रात्रार यवर दे.मू.य.क्यमात्रात्रेट.यर.क्रैट.ट्र. । ग्यांचय.त्र.ची.क्रीट.ज.यर्या.यश्चीट.लूट. 

म्भूत्र्यायात्वस्यायते यदे यायसान्ति यास्यात्वे स्वाप्त्रायते स्वाप्त्रायते स्वाप्त्रायते स्वाप्त्रायते स्वाप्त म्यून्यायायात्वे स्वाप्त्रायते यायसान्त्रीत् यास्यात् स्वाप्त्रायते स्वापत्रायते स्वाप्त्रायते स्वाप्त्रायते स्वाप्त्रायते स्वाप्त्रायते स्वाप्त्रायते स्वाप्त्रायते स्वाप्त्रायते स्वापत्रायते स्वाप्त्रायते स्वाप

पाष्टिर प्रस्कारण्य विश्व स्थार्थ क्षेत्र विश्व स्थार्थ स्थार स्थ

मिश्रम्य स्वास र्स्स्य येत्र प्रेत्त प्रति स्वाप्त प्रति प्

८८.र्षेष्रत्रात्रश्चराष्ट्रभाष नवाद्यक्षर्निर्वेष्ठाः विद्यक्षित्रः क्षेत्रः विद्यक्षित्रः नवाद्यक्षित्रः नविद्यक्षित्रः नविद्यक्षित् नविद्यक्षित्रः नविद्यक्षिते नविद्यक्षित्रः नविद्यक्षेत्रः नविद्यक्षेत्रः नविद्यक्षेत्रः नविद्यक्षेत्रः नविद् २८. । विट.टेच.चेट.क्व.स्रमस्य अ.च.क्वेट.ता ।ट.लु.चेबट.र्रुचेश.च्रञ्जस्य. सुर पर रव्युरा विश्वरा ने प्रविष रु स्वा व रे हे र्पट प्रसुर परि कुर र्श्विश स्याम्बर्धरम्यदेत्रेनम्यदर्मेम्यस्यम्यस्य विद्या हिःस्टर्म्यम्बर्धस्यम् चिरक्तम् के देशासद्रायवे। चिरक्ति सेसस् वे च के रो । प्रायम् न यक्षमायदेगम्बुट रवाक्षमान्द्रविष्यायदेश्वेम् देन्ने नेर्क्षासदेश्रेसमायक्षेत्र द्यत्व्यात्वात्यात्वात्वात्यात्वा क्षेत्र्यात्वा क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र त्वेत मु.क्रम.पन्टर.जायचे.भाष्ट्रभाषाष्ट्रस्य.मुट्रा व्यट्यातपु.वेटार्ड्सालट.पट्ट्या स्रमःकृषात्तरः विज्ञात्तरः भ्रुवः स्त्रिनः प्रतिः श्रुवः वाववः स्तरः त्युवावः स्थान्ने । वाववः स्तरः त्युवावः स्थाने । विनायवे व्यसानु विन्न साम सेन यवे दि रान्ता के विराम के विस्तरा है साम हो है साम निर्मा साम है साम हो है साम निर्मा साम हो है साम है साम हो है साम है साम हो है साम है साम हो है साम हो है साम है साम हो है साम हो है साम है याद्यायविद्युप्तयायाद्युषाय। इत्ययार्ड्याद्र्यायाः श्चीत्रायाळ्याद्र्यायाः क्रमांचित्रपर्ट्र द्वीयायाययार्ययाय्या स्वास्त्र द्वीर विवास्त्र विवास्त्र विवास \$<'\hat{\chi}'

पर्वनायर्देन स्विन्ते का या चित्र स्विन्ते का या चित्र के प्राचित्र क

यमित्रमक्त्रास्त्र प्रमानिकायि स्थित्र प्रमानिकायि स्थित प्रमानिकायि स्थित प्रमानिकायि स्थित स्थित स्थित स्थित र्नेषायदे द्वेर। यर विश्व र्ने द्वेर वर्षे वर्षे के स्वाव रेने वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे क्रियान निर्मित्या पश्चेत्र हिंग्या क्षेत्र हिंग्या क्षेत्र हिंग्या प्रमित्र विष्ट्र व मि र्ट्सिय या क्षे प्राप्तिक पुर्दि हे र्क्सिय प्रिक या यह परिष्ठ प्राप्त प्राप्ति का की प्रवास है। र्दे. हे. श्चिंत . ट्रेन्य . त. र्ह्य या र्ह्य . ८ ८ ८ ४ . या ४ . व्हय . ट्रेन्य या ये दे ही ४ । अ . लेय . ये श्चित . भग्र-प्रतास्त्र प्रकास्त्र विष्याता स्वायः क्रिया अक्षेत्र अक्षेत्र अक्षेत्र अक्षेत्र अक्षेत्र विष्य प्रतास्त्र स्वायः क्षेत्र अक्षेत्र प्रकासिक स्वायः क्षेत्र अक्षेत्र अक्षेत्र अक्षेत्र अक्षेत्र अक्षेत्र अक्षेत्र अक्षेत्र म्लिट स्राक्ट्रिन प्रते स्री माना नियम प्रस्ति माने स्त्री माने स्त्री माने स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स येब परि सुना येब पर्नापका गुर नेब परि सुरा दे प्यर स्निब स्था हैं अ हैं पार पर्नार पश्चिर दर दिवेयाचा देवाया स्विर र्ह्या पत्ति वा प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प् लट. हे. हे. श्रुंच. ट्राूंच. की. ट्वट. वश्रुंच. व. खेव. ट्रंच तर व्रवेत. ट्रंच तर व्रवेत. ट्रंच तर व्रवेत. व्यवेत. व्यवेत. व्यवेत. व्यवेत. व्रवेत. व्यवेत. व्य द्यासम्बद्धमायाः ह्यासम्ह्यायेषायां स्ट्रीतायायाः स्वीत्रायायाः स्वीत्रायायाः स्वीत्रायायाः स्वीत्रायायाः स्वीत पदःर्भात्राश्चराष्ट्रभात्राश्चराष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाषा क्षेत्र. २८. र्हेश. तपु. ह्र्यु. द्रेयु द्रेयु शक्ष्यु प्राच्यु प्राच प्राच प्राच्यु प्राच्यु प्राच्यु प्राच्यु प्राच्यु प्राच्यु ५८। स्र-मास्याम् । स्राप्त स्र

नस्यापारे दिन त्वेयाच्ये दिन त्युस्य प्राप्त स्थान स्

वक्षः स्वस्थः स्वरं स्व

च्च-पर्यत्रच्चा । क्रि-त्र-र्श्व-श्चिमा विषय्य-प्राप्त । विषय्य-प्राप्त विषयः विषयः

सु:वज्नमा दिमान नाट अना द्वार पर स्टा द्वार प्रस्त रहे दे की मार्च या पर नसिरमा । रियर मिम मूं यायर सन् मार्य । । नार अना नाब मार्य याय क्षे सार्य । म् १८४४,८८८, वर्षे ४. ह्यू २. त्री विश्वराधिर उत्तरात्र विराया विश्वरा नावयःश्री हिंहान्ननायदेः स्रूरावनायायया । नियम् मस्यानावयः केया स्री र्रे इरेशक्ष स्वित्यश्क्रिर रे अशा रिवट वर्भुर विकर वर्ष्ट्रग्रेशय रिवा । क्षम् द्वार प्रत्या विषय्त्र क्षा विषय्त्र क्षा विषय्त्र विषय्त्र विषय्त्र विषय्त्र विषय्त्र विषयः यदिष्यवाक्केरवाद्युद्यादर्वेषात्वेद्या मृद्याद्युयार्थेव्षयावाद्युद्या वाद्येया ग्राच्याप्तर्थे र्वा अडू हु ते सु तु त्वर वि द्वर में वि देश ते त्वर में वि व भार्षभारातुः र्यटार्त्तायद्वेट र्यटा वासामाहिकायर्स्क्रिस प्रिक्त प्राप्त स्थान व्यापाने प्रसुद बिद प्रयेषापर होनाया। पर्देशिया बेशपान ग्रमाया प्रसे बिहा बेरा श्रेप्यन्ते। स्निषान्चासन्ग्रीमन्यान्वरेगर्निन्नर्याद्वरेगर्रिकेन्नर्याद्वर्यान्वरेगर् रेसमिर्वेशसायक्षेत्रायरास्त्रर्भाक्षरायासेत्यवे भ्रिरात्रा सायक्षेत्रासूराणुरा सुर से द्वा विषयमा देस महिषामा कर से सिसाय सम्बर्धिया सर विद्यान्त्रम् द्रिया देशयामिष्ठभार्याक्षेत्राय्ये । क्षेत्राक्षेत्रायव । क्षेत्राक्षेत्रायव । क्षेत्राक्षेत्रायव । ॱज़ॖ<sup>ॱ</sup>ॱॱॱॱऄॖॺॱॻढ़ॱॾॣॕॺॱऴॺॱॺॴॴढ़ॸॴॱऻॿ॓ॴॴऄ॔ॸॴज़ज़ॻॾॖ॓ॺ॓ॺॴॻऀॱॾॗऀ॔॔ॸॱ यारिकानिकार्श्वेरायाची बरायनायायायीवानि। हे स्निन्नुन्निम्यावीनिकारी त्रचिष्ठ्या विषय्वर्द्धेरळे वर्ष्येत्राष्ट्र केंब्राच्या विषय्वर्द्धरायस्या विष्या ৸৻৴৸ঀ৾ঀ৵৸৾৾ঀ৾ঀ৾৾৾ঀ৾৵৻৸৻৸ড়৸৾৴য়৸ঀ৾ঀয়৸য়৸য়৾য়৸৸৾ঀ৾৽য়ৄয়৾য়ড়য়ৼ৾৽ৼৢ৴৴য়য়৻

चनाः त्रुच न्ह्रच न्ह्

चल्राय्येष्वराद्धेक्षण्चे विष्यात्मा विषय्ता विषय्ता विषय्त्र विषयः विषय्त्र विषयः विषय्त्र विषयः विषयः

कु.लक्स्मी ।

कु.लक्स्मी ।

कु.लक्स्मी ।

कु.लक्स्मी ।

कु.लक्स्मी ।

कु.लक्स्मी व्याप्त कु.ल्ल्स्मी व्याप्त कु.ल्ल्स्मि व्याप्त कु.ल्ल्स्मी व्याप्त कु.ल्ल्स्मी व्याप्त कु.ल्ल्स्मी व्या

त्यांत्रे त्वा स्थित ग्री त्वा स्था क्षेत्र म्या स्था क्षेत्र स्था त्या स्था क्षेत्र स्था क्षेत

यर के 'नगर हुँ न पर्वे। । न हे 'म। गुम 'यन र 'में 'हुँ न प्यन र । गुम 'नु 'य बर रेवे । क्विंदायामहिकात्यका दराये दराक्किंदायदे यदि वाल्यामा क्रिया स्वाप्तामिकि । ब्दे हें दिया वायर हें दिख्य प्रस्थय स्था स्थान स्थान स्थान वाय स्थान स् त्रमार्थमार्केताक्रीःक्रिटातार्था केताक्ष्याक्षयात्रुप्रक्रिटाताष्ट्रमात्र्यात्रमार्भा र्भे भू भू भू भू भू भू भी यह माहे मया इसस्य यह मामा मिर यह रायर हि रायस गुरु यह रा रमा गुन पर्र में भुष्य सम्हुं ने लेशयमित्र शास्त्र लेश मुरम स्वर्थ मुरम्य पवरप्रद्रप्यवरप्राध्येष्रप्रश्चिष्रव्यत्र्यात्र्यम् । इत्याप्ती हुँ निया हुँ नियम पहुँ या कि नियम कि यवे पत्र वातु वात्र ग्री ही दाव कुवाळ वाळे के पेरिंदि के कार्य सामिवाय मार्शिद प्रवे ही द याध्येष प्रकात कुषापु नार्विष सुरि क्षेत्र पा स्वाप्त कुरायर निषा सी खेष प्रया नाषा है सा र्श्वेर प्रमान ने मार्थ हैं न सूर प्राच्यमा कर रूर में में निमार प्राप्त में मार्थ में मार्य में मार्थ में तृ'यबर'र्येर'हेंग्रथ'यर'वेुर'यश'व'गुव'तु'यबर'र्येवे'र्ह्हेुर'य। क्रा'वेश'र्रर'षे' क्रेबर्चेंदेर्धुन्या वहेनाहेबयदेश्वर्देबर्रुधुन्ययास्वर्धुन्छेषानुदे । । ने लट.ट्र्रेट.क्ट्.ट.ब्र्च.वयग्गीय.उट्र.चीयट.वया.ब्रुट.त.ख्या.चे.त.प्रक्य.शुट्र.व सुप्तवराप्तरप्तवरामाध्येष्रयाम्बेष्यासुम्भेर्पराम्बुरिन्द्रिम्। वेषाम्राम्य यः र दः वी 'खु यः देवि र ' श्वरः है। ' रे वा षा या र्वे वा षा या वा षट ' हें श्वे का य र ' यह ्षा है। हें दि । `र्<u>ट</u>ेन् ॱळेबॱर्ये प्यदेश 'हेब 'यथ प्यट्य थायि 'चलाय स्थेन् प्यये 'ये 'ये अधिय स्वर्णान 'मृप्य वर

य्तुः श्चित्रियः श्चित्रियः वित्ता वालुतः मत्या श्चित्रियः व्यव्या श्चितः ययः वर्षेत्रः वर्षः वर्षेत्रः वर्षः वर्षेत्रः वर्षेत

द्राचन्द्रभाषा विषामुळ्षाच्या द्रिम्यये महामाधिकान हिनामा देन्या चित्रपर्या नहामाधिकान हिनामाधिकान हिनामाधिका हि

यवरक्तःवदः द्वीषा विवानुः र्ह्वेषः योदः र्ह्वेदः प्राचा क्ष्यः र्ह्वेव्यायः व्यवरक्तः विवान् विवान् र्ह्वेदः प्राचेदः प

য়ঀয়৽৸ৼ৾ৼৢ৾৾ৼড়ৼৼ৾য়ৄয়৾য়ড়ৢয়য়ড়ৣ৾য়য়য়য়য়ৣয়ৣ৾ৼয়ড়ৢ৾ৼয়ড়ৼ यर वया देश र्वेन सार हो न हो होंदि । या यह ना हे न प्यवे स्मार्टन पु होंदि । या से दाय ये ध्रिमा हमायायया वर्नेन्या रेसमित्रेयार्थेयसा महियामायायहरूपार्धिया র্দ্রিব'ঝ'র্দ্রবি'ঝ'রার্দ্রর'ঝ'র্দ্রব'ঝ'র্দ্রব'মম'র্ম্বর্নির'র্দ্ধর্মা দ্রিব'মম'র্ম্ব্রুম सेर्णे हुँर्तपङ्ग्रुग्रिवे हुँर्पर हुर्पाय सेर्पाय स्वर्ति। हुँर्पय हुर्पाय स्वर् यानित्राया वयाकु ५८ झ्रव छेना २५ व्यवस रेयानित्र महिषा स्रोत्र स्वापार प्रवयाणी ५ ने भ्रिं र भ्रिंट प्रवे र्दे न पु र स्वर प्राप्त दे ने ने न न जिस्सा के प्राप्त न प्रवे र प् म्रीमा वर्रे रह्मायायायहावन्त्रयायात्री स्त्रीरायमा रे यो विकानु र्श्वेमासे रही। हि सुंगा विषायत्या कुषायासुत्या विषायित्व वासहेषार्थी । याववायतः विवानुः ह्येषाः बेर्'गु हुँर य'गर धेव'गुव'रु पबर देंदि हुँर यर सहर यांवेग इर व नेव रु हुँय श्रेन्यश्चेन्द्रस्यायम्यात्राम्बुन्यार्थिन्द्रम्या गुम्नुन्य वात्रम्यात्रास्त्रम् कुर्नुतुर्ह्ये ता हिवायात्रयास्याक्षिताकी हिरातास्ययास्य वा वायरावर्ययातास्य ब्रह्मिय्यते बुद्रव्द्वायद्दा अक्ट्रिय्यक्ष्रम् व्यवस्था स्वीत्यक्षे स्वायाया विव्यक्षे यदेः द्वाप्तर्द्धेर प्यमः क्षेत्र प्यमः मुस्मा है। द्वाप्तर्द्धेतः प्रमा विष्या प्रमा विष्या प्रमा विष्या प्रमा कुरात्राह्म भारताचीयाता संभवाती वाष्ट्रीय हिंद द्वेच संभाद ही दे तीया यह या त्युवार्डन । श्चर्यसम्बद्धारम् प्रति श्चेत्रक्षात्। । देवायहेन मुन्यये स्नित् स्नित् स्नित् स्नित् स्नित् स्नित

त्रस्तात्रस्यत्वस्यत्वस्य स्वात्यस्य स्वात्

चलायतः भ्रीं बाल्या क्रियाम् श्रीया निवास्त्र । विवास्त्र विवास क्ष्या क्ष्या क्ष्या विवास क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या विवास क्ष्या क्

सूट्रे. ह्या विश्व की देश हैं श्राय त्या क्ष्म श्राण्ट्रे प्राय की श्राय क

यह्नियान्त्र म्हिस्स स्थान्त्र स्था

चर्यात्त्र न्याकुचा न्टा हूं या ता प्रवेदा क्षेत्रा ता सूची या प्रवास क्षेत्र त्या क्षेत्र त

तासीक्ष्यातक्त्र। छिषाचन्द्रः श्रिषाचन्द्रः श्रिषाचन्द्रः श्रिषाचन्द्रः त्रिषाचन्द्रः त्रिषाचन्द्रः विषयः व

खे. क्री. श्री । विच. प्रक्षंत्र विच. प्रक्षं

 यबर पक्षेत्र उद्देश्य तथा कुष्य क्ष्रा क्ष्य र व्यक्षित्र प्रिय प्राप्त क्ष्रा क्ष्रा